चन्द्र-संस्कृत-व्याकरणम्

नेमिचन्द्र शास्त्री

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

चन्द्र-संस्कृत-व्याकरणम्

Karma Healing Center
For "Yoking Together"
2007
Kathmandu, Nepal

नेमिचन्द्र शास्त्री

मोतीलाल बनारसीदास
दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता, बंगलौर,
वाराणसी, पुणे, पटना

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

प्रथम संस्करण : १९६८
पुनर्मुद्रण : दिल्ली, २००२

© मोतीलाल बनारसीदास

मोतीलाल बनारसीदास
४१ यू०ए० बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली ११० ००७
८ महालक्ष्मी चैम्बर, २२ भुलाभाई देसाई रोड, मुम्बई ४०० ०२६
२३६ नाइंथ मेन III ब्लाक, जयनगर, बंगलौर ५६० ०११
सनाज प्लाजा, १३०२ बाजीराव रोड, पुणे ४११ ००२
१२० रायपेट्टा हाई रोड, मैलापुर, चेन्नई ६०० ००४
८ केमेक स्ट्रीट, कोलकाता ७०० ०१७
अशोक राजपथ, पटना ८०० ००४
चौक, वाराणसी २२१ ००१

मूल्य : रु० ९५

नरेन्द्रप्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, दिल्ली ११० ००७
द्वारा प्रकाशित तथा जैनेन्द्रप्रकाश जैन, श्री जैनेन्द्र प्रेस,
ए-४५ नारायणा, फेज-१, नई दिल्ली ११० ०२८ द्वारा मुद्रित

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विषयानुक्रमणी

अध्याय	विषय	पृष्ठ
प्रथम—	वर्णविचार और संज्ञाप्रकरण	१–८
द्वितीय—	सन्धिविचार	९–२८
	णत्वविधान	२८–३०
	षत्वविधान	३०–३२
तृतीय —	सुबन्तप्रकरण या शब्दरूप	३३–७५
चतुर्थ—	स्त्रीप्रत्यय	७६–८९
	अव्ययप्रकरण	८९–९५
पञ्चम—	कारकविचार	९६–१११
	समासप्रकरण	११२–१२८
षष्ठ –	तद्धित प्रत्यय	१२९–१५२
सप्तम—	क्रियाविचार	१५३-१५८
	भ्वादि प्रकरण	१५९–१९५
	अदादि ,,	१९५–२०८
	जुहोत्यादि ,,	२०८–२१४
	दिवादि ,,	२१४–२१९
	स्वादि ,,	२१९–२२४
	तुदादि ,,	२२४–२३४
	रुधादि ,,	२३४–२४१

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अध्याय	विषय	पृष्ठ
	क्र्यादि प्रकरण	२४१–२४६
	चुरादि ,,	२४६–२५०
	अवशिष्ट लकारों के रूप	२५०–२७३
अष्टम—	प्रत्ययान्त धातु प्रकरण	२७४–२९१
नवम—	कृदन्त प्रकरण	२९२–३०३

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

चन्द्र-संस्कृत-व्याकरणम्

प्रथमोऽध्यायः

वर्णविचार और संज्ञाप्रकरण

व्याकरण—"व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनेन"—जिसके द्वारा शब्दों की व्युत्पत्ति बतलायी जाय, वह व्याकरण-शास्त्र है। वि और आ उपसर्ग पूर्वक 'कृञ्' धातु से ल्युट् प्रत्यय करने पर व्याकरण शब्द बनता है; जिसका अर्थ है, वह शास्त्र, जिसके द्वारा शब्द बनाये जायें। इसी कारण व्याकरण को शब्द-शास्त्र भी कहते हैं। पाणिनि ने व्याकरण का उद्देश्य भाषा का विश्लेषण करना माना है। इनके मत से इसके चार तत्त्व हैं—नाम, आख्यात—धातु, उपसर्ग और निपात—अव्यय। संक्षेप में उन नियमों के समूह को व्याकरण कहा जाता है, जिनके द्वारा शब्दों के टुकड़े-टुकड़े कर उनका निरीक्षण किया जाता है।

वर्णविचार—व्याकरण का वह अंश है, जिसमें वर्णों के स्वरूप, आकार, भेद-प्रभेद, उच्चारण स्थान और उनके संयोग से बने शब्द-विन्यासों के नियमों का प्रतिपादन होता है।

वर्ण—भाषा की मूल ध्वनियों और उन ध्वनियों के प्रतीक स्वरूप लिखित चिह्नों को वर्ण कहते हैं।

अक्षर—स्वर और वे व्यञ्जन, जिनमें स्वर लगे हुए हैं; अक्षर कहलाते हैं; जैसे अ, आ, इ ई आदि स्वर तथा का, कि, की आदि स्वरान्तव्यञ्जन अक्षर हैं।

वर्ण और अक्षर में अन्तर—वर्ण और अक्षर में यह अन्तर है कि वर्ण मूल ध्वनियों के उच्चरित रूप और उनके लिखित चिह्नमात्र हैं तथा उनके खण्ड नहीं हो सकते हैं, पर अक्षरों में स्वर और व्यञ्जनों के भेद से खण्ड हो जाते हैं। जैसे—क=क्+अ, ख=ख्+अ, चा=च्+आ, नी=न्+ई इत्यादि अक्षर हैं। साधारणतः वर्ण और अक्षर का व्यवहार एक ही अर्थ में किया जाता है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

वर्ण-क्रम—संस्कृत में वर्णों का बोध कराने के लिए निम्नलिखित चौदह सूत्र प्रसिद्ध हैं:—(१) अइउण् (२) ऋलृक् (३) एओङ् (४) ऐऔच् (५) हयवरट् (६) लण् (७) ञमङणनम् (८) झभञ् (९) घढधष् (१०) जबगडदश् (११) खफछठथचटतव् (१२) कपय् (१३) शषसर् (१४) हल् ।

इन चतुर्दश सूत्रों के आदि और अन्त्य वर्णों के योग से प्रत्याहार बनते हैं। पाणिनि व्याकरण में प्रत्याहारों का ही उपयोग किया गया है। कुल ४२ प्रत्याहार हैं:—

१. अक्—अ इ उ ऋ लृ ।

२. अच्—अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ।

३. अण्—अ इ उ ।

४. अट्—अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ।

५. अण्—अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ।

६. अम्—अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न ।

७. अल्—अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह ।

८. अश्—अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ।

९. इक्—इ उ ऋ लृ ।

१०. इच्—इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ।

११. इण्—इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ।

१२. उक्—उ ऋ लृ ।

१३. एङ्—ए ओ ।

१४. एच्—ए ओ ऐ औ ।

१५. ऐच्—ऐ औ ।

१६. खय्—ख फ छ ठ थ च ट त क प ।

१७. खर्—ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ।

१८. ङम्—ङ ण न ।

१९. चय्—च ट त क प ।

२०. चर्—च ट त क प श ष स ।

२१. छव्—छ ठ थ च ट त ।

२२. जश्—ज ब ग ड द ।

२३. झय्—झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

२४. झर्—झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स।
२५. झल्—झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।
२६. झश्—झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द।
२७. झष्—झ भ घ ढ ध।
२८. बश्—ब ग ड द।
२९. भष्—भ घ ढ ध।
३०. मय्—म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प।
३१. यञ्—य व र ल ञ म ङ ण न झ भ।
३२. यण्—य व र ल।
३३. यम्—य व र ल ञ म ङ ण न।
३४. यय्—य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प।
३५. यर्—य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स।
३६. रल्—र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।
३७. वल्—व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।
३८ वश्—व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द।
३९. शर्—श ष स।
४०. शल्—श ष स ह।
४१. हल्—ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।
४२. हश्—ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द।

उपर्युक्त वर्णमाला में वर्ण दो प्रकार के हैं—स्वर और व्यञ्जन।

स्वर—जिन वर्णों के उच्चारण में अन्य वर्णों की सहायता अपेक्षित नहीं होती, वे स्वर कहलाते हैं। स्वर तीन प्रकार के हैं-(१) ह्रस्व, (२) दीर्घ और (३) मिश्र-विकृत दीर्घ (सन्ध्यक्षर)।

व्यञ्जन—जिन वर्णों के उच्चारण करने में स्वर वर्णों की सहायता लेनी पड़ती है, वे व्यञ्जन कहलाते हैं। व्यञ्जन ३५ हैं।

ह्रस्व—अ इ उ ऋ ऌ (सादे)	स्वर
दीर्घ—आ ई ऊ ॠ (सादे)	
सन्ध्यक्षर—ए ऐ ओ औ-मिश्र—विकृत दीर्घ	

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

कवर्ग—क ख ग घ ङ	व्यञ्जन
चवर्ग—च छ ज झ ञ	
टवर्ग—ट ठ ड ढ ण	
तवर्ग—त थ द ध न	
पवर्ग—प फ ब भ म	
अन्तःस्थ—य र ल व	
ऊष्म—श ष स ह	
अनुस्वार—ं	
विसर्ग—ः	
अर्धचन्द्र—ँ	

अनुस्वार और विसर्ग भी व्यञ्जन माने जाते हैं; यतः अनुस्वार म् और न् का ही रूपान्तर है और विसर्ग र् या स् का। अनुस्वार विसर्ग और अर्धचन्द्र सदैव, स्वरों के पीछे प्रयुक्त होते हैं, अतः इन्हें स्वर भी माना जाता है।

गुण की अपेक्षा स्वर के भेद—गुण की अपेक्षा स्वर के तीन भेद हैं—ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत। जिसमें एक मात्रा हो, वह ह्रस्व; दो मात्राएँ हों, वह दीर्घ और जिसमें तीन मात्राएँ हों, वह प्लुत कहा जाता है। व्यञ्जन में आधी मात्रा होती है।

उच्चारण की अपेक्षा स्वर के भेद—उच्चारण की विशेषता के कारण प्रत्येक स्वर के तीन भेद हैं—उदात्त, अनुदात्त और स्वरित।

उदात्त—तालु आदि स्थानों के ऊर्ध्व भाग से उच्चरित होने वाले वर्ण उदात्त कहलाते हैं।

अनुदात्त—तालु आदि स्थानों के अधो भाग से उच्चारित होने वाले वर्ण अनुदात्त कहे जाते हैं।

स्वरित—उदात्त और अनुदात्त ये दोनों धर्म जिसमें मिश्रित हों, वह स्वरित है।

स्वरों के भेद—इस प्रकार स्वरों के ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत भेदों में उदात्त, अनुदात्त और स्वरित भेदों के होने से प्रत्येक स्वर के नौ भेद होते हैं। इनमें से प्रत्येक स्वर के अनुनासिक और अननुनासिक भेद की अपेक्षा से अठारह भेद हैं,। पर दीर्घ न होने से ऌ के बारह भेद और ह्रस्व न होने से ए ओ ऐ औ के बारह भेद होते हैं।

वर्णों के उच्चारण स्थान—

कण्ठ्यः—"अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः"–अ आ क ख ग घ ङ ह और विसर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ है; अतः ये वर्ण कण्ठ्य कहलाते हैं।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तालव्य—"इचुयशानां तालु"—इ ई च छ ज झ ञ य और श का उच्चारण स्थान तालु है; अतः ये तालव्य वर्ण कहलाते हैं।

मूर्धन्य—"ऋटुरषाणां मूर्द्धा" ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र और ष का उच्चारणस्थान मूर्द्धा है; अतः ये मूर्धन्य कहे जाते हैं।

दन्त्य—"लृतुलसानां दन्ताः" लृ त थ द ध न ल और स का उच्चारण स्थान दन्त है, अतः ये वर्ण दन्त्य कहलाते हैं।

ओष्ठ्य—"उपूपध्मानीयनामोष्ठौ"—उ ऊ प फ ब भ म और उपध्मानीय ओष्ठ से बोले जाते हैं, अतः ये ओष्ठ्य वर्ण हैं। पवर्ग के पश्चात् आनेवाले विसर्ग को उपध्मानीय कहते हैं।

अनुनासिक—"ञ म ङ ण नानां नासिका च"—ञ म ङ ण और न का उच्चारण स्थान नासिका है, अतः ये वर्ण अनुनासिक कहलाते हैं।

कण्ठ्य तालव्य—"एदैतोः कण्ठतालु"—ए और ऐ का कण्ठ एवं तालु उच्चारण स्थान है।

कण्ठ्य-ओष्ठ्य—"ओदौतोः कण्ठोष्ठम्"—ओ और औ का कण्ठ तथा ओष्ठ उच्चारण स्थान है।

दन्त्य-ओष्ठ्य—"वकारस्य दन्तोष्ठम्"—वकार का दन्त और ओष्ठ उच्चारण स्थान है।

जिह्वामूलीय—"जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्"—जिह्वामूलीय ᳵक ᳵख का उच्चारण स्थान जिह्वामूल है। क वर्ग के पश्चात् आनेवाले विसर्ग को जिह्वामूलीय कहते हैं।

नासिक—"नासिकाऽनुस्वारस्य"—अनुस्वार का उच्चारण-स्थान नासिका है।

विसर्ग जिस स्वरवर्ण के परे रहता है, उसी स्वर का उच्चारण स्थान विसर्ग का भी उच्चारण-स्थान होता है।

प्रयत्न—वर्णों की उच्चारण-रीति को प्रयत्न कहते हैं। इसके दो भेद हैं—आभ्यन्तर और बाह्य।

आभ्यन्तर प्रयत्न—वर्णोच्चारण के पूर्व हृदय में जो आयास होता है, उसे आभ्यन्तर प्रयत्न कहते हैं। यह पाँच प्रकार का होता है—१. स्पृष्ट २. ईषत्स्पृष्ट ३. ईषद्विवृत ४. विवृत ५. संवृत।

क से म पर्यन्त वर्णों का स्पृष्ट; य र ल व का ईषत्स्पृष्ट; श ष स ह का ईषद्विवृत और स्वरों का विवृत प्रयत्न होता है; ह्रस्व अकार का प्रयोगावस्था—परिनिष्ठित सिद्धरूप

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

में संवृत प्रयत्न होता है; किन्तु प्रक्रिया दशा—साधनावस्था में विवृत प्रयत्न ही रहता है।

बाह्य प्रयत्न—मुख से वर्ण निकलते समय जो आयास करना पड़ता है, उसे बाह्य प्रयत्न कहते हैं। इसके ११ भेद हैं—१. विवार २. संवार ३. श्वास ४. नाद ५. घोष ६. अघोष ७. अल्पप्राण ८. महाप्राण ९. उदात्त १०. अनुदात्त ११. स्वरित।

जिन वर्णों का उच्चारण करते समय कण्ठ का विकास हो, उनको विवार; जिनके उच्चारण में कण्ठ का विकास न हो, उन्हें संवार; जिनका उच्चारण करते समय श्वास चलता रहे, उनको श्वास; जिनका उच्चारण नाद से हो, उन्हें नाद; जिन वर्णों का उच्चारण करते समय गूँज हो, उन्हें घोष; जिनके उच्चारण में गूँज न हो, उन्हें अघोष; जिनके उच्चारण म प्राणवायु का अल्प उपयोग हो, उन्हें अल्प-प्राण एवं जिनके उच्चारण में प्राणवायु का अधिक उपयोग हो उन्हें महाप्राण कहते हैं।

विवार, श्वास और अघोष प्रयत्न—ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स।

संवार, नाद और घोष प्रयत्न—ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द।

अल्प प्राण—क ग ङ च ज ञ ट ड ण त द न प ब म य र ल व।

महाप्राण—ख घ छ झ ठ ढ थ ध फ भ श ष स ह।

स्पर्श—क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म।

अन्तःस्थ—य र ल व।

ऊष्म—श ष स ह।

अयोगवाह—(ं अनुस्वार और) : विसर्ग।

सवर्ण संज्ञा—जिस वर्ण का जिस वर्ण के साथ तालु आदि स्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न एक हो, वह परस्पर सवर्ण संज्ञक होता है।

गुण संज्ञा—अ ए ओ की गुण संज्ञा होती है।

वृद्धि संज्ञा—आ ऐ औ की वृद्धि संज्ञा होती है।

टिसंज्ञा—किसी भी शब्द के अन्तिम स्वर से लेकर अन्त तक का अक्षर समूह 'टि' संज्ञक होता है।

उपधा संज्ञा—शब्द के अन्त्यवर्ण के पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।

प्रातिपदिकसंज्ञा—धातु और प्रत्यय के अतिरिक्त अर्थवान् शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

पद—सुप् और तिङ् से युक्त शब्द और धातु की पद संज्ञा होती है।

प्रगृह्यसंज्ञा—ईकारान्त, ऊकारान्त और एकारान्त द्विवचन पदों की प्रगृह्य संज्ञा होती है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

उपसर्ग—क्रिया के साथ योग होने से प्र, अप, अव, उप, आ, परा, नि, वि, परि, प्रति, अति, अधि, अपि, अभि, सु, अनु, उत्, सम्, निर्, और दुर् शब्दों की उपसर्ग संज्ञा होती है।

धातु संज्ञा—जिससे क्रिया का बोध हो, उसे धातु कहते हैं।

प्रकृति—संज्ञा, विशेषण और क्रियावाचक शब्दों के मूलरूप को प्रकृति कहते हैं। प्रकृति दो प्रकार की होती है–धातु और प्रातिपदिक।

प्रत्यय—धातु और प्रातिपदिक से परे लगाये जानेवाले शब्दांश को प्रत्यय कहते हैं। प्रत्यय पाँच प्रकार के होते हैं—१. विभक्ति २. कृत् ३. तद्धित् ४. स्त्री प्रत्यय और ५. धात्ववयव।

आदेश—प्रकृति और प्रत्यय के रूपपरिवर्तन को आदेश कहते हैं; जैसे 'स्था' धातु के स्थान में तिष्ठ और 'पा' धातु के स्थान में पिब आदेश होता है।

विभक्ति—संख्या तथा कारक का बोध करानेवाली विभक्ति कहलाती है। यथा—घटः, घटम्, घटाः।

वाक्य—कारक तथा क्रिया से युक्त पद वाक्य कहलाता है। यथा—रामः पठति, 'रामः' कारक है और 'पठति' क्रियापद।

सुबन्त—(सुप् + अन्तः) वह शब्द, जिसके अन्त में सु, औ, जस् आदि विभक्ति-चिह्न लगे हों; यथा—गज + सु=गजः, गज + औ=गजौ, गज + जस्=गजाः, गज + अम्=गजम् आदि।

तिङन्त—जिसके अन्त में तिङ्—तिप्, तस्, झि, सिप्, थस् आदि प्रत्यय लगे हों। यथा—हस् + तिप्=हसति; भू + तिप्=भवति, पठ् + तिप्=पठति; भू + झि (अन्ति)=भवन्ति।

संयोग—स्वरहीन होने पर व्यञ्जनों का परस्पर में जो संयोग होता है, वह संयोग कहलाता है।

संहिता—दो वर्णों के उच्चारण की निकटता को संहिता कहते हैं।

अनुशीलनी

१. संस्कृत वर्णमाला में कितने स्वर और व्यञ्जन हैं ?

२. वर्ण, स्वर, व्यञ्जन, ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, अनुदात्त, पद, उपधा, धातु, प्रकृति, प्रत्यय और प्रातिपदिक की सोदाहरण परिभाषाएँ लिखिए।

३. स्पर्श, अन्तःस्थ, उष्म, कण्ठ्य, तालव्य, दन्त्य और अनुनासिक वर्णों को लिखिए।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

४. अनुस्वार और विसर्ग का उच्चारण स्थान क्या है ? इन दोनों में कितनी मात्राएँ होती हैं।

५. आभ्यन्तर और बाह्य प्रयत्न में क्या अन्तर है ? विवार, संवार, घोष, अल्पप्राण, और महाप्राण प्रयत्न की परिभाषाएँ लिखिए।

६. जिह्वामूलीय और उपध्मानीय में क्या अन्तर है ? ध्वनियोंका उच्चारण किन साधनों पर आश्रित है ?

७. त् , च् , ज् , य् , र् , प् , ठ् , आ, ऋ, ष् , ल् , व् , और ऐ का उच्चारण स्थान लिखिए।

८. घोष और अघोष वर्णों को लिखिए।

९. आभ्यन्तर प्रयत्न के कितने भेद हैं ? अल्पप्राण और महाप्राण में क्या अन्तर है ?

१०. टि, गुण, वृद्धि और पदसंज्ञाओं की परिभाषा लिखिए।

११. सम्प्रसारण स्वर और अन्य स्वरों में क्या अन्तर है ? वर्णोच्चारण में जिह्वाका क्या उपयोग है ? क्या जिह्वा के बिना उच्चारण सम्भव है ?

१२. प्रत्याहार कितने हैं, व्याकरणज्ञान के लिए इनकी क्या उपयोगिता है ?

१३. व्याकरण किसे कहते हैं ? ऊष्मवर्ण कितने हैं ? गुण की अपेक्षा स्वरोंके कितने भेद हैं ?

१४. अयोगवाह कौन-कौन हैं, चन्द्रबिन्दु का कहाँ प्रयोग किया जाता है ?

१५. क्या स्वर की सहायता के बिना व्यञ्जनों का उच्चारण सम्भव है ?

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

द्वितीयोऽध्यायः

सन्धि-विचार

सन्धि शब्द सम् + धा से बनता है। सम्—अच्छी तरह से, धा—मिलना अर्थात् जब किसी शब्द में दो वर्ण निकट आने पर मिल जाते हैं, तो उनके मेल से उत्पन्न होनेवाले विकार को 'सन्धि' कहते हैं।

संयोग और सन्धि में इतना भेद **है** कि जहाँ वर्ण अपने स्वरूप से विना किसी विकार के मिलते हैं, वहाँ वह संयोग कहलाता है और जहाँ विकृत होकर उनके स्थान में कोई आदेश होता है, वहाँ इस मेल को सन्धि कहते हैं। तात्पर्य यह है कि सन्धि दो वर्ण मिलकर तीसरा रूप धारण कर लेते हैं, पर संयोग में उनका केवल मेल होता है।

समास और सन्धि में यह अन्तर है कि समास में दो या अधिक विभक्तियों का त्याग कर मिलते हैं, पर सन्धि में विभक्तियों सहित पदों का संयोग होता है। संक्षेप में वर्णविकार सन्धि है और शब्द विकार समास।

सन्धि के भेद—सन्धि तीन प्रकार की होती है—(१) स्वर सन्धि (अच सन्धि), (२) व्यञ्जनसन्धि (हल् सन्धि) और (३) विसर्ग सन्धि।

स्वर-सन्धि

स्वर-सन्धि—दो अत्यन्त निकट स्वरों के मिलने से जो ध्वनि में विकार उत्पन्न होता है, उसे स्वर-सन्धि—अच् सन्धि कहते हैं। जैसे—ने + अनम्=नयनम्।

स्वर सन्धि के आठ भेद हैं—(१) दीर्घ (२) गुण (३) वृद्धि (४) यण् (५) अयादिचतुष्टय, (६) पररूप (७) पूर्वरूप (८) और प्रकृति भाव।

(१) दीर्घ सन्धि

ह्रस्व या दीर्घ अ इ उ और ऋ के बाद कोई समान स्वर रहे तो दोनों के स्थान में सवर्ण हो जाता है।

सूत्र—**अकः सवर्णे दीर्घः**—सवर्ण स्वर मिलकर दीर्घ होता है। यथा—

क—(i) अ + अ=आ—परम + अर्थः=परमार्थः; दैत्य + अरिः=दैत्यारिः; देव + अर्चनम्=देवार्चनम्; शश + अङ्कः=शशाङ्कः।

(ii) अ + आ=आ—कमल + आकरः=कमलाकरः; कुश + आसनम्=कुशासनम्।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(iii) आ + अ=आ—विद्या + अर्थी=विद्यार्थी; दया + अर्णवः=दयार्णवः; महा + अनुभावः=महानुभावः; महा + अनुभूतिः=महानुभूतिः ।

(iv) आ + आ=आ— विद्या + आलयः=विद्यालयः; दया + आनन्दः=दयानन्दः; महा + आशयः=महाशयः ।

ख—(i) इ + इ=ई—कवि + इन्द्रः=कवीन्द्रः; गिरि + इन्द्रः=गिरीन्द्रः; प्रति + इतिः= प्रतीतिः; इति + इव=इतीव ।

(ii) इ + ई=ई—गिरि + ईशः=गिरीशः; क्षिति + ईशः=क्षितीशः; हरि + ईशः= हरीशः ।

(iii) ई + इ=ई–मही + इन्द्र=महीन्द्रः; महती + इच्छा=महतीच्छा; नारी + इच्छा= नारीच्छा; नदी + इति=नदीति ।

(iv) ई + ई=ई—श्री + ईशः=श्रीशः; पृथ्वी + ईश्वरः=पृथ्वीश्वरः; नगरी + ईशः= नगरीशः ।

ग—(i) उ + उ=ऊ—विधु + उदयः=विधूदयः; सु + उक्तम्=सूक्तम्; भानु + उदयः=भानूदयः; मधु + उत्सवः=मधूत्सवः ।

(ii) उ + ऊ=ऊ—लघु + ऊर्मिः=लघूर्मिः ।

(iii) ऊ + उ=ऊ—वधू + उत्सवः=वधूत्सवः; वधू + उपरि=वधूपरि ।

(iv) ऊ + ऊ=ऊ—चमू + ऊर्जः=चमूर्जः; भू + ऊर्ध्वम्=भूर्ध्वम् ।

घ—(i) पितृ + ऋणम्=पितॄणम्; होतृ + ऋकारः=होतॄकारः ।

दीर्घसन्धि के अपवाद

शक + अन्धुः=शकन्धुः;　कर्क + अन्धुः=कर्कन्धुः ।
मार्त + अण्डः=मार्तण्डः;　सम + अर्थः=समर्थः ।
कुल + अटा=कुलटा;　सार + अङ्गः=सारङ्गः ।

(२) गुणसन्धि

"आद्गुणः"—अ अथवा आ के अनन्तर ह्रस्व या दीर्घ इ उ ऋ वर्ण रहें तो दोनों मिलकर क्रमशः ए, ओ और अर् हो जाते हैं । यथा—

क—(i) अ + इ=ए—देव + इन्द्रः=देवेन्द्रः; उप + इन्द्रः=उपेन्द्रः ।

(ii) अ + ई=ए—पर + ईशः=परेशः; गण + ईशः=गणेशः ।

(iii) आ + इ=ए—यथा + इच्छसि=यथेच्छसि; महा + इन्द्रः=महेन्द्रः ।

(iv) आ + ई=ए—रमा + ईशः=रमेशः; महा + ईश्वरः=महेश्वरः ।

ख—(i) अ + उ=ओ—जन्म + उत्सवः=जन्मोत्सवः; सूर्य + उदयः=सूर्योदयः ।

(ii) अ + ऊ=ओ—नव + ऊढा=नवोढा; एक + ऊनविंशति=एकोनविंशति ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(iii) आ + उ=ओ—गङ्गा + उदकम्=गङ्गोदकम्; मह्रा + उरस्कः=महोरस्कः ।

(iv) आ + ऊ=ओ—गङ्गा + ऊर्मिः=गङ्गोर्मिः; दया = ऊनः=दयोनः ।

ग—(i) अ + ऋ=अर्—ब्रह्म + ऋषिः=ब्रह्मर्षिः; देव + ऋषिः=देवर्षिः ।

(ii) अ+ॠ=अर्—उप + ॠकारीयति=उपर्कारीयति !

(iii) आ + ऋ=अर्—महा + ऋषिः=महर्षिः; महा + ऋद्धिः=महर्द्धिः ।

(iv) आ + ॠ=अर्—देवता + ॠकारः=देवतर्कारः ।

घ—(i) अ+ऌ=अल्—तव + ऌकारः=तवल्कारः ।

(ii) आ + ऌ=अल्—आ + ऌकारः=आल्कारः ।

गुणसन्धि के अपवाद

अक्ष + ऊहिनी=अक्षौहिणी ।

स्व + ईरः=स्वैरः; स्व + ईरिणी=स्वैरिणी; स्व + ईरी=स्वैरी ।

प्र + ऊहः=प्रौहः, प्र + ऊढः=प्रौढः; प्र + एषः=प्रैषः ।

सुख + ऋतः=सुखार्तः; प्र + ऋणम्=प्रार्णम्; दश + ऋणः=दशार्णः ।

वत्सतर + ऋणम्=वत्सतरार्णम् ; कम्बल + ऋणम्=कम्बलार्णम् ।

वसन + ऋणम्=वसनार्णम् ; ऋण + ऋणम्=ऋणार्णम् ।

प्र + ऋच्छति=प्रार्च्छति; उप + ऋच्छति=उपार्च्छति ।

प्र + ऋणोति=प्रार्णोति; प्र + ऋच्छन्=प्रार्च्छन् ।

मनस् + ईषा=मनीषा; हल + ईषा=हलीषा; लाङ्गल + ईषा=लाङ्गलीषा ।

(२) वृद्धिसन्धि

"वृद्धिरेचि"—अवर्ण से परे एच्—ए ऐ ओ औ हो तो पूर्व-पर के स्थान में वृद्धि एकादेश—ऐ औ, होता है । यथा—

क—(i) अ+ए=ऐ—कृष्ण+एकत्वम्=कृष्णैकत्वम्; एक + एकम्=एकैकम् ।

(ii) अ + ऐ=ऐ—देव + ऐश्वर्यम्=देवैश्वर्यम्; मत + ऐक्यम्=मतैक्यम् ।

(iii) आ + ए=ऐ—सदा + एव=सदैव; यथा + एव=यथैव ।

(iv) आ + ऐ=ऐ—महा + ऐश्वर्यम्=महैश्वर्यम्; महा + ऐरावतः=महैरावतः ।

ख—(i) अ+ओ=औ–दिव + ओकसः=दिवौकसः; तिल + ओदनम्=तिलौदनम् ।

(ii) अ+औ=औ—तव+औदार्यम्=तवौदार्यम्; रोग+औषधम्=रोगौषधम् ।

(iii) आ + ओ=औ—गङ्गा + ओघः=गङ्गौघः; महा + ओजः=महौजः ।

(iv) आ + औ=औ—विश्वपा + औ=विश्वपौ; महा + औषधम्=महौषधम् ।

(v) उप + एति=उपैति; उप + एधते=उपैधते; प्रष्ठ + ऊहः=प्रष्ठौहः ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

वृद्धिसन्धि के अपवाद

स्थूल + ओतुः=स्थूलोतुः या स्थूलौतुः; बिम्ब + ओष्ठः=बिम्बोष्ठः या बिम्बौष्ठः ।

अद्य + एव=अद्येव, अवधारण अर्थ में अद्य + एव=अद्यैव ।

प्र + एजते=प्रेजते; उप + ओषति=उपोषति; प्र + एषयति=प्रेषयति ।

शिव + एहि=शिवेहि; शिवाय + ओन्नमः=शिवायोन्नमः ।

(४) यण् सन्धि

"इको यणचि" ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ और ऌ के बाद यदि कोई असमान स्वर हो तो, इनके स्थान पर क्रमशः य्, व्, र् और ल् हो जाते हैं । यथा—

इ और ई के स्थान पर य्—

इ + अ=य—दधि + अयनम्=दध्ययनम्; यदि + अपि=यद्यपि ।

इ + आ=या—अभि+आगतः=अभ्यागतः; इति+आदिः=इत्यादिः ।

ई + अ=य—देवी + अर्थः=देव्यर्थः; देवी + अर्चा=देव्यर्चा ।

ई + आ=या—देवी + आगच्छति=देव्यागच्छति; नदी + आदिः=नद्यादिः ।

इ + उ=यु—अति + उत्तमः=अत्युत्तमः; प्रति + उपकारः=प्रत्युपकारः ।

इ + ऊ=यू—अति+ऊर्ध्वम्=अत्यूर्ध्वम्; प्रति+ऊहः=प्रत्यूहः ।

ई + उ=यु—सुधी + उपास्यः=सुध्युपास्यः; सुधी + उपासनम्=सुध्युपासनम् ।

ई + ऊ=यू—स्त्री + ऊढा=स्त्र्यूढा; सखी + ऊढः=सख्यूढः ।

इ + ऋ=यृ—कुमारी + ऋतुमती=कुमार्यृतुमती; देवी + ऋषभः=देव्यृषभः ।

इ + ए=ये—प्रति + एकार=प्रत्येकार ।

ई + ए=ये—कृती + एधते=कृत्येधते; गौरी + एवम्=गौर्येवम् ।

इ + ऐ=यै—अति + ऐश्वर्यम्=अत्यैश्वर्यम्; अति + ऐक्यम्=अत्यैक्यम् ।

ई + ऐ=यै—लक्ष्मी + ऐश्वर्यम्=लक्ष्म्यैश्वर्यम्; हस्ती + ऐरावतः=हस्त्यैरावतः ।

इ + ओ=यो—पचति + ओदनम्=पचत्योदनम्; दधि + ओदनम्=दध्योदनम् ।

ई + ओ=यो—सती + ओजः=सत्योजः; देवी + ओजः=देव्योजः ।

इ + औ=यौ—अपि + औदार्यम्=अप्यौदार्यम्; अति + औदास्यम्=अत्यौदास्यम् ।

ई + औ=यौ—प्रधी + औ=प्रध्यौ; सखी + औपम्यम्=सख्यौपम्यम् ।

उ + अ=व—अनु + अर्थम्=अन्वर्थम्; वस्तु + अत्र=वस्त्वत्र ।

ऊ + अ=व—वधू + अन्वेषणम्=वध्वन्वेषणम् ।

उ + आ=वा—सु + आगतः=स्वागतः; लघु + आचारः=लघ्वाचारः ।

ऊ + आ=वा—वधू + आगमनम्=वध्वागमनम् ।

उ + इ=वि—ऋतु + इक्=ऋत्विक्; लघु + इन्दुः=लघ्विन्दुः ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ऊ + इ=वि—वधू + इच्छा=वध्विच्छा; तनू + इन्द्रः=तन्विन्द्रः ।
उ + ई=वी—अनु + ईक्षा=अन्वीक्षा; अधु + ईशः=अध्वीशः ।
ऊ + ई=वी—चमू + ईशः=चम्वीशः; वधू + ईक्षणम्=वध्वीक्षणम् ।
ऊ + ऋ=वृ—वधू + ऋणम्=वध्वृणम् ; वधू ऋतुः=वध्वृतुः ।
उ + ए=वे—अनु + एजनम्=अन्वेजनम् ; अनु + एषणम्=अन्वेषणम् ।
ऊ + ए=वे—वधू + एकत्वम्=वध्वेकत्वम् ; वधू + एका=वध्वेका ।
उ + ऐ=वै—वस्तु + ऐक्यम्=वस्त्वैक्यम् ; साधु + ऐक्यम्=साध्वैक्यम् ।
ऊ + ऐ=वै—वधू + ऐश्वर्यम्=वध्वैश्वर्यम् ; तनु + ऐश्वर्यम्=तन्वैश्वर्यम् ।
उ+ओ=वो—तनु+ओकः=तन्वोकः; साधु+ओकः=साध्वोकः ।
ऊ+ओ=वो=चमू+ओघः=चम्वोघः ।
उ+औ=वौ—अनु+औषधम्=अन्वौषधम् ; लघु+औदार्यम्=लघ्वौदार्यम् ।
ऊ+औ=वौ—पुनर्भू+औरसः=पुनर्भ्वौरसः ।
ऋ+अ=र—पितृ+अनुमतिः=पित्रनुमतिः; पितृ+अर्थम्=पित्रर्थम् ।
ऋ+आ=रा—मातृ+आज्ञा=मात्राज्ञा; मातृ+आकृतिः=मात्राकृतिः ।
ऋ+इ=रि—स्वसृ+इङ्गितम्=स्वस्रिङ्गितम् ; मातृ+इच्छा=मात्रिच्छा ।
ऋ+ई=री—दुहितृ+ईहा=दुहित्रीहा; पितृ+ईहितम्=पित्रीहितम् ।
ऋ+उ=रु—भर्तृ+उपदेशः=भर्त्रुपदेशः; पितृ+उदकम्=पित्रुदकम् ।
ऋ+ऊ=रू—भर्तृ+ऊढा=भर्त्रूढा; भ्रातृ+ऊनः=भ्रात्रूनः ।
ऋ+ए=रे—धातृ+एकत्वम्=धात्रेकत्वम् ।
ऋ+ऐ=रै—भ्रातृ+ऐश्वर्यम्=भ्रात्रैश्वर्यम् ; मातृ+ऐश्वर्यम्=मात्रैश्वर्यम् ।
ऋ+ओ=रो—जामातृ+ओकः=जामात्रोकः ।
ऋ+औ=रौ—पितृ+औदार्यम्=पित्रौदार्यम् ; मातृ+ओजसः=मात्रौजसः ।
लृ+आ=ला—लृ+आकृतिः=लाकृतिः ।

वैकल्पिक प्रयोग—

चक्री+अत्र=चक्रिअत्र; चक्र्यत्र ।
वापी+अश्वः=वाप्यश्वः (समास में ह्रस्व न होने से नित्य प्रयोग)
किमु+उक्तम्=किम्वुक्तम् ; किमु उक्तम् ।
ब्रह्म+ऋषिः=ब्रह्मऋषिः; ब्रह्मर्षिः ।
सप्त+ऋषीणाम्=सप्त ऋषीणाम् ; सप्तर्षीणाम् ।

(५) अयादि चतुष्टय सन्धि

"एचोऽयवायावः"—एच् प्रत्याहार—ए ऐ ओ औ के बाद अच्—स्वरवर्ण

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

हों तो एच् के स्थान में क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् हो जाते हैं । यथा--

ए+अ=अय्--चे+अनम्=चयनम् ; ने+अनम्=नयनम् ।

ऐ+अ=आय्--नै+अकः=नायकः ।

ओ+अ=अव्--यो+अनम्=यवनम् ।

औ+अ=आव्--पौ+अकः=पावकः

ए+आ=अया--रमे+आ=रमया ।

ऐ+आ=आया--रै+आम्=रायाम् ।

ओ+आ=अवा--गो+आम्=गवाम् ।

औ+आ=आवा--ग्लौ+आ=ग्लावा ।

ए+इ=अयि--शे+इतः=शयितः ।

ऐ+इ=आयि--वै+इति=वायिति ।

ओ+इ=अवि--पो+इत्रः=पवित्रः ।

औ+इ=आवि--अभौ+इ=अभावि ।

ए+उ = अयु--मृगे+उ=मृगयुः ।

ओ+उ=अवु--अजुहो+उः=अजुहवुः ।

औ+उ=आवु--द्वौ+उपमितौ=द्वावुपमितौ ।

ए+ए = अये--कपे+ए=कपये ।

ऐ+ऐ=आयै--कस्मै+ऐश्वर्यम्=कस्मायैश्वर्यम् ।

ओ+ऐ=अवै--पटो+ऐः=पटवैः ।

औ+ऐ=आवै--द्वौ+ऐतिहासिकौ=द्वावैतिहासिकौ ।

ए+ओ=अयो--विश्वे+ओः=विश्वयोः ।

ऐ+ओ=आयो--रै+ओः=रायोः ।

ओ + ओ = अवो--गो+ओः = गवोः ।

औ + ओ = आवो--नौ + औः = नावोः ।

ए + औ = अयौ--शे + औ = शयौ ।

ऐ + औ = आयौ--सखै + औ = सखायौ ।

ओ+औ = अवौ--गो+औ = गवौ ।

औ+औ = आवौ--नौ+औ = नावौ ।

हरे+इह = हरयिह, हर इह (विकल्प से यकार का लोप) ।

विष्णो+इह = विष्णविह, विष्ण इह (विकल्प से वकार का लोप) ।

सखे+आगच्छ = सखयागच्छ, सख आगच्छ ।

तौ+ईश्वरौ = ता ईश्वरौ, तावीश्वरौ ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

रवौ+अस्तङ्गते = रवा+अस्तङ्गते = रवावस्तङ्गते ।

विशेष प्रयोग—

गो+यम् = गव्यम् ; नौ+यम् = नाव्यम् ।

गो+यूतिः = गव्यूतिः; अन्यत्र गो यूतिः (बैलों का एक जोड़ा) ।

गो+अग्रम् = गवाग्रम् , गोऽग्रम् , गो अग्रम् ।

गो+ईशः = गवेशः, गो+अक्षः = गवाक्षः ।

गो+इन्द्रः = गवेन्द्रः

(६) पूर्वरूप सन्धि

"एङः पदान्तादति"—पद के अन्त में स्थित ए और ओ के बाद अ रहे तो अकार का पूर्वरूप होता है । यथा—

हरे+अव = हरेऽव; सखे+अर्पय = सखेऽर्पय; मुने+अत्र = मुनेऽत्र ।

प्रभो+अत्र = प्रभोऽत्र; विष्णो+अव = विष्णोऽव; गुरो+अत्र = गुरोऽत्र ।

७—पररूप सन्धि

"एङि पररूपम्"—उपसर्ग के बाद एकारादि और ओकारादि धातुओं का कोई रूप हो तो उपसर्ग का अन्तिम अकार धातु के ए और ओ में मिल जाता है । यथा—

प्र+एजते = प्रेजते; उप+ओषति = उपोषति ।

इह+एव = इहेव; आ + ओम् = ओम् ।

(८) प्रकृति भाव

"ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्"–ईकारान्त, ऊकारान्त और एकारान्त कोई पद द्विवचन में हो तो उसके बाद किसी स्वर के रहनेपर प्रकृतिभाव हो जाता है । यथा—

हरी + एतौ=हरी एतौ; कवी + आगच्छतः = कवी आगच्छतः ।

विष्णू + इमौ=विष्णू इमौ; गङ्गे + अमू=गङ्गे अमू ।

पचेते + इमौ=पचेते इमौ; विद्ये + इमे = विद्ये इमे ।

माले + इमे=माले इमे; मुनी + एतौ = मुनी एतौ ।

अमी+ईशाः=अमी ईशाः; रामकृष्णावमू+आसाते=रामकृष्णावमू आसाते ।

अमी+अश्वाः=अमी अश्वाः; अमू+अर्भकौ=अमू अर्भकौ ।

अहो+ईशाः=अहो ईशाः; अहो+आश्चर्यम्=अहो आश्चर्यम् ।

इ+इन्द्रः=इ इन्द्र; उ+उमेशः=उ उमेशः; अ+अच्युतः=अ अच्युतः ।

आ+एवं किल तत्=आ एवं किल तत् ।

विष्णो+इति=विष्णो इति; विष्णविति ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनुशीलनी

१—निम्नलिखितों में सन्धि कीजिये—

अत्र+आसीत्; प्रति+ईक्षणम्; भानु+उदयः; पितृ+ऋणम्; देव+आलयः; देव+इन्द्रः; गज+इन्द्रः; गण+ईशः; तदा+इति; सदा+एव; गङ्गा+उत्तरम्; जन+एकता; जल+ओघः; प्र+ऋच्छति; प्र+एजते; उप+एति; विश्व+ऊहः; शिव+एहि; दधि+अत्र; वसु+इदम्; मधु+अन्नम्; चै+अकः; ने+अनम्; मातृ+आज्ञा; पितृ+इच्छा; कवी+इमौ; बालिके+इमे; भौ+उकः; गो+यूतिः; हरी+एतौ; हरे+अव; आ+उष्णम्, अनु+अयम्; सुधी+उपास्य; श्री+ईशः; रमा+ईशः; मनस्+ईषा; कर्क+अन्धुः; अक्ष+ऊहिनी; स्व+ईरी; सुख+ऋतः; प्र+ऊढः; पतत्+अञ्जलिः; हरे+एहि; नगरी+ईशः; महा+अनुभूति; परम+आदरः; पो+अनः; रोग+औषधम्।

२—निम्नांकितों में सन्धि-विच्छेद कीजिये—

गवाग्रम्; गवाक्षः; परोक्षः; अन्योन्यम्; रत्नाकरः; लक्ष्मीशः; महेन्द्रः; क्षितीशः; तथेति; मैवम्; अपैति; विश्वौहः; नद्यम्बु; तन्वङ्गी; स्वागतम्; वध्वाचारः; अभ्युदयः; प्रत्येकम्; तथैव; पवित्रः; शयनम्; लाङ्गलीषा; नाव्यम्; उपोषति; लघूर्मिः; प्रतीतिः; कुलटा; मात्रनुभवः; ब्रह्मर्षिः; विद्यैव; महोदयः; जन्मोत्सवः; सरलोर्मिः; प्रजेन्द्रः; नरेशः; परमेश्वरः; जिनेशः; गौतमगणेशः; उपेन्द्रः; इत्यादिः; न्यूनम्; अन्वयः; नायकः; प्रत्यूहः; दध्यानय; देव्यागच्छति; प्रत्येकारः; पित्रनुमतिः; पित्रर्थम्; गवाम्; अभावि; मात्रोजसः; वाप्यश्वः; यवनम्; तन्विन्द्रः; बिम्बोष्ठः।

३—यण्, दीर्घ, वृद्धि, गुण, पररूप और अयादि सन्धियों के नियम लिखिये तथा प्रत्येक के चार-चार उदाहरण दीजिये।

४—सन्धि की परिभाषा लिखिये। प्रगृह्य अथवा नित्य सन्धि के पाँच उदाहरण लिखिये।

५—सन्धि-संयोग; सन्धि-समास और गुण-दीर्घ में सोदाहरण अन्तर स्पष्ट कीजिये।

६—स्वर सन्धि के समस्त भेदों को उदाहरण सहित लिखिये।

७—पूर्वरूप और पररूप सन्धि में क्या अन्तर है? उदाहरणपूर्वक समझाइये।

व्यञ्जन-सन्धि

व्यञ्जन सन्धि—व्यञ्जनवर्ण के साथ व्यञ्जन या स्वर के मिलने से जो विकार होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। यथा—पेष्+ता=पेष्टा; तस्मिन्+इति=तस्मिन्निति। इस सन्धि के नियमों को १४ वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

१ श्चुत्व	८ अनुनासिक
२ ष्टुत्व	९ लत्व
३ जश्त्व (क)	१० पूर्वसवर्ण
४ जश्त्व (ख)	११ छत्व
५ चर्त्व	१२ ङमुडागम
६ अनुस्वार (क)	१३ तुगागम
७ अनुस्वार (ख)	१४ सुडागम

(१) श्चुत्व—

"स्तोः श्चुनाश्चुः"—सकार या तवर्ग का कोई व्यञ्जन शकार चवर्ग के किसी व्यञ्जन के योग में आता हो तो सकार और तवर्ग के स्थान में शकार और चवर्ग के वर्ण हो जाते हैं। यथा—

स्–श्—हरिस्+चिनोति=हरिश्चिनोति; हरिस्+शेते=हरिश्शेते; रामस्+चिनोति= रामश्चिनोति; मुनेस्+छलनम्=मुनेश्छलनम्।

तवर्ग—चवर्ग

सत्+चित्=सच्चित्; शार्ङ्गिन्+जयः=शार्ङ्गिञ्जय।

उत्+छिन्नः=उच्छिन्नः; उत्+ज्वलः=उज्ज्वलः।

तत्+छविः=तच्छविः; एतद्+जलम्=एतज्जलम्।

तद्+झनकारः=तज्झनकारः; महान्+जयः=महाञ्जयः।

गच्छन्+झटिति=गच्छञ्झटिति; याच्+ना=याच्ञा; यज्+नः=यज्ञः।

शत्रून्+जयति=शत्रूञ्जयति; जगत्+जालम्=जगज्जालम्।

तत्+छाया=तच्छाया।

अपवाद—श् के बाद यदि कोई तवर्ग हो तो उसका चवर्ग नहीं होता। यथा— विश्+नः=विश्नः; प्रश्+नः=प्रश्नः।

(२) ष्टुत्व

"ष्टुना ष्टुः"—सकार या तवर्ग के साथ षकार अथवा टवर्ग का योग हो, तो स् के स्थान में ष् और तवर्ग के स्थान में टवर्ग के वर्ण होते हैं। यथा—स्–ष्—रामस्+ षष्ठः=रामष्षष्ठः; रामस्+टीकते=रामष्टीकते।

तवर्ग-टवर्ग

तत्+टीका=तट्टीका; पेष्+ता=पेष्टा; महत्+टीका=महट्टीका।

उत्+डयनम्=उड्डयनम्; चक्रिन्+ढौकसे=चक्रिण्ढौकसे।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अधिष्+थाता=अधिष्ठाता; एतद्+ढक्का=एतड्ढक्का; महान्+डामरः=महाण्डामरः।
आकृष्+तः=आकृष्टः; षष्+थः=षष्ठः; प्रतिष्+था=प्रतिष्ठा।

अपवाद—

(क) पद के अन्तिम टवर्ग के बाद यदि स् या तवर्ग हो तो उसके स्थान पर ष् या टवर्ग नहीं होता। यथा—षट्+सन्तः=षट्सन्तः; षट्+ते=षट् ते।

(ख) यदि पद के बाद नाम्, नवति और नगरी शब्द हो तो ष्टुत्व सन्धि होती है। यथा—षट्+नाम्=षण्णाम्; षट्+नगर्यः=षण्णगर्यः। सर्पिष्+तमम्=सर्पिष्टमम्।

(ग) तवर्ग के बाद ष् हो, तो तवर्ग को टवर्ग आदेश नहीं होता। यथा—सन्+षष्ठः=सन्षष्ठः।

३-४ जश्त्व (क-ख)

"झलां जश् झशि" जब झल्—अन्तःस्थ और अनुनासिक व्यञ्जनों को छोड़ कर अन्य किसी भी व्यञ्जन के पश्चात् झश्—किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण आवे तो पूर्ववर्ती व्यञ्जन अपने वर्ग के जश्—तृतीय वर्ण में परिवर्तित हो जाता है।

"झलां जशोऽन्ते"—पदान्त में स्थित झल् प्रत्याहार—स्वरवर्ण, वर्ग के चतुर्थ या तृतीय वर्ण अथवा य र ल व ह के परे रहने से जश्—वर्ग के तृतीय अक्षर में परिवर्तित हो जाते हैं। आशय यह है कि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद स्वर, वर्ग के तृतीय-चतुर्थ वर्ण, य र ल व ह हों तो क्रमशः ग्, ज्, ड्, द् और ब् में परिवर्तित हो जाते हैं।

क्–ग्

वाक्+ईशः = वागीशः; दिक् + गजः = दिग्गजः; तिर्यक्+गच्छति=तिर्यग्गच्छति
वाक्+दानम्=वाग्दानम्; वाक्+ जालम्= वाग्जालम्।
दिक्+अन्तः=दिगन्तः; दिक्+हस्ती=दिग्घस्ती।
वाक्+दण्डः=वाग्दण्डः; उदक्+अयनम्=उदगयनम्।

च्–ज्

अच्+आदिः=अजादिः; अच्+अन्तः=अजन्तः।
अच्+भवति=अज्भवति; अच्+हीनः=अज्झीनः।

ट्–ड्

षट्+दर्शनानि=षड्दर्शनानि; षट्+आननः=षडाननः।
षट्+विद्वांसः=षड् विद्वांस; षट्+रिपवः=षड्रिपवः।

त्–द्

तत्+घनम्=तद्घनम्; जगत्+ईशः=जगदीशः; जगत्+बन्धुः=जगद्बन्धुः।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

महत्+गृहम्=महद् गृहम् ; महत्+घण्टा=महद् घण्टा ।

प्-ब्

अप्+भाण्डः=अब्भाण्ड; अप्+जम्=अब्जम् ।

सुप्+अन्तः=सुबन्तः; अप्+भागः=अब्भागः; सुप्+अस्ति=सुबस्ति ।

(क) "झयो होऽन्यतरस्याम्"--यदि किसी भी वर्ग के पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ण से परे हकार हो, तो उस वर्ण के स्थान में उसी वर्ग का तृतीय वर्ण और ह के स्थान में उसी वर्ग का चतुर्थ वर्ण विकल्प से होता है। यथा--

वाक्+हसति=वाग्घसति; वाक्+हरिः=वाग्घरिः ।

अच्+हलः=अज्झलः; अच्+ह्रस्वः=अज्झ्रस्वः ।

तत्+हितम्=तद्धितम् ; विपत्+हेतुः=विपद्धेतुः ।

अप्+हरणम्=अब्भरणम् ।

(ख) उत् उपसर्ग से परे स्था और स्तम्भ धातु के स् का लोप होता है । यथा—
उत्+स्थानम्=उत्थानम् ; उत्+स्तम्भनम्=उत्तम्भनम् ।

५ चर्त्व

"खरि च"—अनुनासिक और अन्तःस्थ वर्णोंको छोड़ अन्य किसी भी व्यञ्जन के उपरान्त यदि खर्—क् ख् च् छ् ट् ठ् त् थ् प् फ् श ष स में से कोई वर्ण आवे तो पूर्वोक्त व्यञ्जनों के स्थान में चर्--उसी वर्ग का प्रथम वर्ण हो जाना है । तात्पर्य यह है कि वर्गों के तृतीय और चतुर्थ वर्णों के अनन्तर प्रथम, द्वितीय और श ष स वर्ण रहें तो तृतीय और चतुर्थ वर्णों के स्थान में वर्गों के प्रथम वर्ण हो जाते हैं । यथा--

भयाद्+करोति=भयात्करोति; वृक्षाद्+पतति=वृक्षात्पतति ।

दिग्+पालः=दिक्पालः; विपद्+कालः=विपत्कालः ।

विपद्+कारणम्=विपत्कारणम् ; विराट्+पुरुषः=विराट्पुरुषः ।

उद्+थापकः=उत्थापकः; तज्+शयनम्=तच्शयनम् , तच्छयनम् ।

६ अनुस्वार (क)

"मोऽनुस्वारः"—पद के अन्त में रहने वाले 'म्' के अनन्तर कोई व्यञ्जन वर्ण हो तो म् के स्थान में विकल्प से अनुस्वार होता है। "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"–आगे के अक्षर के वर्ग का पञ्चम वर्ण भी होता है । यथा—

अलम्+कारः=अलंकारः, अलङ्कारः; सम्+गतिः=संगतिः, सङ्गतिः ।

सम्+घर्षः=संघर्षः, सङ्घर्षः; किम्+चित्=किंचित्, किञ्चित् ।

सम्+चयः=संचयः, सञ्चयः; सम्+जयः=संजयः, सञ्जयः ।

सम्+तोषः=संतोषः; सन्तोषः; सम्+देशः=संदेशः सन्देशः, ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(क) पदान्त म् के बाद य र ल व श ष स ह् में से कोई वर्ण हो तो 'म्' के स्थान में अनुस्वार नित्य ही हो जाता है। यथा—

सम्+योगः=संयोगः; सम्+रावः=संरावः, सम्+लापः=संलापः।

सम्+सारः=संसारः; सम्+हारः=संहारः; हरिम्+वन्दे=हरिंवन्दे।

अपवाद—

सम् + राट्=सम्राट्।

७ अनुस्वार (ख)

"नश्चापदान्तस्य झलि"—अपदान्त म्, न् के बाद यदि अनुनासिक व्यञ्जन तथा अन्तःस्थ और ह को छोड़कर कोई भी व्यञ्जन आवे तो म् और न् के स्थान में अनुस्वार होता है। यथा—

आक्रम्+स्यते=आक्रंस्यते; रम्+स्यते=रंस्यते; यशान्+सि=यशांसि।

दन्+शनम्=दंशनम्; पयान्+सि=पयांसि; यम्+स्यति=यंस्यति।

(क) यदि अनुस्वार पद के अन्त में हो तो वर्ग का पञ्चम वर्ण विकल्प से होता है तथा पर में य् ल् व् हो तो क्रमशः अनुनासिक विशिष्ट य् ल् व् होते हैं। यथा—

त्वं+करोषि=त्वङ्करोषि, त्वं करोषि; पुस्तकं+पठति=पुस्तकम्पठति, पुस्तकं पठति। सं+यन्ता=सयँयन्ता संयन्ता; यं+लोकम्=यलँलोकम्, यंलोकम्; वशं+वदः=वशवँवदः, वशंवदः।

८ अनुनासिक

"यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"—पदान्त 'यर्' से परे अनुनासिक वर्ण हो तो 'यर्' के स्थान में विकल्प से अपने वर्ग का अनुनासिक होता है। भाव यह है कि वर्ग के प्रथम वर्ण के आगे कोई अनुनासिक व्यञ्जन हो तो प्रथम वर्ण के स्थान में विकल्प से पञ्चम वर्ण होता है। यथा—

जगत्+नाथः=जगन्नाथः; जगद्नाथः; एतत्+मुरारिः=एतन्मुरारिः, एतद्मुरारिः।

दिक्+नागः=दिङ्नागः, दिग्नागः; वाक्+मात्रम्=वाङ्मात्रम्; वाक्+मयम्=वाङ्मयम्। तत्+मात्रम्=तन्मात्रम्।

जगत्+मात्रम्=जगन्मात्रम्; जगत्+मयम्=जगन्मयम्।

९ लत्व

"तोर्लि"—ल परे रहने पर त् और द् के स्थान में ल् और न् के स्थान में सानुनासिक ल् होता है। यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तत्+लयः=तल्लयः; तद्+लीनः=तल्लीनः; उत्+लेखः=उल्लेखः। उत्+लंघनम्=उल्लंघनम्; तत्+लीला=तल्लीला; शरद्+लीला=शरल्लीला। महान्+लाभः=महाँल्लाभः; विद्वान्+लिखति=विद्वाँल्लिखति।

(क) म् के पश्चात् ल् रहने पर अनुस्वार अथवा चन्द्रविन्दु सहित म् के स्थान में ल् होता है। विकल्प से ल् का लोप भी होता है। यथा—

पुम्+लिङ्गम्=पुंल्लिङ्गम्, पुँल्लिङ्गम्, पुंलिङ्गम्, पुँलिङ्गम्।

(१०) छत्व

"शश्छोऽटि"—त्, द् के बाद श् आवे तो श् के स्थान में छ् हो जाता है। यथा—

सत्+शास्त्रम्=सच्छास्त्रम्; तद्+शरीरम्=तच्छरीरम्।

उत्+शिष्टः=उच्छिष्टः; उत्+श्वासः=उच्छ्वासः; शरद्+शयनम्=शरच्छयनम्।

विपद्+शान्तिः=विपच्छान्तिः; सन्+शम्भुः=सञ्छम्भुः, सञ्शम्भुः।

(११) ङमुडागम

"ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्" यदि पदान्त ङ् ण् न् के पूर्व ह्रस्व स्वर हो और परे कोई स्वर हो तो उक्तवर्णों का द्वित्व होता है। यथा—

प्रत्यङ्+आत्मा=प्रत्यङ्ङात्मा; सुगण्+ईशः=सुगण्णीशः।

सन्+अच्युतः=सन्नच्युतः; कुर्वन्+आस्ते=कुर्वन्नास्ते।

धावन्+अश्वः=धावन्नश्वः; चिन्तयन्+इह=चिन्तयन्निह।

(१२) तुगागम

"छे च"—ह्रस्व स्वर से परे छकार हो तो ह्रस्व स्वर को तुक् (त्) आगम होता है। और त् के स्थान पर श्चुत्व होकर च् हो जाता है—अर्थात् स्वर वर्ण के बाद 'छ' रहने से 'छ' के स्थान में 'च्छ' हो जाता है यथा—

शिव+छाया=शिवच्छाया; परि+छेदः=परिच्छेदः; प्र+छाया=प्रच्छाया।

(क) दीर्घ स्वर से परे भी छकार हो तो तुक् (त्) का आगम होता है; पर पदान्त दीर्घस्वर से परे छकार हो तो विकल्प से तुक् का आगम होता है। यथा—

आ+छादयति=आच्छादयति; मा+छिदत्=माच्छिदत्।

सेनपुरा+छाया=सेनपुराच्छाया; लक्ष्मी+छाया=लक्ष्मीच्छाया।

(१३) सुडागम

"संपरिभ्यां करोतौ भूषणे" 'सम्' उपसर्ग के बाद 'कृ' धातु का प्रयोग हो तो नित्य ही म् के स्थान में अनुस्वार या अनुनासिक हो जायेगा और आगे 'स्' का

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

आगम होता है; किन्तु परि उपसर्ग के बाद 'कृ' के प्रयोग में 'ष' का आगम होता है।

सम्+कारः=संस्कारः, सँस्कारः; सम्+कृतम्=संस्कृतम्, सँस्कृतम्।

परि+कारः=परिष्कारः।

१४ "पुमः खय्यम्परे—पुम् शब्द के बाद वर्गों के प्रथम, द्वितीय अक्षर रहने पर 'स्' का आगम हो जाता है। यथा—

पुम्+कोकिलः=पुंस्कोकिलः, पुँस्कोकिलः; पुम्+पुत्र=पुंस्पुत्रः, पुँस्पुत्रः।

१५ "सम्पुंकानां सो वक्तव्यः"—सम्, पुम् और कान् इन तीनों शब्दों के म् के स्थान में रेफ होता है, रेफ के स्थान में विसर्ग और विसर्ग के स्थान में नित्य सकार होता है। यथा—

सम्+कर्ता=सँस्स्कर्त्ता, संस्स्कर्त्ता; सम्+कारः=सँस्स्कारः, संस्स्कारः।

पुम्+चरित्रम्=पुँश्चरित्रम्, पुंश्चरित्रम्; पुम्=टीका=पुँष्टीका, पुंष्टीका।

कान्+कान्=काँस्कान्, कांस्कान्।

अनुशीलनी

(१) निम्नाङ्कित पदों में सन्धि कीजिए—

हरिः+शेते; षष्+थः; सत्+चित्+आनन्दः; उत्+छिन्नः; एतत्+जालम्; उत्+ज्वलः; तत्+छविः; तत्+शोभा; आकृष्+तः; प्रतिष्+था; अधिष्+था; विद्वत्+जनः; बृहत्+वनम्; अप्+जम्; वाक्+दण्डः; उत्+हारः; वाक्+हरिः; तत्+भवः; तत्+हितम्; महत्+चक्रम्; सत्+शास्त्रम्; तत्+लीला; हसन्+उत्थितः; शत्रुम्+जयः; विपद्+कालः; मुनिः+चिनोति; भवान्+लभते; महान्+लाभः; मधुरम्+वदति; किम्+करोति; ककुभ्+पातः; दिग्+पालः; अप्+आशयः; त्वक्+इयम्; जगत्+अन्तः; एतत्+धनुः; एतत्+हेतुः; उत्+टङ्कनम्; दिक्+नागः; महत्+छत्रम्; सत्+ठक्कुरः; जलम्+नयति; योषित्+माया; जगत्+नाथः; पुम्+कोकिलः; सन्+अच्युतः।

(२) सन्धिविच्छेद कीजिए—

कुवन्नास्ते; पेष्टा; नरष्षष्ठः; वार्गीशः; अजन्तः; सुबन्तम्; पद्धतिः; दिग्घासः; उच्छ्वासः; उच्छिष्टः; वाङ्मात्रम्; उल्लङ्घनम्; शरल्लीला; संहारः; सशयः; यंस्यात; सम्राट्; संलापः; सञ्चयः; सन्देशः; आच्छादयति; वाग्दानम्; हरुन्नागतः; लिप्सा; पयस्पाशम्; अग्निचिल्लुनाति; आच्छाया; चिन्मयम्; यज्ञः; राज्ञी; तानुवाच; सन्नच्युतः; वाञ्छति; तल्लीनः; सन्षष्ठः; अज्झलः; उत्झलः, उत्थानम्, प्रश्नः, महाण्डामरः, तट्टीका, रामष्टीकते, तच्छविः, याञ्चा, प्रतिष्ठा, षष्ठः, तद्धितम्, हसंश्चलति, स्मरन्नुवाच, तन्नीरम्, दिग्गजः, अम्मानम्, भवन्मतम्, माच्छिदत्, धनं ददाति, रंस्यते, पतंस्तरुः, पश्यंश्च-कितः, तज्झंकारः, बृहल्ललाटम्, महानाग्रहः।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(३) श्चुत्व, ष्टुत्व और अनुस्वार सन्धियों को उदाहरण सहित लिखिए ।

(४) वर्ग के प्रथम वर्ण के स्थान पर तृतीय वर्ण किन-किन स्थितियों में होता है, सोदाहरण समझाइये ।

(५) जशत्व के पाँच उदाहरण लिखिए ।

(६) 'खरि च' और 'स्तोः श्चुना श्चुः' सूत्रों का उदाहरण सहित अर्थ लिखिए ।

(७) लत्व, छत्व और तुगागम सम्बन्धी नियमों को उदाहरण सहित लिखिए ।

विसर्ग-सन्धि

विसर्ग-सन्धि—विसर्ग के साथ स्वर वर्ण या व्यञ्जन वर्ण के मिलने से जो विकार होता है, उसे विसर्ग या विसर्जनीय सन्धि कहते हैं। विसर्ग सन्धि के नियमों को निम्न-लिखित वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

(१) सत्व—विसर्ग के स्थान पर श् ष् और स् का आदेश ।

(२) रुत्व—विसर्ग के स्थान पर रेफ ।

(३) उत्व—विसर्ग के स्थान पर उत्व ।

(४) जिह्वामूलीयत्व—विसर्ग के स्थान पर जिह्वामूलीय और उपध्मानीय ।

(५) यत्व और यलोप—विसर्ग के स्थान पर य और विकल्प से यकार का लोप ।

(६) विसर्ग का लोप—विसर्ग के लोप सम्बन्धी नियम ।

(७) रेफलोप-दीर्घभाव—रेफ का लोप और पूर्वस्वर के दीर्घ सम्बन्धी नियम ।

(१) सत्व

"विसर्जनीयस्य सः"—च् छ् परे रहने से विसर्ग के स्थान में श्, ट् ठ् परे रहने से ष् और त् थ् परे रहने से स् होता है। यथा—

पूर्णः+चन्द्रः=पूर्णश्चन्द्रः, प्रियः+छात्रः=प्रियश्छात्रः ।
हरिः+ठक्कुरः=हरिष्ठक्कुरः, रामः+टीकते=रामष्टीकते ।
निम्बः+तरुः=निम्बस्तरुः, नद्याः+तीरम्=नद्यास्तीरम् ।

(क) **"वा शरि"**—यदि विसर्ग के बाद श्, ष् और स् आवे तो विसर्ग के स्थान में विकल्प से श्, ष् और स् होता है। यथा—

सुप्तः+शिशुः=सुप्तश्शिशुः, सुप्तःशिशुः हरिः+शेते=हरिश्शेते, हरिः शेते । मत्तः+षट्पदः=मत्तष्षट्पदः, मत्तः षट्पदः ; बालः+षष्ठ=बालष्षष्ठः, बालः षष्ठः ; सर्पः+सरति=सर्पस्सरति, सर्पः सरति; निः+सरति=निस्सरति, निःसरति ।

(ख) **"नमस्पुरसोर्गत्योः**—क ख प फ के परे गति संज्ञक नमस् और पुरस् शब्द सम्बन्धी विसर्ग के स्थान में दन्त्य 'स्' होता है। यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

नमः+करोति=नमस्करोति, नमः+कारः=नमस्कारः ।
पुरः+कारः=पुरस्कारः, पुरः+करोति=पुरस्करोति ।

(ग) "तिरसोऽन्यतरस्याम्"—क ख प फ के परे तिरस् शब्द सम्बन्धी विसर्ग के स्थान पर विकल्प से 'स्' होता है । यथा—
तिरः+करोति=तिरस्करोति, तिरःकरोति, तिरः+कार=तिरस्कारः, तिरःकारः ।

(घ) कार, कर, काम, कान्त, कंस, कुम्भ, पात्र, कुशा और कर्णी शब्द के पर में रहने पर विसर्ग के स्थान में दन्त्य 'स्' होता है । अधस् और शिरस् शब्दों के विसर्ग के स्थान पर सकार हो जाता है । पाश, कल्प, काम्य, क आदि पर में रहने पर अस् भागान्त शब्दों के विसर्ग के स्थान पर स् होता है, किन्तु 'सर्पिष्' शब्द के बाद में आने पर 'ष्' हो जाता है । यथा—
अयः+कारः=अयस्कारः, श्रेयः+करः=श्रेयस्करः, अयः+कामः=अयस्कामः ।
अयः+कान्तः=अयस्कान्तः, अयः+कंसः=अयस्कंसः, पयः+कुम्भः=पयस्कुम्भः ।
पयः+पात्रम्=पयस्पात्रम्, अयः+कुशा=अयस्कुशा, अयः+कर्णी=अयस्कर्णी ।
अधः+पदम्=अधस्पदम्, शिरः+पदम्=शिरस्पदम् ।
पयः+पाशम्=पयस्पाशम्, यशः+कल्पम्=यशस्कल्पम् ।
यशः+काम्यः=यशस्काम्यः, यशः+कम्=यशस्कम् ।
सर्पिः+पाशम्=सर्पिष्पाशम्, सर्पिः+कल्पम्=सर्पिष्कल्पम् ।
सर्पिः+करोति=सर्पिष्करोति, सर्पिःकरोति ।

(ङ) क्, ख्, प्, फ् के परे रहने पर इस् और उस् भागान्त अव्ययों के विसग के स्थान में 'ष्' हो जाता है । समास में भी विसर्ग के स्थान पर मूर्धन्य 'ष्' होता है । यथा—
निः+कपटः=निष्कपटः, निः+कण्टकम्=निष्कण्टकम् ।
निः+कृतम्=निष्कृतम्, दुः+कृतम्=दुष्कृतम् ।
बहिः+कृतम्=बहिष्कृतम्, दुः+कृतिः=दुष्कृतिः ।
निः+खातम्=निष्खातम्, दुः+खननम्=दुष्खननम् ।
निः+पापम्=निष्पापम्, निः+फलम्=निष्फलम् ।
दुः+प्रवृत्तिः=दुष्प्रवृत्तिः, दुः+प्रकृतिः=दुष्प्रकृतिः ।
सर्पिः+कुण्डिका=सर्पिष्कुण्डिका, हविः+कृष्णम्=हविष्कृष्णम् ।
धनुः+खण्डम्=धनुष्खण्डम्, धनुः+काण्डम्=धनुष्काण्डम् ।
धनुः+पाणिः=धनुष्पाणिः, धनुः+कपालम्=धनुष्कपालम् ।

(च) क्, ख्, प्, फ् के परे तिरस् शब्द सम्बन्धी विसर्ग के स्थान पर विकल्प से 'स्' होता है । यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तिरः+करोति=तिरस्करोति, तिरःकरोति, तिरः+कारः=तिरस्कारः तिरःकारः ।

अपवाद—

विसर्ग के पहले अ और बाद में क्, ख्, प्, फ् रहें तो विसर्ग का विसर्ग ही रह जाता है । यथा—

कः+करोति=कः करोति, रामः+खनति=रामः खनति ।

श्यामः+पतति= श्यामः पतति, वृक्षः+फलति=वृक्षः फलति ।

विशेष—

भाः+करः=भास्करः

(२) रुत्व

"ससजुषोरुः"—पदान्त सकार तथा सजुष् शब्द के षकार के स्थान में रु (र्) होता है । आशय यह है कि विसर्ग के पहले अ, आ को छोड़कर दूसरा कोई स्वर हो और विसर्ग से परे स्वर वर्ण, वर्ग का तृतीय, चतुर्थ और पञ्चम वर्ण अथवा य् र् ल् व् ह् हों तो विसर्ग के स्थान में 'र्' होता है । यथा—

कविः+अयम्=कविरयम्, रविः+उदेति=रविरुदेति ।

निः+धनः=निर्धनः, वायुः+वाति=वायुर्वाति ।

शिशुः+हसति=शिशुर्हसति, निः+झरः=निर्झरः ।

निः+गुणः=निर्गुणः, निः+यातः=निर्यातः ।

निः+वचनम्=निर्वचनम्, निः+अर्थः=निरर्थः ।

(३) उत्व

"हशि च"—हश्—वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण य, र, ल, व और ह के परे रहने पर प्लुत अकार से पर स सम्बन्धी 'र्' के स्थान पर उ होता है । अभिप्राय यह है कि विसर्ग के पहले अ और विसर्ग के बाद तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण य् र् ल् व् ह् हों तो अ और विसर्ग के स्थान में 'ओ' हो जाता है । यथा—

शोभनः+गन्धः=शोभनो गन्धः, नूतनः+घटः=नूतनो घटः, देवः+गच्छति=देवो गच्छति।

कृष्णः+जयति=कृष्णो जयति, मधुरः+झङ्कारः=मधुरो झङ्कारः ।

निर्वाणः+दीपः=निर्वाणो दीपः, मृगः+धावति=मृगो धावति ।

मनः+भावः=मनोभावः, नरः+याति=नरो याति ।

मनः+रथः=मनोरथः, यशः+लभते=यशो लभते ।

बालः+हसति=बालो हसति, शीतः+वायुः=शीतो वायुः ।

रामः+गच्छति=रामो गच्छति, अधः+गतिः=अधो गतिः ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अहः+रात्रः=अहोरात्रः, तपः+वनम्=तपोवनम् ।

यशः+दा=यशोदाः, शिवः+वदति=शिवो वदति ।

(क) पद के अन्त में स्थित विसर्ग के पहले अ हो और बाद में भी अ हो तो प्रथम अ और विसर्ग मिलकर ओ हो जाता है और बाद वाले अ का लोप होकर उसके स्थान पर खण्डाकार ऽ होता है । यथा—

कः+अत्र=कोऽत्र, शिवः+अत्र=शिवोऽत्र ।

शिवः+अर्च्यः=शिवोऽर्च्यः, नरः+अयम्=नरोऽयम् !

वेदः+अधीतः = वेदोऽधीतः, देवः+अयम् = देवोऽयम् ।

(४) जिह्वामूलीय और उपध्मानीय

"कुप्वो ≍ क ≍पौ च"—यदि विसर्ग के बाद क ख प फ में से कोई वर्ण आवे तो विसर्ग के स्थान में विसर्ग ही बना रहता है अथवा क ख के आगे रहने पर जिह्वा-मूलीय (≍) तथा प फ के आगे रहने पर उपध्मानीय (≍) हो जाता है । यथा—

कः+करोति=क ≍ करोति, कः करोति, कः+खनति = क ≍ खनति कःखनति ।

कः+पचति=क ≍ पचति, कः पचति, कः+फलति=क ≍ फलति, कः फलति ।

(५) यत्व और यलोप

"भोभगो अघो अ पूर्वस्य योऽशि"—भो, भगो अघो और अ शब्दों के अनन्तर रहने वाले विसर्ग के बाद वर्गों का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण तथा य र ल व ह रहें तो विसर्ग सम्बन्धी रु के स्थान में यकार होता है और यकार का लोप हो जाता है यथा–

भोः+देवाः=भो+य्+देवाः = भोदेवाः, भगोः+नमस्ते = भगो य् नमस्ते=भगो नमस्ते

अघोः+याहि=अघो य् याहि=अघो याहि ।

(६) विसर्ग लोप—

(क) विसर्ग के पहले आ और विसर्ग के परे स्वर वर्ण, वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण अथवा य् र् ल् व् ह् हों तो विसर्ग का लोप होता है । यथा—

अश्वाः+अमी=अश्वा अमी, हताः+गजाः =हता गजाः ।

अश्वाः+धावन्ति = अश्वा धावन्ति, उन्नताः+नगाः=उन्नता नगाः ।

नराः+लभन्ते = नरा लभन्ते, वाताः+वान्ति = वाता वान्ति ।

बालकाः+हसन्ति = बालका हसन्ति, देवाः+अत्र = देवा अत्र ।

जनाः+वदन्ति = जना वदन्ति, नराः+गीताः = नरा गीताः ।

(ख) अ के बाद वाले विसर्ग के बाद अ को छोड़कर कोई स्वर रहे तो विसर्ग लुप्त हो जाता है । यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

रामः+आगतः = राम आगतः, नरः+इव = नर इव ।

अतः+एव=अत एव , सूर्यः+उदेति = सूर्य उदेति ।

अपवाद—

पुनः, प्रातः, अन्तः, दुः, निः प्रभृति शब्दों से तथा ऋकारान्त शब्दों के सम्बोधन एक वचन के रजात विसर्ग का न तो लोप होता है और न पूर्वस्थित अ के साथ मिल कर ओ होता है, किन्तु **'जलतुम्बिकान्यायेन'** रेफ का ऊर्ध्वगमन हो जाता है । यथा–

प्रातः+गमनम् = प्रातर्गमनम् , पुनः+धर्मः=पुनर्धर्मः ।

निः+जलम् = निर्जलम् , दुः+झनत्कारः = दुर्झनत्कारः ।

पुनः+अपि=पुनरपि, प्रातः+एव=प्रातरेव ।

स्वः+गतः=स्वर्गतः, दुः+गमनम्=दुर्गमनम् ।

दुः+जनः=दुर्जनः, दुः+आशा=दुराशा ।

निः+गुणः=निर्गुणः; दुः+उपयोगः=दुरुपयोगः ।

पुनः+गमनम्=पुनर्गमनम् ; अहः+गणः=अहगणः ।

भानुः+उदेति=भानुरुदेति; अहः+अहः=अहरहः ।

(७) रेफलोप-दीर्घभाव

"रोरि"—रेफ के परे रेफ् का लोप होता है ।

"ढ्लोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"—र् के बाद र् आवे और ढ् के बाद ढ् आवे तो र् और ढ् का लोप हो जाता है और पूर्व में आये हुए अ इ उ यदि ह्रस्व स्वर हों तो वे दीर्घ हो जाते हैं । यथा—

पुनः+रमते=पुना रमते; हरिः+रम्य=हरी रम्यः ।

शम्भुः+राजते=शम्भूराजते; अन्तः+राष्ट्रियः=अन्ताराष्ट्रियः ।

हरिः+रक्षति=हरी रक्षति; निः+रसः=नीरसः; निः+रोगः=नीरोग ।

विधुः+राजते=विधूराजते; गुरुः+रुष्टः=गुरूरुष्टः; निः+रवः=नीरवः ।

अनुशीलनी

१—विसर्ग सन्धि के नियमों का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए ।

२—सन्धि-विच्छेद कीजिए—

निश्चलः, मनस्तापः; निर्गुणः, निर्विकारः; दुरुपयोगः, निस्सरति, पुनारमते, नीरवः, नीरसः, विधूराजते, राम आगतः, नरो ददाति, यशोदा, पयोदः, अहोरात्रः, मनोरथः, तपोवनम्, शिवोऽयम् , बालो हसति, निष्कण्टकम्, निष्कारणम् , निष्कलम्, निश्छलः, पुरस्कारः, भास्करः, शिरस्पदम् , अयस्कारः, दुष्कृतिः, निष्पापम् , निष्कपटः, तेजोमयः,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

इन्द् राजते, पूर्णो घटः, चतुष्टयम्, अहोरूपम्, अयस्कान्तः, सुन्दरो नरः, एष बालकः, अहरहः, सर्पिष्कम्, बहिष्कृतम्।

३—सनियम सन्धि कीजिए—

सुप्तः+शिशुः, गौः+गच्छति, सः+अहम्, वायुः+चलति, उन्नतः+तरुः, निः+क्रमः, नरः+याति, पयः+दः, निः+गुणः, चतुः+कपालम्, भ्रातुः+पुत्रः, भुवः+लोकः, दुः+कर्म, अश्वः+धावति, निः+तारः, मनः+अवधानम्, निः+णयः, यशः+कल्पम्, निः+आकारः, निः+ईहः, गुरुः+राजते, अधः+कृतम्, गीः+कारः, वासः+ छादयति, शिष्यः+अत्र, कः+आस्ते, सः+उत्सवः, हरिः+ शेते, नरः+इव, नूतनः+घटः,

४–विसर्ग का लोप किस-किस अवस्था में होता है, इसके प्रमुख नियमों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

५–विसर्ग के पहले आ और विसर्ग के परे स्वर वर्ण रहने पर विसर्ग की क्या अवस्था रहेगी ? सोदाहरण व्याखया कीजिए।

६–विसर्ग के स्थान पर मूर्धन्य 'ष', किस स्थिति में होता है, सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

७–विसर्ग के स्थान में ओकार किस अवस्था में उत्पन्न होता है, इसके चार उदाहरण लिखिए।

णत्वविधान

(नकार का णकार में परिवर्त्तन)

(१) **"रषाभ्यां नो णः समानपदे"**—एक ही वाक्य में ऋ, ॠ, र्, या ष्, के बाद न् आवे तो न् के स्थान में ण्, होता है। यथा—

नृ+नाम्=नृणाम् ; तिसृ+नाम्=तिसृणाम् ; भ्रातॄ+नाम्=भ्रातॄणाम्।

पितॄ+नाम्=पितॄणाम् ; पूष्+ना=पूष्णा; कृष्+नः=कृष्णः।

चतुर्+नाम=चतुर्णाम्।

"(२) अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि"—यदि र्, ष्, ऋ, ॠ और न् के बीच में कोई स्वर; य्, व्, र्, ह्, कवर्ग, पवर्ग और अनुस्वार में से कोई एक वर्ण अथवा अनेक वर्ण हों तो 'न्' के स्थान में 'ण्' होता है। **यथा—**

गर्वे+न=गर्वेण; रवि+ना=रविणा; द्रव्ये+न=द्रव्येण; रामे+न=रामेण।

हरी+नाम्=हरीणाम् ; मृगे+न=मृगेण; पुरुषे+न=पुरुषेण।

दीर्घे+न=दीर्घेण; आर्षे+न=आर्षेण; अर्के+न=अर्केण।

पुनर्भू+नाम्=पुनर्भूणाम् ; प्रभु+ना=प्रभुणा; श्रीकामे+न=श्रीकामेण।

परि+पाकेन=परिपाकेण; दुर्+गमेन=दुर्गमेण।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

व्रीहि+वनम्=व्रीहिवणम् ; व्रीहिवनम् ; दूर्वा+वनम्=दूर्वावणम् , दूर्वावनम् ।
नीवार+वनम्=नीवारवणम् ; लोध्र+वनम्=लोध्रवणम् ।
बदरी+वनम्=बदरीवणम् , बदरीवनम् ; जम्बीर+वनम्=जम्बीरवणम् ।

(३) शर, इक्षु, प्लक्ष, आम्र, खदिर आदि शब्दों के परे वन शब्द के न कार के स्थान पर णकार होता है । यथा—

शर+वनम्=शरवणम् ; प्लक्ष+वनम्–प्लक्षवणम् ; आम्र+वनम्–आम्रवणम् ।
इक्षु+वनम्–इक्षुवणम् ; खदिर+वनम्–खदिरवणम् ; प्र+वनम्–प्रवणम् ।
निर्+वनम्–निर्वणम्, अन्तर्+वनम्–अन्तर्वणम् , कार्ष्य+वनम्–कार्ष्यवणम् ।
इक्षु+वाहनम्–इक्षुवाहणम् , क्षीर+पानाः–क्षीरपाणाः उशीनराः ।
सुरा+पानाः–सुरापाणाः ।

(४) प्र, पूर्व, अपर इत्यादि शब्दों के परे अह्न शब्द के नकार के स्थान पर णकार होता है । यथा—

प्र+अह्नः–प्राह्णः, पूर्व+अह्नः–पूर्वाह्णः, अपर+अह्नः–अपराह्णः ।

(५) पर, पार, उत्तर, चान्द्र और नार शब्दों के परे अयन शब्द के नकार को णकार होता है । यथा—

पर+अयनम्–परायणम् , पार+अयनम्–पारायणम् , उत्तर+अयनम्–उत्तरायणम् ।
चान्द्र+अयनम्–चान्द्रायणम् , नार+अयनः–नारायणः ।

(६) प्र, द्रु, खर और वार्ध्री के परे नस् शब्द के नकार के स्थान पर णकार होता है यथा—

प्र+नसः–प्रणसः, द्रु+नसः–द्रुणसः, वार्ध्री+नसः–वार्ध्रीणसः ।

(७) गिरि नदी, स्वर् नदी इत्यादि के नकार के स्थान पर णकार आदेश होता है । यथा—

गिरि+नदी–गिरिणदी, गिरिनदी; स्वर्+नदी–स्वर्णदी, स्वर्नदी ।
गिरि+नितम्बः-गिरिणितम्बः, गिरिनितम्बः; गिरि+नखः–गिरिणखः, गिरिनखः ।
गिरि+नद्धः–गिरिणद्धः, गिरिनद्धः; चक्र+नदी–चक्रणदी, चक्रनदी ।
चक्र+नितम्बः–चक्रणितम्बः, चक्रनितम्बः; माषो+नः–माषोणः ।

(८) प्र, परा, परि, और निर् इन चार उपसर्गों के परे नद्, नम, नश्, नह्, नी, नु, नुद्, अन् और हन् धातुओं के नकार के स्थान पर णकार होता है । यथा—

प्र+नदति–प्रणदति, प्र+नमति–प्रणमति, परि+नमति–परिणमति ।
परि+नामः–परिणामः, प्र+नश्यति–प्रणश्यति, परि+नाहः–परिणाहः ।
प्र+नोदः–प्रणोदः, प्र+नयति–प्रणयति, प्र+नयः–प्रणयः ।

(९) गद्, पत्, दा, धा, हन्, नद्, प्रद्, दान, दो, दे, सो, धे, मा, या, द्रा,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

प्ला, वप्, शम्, वह्, चि, दिह् धातुओं के पूर्ववर्ती नि उपसर्ग के नकार के स्थान में णकार होता है। यथा—

प्रनि+गदति–प्रणिगदति, प्रनि+पतति–प्रणिपतति, प्रनि+पातः–प्रणिपातः।

प्रनि+धानम्=प्रणिधानम्, प्रनि+हन्ति=प्रणिहन्ति।

(१०) धातु के पहले प्र, परा, परि, निर् ये चार उपसर्ग या अन्तर् शब्द हो तो कृत् प्रत्यय के न् का ण होता है। यथा—

प्र+यानम्=प्रयाणम्, प्र+हानम्=प्रहाणम्।

प्रवह+मानः=प्रवहमाणः, प्र+मानम्=प्रमाणम्।

(११) जिन धातुओं के पहले व्यञ्जन वर्ण हों और अन्त्य वर्ग के पहले अ आ से भिन्न स्वर हो तो उनके परे कृत् प्रत्यय के न् का विकल्प से ण् होता है। ण्यन्त धातु के परे कृत् प्रत्यय के न् का विकल्प से ण् होता है। यथा—

प्रकोप+नम्=प्रकोपणम्, परिगोप+नम्=परिगोपणम्।

प्र+या+नम्=प्रयाणम्; प्रयाप+नीयम्=प्रयापणीयम्।

प्रवाह+नम्=प्रवाहणम्।

(१२) निस्, निज्, नन्दि इन तीनों धातुओं के न् के स्थान पर विकल्प से ण् होता है। यथा—

प्रनिसि+तव्यम्=प्रणिसितव्यम्, प्रनिज्+नम्-प्रणिज्णम्।

प्र+निन्द+ति=प्रणिन्दति।

(१३) हिनु और मीना धातु के नकार के स्थान पर णकार होता है। यथा—

प्रहिनो+ति=प्रहिणोति, प्र+मीना+ति=प्रमीणाति।

निम्नलिखित शब्दों में स्वाभाविक ण है—

वाणी, तूणीर, वेणी, मणि, फणि, लवण, कोण, कल्याण, वीणा, गोणी, घोणी, पण, स्थाणु, पुण्यम्, विषाणम्, माणिक्यम्, गुण, गण, गणिका, वेणु, निर्वाण, क्वण, किण, वणिज्, कङ्कणम्, पाणि, पिणाक, चाणक्य इत्यादि।

षत्वविधान

(स का ष में परिवर्तन)

(१) "आदेशप्रत्यययोः"—अ आ छोड़कर स्वर, अन्तःस्थ वर्ण, ह अथवा कवर्ग के अनन्तर कोई प्रत्यय सम्बन्धी स अथवा किसी दूसरे वर्ण के स्थान में आदेश किया गया स आवे और वह पदान्त में न हो तो उसके स्थान में मूर्धन्य ष् होता है। यथा—

मुनि+सु=मुनिषु, रामे+सु=रामेषु, नदी+सु=नदीषु।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ए+साम्=एषाम्, अन्ये+साम्=अन्येषाम्, मति+सु=मतिषु।
वधू+सु=वधूषु, गो+सु=गोषु, मुनिसु=मुनिषु।

अपवाद—

अग्नि+सात्=अग्निसात्, धूलि+सात्=धूलिसात्, वायु+सात्=वायुसात्।

(२) "नुम् विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि"—अ आ भिन्न स्वर, कवर्ग, र् अथवा ह् और स् के मध्य में अनुस्वार, विसर्ग तथा श् ष् स् का व्यवधान होने पर भी दन्त्य स् के स्थान में मूर्धन्य ष् होता है। यथा—

धनून्+सि=धनूंषि, हर्वीं+सि=हर्वींषि, आशीः+सु=आशीःषु।

(३) नाम समझे जाने वाले अ आ भिन्न स्वर के परे सेन शब्द के स के स्थान पर षत्व होता है।

सु+सेनः=सुषेणः, हरि+सेनः=हरिषेणः, मधु+सेनः=मधुषेणः।

अपवाद—

पुम्+सु=पुंसु।

कुरु+सेना=कुरुसेना, यदु+सेना=यदुसेना, कपि+सेना=कपिसेना (नाम वाचक न होने के कारण षत्व नहीं हुआ।)

(४) युधि शब्द से परे स्थिर शब्द के स् के स्थान पर तथा भूमि और दिवि शब्दों के परे स्थ शब्द के सकार के स्थान पर षत्व होता है। यथा—

भूमि+स्थः=भूमिष्ठः, दिवि+स्थः=दिविष्ठः।

युधि+स्थिरः=युधिष्ठिरः।

(५) समास होने पर मातृ और पितृ शब्दों के परे स्वसृ शब्द के प्रथम स् के स्थान पर षत्व होता है। यथा—

मातृ+स्वसा=मातृष्वसा, पितृ+स्वसा=पितृष्वसा।

(६) नि, वि, परि, प्रति, अति, अधि, अपि, सु, अनु उपसर्गों से परे सु, सू, सो, स्तु, स्तुभ्, स्था, सेनि, सिध्, सिच्, सञ्ज्, स्वञ्ज्, सद् और स्तम्भ धातुओं के स के स्थान पर षत्व होता है। यथा—

अभिषुनोति, अभिषुवति, अनुषुवति, अधिष्यति, अभिष्टौति, अधिष्ठास्यति, अभिषेणयति, प्रतिषेधति, अनुषेचति, निषिञ्चति, निषजति, अनुषजति, विषीदति, अनुषीदति। निषेधति, परिषेवते, निषेवते, विषहते।

(७) परिपूर्वक स्कृ धातु के स् का षत्व होता है। यथा—

परिष्करोतिः, परिष्कारः।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(८) अनु, वि, परि, अभि, नि पूर्वक स्यन्द् धातु के स् के स्थान पर विकल्प से षत्व होता है। यथा—अनुष्यन्दते–अनुस्यन्दते–विष्यन्दते–विस्यन्दते–निष्यन्दते–निस्यन्दते।

(९) सु, वि, निर्, दुर् के परे स्वप् के सकार को षत्व होता है। यथा—
सुषुप्तः, विषुप्तः, निःषुप्तः, दुःषुप्तः।

(१०) इकारान्त और उकारान्त उपसर्ग तथा प्रादुः शब्द के परे अस् धातु के स् के स्थान पर षत्व होता है। यथा—
निषन्ति, प्रतिषन्ति, अधिषन्ति, प्रादुष्षन्ति।

(११) उस् प्रत्यय परे रहने पर वस् धातु के स् का षत्व होता है। यथा—
उषितः, उषितवान्, ऊषतुः, ऊषुः।

(१२) समास होने पर अंगुलि शब्द के परे सङ्ग शब्द के स् के स्थान पर षत्व होता है। यथा—अंगुलिषङ्गः।

(१३) सु, निर्, दुर्, उपसर्ग से परे सम शब्द के सकार के स्थान पर षत्व होता है। यथा—सुषमः, सुषमा, दुःषमः, दुःषमा, विषमा।

(१४) नि, निर्, वि पूर्वक स्फुर और स्फुल धातु के सकार के स्थान पर विकल्प से षत्व होता है। यथा—
निष्फुरति, निस्फुरति; विष्फुरति, विस्फुरति; निष्फुलति, निस्फुलति; विष्फुलति, विस्फुलति।

(१५) सह् धातु के बने साह् शब्द का साट् और साड् हुआ हो तो स् के स्थान पर षत्व होता है। यथा—
तुराषाट्, तुराषाड्, तुराषाट्सु।

(१६) सद् प्रत्यय का स् रहे तो धातु के स् को षत्व होता है। यथा—
तिष्ठासति, सुषुप्सति, सिषासति!

निम्नाङ्कित शब्दों में स्वाभाविक षत्व है—

आषाढः, इक्षुः, ईषत्, उत्कर्ष, औषधः, कोषः, दोषः, द्वेषः, भीष्मः, महिषः, मेषः, मेषः, मूषिका, वृषा, वर्षः, षोडशः, पुरुषः, विषयः, षष्, हर्षः, पाषाणः, कष्टम्, वाष्पः।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तृतीयोऽध्यायः

सुबन्त प्रकरण या शब्दरूप

भाषा का आधार वाक्य है और वाक्य का आधार शब्द। शब्दों की रचना वर्णों के मेल से होती है। संस्कृत में सार्थक शब्द की पदसंज्ञा है, व्याकरण शास्त्र में इसी का विवेचन किया जाता है। पद के दो भेद हैं—सुबन्त और तिङन्त। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और अव्यय को सुबन्त तथा क्रियाओं को तिङन्त कहा जाता है।

प्राचीन वैयाकरणों ने तीन प्रकार के शब्द माने हैं—नाम, आख्यात और अव्यय। नाम को प्रातिपदिक कहा जाता है, और इनके साथ सुप् प्रत्यय लगाने से संज्ञापद बनते हैं। प्रत्येक संज्ञा के पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग ये तीन लिङ्ग होते हैं।

संस्कृत भाषा में लिङ्ग के समान वचन भी तीन हैं—एकवचन, द्विवचन और बहुवचन। संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं—उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और प्रथम पुरुष। प्रथम पुरुष को अन्य पुरुष भी कहा जाता है। इस भाषा में प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी ये सात विभक्तियाँ होती हैं। सम्बोधन की गणना प्रथमा विभक्ति में की जाती है।

विभिन्न विभक्तियों को प्रकट करने के लिए प्रातिपदिकों में जो प्रत्यय लगाये जाते हैं, उन्हें सुप् कहते हैं। विभक्तियों की आकृतियाँ निम्न प्रकार हैं—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	अर्थ
प्रथमा	सु (:)	औ	जस् (अः)	ने
द्वितीया	अम्	औट् (औ)	शस् (अः)	को
तृतीया	टा (आ)	भ्याम्	भिस् (भिः)	से, के द्वारा
चतुर्थी	ङे (ए)	भ्याम्	भ्यस् (भ्यः)	के लिए
पञ्चमी	ङसि (अः)	भ्याम्	भ्यस् (भ्यः)	से
षष्ठी	ङस् (अः)	ओस् (ओः)	आम्	का, की, के
सप्तमी	ङि (इ)	ओस् (ओः)	सुप् (सु)	में, से, पर
सम्बोधन	सु	औ	जस् (अः)	

शब्दभेद—संस्कृत में शब्द दो प्रकार के हैं—स्वरान्त या अजन्त और व्यञ्जनान्त या हलन्त। स्वरान्तों में सभी अकारान्त शब्द पुंल्लिङ्ग या नपुंसकलिङ्ग ही होते हैं।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

आकारान्त शब्दों के कुछ शब्दों को छोड़ अवशेष सभी शब्द प्रायः स्त्रीलिङ्ग होते हैं। इकारान्त शब्द तीनों लिङ्गों में पाये जाते हैं। दीर्घ ईकारान्त शब्द भी प्रायः स्त्रीलिङ्ग होते हैं। उकारान्त शब्द तीनों लिङ्गों में मिलते हैं। ऊकारान्त शब्द पुंल्लिङ्ग या स्त्रीलिङ्ग होते हैं। ऋकारान्त शब्दों में मातृ, स्वसृ, ननान्द आदि सम्बन्ध वाचक शब्दों को छोड़, अवशेष पुंल्लिङ्ग हैं। व्यञ्जनान्त शब्दों का प्रयोग तीनों लिङ्गों में पाया जाता है।

स्वरान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों की रूपावली

अकारान्त देव शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	देवः	देवौ	देवाः
द्वितीया	देवम्	देवौ	देवान्
तृतीया	देवेन	देवाभ्याम्	देवैः
चतुर्थी	देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
पञ्चमी	देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
षष्ठी	देवस्य	देवयोः	देवानाम्
सप्तमी	देवे	देवयोः	देवेषु
सम्बोधन	हे देव	हे देवौ	हे देवाः

गज, राम, बालक, अमात्य, आचार्य, काक, काम, काल, भक्त, भृत्य, मृग, मठ, भट, वर, कंस, मुकुन्द, वृष, व्याज, शाक, भाव, विभाव, क्रोध, चौर, छात्र, जन, जीव, धर्म, दूत, पुत्र, मूर्ख, रथ, वृक्ष, सूर्य, चन्द्र, नर, सुर, खग, बिडाल आदि अकारान्त शब्दों के रूप देव शब्द के समान बनते हैं।

आकारान्त विश्वपा—संसार का रक्षक

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः
द्वितीया	विश्वपाम्	विश्वपौ	विश्वपः
तृतीया	विश्वपा	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभिः
चतुर्थी	विश्वपे	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
पञ्चमी	विश्वपः	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
षष्ठी	विश्वपः	विश्वपोः	विश्वपाम्

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सप्तमी	विश्वपि	विश्वपोः	विश्वपासु
सम्बोधन	हे विश्वपाः	हे विश्वपौ	हे विश्वपाः

गोपा, सोमपा, धूम्रपा, शंखध्मा आदि पा, या आदि धातुओं से निष्पन्न शब्दों के रूप विश्वपा के समान होते हैं।

इकारान्त मुनि

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने	हे मुनी	हे मुनयः

हरि, कवि, यति, अग्नि, गिरि, निधि, पाणि, रवि, विधि, व्याधि, कृमि, कुक्षि, ऋषि, ध्वनि, रश्मि, कपि, असि, सारथि, सन्धि आदि शब्दों के रूप 'मुनि' शब्द के समान ही होते हैं।

सखि

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखीषु
सम्बोधन	हे सखे	हे सखायौ	हे सखायः

पति

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	हे पते	हे पती	हे पतयः

भूपति

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भूपतिः	भूपती	भूपतयः
द्वितीया	भूपतिम्	भूपती	भूपतीन्
तृतीया	भूपतिना	भूपतिभ्याम्	भूपतिभिः
चतुर्थी	भूपतये	भूपतिभ्याम्	भूपतिभ्यः
पञ्चमी	भूपतेः	भूपतिभ्याम्	भूपतिभ्यः
षष्ठी	भूपतेः	भूपत्योः	भूपतीनाम्
सप्तमी	भूपतौ	भूपत्योः	भूपतिषु
सम्बोधन	हे भूपते	हे भूपती	हे भूपतयः

नृपति, महीपति, श्रीपति, सीतापति, सेनापति आदि शब्दों के रूप 'भूपति' शब्द के समान ही होते हैं ।

सुधी

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वितीया	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
चतुर्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पञ्चमी	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
षष्ठी	सुधियः	सुधियोः	सुधीनाम्
सप्तमी	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
सम्बोधन	सुधीः	सुधियौ	सुधियः

शुष्की, पक्की, शुद्धधी और परमधी शब्दों के रूप सुधी के समान होते हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भानु

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पञ्चमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो	हे भानू	हे भानवः

अणु, इक्षु, ऋतु, गुरु, साधु, धातु, प्रभु, भिक्षु, मनु, वायु, विष्णु, विभु, वेणु, शत्रु, शिशु, सूनु, हेतु, मृत्यु, आदि शब्दों के रूप भानु के सदृश होते हैं।

दातृ

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातॄन्
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पञ्चमी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
षष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातॄणाम्
सप्तमी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	दातः	दातारौ	दातारः

पितृ

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	पितः	पितरौ	पितरः

कर्तृ

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्त्ता	कर्त्तारौ	कर्त्तारः
द्वितीया	कर्त्तारम्	कर्त्तारौ	कर्तॄन्
तृतीया	कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः
चतुर्थी	कर्त्रे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
पञ्चमी	कर्त्तुः	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
षष्ठी	कर्त्तुः	कर्त्रोः	कर्त्तॄणाम्
सप्तमी	कर्त्तरि	कर्त्रोः	कर्तृषु
सम्बोधन	कर्त्तः	कर्त्तारौ	कर्त्तारः

अधिष्ठातृ, जेतृ, ज्ञातृ, द्रष्ट, विधातृ, श्रोतृ, सवितृ, त्वष्टृ, हन्तृ, आदि शब्दों के रूप कर्तृ शब्द के समान बनते हैं।

भ्रातृ

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भ्राता	भ्रातरौ	भ्रातरः
द्वितीया	भ्रातरम्	भ्रातरौ	भ्रातॄन्
तृतीया	भ्रात्रा	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभिः
चतुर्थी	भ्रात्रे	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभ्यः
पञ्चमी	भ्रातुः	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभ्यः
षष्ठी	भ्रातुः	भ्रात्रोः	भ्रातॄणाम्
सप्तमी	भ्रातरि	भ्रात्रोः	भ्रातृषु
सम्बोधन	भ्रातः	भ्रातरौ	भ्रातरः

नृ (मनुष्य)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ना	नरौ	नरः
द्वितीया	नरम्	नरौ	नॄन्
तृतीया	न्रा	नृभ्याम्	नृभिः
चतुर्थी	न्रे	नृभ्याम्	नृभिः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पञ्चमी	नुः	नृभ्याम्	नृभ्यः
षष्ठी	नुः	न्रोः	नृणाम्
सप्तमी	नरि	न्रोः	नृषु
सम्बोधन	नः	नरौ	नरः

रै

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राः	रायौ	रायः
द्वितीया	रायम	रायौ	रायः
तृतीया	राया	राभ्याम्	राभिः
चतुर्थी	राये	राभ्याम्	राभ्यः
पञ्चमी	रायः	राभ्याम्	राभ्यः
षष्ठी	रायः	रायोः	रायाम्
सप्तमी	रायि	रायोः	रासु
सम्बोधन	राः	रायौ	रायः

गो

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
सम्बोधन	गौः	गावौ	गावः

"अजन्त या स्वरान्त स्त्रीलिङ्ग"

आकारान्त लता

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पञ्चमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	हे लते	हे लते	हे लताः

आशा, इच्छा, क्षमा, क्षपा, शिखा, कला, कन्या, गङ्गा, गणिका, गुहा, बालिका, प्रभा, प्रमदा, आदि शब्दों के रूप लता के समान आकारान्त होते हैं।

मति

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मनीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै-मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः-मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः-मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्-मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	मते	मती	मतयः

अंगुलि, अन्त्येष्टि, अवनति, उन्नति, ऋद्धि, कान्ति, कृति, कृषि, केलि, खनि, गति, छवि, जन्मभूमि, जाति, तिथि, त्रुटि, द्युति, नीति, पंक्ति, प्रकृति, भूमि, भूति, मुक्ति, मूर्त्ति, युवति, रुचि, वृष्टि, शक्ति, शान्ति, स्मृति, वृष्टि, हानि इत्यादि शब्दों के रूप 'मति' शब्द के समान होते हैं।

नदी

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	नदि	नद्यौ	नद्यः

गौरी, कदली, कामिनी, कौमुदी, गर्भिणी, नगरी, नन्दिनी, नारी, पल्ली, पुरी, पृथ्वी, महिषी, के रूप नदी के समान होते हैं ।

स्त्री

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्	स्त्रियौ	स्त्रियः-स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	स्त्रि	स्त्रियौ	स्त्रियः

श्री (लक्ष्मी, शोभा, धन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै, श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः, श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः, श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्
सप्तमी	श्रियाम्, श्रियि	श्रियोः	श्रीषु
सम्बोधन	श्रीः	श्रियौ	श्रियः

धेनु

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै–धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पञ्चमी	धेन्वाः–धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः–धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्–धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	धेनो	धेनू	धेनवः

बधू

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बधूः	बध्वौ	बध्वः
द्वितीया	बधूम्	बध्वौ	बधूः
तृतीया	बध्वा	बधूभ्याम्	बधूभिः
चतुर्थी	बध्वै	बधूभ्याम्	बधूभ्यः
पञ्चमी	बध्वाः	बधूभ्याम्	बधूभ्यः
षष्ठी	बध्वाः	बध्वोः	बधूनाम्
सप्तमी	बध्वाम्	बध्वोः	बधूषु
सम्बोधन	बधु	बध्वौ	बध्वः

"भ्रू"

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भ्रूः	भ्रुवौ	भ्रुवः
द्वितीया	भ्रुवम्	भ्रुवौ	भ्रुवः
तृतीया	भ्रुवै–भ्रुवे	भ्रूभ्याम्	भ्रूभिः
चतुर्थी	भ्रुवे	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्यः
पञ्चमी	भ्रुवाः—भ्रुवः	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्यः
षष्ठी	भ्रुवाः–भ्रुवः	भ्रुवोः	भ्रूणाम्—भ्रुवाम्
सप्तमी	भ्रुवाम्—भ्रुवि	भ्रुवोः	भ्रूषु
सम्बोधन	भ्रूः	भ्रुवौ	भ्रुवः

मातृ (माता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	मातः	मातरौ	मातरः

स्वसृ (बहन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः
तृतीया	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
चतुर्थी	स्वस्रे	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
पञ्चमी	स्वसुः	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
षष्ठी	स्वसुः	स्वस्रोः	स्वसॄणाम्
सप्तमी	स्वसरि	स्वस्रोः	स्वसृषु
सम्बोधन	स्वसः	स्वसारौ	स्वसारः

नौ (नाव)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नौः	नावौ	नावः
द्वितीया	नावम्	नावौ	नावः
तृतीया	नावा	नौभ्याम्	नौभिः
चतुर्थी	नावे	नौभ्याम्	नौभ्यः
पञ्चमी	नावः	नौभ्याम्	नौभ्यः
षष्ठी	नावः	नावोः	नावाम्
सप्तमी	नावि	नावोः	नौषु
सम्बोधन	नौः	नावौ	नावः

अजन्त या स्वरान्त नपुंसकलिङ्ग

अकारान्त फल शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	फल	फले	फलानि

दधि

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	दधि	दधिनी	दधीनि
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पञ्चमी	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
सप्तमी	दध्नि—दधनि	दध्नोः	दधिषु
सम्बोधन	दधे—दधि	दधिनी	दधीनि

वारि

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	वारे, वारि	वारिणी	वारीणि

अक्षि

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
द्वितीया	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तृतीया	अक्ष्णा	अक्षिभ्याम्	अक्षिभिः
चतुर्थी	अक्ष्णे–अक्षणे	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
पञ्चमी	अक्ष्णः	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
षष्ठी	अक्ष्णः	अक्ष्णोः	अक्ष्णाम्
सप्तमी	अक्षिण–अक्षणि	अक्ष्णोः–अक्षणोः	अक्षिषु
सम्बोधन	हे अक्षि–अक्षे	अक्षिणी	अक्षीणि

मधु

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	मधो, मधु	मधुनी	मधूनि

व्यञ्जनान्त अथवा हलन्त पुंल्लिङ्ग शब्द

पयोमुच् (बादल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पयोमुक्	पयोमुचौ	पयोमुचः
द्वितीया	पयोमुचम्	पयोमुचौ	पयोमुचः
तृतीया	पयोमुचा	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भिः
चतुर्थी	पयोमुचे	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भ्यः
पञ्चमी	पयोमुचः	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भ्यः
षष्ठी	पयोमुचः	पयोमुचोः	पयोमुचाम्
सप्तमी	पयोमुचि	पयोमुचोः	पयोमुक्षु
सम्बोधन	पयोमुक्	पयोमुचौ	पयोमुचः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

वणिज्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वणिक्	वणिजौ	वणिजः
द्वितीया	वणिजम्	वणिजौ	वणिजः
तृतीया	वणिजा	वणिग्भ्याम्	वणिग्भिः
चतुर्थी	वणिजे	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
पञ्चमी	वणिजः	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
षष्ठी	वणिजः	वणिजोः	वणिजाम्
सप्तमी	वणिजि	वणिजोः	वणिक्षु
सम्बोधन	वणिक्	वणिजौ	वणिजः

सम्राज्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सम्राट्	सम्राजौ	सम्राजः
द्वितीया	सम्राजम्	सम्राजौ	सम्राजः
तृतीया	सम्राजा	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भिः
चतुर्थी	सम्राजे	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
पञ्चमी	सम्राजः	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
षष्ठी	सम्राजः	सम्राजोः	सम्राजाम्
सप्तमी	सम्राजि	सम्राजोः	सम्राट्सु
सम्बोधन	सम्राट्	सम्राजौ	सम्राजः

भवत्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पञ्चमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधन	हे भवन्	भवन्तौ	भवन्तः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भूभृत्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः
द्वितीया	भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृतः
तृतीया	भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः
चतुर्थी	भूभृते	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
पञ्चमी	भूभृतः	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
षष्ठी	भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम्
सप्तमी	भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु
सम्बोधन	भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः

महत्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वितीया	महान्तम्	महान्तौ	महतः
तृतीया	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
चतुर्थी	महते	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
पञ्चमी	महतः	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
षष्ठी	महतः	महतोः	महताम्
सप्तमी	महति	महतोः	महत्सु
सम्बोधन	महन्	महान्तौ	महान्तः

भगवत्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः
द्वितीया	भगवन्तम्	भगवन्तौ	भगवतः
तृतीया	भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः
चतुर्थी	भगवते	भगवद्भ्याम्	भगवद्भ्यः
पञ्चमी	भगवतः	भगवद्भ्याम्	भगवद्भ्यः
षष्ठी	भगवतः	भगवतोः	भगवताम्
सप्तमी	भगवति	भगवतोः	भगवत्सु
सम्बोधन	हे भगवन्	भगवन्तौ	भगवन्तः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

गच्छत्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः
चतुर्थी	गच्छते	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
पञ्चमी	गच्छतः	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
षष्ठी	गच्छतः	गच्छतोः	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	गच्छतोः	गच्छत्सु
सम्बोधन	हे गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः

धीमत्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धीमान्	धीमन्तौ	धीमन्तः
द्वितीया	धीमन्तम्	धीमन्तौ	धीमतः
तृतीया	धीमता	धीमद्भ्याम्	धीमद्भिः
चतुर्थी	धीमते	धीमद्भ्याम्	धीमद्भ्यः
पञ्चमी	धीमतः	धीमद्भ्याम्	धीमद्भ्यः
षष्ठी	धीमतः	धीमतोः	धीमताम्
सप्तमी	धीमति	धीमतोः	धीमत्सु
सम्बोधन	हे धीमन्	धीमन्तौ	धीमन्तः

गुणिन्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुणी	गुणिनौ	गुणिनः
द्वितीया	गुणिनम्	गुणिनौ	गुणिनः
तृतीया	गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः
चतुर्थी	गुणिने	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
पञ्चमी	गुणिनः	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
षष्ठी	गुणिनः	गुणिनोः	गुणिनाम्
सप्तमी	गुणिनि	गुणिनोः	गुणिषु
सम्बोधन	गुणिन्	गुणिनौ	गुणिनः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पथिन्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
द्वितीया	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
तृतीया	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
चतुर्थी	पथे	पथिभ्याम्	पथिभिः
पञ्चमी	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
षष्ठी	पथः	पथोः	पथाम्
सप्तमी	पथि	पथोः	पथिषु
सम्बोधन	हे पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः

धनिन्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धनी	धनिनौ	धनिनः
द्वितीया	धनिनम्	धनिनौ	धनिनः
तृतीया	धनिना	धनिभ्याम्	धनिभिः
चतुर्थी	धनिने	धनिभ्याम्	धनिभ्यः
पञ्चमी	धनिनः	धनिभ्याम्	धनिभ्यः
षष्ठी	धनिनः	धनिनोः	धनिनाम्
सप्तमी	धनिनि	धनिनोः	धनिषु
सम्बोधन	हे धनिन्	धनिनौ	धनिनः

महिमन्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	महिमा	महिमानौ	महिमानः
द्वितीया	महिमानम्	महिमानौ	महिम्नः
तृतीया	महिम्ना	महिमभ्याम्	महिमभिः
चतुर्थी	महिम्ने	महिमभ्याम्	महिमभ्यः
पञ्चमी	महिम्नः	महिमभ्याम्	महिमभ्यः
षष्ठी	महिम्नः	महिम्नोः	महिम्नाम्
सप्तमी	महिमनि, महिम्नि	महिम्नोः	महिमसु
सम्बोधन	हे महिमन्	महिमानौ	महिमानः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

आत्मन्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पञ्चमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	हे आत्मन्	आत्मानौ	आत्मानः

राजन्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राजनि, राज्ञि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्	राजानौ	राजानः

मघवन्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मघवा	मघवानौ	मघवानः
द्वितीया	मघवानम्	मघवानौ	मघोनः
तृतीया	मघोना	मघवभ्याम्	मघवभिः
चतुर्थी	मघोने	मघवभ्याम्	मघवभ्यः
पञ्चमी	मघोनः	मघवभ्याम्	मघवभ्यः
षष्ठी	मघोनः	मघोनोः	मघोनाम्
सप्तमी	मघोनि	मघोनोः	मघवत्सु
सम्बोधन	हे मघवन्	मघवानौ	मघवानः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

युवन्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	युवा	युवानौ	युवानः
द्वितीया	युवानम्	युवानौ	यूनः
तृतीया	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
चतुर्थी	यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः
पञ्चमी	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
षष्ठी	यूनः	यूनोः	यूनाम्
सप्तमी	यूनि	यूनोः	युवसु
सम्बोधन	हे युवन्	युवानौ	युवानः

पुम्स्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
द्वितीया	पुमांसम्	पुमांसौ	पुंसः
तृतीया	पुंसा	पुंभ्याम्	पुंभिः
चतुर्थी	पुंसे	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
पञ्चमी	पुंसः	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
षष्ठी	पुंसः	पुंसोः	पुंसाम्
सप्तमी	पुंसि	पुंसोः	पुंसु
सम्बोधन	हे पुमन्	पुमांसौ	पुमांसः

विद्वस्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्य;
पञ्चमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन्	विद्वांसौ	विद्वांसः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

गरीयस्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गरीयान्	गरीयांसौ	गरीयांसः
द्वितीया	गरीयांसम्	गरीयांसौ	गरीयसः
तृतीया	गरीयसा	गरीयोभ्याम्	गरीयोभिः
चतुर्थी	गरीयसे	गरीयोभ्याम्	गरीयोभ्यः
पञ्चमी	गरीयसः	गरीयोभ्याम्	गरीयोभ्यः
षष्ठी	गरीयसः	गरीयसोः	गरीयसाम्
सप्तमी	गरीयसि	गरीयसोः	गरीयस्सु, गरीयःसु
सम्बोधन	हे गरीयन्	गरीयांसौ	गरीयांसः

चन्द्रमस् (चंद्रमा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वितीया	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
तृतीया	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
चतुर्थी	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
पञ्चमी	चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
षष्ठी	चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
सप्तमी	चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमःसु
सम्बोधन	हे चन्द्रमः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः

श्वन् (कुत्ता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्वा	श्वानौ	श्वानः
द्वितीया	श्वानम्	श्वानौ	शुनः
तृतीया	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
चतुर्थी	शुने	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
पञ्चमी	शुनः	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
षष्ठी	शुनः	शुनोः	शुनाम्
सप्तमी	शुनि	शुनोः	श्वसु
सम्बोधन	हे श्वन्	श्वानौ	श्वानः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

व्यञ्जनान्त या हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

वाच् (वाणी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वाक्, वाग्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पञ्चमी	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सम्बोधन	हे वाक्, वाग्	वाचौ	वाचः

रूच्, त्वच्, शुच्, ऋच् आदि शब्दों के रूप 'वाच्' शब्द के समान होते हैं।

सरित् (नदी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सरित्	सरितौ	सरितः
द्वितीया	सरितम्	सरितौ	सरितः
तृतीया	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
चतुर्थी	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
पञ्चमी	सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
षष्ठी	सरितः	सरितोः	सरिताम्
सप्तमी	सरिति	सरितोः	सरित्सु
सम्बोधन	हे सरित्	हे सरितौ	हे सरितः

हरित्, योषित् और विद्युत् आदि शब्दों के रूप 'सरित्' के समान होते हैं।

गिर (वाणी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गीः	गिरौ	गिरः
द्वितीया	गिरम्	गिरौ	गिरः
तृतीया	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः
चतुर्थी	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पञ्चमी	गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
षष्ठी	गिरः	गिरोः	गिराम्
सप्तमी	गिरि	गिरोः	गीर्षु
सम्बोधन	हे गीः	गिरौ	गिरः

जरा-जरस् (बुढापा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जरा	जरसौ	जरसः
द्वितीया	जरसम्	जरसौ	जरसः
तृतीया	जरसा	जराभ्याम्	जराभिः
चतुर्थी	जरसे	जराभ्याम्	जराभ्यः
पञ्चमी	जरसः	जराभ्याम्	जराभ्यः
षष्ठी	जरसः	जरसोः	जरसाम्
सप्तमी	जरसि	जरसोः	जरासु
सम्बोधन	हे जरा	जरसौ	जरसः

नित्य बहुवचनान्त अप् (जल)

प्रथमा	आपः	द्वितीया	अपः
तृतीया	अद्भिः	चतुर्थी	अद्भ्यः
पञ्चमी	अद्भ्यः	षष्ठी	अपाम्
सप्तमी	अप्सु	सम्बोधन	हे आपः

दिव् (आकाश)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	द्यौः	दिवौ	दिवः
द्वितीया	दिवम्	दिवौ	दिवः
तृतीया	दिवा	द्युभ्याम्	द्युभिः
चतुर्थी	दिवे	द्युभ्याम्	द्युभ्यः
पञ्चमी	दिवः	द्युभ्याम्	द्युभ्यः
षष्ठी	दिवः	दिवोः	दिवाम्
सप्तमी	दिवि	दिवोः	द्युषु
सम्बोधन	हे द्यौः	दिवौ	दिवः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

दिश् (दिशा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दिक्, दिग्	दिशौ	दिशः
द्वितीया	दिशम्	दिशौ	दिशः
तृतीया	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
चतुर्थी	दिशे	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
पञ्चमी	दिशः	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
षष्ठी	दिशः	दिशोः	दिशाम्
सप्तमी	दिशि	दिशोः	दिक्षु
सम्बोधन	हेदिक्, दिग्	दिशौ	दिशः

उपानह् (जूता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	उपानत्, द्	उपानहौ	उपानहः
द्वितीया	उपानहम्	उपानहौ	उपानहः
तृतीया	उपानहा	उपानद्भ्याम्	उपानद्भिः
चतुर्थी	उपानहे	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः
पञ्चमी	उपानहः	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः
षष्ठी	उपानहः	उपानहोः	उपानहाम्
सप्तमी	उपानहि	उपानहोः	उपानत्सु
सम्बोधन	हे उपानत्, द्	उपानहौ	उपानहः

रुज् (रोग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रुक्, रुग्	रुजौ	रुजः
द्वितीया	रुजम्	रुजौ	रुजः
तृतीया	रुजा	रुग्भ्याम्	रुग्भिः
चतुर्थी	रुजे	रुग्भ्याम्	रुग्भ्यः
पञ्चमी	रुजः	रुग्भ्याम्	रुग्भ्यः
षष्ठी	रुजः	रुजोः	रुजाम्
सप्तमी	रुजि	रुजोः	रुक्षु
सम्बोधन	हेरुक्, रुग्	रुजौ	रुजः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

हलन्त नपुंसकलिङ्ग

पयस् (दूध, पानी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पयः	पयसी	पयांसि
द्वितीया	पयः	पयसी	पयांसि
तृतीया	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
चतुर्थी	पयसे	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
पञ्चमी	पयसः	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
षष्ठी	पयसः	पयसोः	पयसाम्
सप्तमी	पयसि	पयसोः	पयस्सु
सम्बोधन	हे पयः	पयसी	पयांसि

जगत् (संसार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वितीया	जगत्	जगती	जगन्ति
तृतीया	जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः
चतुर्थी	जगते	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
पञ्चमी	जगतः	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
षष्ठी	जगतः	जगतोः	जगताम्
सप्तमी	जगति	जगतोः	जगत्सु
सम्बोधन	हे जगत्	जगती	जगन्ति

अहन् (दिन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
द्वितीया	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
तृतीया	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
चतुर्थी	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
पञ्चमी	अह्नः	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
षष्ठी	अह्नः	अह्नोः	अह्नाम्
सप्तमी	अह्नि, अहनि,	अह्नोः	अहःसु, अहस्सु
सम्बोधन	हे अहः	अह्नी, अहनी	अहानि

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

चक्षुस् (आँख)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	चक्षुः	चक्षुषी	चक्षूंषि
द्वितीया	चक्षुः	चक्षुषी	चक्षूंषि
तृतीया	चक्षुषा	चक्षुर्भ्याम्	चक्षुर्भिः
चतुर्थी	चक्षुषे	चक्षुर्भ्याम्	चक्षुर्भ्यः
पञ्चमी	चक्षुषः	चक्षुर्भ्याम्	चक्षुर्भ्यः
षष्ठी	चक्षुषः	चक्षुषोः	चक्षुषाम्
सप्तमी	चक्षुषि	चक्षुषोः	चक्षुःषु, चक्षुष्षु
सम्बोधन	हे चक्षुः	चक्षुषी	चक्षूंषि

नामन् (नाम)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नाम	नामनी, नाम्नी	नामानि
द्वितीया	नाम	नामनी, नाम्नी	नामानि
तृतीया	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
चतुर्थी	नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्यः
पञ्चमी	नाम्नः	नामभ्याम्	नामभ्यः
षष्ठी	नाम्नः	नाम्नोः	नाम्नाम्
सप्तमी	नामनि, नाम्नि	नाम्नोः	नामसु
सम्बोधन	हे नाम, नामन्	नामनी, नाम्नी	नामानि

जन्मन्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जन्म	जन्मनी	जन्मानि
द्वितीया	जन्म	जन्मनी	जन्मानि
तृतीया	जन्मना	जन्मभ्याम्	जन्मभिः
चतुर्थी	जन्मने	जन्मभ्याम्	जन्मभ्यः
पञ्चमी	जन्मनः	जन्मभ्याम्	जन्मभ्यः
षष्ठी	जन्मनः	जन्मनोः	जन्मनाम्
सप्तमी	जन्मनि	जन्मनोः	जन्मसु
सम्बोधन	हे जन्म, जन्मन्	हे जन्मनी	हे जन्मानि

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

कर्मन् (काम)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्म	कर्मणी	कर्माणि
द्वितीया	कर्म	कर्मणी	कर्माणि
तृतीया	कर्मणा	कर्मभ्याम्	कर्मभिः
चतुर्थी	कर्मणे	कर्मभ्याम्	कर्मभ्यः
पञ्चमी	कर्मणः	कर्मभ्याम्	कर्मभ्यः
षष्ठी	कर्मणः	कर्मणोः	कर्मणाम्
सप्तमी	कर्मणि	कर्मणोः	कर्मसु
सम्बोधन	हे कर्म, कर्मन्	कर्मणी	कर्माणि

इसी प्रकार पर्वन्, ब्रह्मन्, चर्मन्, वर्मन्, वर्त्मन्, शर्मन् प्रभृति शब्दों के रूप बनते हैं।

सर्वनाम शब्दों के रूप

(पुंलिङ्ग) सर्व (सब)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

सर्व (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

सर्व (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

(पुंलिङ्ग) यद् (जो, व्यक्ति या वस्तु)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

यद् (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

यद् (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

(पुंलिङ्ग) किम् (कौन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

किम् (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

तीनों लिङ्गों में अस्मद्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद् (पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

तद् (पुंलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तद् (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तद् (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

एतद् (पुँल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्, एनम्	एतौ, एनौ	एतान्, एनान्
तृतीया	एतेन, एनेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

षष्ठी	एतस्य	एतयोः, एनयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः, ,,	एतेषु

एतद् (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्, एनाम्	एते, एने	एताः, एनाः
तृतीया	एतया, एनया,	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पञ्चमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः, एनयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः, ,,	एतासु

एतद् (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतत्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्, एनत्	एते,एने	एतानि, एनानि
तृतीया	एतेन, एनेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः, एनयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

इदम् (पुंलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

इदम् (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्, एनाम्	इमे, एने	इमाः, एनाः
तृतीया	अनया, एनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः, एनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः, "	आसु

इदम् (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्, एनत्,	इमे, एने	इमानि, एनानि
तृतीया	अनेन, एनेन,	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु

अदस् (पुंलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

अदस् (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमूः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

द्वितीया	अमूम्	अमू	अमूः
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पञ्चमी	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
षष्ठी	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

अदस् (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अदः	अमू	अमूनि
द्वितीया	अदः	अमू	अमूनि
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

उभय (पुंलिङ्ग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	उभयः	उभये
द्वितीया	उभयम्	उभयान्
तृतीया	उभयेन	उभयैः
चतुर्थी	उभयस्मै	उभयेभ्यः
पञ्चमी	उभयस्मात्, द्	उभयेभ्यः
षष्ठी	उभयस्य	उभयेषाम्
सप्तमी	उभयस्मिन्	उभयेषु

उभय (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	उभयी	उभय्यः
द्वितीया	उभयीम्	उभयीः
तृतीया	उभय्या	उभयीभिः
चतुर्थी	उभय्यै	उभयीभ्यः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पञ्चमी	उभय्याः	उभयीभ्यः
षष्ठी	उभय्याः	उभयीनाम्
सप्तमी	उभय्याम्	उभयीषु

उभय (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	उभयम्	उभयानि
द्वितीया	उभयम्	उभयानि
तृतीया	उभयेन	उभयैः
चतुर्थी	उभयस्मै	उभयेभ्यः
पञ्चमी	उभयस्मात्	उभयेभ्यः
षष्ठी	उभयस्य	उभयेषाम्
सप्तमी	उभयस्मिन्	उभयेषु

संख्यावाचक शब्द

संस्कृत में संख्यावाचक शब्द विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं। यहाँ आवश्यक संख्यावाचक शब्दों के रूप दिये जाते हैं। एक शब्द के रूप केवल एकवचन और तीनों लिंगों में होते हैं।

एकशब्द—एक अर्थ का वाचक

	पुंलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
प्रथमा	एकः	एकम्	एका
द्वितीया	एकम्	एकम्	एकाम्
तृतीया	एकेन	एकेन	एकया
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्मै	एकस्यै
पञ्चमी	एकस्मात्	एकस्मात्	एकस्याः
षष्ठी	एकस्य	एकस्य	एकस्याः
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्मिन्	एकस्याम्

द्वि शब्द के रूप केवल द्विवचन में तथा तीनों लिङ्गों में होते हैं। नपुंसकलिङ्ग और स्त्रीलिंग में एक से रूप होते हैं।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

द्वि—दो

	पुंलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग तथा स्त्रीलिंग
	द्विवचन	द्विवचन
प्रथमा	द्वौ	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः

त्रि—तीन

त्रि शब्द के रूप केवल बहुवचन में होते हैं ।

	पुंलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
	बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्रयः	त्रीणि	तिस्रः
द्वितीया	त्रीन्	त्रीणि	तिस्रः
तृतीया	त्रिभिः	त्रिभिः	तिसृभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	त्रयाणाम्	तिसृणाम्
सप्तमी	त्रिषु	त्रिषु	तिसृषु

चतुर्—चार

चतुर् शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में केवल बहुवचन में होते हैं ।

	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वितीया	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

पञ्चन्--पाँच

पुंल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग

	बहुवचन		बहुवचन
प्रथमा	पञ्च	द्वितीया	पञ्च
तृतीया	पञ्चभिः	चतुर्थी	पञ्चभ्यः
पञ्चमी	पञ्चभ्यः	षष्ठी	पञ्चानाम्
सप्तमी	पञ्चसु		

षष्—छः

पुंल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग

	बहुवचन		बहुवचन
प्रथमा	षट्	द्वितीया	षट्
तृतीया	षड्भिः	चतुर्थी	षड्भ्यः
पञ्चमी	षड्भ्यः	षष्ठी	षण्णाम्
सप्तमी	षट्सु		

सप्तन्—सात

पुंल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग

	बहुवचन		बहुवचन
प्रथमा	सप्त	द्वितीया	सप्त
तृतीय	सप्तभिः	चतुर्थी	सप्तभ्यः
पञ्चमी	सप्तभ्यः	षष्ठी	सप्तानाम्
सप्तमी	सप्तसु		

अष्टन्--आठ

पुंल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग

	बहुवचन		बहुवचन
प्रथमा	अष्टौ, अष्ट	द्वितीया	अष्टौ, अष्ट

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तृतीया	अष्टाभिः, अष्टभिः	चतुर्थी	अष्टाभ्यः अष्टभ्यः
पञ्चमी	अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः	षष्ठी	अष्टानाम्
सप्तमी	अष्टासु, अष्टसु		

नवम्, दशन्, एकादशन्, द्वादशन्, त्रयोदशन्, चर्तुदशन्; पञ्चदशन्, षोडशन्, सप्तदशन्, अष्टादशन्, शब्दों के रूप पञ्चन् के समान तीनों लिङ्गों में एक ही समान होते हैं।

ऊनविंशति से लेकर विंशति के अन्त होने वाले संख्यावाचक शब्दों के रूप केवल एकवचन में ही ह्रस्व इकारान्त रुचि के समान होते हैं। यथा—

विंशति

	एकवचन		एकवचन
प्रथमा	विंशति	द्वितीया	विंशतिम्
तृतीया	विंशत्या	चतुर्थी	विंशत्यै, विंशतये
पञ्चमी	विंशत्या, विंशतेः	षष्ठी	विंशत्या, विंशतेः
सप्तमी	विंशत्याम्, विंशतौ		

त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पंचाशत्, तथा शत् अन्त में होनेवाले अन्य संख्यावाचक शब्दों के रूप "सरित्" के समान होते हैं।

	त्रिंशत् एकवचन		चत्वारिंशत् एकवचन
प्रथमा	त्रिंशत्	प्रथमा	चत्वारिंशत्
द्वितीया	त्रिंशतम्	द्वितीया	चत्वारिंशतम्
तृतीया	त्रिंशता	तृतीया	चत्वारिंशता
चतुर्थी	त्रिंशते	चतुर्थी	चत्वारिंशते
पञ्चमी	त्रिंशतः	पञ्चमी	चत्वारिंशतः
षष्ठी	त्रिंशतः	षष्ठी	चत्वारिंशतः
सप्तमी	त्रिंशति	सप्तमी	चत्वारिंशति

षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति, इत्यादि इकरान्त संख्यावाचक "विंशति" के समान चलते हैं।

	षष्टि एकवचन		सप्तति एकवचन
प्रथमा	षष्टि	प्रथमा	सप्तति

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

द्वितीया	षष्टिम्	द्वितीया	सप्ततिम्
तृतीया	षष्ट्या	तृतीया	सप्तत्या
चतुर्थी	षष्ट्यै, षष्ट्ये	चतुर्थी	सप्तत्यै, सप्तत्ये
पञ्चमी	षष्ट्याः, षष्टेः	पञ्चमी	सप्तत्याः, सप्ततेः
षष्ठी	षष्ट्याः, षष्टेः	षष्ठी	सप्तत्याः, सप्ततेः
सप्तमी	षष्ट्यां, षष्टौ	सप्तमी	सप्तत्याम्, सप्ततौ

क्रमवाचक—Ordinals

(क) एक, द्वि, त्रि, चतुर् और षष् के क्रमवाचक अनियमित हैं। पञ्चन्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्, और दशन् के क्रमवाचक न् हटाकर म लगाने से बनते हैं।

(ख) एकादशन् से नवदशन् (ऊनविंशति) तक केवल न् हटाने से क्रमवाचक शब्द बन जाते हैं। यथा—एकादशः, द्वादशः, त्रयोदशः, चतुर्दशः, पञ्चदशः, षोडशः, सप्तदशः, अष्टादशः, नवदशः—एकोनविंशः—एकोनविंशतितमः।

(ग) विंशति के ऊपर तम लगाने से अथवा विंशति के ति और शेष व्यञ्जन के हटाने से क्रमवाचक संख्या शब्द बनते हैं। इस अवस्था में संयुक्त गणना-वाचकों का अन्त्य स्वर अ में बदल जाता है। परन्तु षष्टि, सप्तति, अशीति, और नवति को तम लगाने से ही क्रमवाचक शब्द बनते हैं। यथा—विंशतितमः, विंशः विंशत्तमः, चत्वारिंशत्तमः, षष्टितमः, एकषष्टिः-एकषष्टितमः, शततमः, सहस्रतमः इत्यादि। एक शब्द के क्रमवाचक प्रथमः, आदिमः, अग्रिमः आदि द्वि के द्वितीयः; त्रि के तृतीयः, चतुर् के चतुर्थः और षष् के षष्ठः होते हैं। यथा—

क्रमवाचक

संख्या	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
एक	प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
द्वि	द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
चतुर्	चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
षष्ठ	षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
विंशति	विंशतितमः	विंशतितमी	विंशतितमम्

क्रमवाचक शब्दों के रूप पुंल्लिङ्ग में गज, नपुंसकलिङ्ग में फल और स्त्रीलिङ्ग में नदी के समान होते हैं।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तुलनात्मक विशेषण

१—तुलना-द्वारा दो में से एक का उत्कर्ष जाना जाय तो शब्द के परे तरप् और अनेक में से एक का उत्कर्ष जाना जाय तो तमप् प्रत्य जोड़े जाते हैं। तरप् और तमप् के लगने से ई और ऊ का विकल्प से ह्रस्व होता है।

२—गुणवाचक विशेषण के परे तरप् और तमप् के स्थान में क्रम से ईयसुन् और इष्ठन् प्रत्ययोंको जोड़ा जाता है। ईयसुन् और इष्ठन् प्रत्ययों के लगने से मत्, वत्, विन्, इन्, और तृ प्रत्ययान्त विशेषणों से इन प्रत्ययों का लोप हो जाता है यथा—बलवान्, बलीयस्, बलिष्ठः, मतिमान्, मतीयस्, मतिष्ठः।

३—ईयसुन् और इष्ठन् प्रत्यय के आने पर व्यञ्जन के पूर्ववर्ती ऋकार के स्थान पर र् हो जाता है। यथा—कृश्, क्रशीयस्, क्रशिष्ठः, दृढ-द्रढीयस्-द्रढिष्ठः।

तालिका

कुशलः	कुशलतरः	कुशलतमः
विद्वान्	विद्वत्तरः	विद्वत्तमः
महान्	महत्तरः	महत्तमः
धनी	धनितरः	धनितमः
लघुः	लघुतरः, लघीयान्	लघुतमः, लघिष्ठः
पाचकः	पाचकतरः	पाचकतमः
पटुः	पटीयस् (पटीयान्)	पटिष्ठः
प्रशस्यः	श्रेयस् (श्रेयान्) ज्यायान्	श्रेष्ठः, ज्येष्ठः
वृद्धः	ज्यायस् (ज्यायान्)	ज्येष्ठः
अन्तिकः	नेदीयस् (नेदीयान्)	नेदिष्ठः
अल्पः	अल्पीयस् (अल्पीयान्)	अल्पिष्ठः
	कनीयस् (कनीयान्)	कनिष्ठः
उरुः (विशाल)	वरीयस् (वरीयान्)	वरिष्ठः
क्षिप्रः (शीघ्र)	क्षेपीयस् (क्षेपीयान्)	क्षेपिष्ठः
क्षुद्रः	क्षोदीयस् (क्षोदीयान्)	क्षोदिष्ठः
गुरुः	गरीयस् (गरीयान्)	गरिष्ठः
दीर्घः	द्राघीयस् (द्राघीयान्)	द्राघिष्ठः
दूरः	द्रवीयस् (द्रवीयान्)	द्रविष्ठः
प्रियः	प्रेयस् (प्रेयान्)	प्रेष्ठः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तृप्रः	त्रपीयस् (त्रपीयान्)	त्रपिष्ठः
बहु	भूयस् (भूयान्)	भूयिष्ठः
बहुल	बंहीयस् (बंहीयान्)	बहिष्ठः
बाढम्	साधीयस् (साधीयान्)	साधिष्ठः
युवन्	यवीयस् (यवीयान्)	यविष्ठः
विपुलः	ज्यायस् (ज्यायान्)	ज्येष्ठः
वृन्दारकः	वृन्दीयस् (वृन्दीयान्)	वृन्दिष्ठः
स्थिरः	स्थेयस् (स्थेयान्)	स्थेष्ठः
स्थूलः	स्थवीयस् (स्थवीयान्)	स्थविष्ठः
स्फिरः	स्फेयस् (स्फेयान्)	स्फेष्ठः
ह्रस्वः	ह्रसीयस् (ह्रसीयान्)	ह्रसिष्ठः
मृदु	म्रदीयस् (म्रदीयान्)	म्रदिष्ठः
भृश्	भ्रशीयस् (भ्रशीयान्)	भ्रशिष्ठः
पृथु	प्रथीयस् (प्रथीयान्)	प्रथिष्ठः

संस्कृत में विशेषणों के रूप प्रायः अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं। यथा—सुन्दरः बालकः; सुन्दरी बालिका; सुन्दरं गृहम्।

बताया गया है—

विशेष्यस्य हि यल्लिङ्गं विभक्ति-वचने च ये।
तानि सर्वाणि योज्यानि विशेषणपदेष्वपि ॥

अर्थात्—विशेष्य का जो लिङ्ग, वचन या विभक्ति होगी, उसी लिङ्ग, वचन और विभक्ति का प्रयोग विशेषण में भी किया जाता है।

अतएव यह स्पष्ट है कि विशेषणों की रूपावली विशेष्य के अनुसार चलती है। पुंलिङ्ग होने पर लघुः, लघीयान्; लघिष्ठः; स्त्रीलिङ्ग होने पर लघ्वी, लघीयसी, लघिष्ठा और नपुंसकलिङ्ग होने पर लघु, लघीयः और लघिष्ठम् रूप बनते हैं। यहाँ उदाहरणार्थ लघु, लघीयस् के रूप दिये जाते हैं—

लघु—छोटा (मूलरूप) पुंल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लघुः	लघू	लघवः
द्वितीया	लघुम्	लघू	लघून्

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तृतीया	लघुना	लघुभ्याम्	लघुभिः
चतुर्थी	लघवे	लघुभ्याम्	लघुभ्यः
पञ्चमी	लघोः	लघुभ्याम्	लघुभ्यः
षष्ठी	लघोः	लघ्वोः	लघूनाम्
सप्तमी	लघौ	लघ्वोः	लघुषु
सम्बोधन	हे लघो	लघू	लघवः

लघीयान् (किसी एक से छोटा) पुंल्लिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लघीयान्	लघीयांसौ	लघीयांसः
द्वितीया	लघीयांसम्	लघीयांसौ	लघीयसः
तृतीया	लघीयसा	लघीयोभ्याम्	लघीयोभिः
चतुर्थी	लघीयसे	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः
पञ्चमी	लघीयसः	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः
षष्ठी	लघीयसः	लघीयसोः	लघीयसाम्
सप्तमी	लघीयसि	लघीयसोः	लघीयस्सु
सम्बोधन	हे लघीयन्	लघीयांसौ	लघीयांसः

लघिष्ठ (सबसे छोटा) पुंल्लिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लघिष्ठः	लघिष्ठौ	लघिष्ठाः
द्वितीया	लघिष्ठम्	लघिष्ठौ	लघिष्ठान्
तृतीया	लघिष्ठेन	लघिष्ठाभ्याम्	लघिष्ठैः
चतुर्थी	लघिष्ठाय	लघिष्ठाभ्याम्	लघिष्ठेभ्यः
पञ्चमी	लघिष्ठात्	लघिष्ठाभ्याम्	लघिष्ठेभ्यः
षष्ठी	लघिष्ठस्य	लघिष्ठयोः	लघिष्ठानाम्
सप्तमी	लघिष्ठे	लघिष्ठयोः	लघिष्ठेषु
सम्बोधन	हे लघिष्ठ	लघिष्ठौ	लघिष्ठाः

लघ्वी (सबसे छोटी) स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लघ्वी	लघ्व्यौ	लघ्व्यः
द्वितीया	लघ्वीम्	लघ्व्यौ	लघ्वीः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तृतीया	लघ्व्या	लघ्वीभ्याम्	लघ्वीभिः
चतुर्थी	लघ्व्यै	लघ्वीभ्याम्	लघ्वीभ्यः
पञ्चमी	लघ्व्याः	लघ्वीभ्याम्	लघ्वीभ्यः
षष्ठी	लघ्व्याः	लघ्व्योः	लघ्वीनाम्
सप्तमी	लघ्व्याम्	लघ्व्योः	लघ्वीषु
सम्बोधन	हे लघ्वि	हे लघ्व्यौ	हेलघ्व्यः

लघीयसी (किसी एक से छोटी अवस्था) स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लघीयसी	लघीयस्यौ	लघीयस्यः
द्वितीया	लघीयसीम्	लघीयस्यौ	लघीयसीः
तृतीया	लघीयस्या	लघीयोभ्याम्	लघीयोभिः
चतुर्थी	लघीयस्यै	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः
पञ्चमी	लघीयस्याः	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः
षष्ठी	लघीयस्याः	लघीयस्योः	लघीयसीनाम्
सप्तमी	लघीयस्याम्	लघीयस्योः	लघीयस्सु
सम्बोधन	हे लघीयसी	लघीयस्यौ	लघीयस्यः

लघि८। (सबसे छोटी; स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लघिष्ठा	लघिष्ठे	लघिष्ठाः
द्वितीया	लघिष्ठाम्	लघिष्ठे	लघिष्ठाः
तृतीया	लघिष्ठया	लघिष्ठाभ्याम्	लघिष्ठाभिः
चतुर्थी	लघिष्ठायै	लघिष्ठाभ्याम्	लघिष्ठाभ्यः
पञ्चमी	लघिष्ठायाः	लघिष्ठाभ्याम्	लघिष्ठाभ्यः
षष्ठी	लघिष्ठायाः	लघिष्ठयोः	लघिष्ठानाम्
सप्तमी	लघिष्ठायाम्	लघिष्ठयोः	लघिष्ठासु
सम्बोधन	लघिष्ठे	हे लघिष्ठे	लघिष्ठाः

लघु (छोटा; नपुंसकलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ल	लघुनी	लघूनि

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

द्वितीया	लघु	लघुनी	लघूनि

इसके आगे पुंल्लिग के समान रूप बनते हैं।

लघीयः (किसी एक से छोटा) नपुंसकलिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लघीयः	लघीयसी	लघीयांसि
द्वितीया	लघीयः	लघीयसी	लघीयांसि

तृतीया से सप्तमी तक के रूप पुंल्लिङ्ग लघीयान् के समान होंगे।

लघिष्ठम् के रूप फलम् के समान नपुंसकलिङ्ग में होंगे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

चतुर्थोऽध्यायः

स्त्रीप्रत्यय

स्त्रीलिङ्ग शब्द दो प्रकार के होते हैं—मूल स्त्रीलिङ्ग शब्द और प्रत्यय के योग से बने स्त्रीलिङ्ग शब्द। जिन शब्दों का अर्थ मूल से ही स्त्री-वाचक है और रूप पुँल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में नहीं होते, उनको मूल स्त्रीवाचक शब्द कहते हैं।

प्रत्यय के योग से बने स्त्रीलिङ्ग शब्द मूल से स्त्रीलिङ्ग नहीं होते; किन्तु स्त्री प्रत्यय जोड़ देने से उनमें स्त्रीत्व आता है; ऐसे शब्द जोड़ीदार होते हैं। अर्थात् पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों लिङ्गों में व्यवहृत होते हैं। इस विवेचन के प्रकाश में स्त्रीप्रत्यय की परिभाषा निम्न प्रकार निष्पन्न होती है।

स्त्रीप्रत्यय—वे प्रत्यय हैं, जिनके लगने पर पुँल्लिङ्ग शब्द स्त्रीलिङ्ग हो जाते हैं। स्त्री प्रत्यय आठ हैं—

(१) टाप्, (२) डाप्, (३) चाप्, (आ), (४) ङीप्, (५) ङीष्, (६) ङीन् (ई), (७) ऊङ् (ऊ) और (८) ति।

टाप् (आ)

१—"**अजाद्यतष्टाप्**"—अज, एड, कोकिल, चटक, अश्व, मूषक, बाल, होड, पाक, वत्स, विलात, पूर्वापहाण, अपरापहाण, कुञ्च, उष्णिह, देवविश, ज्येष्ठ, कनिष्ठ, मध्यम, दंष्ट्र शब्दों में तथा अकारान्त शब्दों में स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए टाप् (आ) प्रत्यय लगता है। यथा—

अज+टाप् (आ)=अज+आ=अजा; अश्व+टाप् = अश्व+आ=अश्वा; चटक+आ=चटका; एडक+आ=एडका (भेड़ी); मूषक+आ=मूषिका; बाल+आ=बाला; वत्स+आ=वत्सा; होड+आ=होडा (छोकरी); मन्द+आ=मन्दा (कन्या); विलात+आ=विलाता (कन्या); कोकिल+आ=कोकिला; ज्येष्ठ+आ=ज्येष्ठा; कनिष्ठ+आ=कनिष्ठा; मध्यम+आ=मध्यमा; दक्ष+आ=दक्षा। कृश–कृशा, चपल–चपला, सरल–सरला, तरल–तरला, प्रबल–प्रबला, अचल–अचला, निपुण–निपुणा, मलिन–मलिना, उत्तर–उत्तरा, दक्षिण–दक्षिणा, पूर्व=पूर्वा, प्रथम–प्रथमा, द्वितीय–द्वितीया, तृतीय–तृतीया, मनोहर–मनोहरा, कारक–कारिका, [illegible], पाचक–पाचिका, नाटक–नाटिका,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पालक–पलिका, बालक–बालिका, गायक–गायिका, दायक–दायिका, दारक–दारिका, घातक–घातिका ।

डाप् (आ)

२—"डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम्"—बहुव्रीहि समास होने पर मन्नन्त शब्द और ऊन्प्रत्ययात शब्दों के उत्तर विकल्प से डाप् (आ) प्रत्यय होता है । यथा—

पाम+डाप्=पाम+आ=पामा; सीम+डाप्=सीम+आ=सीमा ।

बहुपर्व+डाप्=बहुपर्व+आ=बहुपर्वा; बहुराजन्+डाप्=बहुराजन्+आ=बहुराजा; यहाँ विकल्प से ङीप् होता है, अतः बहुराज्ञी रूप भी बनता है ।

चाप् (आ)

३–"यङश्चाप्" जातिवाची यङ् प्रत्ययान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए चाप् (आ) प्रत्यय जुड़ता है । यथा—

सौवीर्य+चाप्=सौवीर्य+आ=सौवीर्या; कारीषगन्ध्य+चाप्=कारीषगन्ध्य+आ= कारीषगन्ध्या; वाराह्य+चाप्=वाराह्य+आ=वाराह्या। शर्कराक्ष्य+चाप्=शर्कराक्ष्य+आ= शर्कराक्ष्या; पौतिमाष्य+आ=पौतिमाष्या । गोकक्ष्य+आ=गोकक्ष्या; आवट्य+आ=आवट्या, सूर्य+चाप्=सूर्य+ आ=सूर्या; सूर्य+ङीष्=सूरी (वैकल्पिकरूप) ।

उक्त तीनों प्रत्ययों का फलितार्थ 'आ' प्रत्यय है, जिसके संयोग से स्त्रीवाची शब्द निष्पन्न होते हैं ।

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
कृशः+आ=	कृशा	प्रथमः+आ=	प्रथमा
वीरः+आ=	वीरा	द्वितीयः+आ=	द्वितीया
दीनः+आ=	दीना	तृतीयः+आ=	तृतीया
मलिनः+आ=	मलिना	तुरीयः+आ=	तुरीया
चतुरः+आ=	चतुरा	आत्मजः+आ=	आत्मजा
धीरः+आ=	धीरा	सर्वज्ञः+आ	सर्वज्ञा
चपलः+आ=	चपला	सुगमः+आ=	सुगमा
पण्डितः+आ=	पण्डिता	मनोहरः+आ=	मनोहरा
अनुकूलः+आ=	अनुकूला	यशोधरः+आ	यशोधरा
शान्तः+आ=	शान्ता	दुर्लभः+आ=	दुर्लभा
निपुणः+आ=	निपुणा	सुलभः+आ=	सुलभा
कुशलः+आ=	कुशला	ज्ञानदः+आ=	ज्ञानदा

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

कृष्णः+आ=	कृष्णा	श्रुतः+आ=	श्रुता
प्रबलः+आ=	प्रबला	दृष्टः+आ=	दृष्टा
स्थिरः+आ=	स्थिरा	गन्तव्यः+आ=	गन्तव्या
कार्यः+आ	कार्या	पाठ्यः+आ=	पाठ्या
मदीयः+आ=	मदीया	त्वदीयः+आ=	त्वदीया
मामकीनः+आ=	मामकीना	तावकीनः+आ=	तावकीना
गुरुतरः+आ=	गुरुतरा	महत्तमः+आ=	महत्तमा
लघुतमः+आ=	लघुतमा	कनिष्ठः+आ	कनिष्ठा
ज्येष्ठः+आ=	ज्येष्ठा	बलिष्ठः+आ=	बलिष्ठा

ङीप् (ई)

४ "ऋन्नेभ्योङीप्"—ऋकारान्त और नकारान्त शब्दों से ङीप् (ई) प्रत्यय होता है। यथा—

दातृ+ङीप्=दातृ+ई=दात्री, गन्तृ+ङीप्=गन्तृ+ई गन्त्री । तेजस्विन्+ङीप्=तेजस्विन्+ई=तेजस्विनी; गुणिन्+ङीप्=गुणिनी।

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
दातृ–दाता+ई=	दात्री	कामिन्–कामी+ई=	कामिनी
धातृ–धाता+ई=	धात्री	मानिन्–मानी+ई=	मानिनी
कर्तृ–कर्त्ता+ई=	कर्त्री	मायाविन्–मायावी+ई=	मायाविनी
जनयितृ–जनयिता+ई=	जनयित्री	विलासिन्–विलासी+ई=	विलासिनी
प्रसवितृ–प्रसविता+ई=	प्रसवित्री	उपकारिन्–उपकारी+ई=	उपकारिणी
संवादयितृ–संवादयिता+ई=	संवादयित्री	अनुरागिन्–अनुरागी+ई=	अनुरागिणी
भोक्तृ–भोक्ता+ई=	भोक्त्री	अधिकारिन्–अधिकारी+ई=	अधिकारिणी
गन्तृ–गन्ता+ई=	गन्त्री	प्रियवादिन्–प्रियवादी+ई=	प्रियवादिनी

(क) "टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः"—टित्, ढ, अण्, अञ्, द्वयसच, दघ्नञ, मात्रच, तयप्, ठक्, ठञ्, क्वरप, कञ् आदि प्रत्ययों से बने अकारान्त शब्दों से ङीप् प्रत्यय लगता है। यथा—

वनेचर+ङीप्=वनेचर+ई=वनेचरी; तापस+ङीप्=तापस+ई=तापसी।

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिग	स्त्रीलिङ्ग
टित्—वनेचर+ङीप्=	वनेचरी	अण्—कुम्भकार+ङीप्=	कुम्भकारी
,, —सेनाचर+ङीप्	सेनाचरी	अञ्—तापस+ङीप्=	तापसी

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ढ—वैनतेय+ङीप्=	वैनतेयी	द्वयसच्—जानुद्वयस्+ङीप्=जानुद्वयसी
गाङ्गेय+ङीप्=	गाङ्गेयी	दघ्नञ्—जानुदघ्न+ङीप्= जानुदघ्नी
सारमेय+ङीप्=	सारमेयी	मात्रच्—जानुमात्र+ङीप=जानुमात्री
तयप्—चतुष्टय++ङीप्=	चतुष्टयी	ठक्—धार्मिक+ङीप्=धार्मिकी
दशतय+ङीप्=	दशतयी	ठञ्—मासिक+ङीप्=मासिकी
कञ्—यादृश+ङीप्+	यादृशी	लावणिक+ङीप्=लावणिकी
तादृश्+ङीप्=	तादृशी	क्वरप्—नश्वर + ङीप्= नश्वरी

(ख) "उगितश्च"—उ और ऋ लोप होनेवाले प्रत्ययों के योग से बने शब्दों के उत्तर ङीप् (ई) प्रत्यय होता है। यथा—भवत्+ङीप्=भवत्+ई=भवती

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
भवत्	भवती	कुर्वत्	कुर्वती
विद्वस्	विदुषी	सदत्	सदती
गतवत्	गतवती	युवत्	युवती
कृतवत्	कृतवती	करिष्यत्	करिष्यती
प्रेयस्	प्रेयसी	यावत्	यावती
स्मृत्वत्	स्मृतवती	श्रीमत्	श्रीमती
श्रुतवत्	श्रुतवती	पुत्रवत्	पुत्रवती
पटीयस्	पटीयसी	गरीयस्	गरीयसी
धावत्	धावन्ती	गच्छत्	गच्छन्ती
तिष्ठत्	तिष्ठन्ती	चलत्	चलन्ती
पश्यत्	पश्यन्ती	दीव्यत्	दीव्यन्ती
नश्यत्	नश्यन्ती	जीर्यत्	जीर्यन्ती
कारयत्	कारयन्ती	स्मारयत्	स्मारयन्ती
तुदत्	तुदन्ती, तुदती	इच्छत्	इच्छन्ती; इच्छती
यात्	याती, यान्ती	मात्	मान्ती, माती
भविष्यत्	भविष्यन्ती	करिष्यत्	करिष्यन्ती

(ग) "द्विगोः" द्विगुसंज्ञक अकारान्त शब्दों से ङीप् प्रत्यय होता है।—

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिग	स्त्रीलिङ्ग
पञ्चमूलः	पञ्चमूली	दशमूलः	दशमूली
अष्टाध्यायः	अष्टाध्यायी	अष्टसहस्रः	अष्टसहस्री

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

त्रिलोकः	त्रिलोकी	द्विपुरुषः	द्विपुरुषा, द्विपुरुषी
त्रिपुरुषः	त्रिपुरुषी		

(घ) "दामहायनान्ताच्च"—जिन शब्दों के आदि में संख्या और अन्त में दामन् या हायन हो, उन शब्दों से ङीप् प्रत्यय होता है। यथा—

द्वे दाम्नी यस्याः सा द्विदाम्नी, द्विहायनी, त्रिहायणी, चतुर्हायणी।

(ङ)"वयसि प्रथमे"—बाल्यावस्था और युवावस्था के बोधक अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में ङीप् (ई) प्रत्यय होता है। यथा—

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
कुमारः	कुमारी	किशोरः	किशोरी
तरुणः	तरुणी	वधूटः	बधूटी
चिरण्टः	चिरण्टी	कलमः	कलमी
वर्करः	वर्करी		

(च) "पत्युर्नो यज्ञसंयोगे"—यज्ञ-संयोग अर्थात् यज्ञ के फलभागित्व अथ में पति के उत्तर ङीप् और इकार के स्थान में न होता है। यथा—

वशिष्ठस्य पत्नी; दिलीपस्य पत्नी।

(छ) विभाषा सपूर्वस्य"—पति शब्दान्त स्त्रीलिङ्ग समास में विकल्प से ङीप् (ई) प्रत्यय और न् का आगम होता है। यथा—

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
सभापतिः	सभापत्नी	वृद्धपतिः	वृद्धपत्नी
युवपतिः	युवपत्नी	स्थूलपतिः	स्थूलपत्नी
जीवपतिः	जीवपत्नी	कृशपतिः	कृशपत्नी

(ज) "अन्तर्वत् पतिवतोर्नुक्"—अन्तर्वत् और पतिवत् शब्द से ङीप् प्रत्यय और नुक् का आगम होता है। यथा—अन्तर्वत्नी, पतिवत्नी।

(झ) "वनो र च" वन् प्रत्ययान्त शब्दों तथा उन समासों में, जहाँ ऐसे शब्द आर पदमें हों, ङीप् प्रत्यय लगता है और न के स्थान पर र् होता है। यथा

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
पीवन्	पीवरी	धीवन्	धीवरी
अतिधीवन्	अतिधीवरी	पारदृश्वन्	पारदृश्वरी

(ञ) "मनोरौ वा"—मनु शब्द से स्त्रीलिङ्ग बनाने में ङीप् प्रत्यय लगता है और मनु शब्द को औकार तथा पद्य में एकारादेश होता है,। यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

मनोः स्त्री=मनायी, मनावी और मनुः ।

(ट) "पादोऽन्यतरस्याम्" पाद-भागान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने में विकल्प से ङीप् प्रत्यय होता है । यथा—

द्विपाद्—द्विपदी; त्रिपाद्—त्रिपदी; चतुष्पाद्—चतुष्पदी ।

ङीष् (ई)

५ "जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्"—जाति अर्थ में जातिवाचक अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए ङीष् (ई) प्रत्यय जोड़ा जाता है । यथा—

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
सिंहः	सिंही	व्याघ्रः	व्याघ्री
मृगः	मृगी	शूकरः	शूकरी
हरिणः	हरिणी	शृगालः	शृगाली
घोटकः	घोटकी	महिषः	महिषी
गर्दभः	गर्दभी	विडालः	विडाली
मानुषः	मानुषी	पिशाचः	पिशाची
हंसः	हंसी	सारसः	सारसी
महिषः	महिषी	चाण्डालः	चाण्डाली
राक्षसः	राक्षसी	निशाचरः	निशाचरी
कुक्कुरः	कुक्कुरी	क्षत्रियः	क्षत्रियी, क्षत्रिया
शूद्रः	शूद्री		

(क) "षिद्गौरादिभ्यश्च"—नर्तक, खनक, पथिक, गौर, मनुष्य, मत्स्य, शृंग, पिङ्गल, हय, गवय, ऋष्य, हरिण, कोकण, अलक, वदर, उभय, नट, मंगल शब्दों के अनन्तर ङीष् (ई) प्रत्यय जोड़ा जाता है । यथा—

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
नर्तकः	नर्तकी	खनकः	खनकी
पथिकः	पथिकी	कुमारः	कुमारी
सुन्दरः	सुन्दरी	पितामहः	पितामही
कदलः	कदली	स्थलः	स्थली
कासः	कासी	नागः	नागी

(ख) "वोतो गुणवचनात्"—उकारान्त गुणवाचक शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है । यथा—

६

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
मृदुः	मृद्वी	पटुः	पट्वी
साधुः	साध्वी	गुरुः	गुर्वी
लघुः	लघ्वी	बहुः	बह्वी
अणुः	अण्वी	स्वादुः	स्वाद्वी

(ग) "स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्"—बहुव्रीहि समास होने पर अवयव वाचक शब्द के उत्तर विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है यथा—

चन्द्रमुख+ङीष्=चन्द्रमुख+ई=चन्द्रमुखी, विकल्प में चन्द्रमुखा, सुकेशा, सुकेशी, ताम्रनखा, ताम्रनखी।

अपवाद—संज्ञावाची नखान्त और मुखान्त शब्दों से ङीष् नहीं होता। यथा शूर्पणखा, वज्रणखा, गौरमुखा, कालमुखा।

(घ) जब अवयव-वाचक शब्द दो से अधिक स्वरों का हो तो अवयव-वाचक शब्दों से ङीष् (ई) प्रत्यय नहीं होता। यथा—

पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग
सुलोचनः	सुलोचना	मृगनयनः	मृगनयना
चारुवदनः	चारुवदना	कुन्ददशनः	कुन्ददशना

(ङ) "पाककर्णपर्णपुष्पफलमूलबालोत्तरपदाच्च"—जिन शब्दों के उत्तर पद में पाक, कर्ण, पर्ण, पुष्प, फल, मूल, और बाल हों, उन शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने के लिए ङीष् प्रत्यय होता है। यथा

पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग
ओदनपाकः	ओदनपाकी	शंकुकर्णः	शंकुकर्णी
शालपर्णः	शालपर्णी	शङ्खपुष्पः	शङ्खपुष्पी
गोबालः	गोबाली	दर्भमूलम्	दर्भमूली

(च) "नासिकोदरौष्ठजङ्घादन्तकर्णश्रृङ्गाच्च"—नासिका, उदर, ओष्ठ, जंघा, दन्त, कर्ण, श्रृङ्ग, कण्ठ, गात्र प्रभृति शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने के लिए ङीष् प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा—

पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग
तुङ्गनासिकः	तुङ्गनासिकी, तुङ्गनासिका	दीर्घोदरः	दीर्घोदरी, दीर्घोदरा
बिम्बोष्ठः	बिम्बोष्ठी, बिम्बोष्ठा	कुन्ददन्तः	कुन्ददन्ती, कुन्ददन्ता

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

चारुकर्णः	चारुकर्णी, चारुकर्णा	कलकण्ठः	कलकण्ठी, कलकण्ठा
कृशगात्रः	कृशगात्री, कृशगात्रा	विमलाङ्गः	विमलाङ्गी, विमलाङ्गा

(छ) "इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्"—इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम, अरण्य, यव, यवन, मातुल, आचार्य और उपाध्याय शब्दों में ङीष् लगने के पूर्व आनुक् (आन्) जोड़ दिया जाता है। यथा—

पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग
इन्द्रः	इन्द्राणी	भवः	भवानी
रुद्रः	रुद्राणी	शर्वः	शर्वाणी
वरुणः	वरुणानी	मातुलः	मातुलानी
क्षत्रियः	क्षत्रियाणी	आचार्यः	आचार्यानी (आर्यानीमें णत्व नहीं होता है।)
उपाध्यायः	उपाध्यायानी	यवनः	यवनानी
हिमः	हिमानी	मृडः	मृडानी

ङीन् (ई)

६ "शाङ्गरवाद्यञो ङीन्"—शाङ्गरव, कापटव आदि गण के जातिवाचक शब्दों से परे स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीन् (ई) प्रत्यय होता है। यथा—

पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग
शाङ्गरवः	शाङ्गरवी	विदः	वैदी
ना	नारी		

ऊङ् (ऊ)

७ "ऊङुतः"—मनुष्यवाचक उकारान्त शब्दों से जिनकी उपधा में य न हो, स्त्रीत्व विवक्षा में 'ऊङ्' प्रत्यय लगता है। यथा—

पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग
कुरुः	कुरूः	अलाबुः	अलाबूः
कद्रुः	कद्रूः	कर्कन्धुः	कर्कन्धूः
कमण्डलुः	कमण्डलूः	पंगुः	पंगूः
श्वशुरः	श्वश्रूः	वामोरुः	वामोरूः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

रम्भोरुः	रम्भोरूः	शफोरुः	शफोरूः
सहोरुः	सहोरूः	संहितोरुः	संहितोरूः

अपवाद—रज्जुः, धेनुः, आखुः, हनुः, कमण्डलुः (संज्ञा भिन्न अर्थ में) कृकवाकुः, कृतवाहुः, अध्वर्युः ।

ति

८ "यूनस्तिः"—युवन् शब्द से स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'ति' प्रत्यय जुड़ता है और प्रत्यय से पूर्व के नकार का लोप होता है । यथा—

युवन्+ति=युवतिः, युवती, यूनी, श्वन्–शुनी; मघवन्–मघोनी, मघवती ।

अध्ययनीय शब्द

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
राजा	राज्ञी	भयङ्करः	भयङ्करी
श्वा-कुत्ता	शुनी	सखा (सखि)	सखी
विद्वान्	विदुषी	मुनिः	मुनिः, मुनी
मघवा-इन्द्र	मघोनी, मघवती	मृदुः	मृद्वी, मृदुः
मनुष्यः	मानुषी	साधुः	साध्वी, साधुः
मातुलः	मातुलानी	युवा	युवतिः, यूनी, युवती
नरः, ना	नारी	बहुराजः	बहुराजा, बहुराज्ञी
मत्स्यः	मत्सी	सुकेशः	सुकेशी, सुकेशा
कुरुः	कुरूः	महाराजः	महाराजी
गृहपतिः	गृहपत्नी, गृहपतिः	गार्ग्यः	गार्गी
श्वशुरः	श्वश्रूः	सूर्यः	सूर्या, सूरी
समानपतिः	सपत्नी	भ्राता	स्वसा
एकपतिः	एकपत्नी	वरः	वधूः
ग्रामपतिः	ग्रामपत्नी, ग्रामपतिः	अग्निः	अग्नायी
अधिपतिः	अधिपतिः	प्राच्	प्राची
तुदत्	तुदन्ती, तुदती	नश्वरः	नश्वरी
दीव्यत्	दीव्यन्ती	धीवरः	धीवरी
बोधयत्	बोधयन्ती	चातुर्यः	चातुरी
गरीयान्	गरीयसी		

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
मनुः	मनायी, मनावी, मनुः
शूद्रः	शूद्रा, शूद्री
आचार्यः	आचार्या, आचार्यानी
क्षत्रियः	क्षत्रिया, क्षत्रियी, क्षत्रियाणी
उपाध्यायः	उपाध्याया, उपाध्यायी, उपाध्यायानी
सभापतिः	सभापत्नी, सभापतिः
पाण्डुः	पाण्डुः
पठन्	पठन्ती
कमण्डलुः	कमण्डलूः, कमण्डलुः
तस्थिवस् (तस्थिवान्)	तस्थुषी
कद्रुः	कद्रुः, कद्रूः
धीवन्	धीवरी
पीवन्	पीवरी
चञ्चुः	चञ्चूः
इन्द्रः	इन्द्राणी
गोपः	गोपा, गोपी
गोपालकः	गोपालिका
धाता	धात्री
मनस्वी	मनस्विनी
छात्रः	छात्री, छात्रा
भ्रः	भ्रूः
कलकण्ठः	कलकण्ठी, कलकण्ठा
गरीयान्	गरीयसी
प्रेयान्	प्रेयसी
भवान्	भवती
गतवान्	गतवती
कुर्वन्	कुर्वती
करिष्यन्	करिष्यती, करिष्यन्ती
चारुवदनः	चारुवदना (चारुवदनी रूप नहीं होता)

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
धनवान्	धनवती
बुद्धिमान्	बुद्धिमती
मदीयः	मदीया
जग्मिवस् (जग्मिवान्)	जग्मुषी
ब्रह्मा	ब्रह्माणी
रुदन्	रुदती
ददत्	ददती
यशस्करः	यशस्करी
यादृशः	यादृशी
मेधाविन् (मेधावी)	मेधाविनी
अधिकारिन् (अधिकारी)	अधिकारिणी
उपकारिन् (उपकारी)	उपकारिणी
मनोहारिन् (मनोहारी)	मनोहारिणी
विद्यार्थिन् (विद्यार्थी)	विद्यार्थिनी
प्रियवादिन् (प्रियवादी)	प्रियवादिनी
यवनः	यवानी, यवनानी, यवनी
तपस्विन् (तपस्वी)	तपस्विनी
दण्डिन् (दण्डी)	दण्डिनी
तदीयः	तदीया
मृन्मयः	मृन्मयी
भवदीयः	भवदीया
जलदः	जलदा
अर्यः	अर्यी, अर्याणी, अर्या
पात्रकः	पात्रिका
पाठकः	पाठिका
बोधकः	बोधिका
गायकः	गायिका
मामकः	मामिका
सर्वकः	सर्विका
गम्भीरः	गम्भीरा
पण्डितः	पण्डिता

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
मूषिकः	मूषिका	इत्वरः	इत्वरी
कोकिलः	कोकिला	स्थलः	स्थली, स्थला
शङ्कः	शङ्का	कर्मकरः	कर्मकरी
पतिः	पत्नी	गायनः	गायनी
द्वितीयः	द्वितीया, द्वितीयी	गुणकरः	गुणकरी

शब्दयुग्मों में अर्थभेद

१—क्षत्रियाणी, क्षत्रिया—क्षात्रधर्म से युक्त स्त्री अथवा क्षत्रिय जाति की स्त्री।

क्षत्रियी—क्षत्रिय की स्त्री—क्षत्रिय किसी भी जाति की स्त्री से विवाह करले, तो उसकी वह पत्नी 'क्षत्रियी' कही जायगी।

२—अर्याणी, अर्या—स्वामिनी, वैश्या अर्थात् वैश्य जाति की स्त्री।

अर्यी—वैश्य की पत्नी—यह किसी भी जाति की हो सकती है।

३—शूद्रा—शूद्र जाति की स्त्री।

शूद्री—शूद्र की पत्नी—किसी भी जाति की स्त्री सम्भव है। शूद्र की पत्नी विषम जाति की होने पर भी शूद्री कही जायगी।

४—उपाध्याया—शिक्षा देनेवाली या अध्यापनकार्य करनेवाली स्त्री।

उपाध्यायी, उपाध्यायिनी—उपाध्याय की स्त्री।

५—आचार्या—आध्यात्मिक शिक्षा देनेवाली नारी।

आचार्यानी—आचार्य की पत्नी।

६—यवानी—खराब जौ, जिससे अंकुर न निकले।

यवनानी—यवन लिपि।

यवनी—यवन जाति की स्त्री।

७—भाजी—पकाने योग्य तरकारी।

भाजा—पकाने की योग्यता से रहित तरकारी।

८—स्थला—कृत्रिम भूमि।

स्थली—प्राकृतिक भूमि।

९—गोपी—गोप जाति के व्यक्ति विशेष की स्त्री, यह किसी भी जाति की हो सकती है।

गोपा—गोपा तु गोपकन्यका—गोप जाति की स्त्री।

१०—नीला—सामान्य वर्णवाची—यथा-कुवलयदलनीला कोकिला, नीला शाटी।

नीली—प्राणि और औषधिवाचक—यथा-नीली औषधिः, नीली गौः।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

११—कुशा—कुशा नाम की घास—यथा-कुशा रज्जुः।
कुशी— लोहविकार—फाल।
१२—कामुकी—मैथुन करने की इच्छा वाली।
कामुका—धनादि पदार्थ लेने की इच्छा वाली।
१३—पतिवत्नी—सौभाग्यवती स्त्री – जीवति भर्तरि।
पतिमती—अधिनायक वाली—यथा-पतिमती सेना।
१४—अन्तर्वत्नी—गर्भिणी स्त्री।
अन्तर्वती—अन्तरवाली भूमि।
१५—गोणी—अनाज रखने का वस्त्रनिर्मित पात्रविशेष, बोरा।
गोणा—साधारण अर्थ में प्रयुक्त संज्ञा।
१६—पाणिगृहीती—धार्मिकविधि से परिणीत भार्या।
पाणिगृहीता—जिस किसी तरह पत्नी रूप से स्वीकृत की गयी स्त्री।
१७—कुण्डी—पात्री।
कुण्डा—जारजा, (यार से उत्पन्न) अर्गला—बेड़ा।
१८—धनक्रीती—धन के द्वारा खरीदी गयी कोई भी वस्तु।
धनक्रीता—धन के द्वारा खरीदी गयी स्त्री; यथा—सा हि तस्य धनक्रीता प्राणेभ्योऽपि गरीयसी।
१९—कवरा—चित्र-विचित्र वर्णवाली—चितकवरी।
कवरी—केशवेशः—वेणी।
२०—चन्द्रभागी—चन्द्रिका—चाँदनी।
चन्द्रभागा—नदी का नाम।
२१—द्विपुरुषी—दो पुरुषा गहरी—द्वौ पुरुषौ प्रमाणमस्या खातायाः।
द्विपुरुषा—दो पुरुषों के द्वारा खरीदी गयी—'द्वाभ्यां पुरुषाभ्यां क्रीता'।
२२—त्रिपुरुषी—तीन पुरुषा गहरी।
त्रिपुरुषा—तीन पुरुषों के द्वारा खरीदी गयी।
२३—सभापतिः—किसी सभा में अध्यक्ष का आसन ग्रहण करनेवाली नारी।
सभापत्नी—सभापति की स्त्री।
२४—सूर्या—सूर्य देवता की स्त्री।
सूरी—कुन्ती।
२५—नागी—स्थूला—नागी भवति स्थौल्यं चेत्, नागा अन्या।
नागा—जातिवाचक, हस्तिनी और सर्पिणी।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

२६–शर्वरी—रात्रिः ।
गर्वरी—सन्ध्या ।
२७–पृतना—सेना ।
पूतना—राक्षसी ।
२८–सुगेषणा—किन्नरी ।
सुदेषणा—विराट् पत्नी ।
२९–वधूटी—युवती, प्रथमवया स्त्री ।
चिरण्टी—अप्राप्तवया स्त्री ।
३०–पतिः–स्त्रीत्व विवक्षा में–स्वामिनी–
यथा ग्रामस्य पतिरियं ब्राह्मणी ।
पत्नी–यज्ञफलभोक्त्री–यज्ञ का फल प्राप्त करनेवाली; यथा—वशिष्ठस्य पत्नी–वशिष्ठानुष्ठित–यज्ञफलभोक्त्री ।
अथवा–पुरुष के धन की स्वामिनी–
अस्य पुंसः वित्तस्य स्वामिनी ।
३१–चन्द्रमुखा—संज्ञाविशेष ।
चन्द्रमुखी–चन्द्रमा के समान मुखवाली ।
३२–शूर्पणखी–शूर्पमिव नखा अस्याः—
शूर्प के समान नखवाली ।
शूर्पणखा—नामविशेष ।
३३–रक्षा—बचाव ।
रक्षी—रक्षक, सिपाही ।
३४–लक्षम्—लाख संख्या ।
लक्ष्यम्—निशाना ।
३५–शान्तः—शान्त ।
सान्तः—अन्त सहित ।
३६–शङ्करः—शिव ।
सङ्करः—मिश्रित ।
३७–स्वजनः—बन्धु ।
श्वजनः—कुत्ता ।
३८–शकृत्—मैला ।
सकृत्—एक बार ।
३९–सकलम्—समस्त, सारा ।
शकलम्—टुकड़ा ।
४०–शरः—वाण ।
सरः—तालाब ।
४१–शर्वः—शङ्कर ।
सर्वः—सारा, समस्त ।
४२–शरणम्—शरण में जाना ।
शरण्यम्—शरण देनेवाला ।
४३–सुतः—पुत्र ।
सूतः—सारथी ।
४४–स्वर्णम्—सोना ।
सुवर्णम्—अच्छा रंग ।
४५–हरिणी—मृगी ।
हारिणी—हरनेवाली स्त्री ।
४६–बलिः—देवभाग ।
बली—बलवान् ।
४७–वेला—तट ।
वेला—समय ।
४८–मित्रम्—मित्र ।
मित्रः—सूर्य ।
४९–यवः—जौ ।
जवः—वेग ।
५०–व्यजनम्—पंखा ।
व्यञ्जनम्—शाक, सुन्दर भोजन ।
५१–द्विपः—हाथी ।
द्वीपः—टापू ।
५२–अवधानः—सावधान ।
अभिधानः—कोष ।
५३–आधिः—मानसिक व्यथा ।
व्याधिः—शारीरिक कष्ट ।
५४–इति—समाप्ति ।
ईतिः—अतिवृष्टि या अनावृष्टि ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

५५-कुलम्—वंश कुल ।
कूलम्—तट ।

५६-तरुणी—युवती ।
तरुणा—वृक्ष से-तरु+टा—
तृतीया एकवचन ।

अनुशीलनी

१ विवेकिन्, अरण्य, युवन्, शूद्र, मातुल, बिम्बोष्ठ, सभापति, श्रीमन्, लघु, दातृ, कर्तृ, किशोर, मदीय, इच्छन्, अश्व और श्वशुर शब्दों के स्त्रीलिङ्ग रूप लिखिये ।

२ निम्नाङ्कितों के लिए एक शब्द प्रयुक्त कीजिए—

आचार्यस्य जाया; मृग इव नयनेऽस्याः; समानः पतिरस्याः; परिणयेन पाणिः गृहीतः यस्याः सा; स्वयमध्यापयति या सा; वीरः पतिरस्याः; मातुलस्य जाया; दुष्टो यवः; महत् हिमम् ।

३ प्रमुख स्त्री-प्रत्ययों को सोदाहरण समझाइये ।

४ ङीप्, टाप्, ङीष्, और ऊङ् प्रत्ययों के पाँच-पाँच उदाहरण लिखिये ।

अव्यय

अव्यय—जो सदा एक रूप रहते हैं, वे अव्यय हैं । ऐसे शब्द जिनके रूप में कोई विकार-परिवर्तन उत्पन्न न हो और जो सदा एक-से-सभी विभक्ति, सभी वचन और सभी लिंगों में एक समान रहें, अव्यय कहलाते हैं ।

सदृशं त्रिषु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥

तीनों लिङ्ग, सभी विभक्ति और सभी वचनों के अनुसार जिनके रूपों में व्यय—घटती-बढ़ती न हो, वे अव्यय हैं । यथा—उच्चैः, नीचैः, अभितः, परितः आदि ।

अव्यय पाँच प्रकार के होते हैं—(१) उपसर्ग (२) क्रियाविशेषण (३) समुच्चयादि-बोधक (४) मनोविकार सूचक (५) और अतिरिक्त अव्यय या निपात ।

उपसर्ग

जो धातुओं और धातुज शब्दों से पूर्व लगते हैं, वे उपसर्ग हैं । उपसर्गों के तीन कार्य हैं—

(१) धातु के अर्थ में परिवर्तन करना । (२) धातु के अर्थ को पुष्ट करना ।

(३) धातु के अर्थ सर्वथा बदल देना ।

बताया है—

धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित् तमनुवर्तते ।
तमेव विशिनष्ट्यन्य उपसर्गगतिस्त्रिधा ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

उपसर्ग के योग से धातु का अर्थ परिवर्तित हो जाता है। यथा—

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराऽऽहार-संहार-विहार-परिहारवत् ॥

हरति—ले जाता है; अपहरति—चुराता है; अनुहरति—नकल करता है; परिहरति—छोड़ता है; आहरति—लाता है; प्रहरति—मारता है; विहरति—विहार करता है; उपहरति—उपहार देता है; आदि।

उपसर्ग २२ हैं—प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, सु, उत्, अभि, अति, प्रति, परि और उप।

१ प्र—प्रकर्ष-अधिकता; जैसे प्रभवति नृपः!

२ परा—विपरीत, पीछे, पृथक्—परागत—दूर गया; पराजयते—हारता है; पराभवति।

३ अप—पृथक्, दूर—अपहारः—दूर ले जाना; अपकरोति—हानि या बुरा करता है।

४ सम्—अच्छा, पूरा, साथ आदि। संगम्—संयुक्त होना; संस्कृतिः—परिष्कार, शुद्धि।

५ अनु—पीछे, साथ—राममनुगच्छति लक्ष्मणः।

६ अव—नीचे, दूर, अभाव-अवतारः—नीचे आना; अवमानः—नीचा मानना।

७-८ निस्, निर्—निषेध, बाहर, दूर—निस्सारः—साररहित, निर्गमः—निकास, बाहर जाने का मार्ग; रामस्तं निराकरोति।

९-१० दुस्, दुर्—कठिन, बुरा—दुष्करोऽस्ति—कठिन है; दुर्योधनस्य दुर्नीतिरफलम्।

११ वि—अलग होना, विना—वियोगः—विरह; विश्लिष्यति—अलग होता है।

१२ आङ्—तक, कम—दिलीप आसमुद्रं पृथिव्याः पतिरासीत्।

१३ नि—अन्दर, नीचे—दुष्टान् नियमयति—दुष्टों को अधीन या नीचे करता है।

१४ अधि—ऊपर—अधिरोहति—ऊपर चढ़ता है।

१५ अपि—भी, निकट—देवदत्तोऽपि नागतः।

१६ अति—बाहुल्य अथवा उल्लङ्घन-अतिक्रमः—सीमा का उल्लङ्घन, अतिनिद्रा—अधिक नींद।

१७ सु—अच्छा, सहज—सुकृतम्—अच्छा कार्य, सुगम—सहज।

१८ उत्—ऊपर, ऊँचा, श्रेष्ठ-उत्तमः, उद्भूतः, उत्साहः।

१९ अभि—ओर—अभिगमनम्—किसी ओर जाना।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

२० प्रति—ओर, उलटा; प्रति+कारः=प्रतिकारः—बदला; त्वं पितरं प्रति गच्छ।
२१ परि—चारों ओर—पृथिवी सूर्यं परिगच्छति पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है।
२२ उप—निकट—उपमानम्—मान के समीप; उपासना—निकट बैठना, प्रार्थना।

क्रिया विशेषण

क्रियाविशेषण संस्कृत में कई प्रकार के होते हैं। कुछ क्रियाविशेषण 'स्वः' आदि अव्ययों में परिगणित हैं; कुछ सर्वनामों से बनते हैं— जैसे-इदानीम्, यथा, तथा आदि; कुछ संख्यावाची शब्दों से बनते हैं; जैसे—एकधा, द्विधा, त्रिधा आदि और कुछ संज्ञाओं में तद्धित प्रत्यय जोड़ने से बनते हैं। यथा—पुत्रवत्, भस्मसात्, आदि।

क्रियाविशेषणों की तालिका

अकस्मात्=हठात्
अग्रतः=आगे
अग्रे=पहले
अचिरम्, अचिरात्, अचिरेण =शीघ्र, तुरन्त
अजस्रम्=निरन्तर, सदा
अञ्जसा=ठीक से, निश्चय से
अन्तर्=अन्दर
अतः=इसलिए
अतीव=बहुत
अत्र=यहाँ
अथ=तब, अनन्तर
अथ किम्=हाँ, तो क्या
अद्य=आज
अधः, अधस्तात् =नीचे
अपरम्=और
अपरेद्युः=दूसरे दिन
अधुना=अब

अनिशम्=निरन्तर, सदा
अन्तरेण=बारे में, विना
अन्तरा=बिना, बीच में
अन्तरे=बीच में
अन्यच्च=और
अन्यत्=इसके अतिरिक्त
अन्यत्र=अन्य स्थान में
अभितः=दोनों ओर, समीप में
अभीक्ष्णम्=निरन्तर, बार बार
अम्=शीघ्रता से
अर्वाक्=पहले
अलम्=बस, पर्याप्त
असकृत्=कई बार
असम्प्रति, असाम्प्रतम् =अनुचित
आरात्=दूर, समीप
इतः=यहाँ से
इत्थम्=इस प्रकार
इति=इस तरह
इदानीम्=इस समय

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

इह=यहाँ
ईषत्=कुछ, थोड़ा
उच्चैः=ऊँचे
उभयतः=दोनों ओर
ऋतम्=सच
ऋते=बिना
एकदा=एक बार
एकधा=एक प्रकार
एकपदे=एक साथ
एतर्हि=अब
एव=ही
एवम्=इस तरह
कच्चित्, कच्चन=क्या
कथम्=कैसे
कथञ्चन, कथञ्चित्=किस प्रकार
कदा=कब
कदाचित्=शायद, कभी
कदापि = कभी
कदापि न=कभी नहीं
किञ्च=और
किन्तु=लेकिन
किम् =क्या ? क्यों ?
किमुत=और कितना
किंवा=या
किल=सचमुच
कुतः=कहाँ से
कुत्र=कहाँ
कुत्रचित्=कहीं
कृतम्=बस, हो गया
क्व=कहाँ
क्वचित्=कहीं
खलु=निश्चय करके
चिरम्=देर तक
जातु=कभी भी
झटिति=जल्दी
तत्=इसलिए
ततः=फिर
तत्र=वहाँ
तदा=तब
तदानीम्=तब
तथा=उस तरह
तथाहि=जैसे
तस्मात्=इसलिए
तर्हि=तब, तो
तावत्=तबतक
तिरः, तिर्यक्=तिरछे
तूष्णीम्=चुपचाप
दिष्ट्या=सौभाग्य से
दूरम्=दूर
दोषा=रात्रि
द्राक्=शीघ्र
ध्रुवम्=निश्चय
न=नहीं
नवरम्=परन्तु
नाना=कई तरह से
नाम=प्रसिद्ध
निकषा=निकट
नीचैः=नीचे
नूनम्=निश्चित
नो=नहीं
परम्=किन्तु, फिर
परश्वः=परसों

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

परितः=चारों ओर
परेद्युः=दूसरे दिन कल
पर्याप्तम्=काफी
पश्चात्=पीछे
पुनः=फिर
पुरतः, पुरः, पुरस्तात्=आगे
पुरा=पहले
पूर्वेद्युः=पहले दिन
पृथक्=अलग-अलग
प्रकामम्=यथेष्ट, बहुत
प्रतिदिन=हररोज
प्रत्युत=उल्टे
प्रसह्य=जबर्दस्ती
प्राक्=पहले
बलात्=जबर्दस्ती
बहिः=बाहर
भूयः=बार बार, अधिक
भृशम्=अधिकाधिक
मनाक्=थोड़ा
मिथः=परस्पर
मुधा=व्यर्थ, बेकार
मृषा=झूठ
मुहुः=बार बार
मृषा=झूठ
यत्=जो, क्योंकि
यत्र=जहाँ
यथा=जैसे
यथा तथा=जैसे तैसे
यथा यथा=जैसे जैसे
यदा=जब
यावत्=जब तक
युगपत्=एक साथ
बिना=विना

वृथा=बेकार
वै=निश्चय
शनैः=धीरे
श्वः=कल (आनेवाला दिन)
शश्वत्=सदा
सर्वथा=सब प्रकार से
सर्वदा=सदा
सह=साथ
सहसा=एकबारगी
सहितम्=साथ
साकम्=साथ
सकृत्=एकबार
समानम्=बराबर
सद्यः=तुरन्त
सना=सब दिन
सपदि=तुरन्त, शीघ्र
समन्तात्=चारों ओर
समम्=बराबर
समया=निकट
समीचीनम्=यथार्थ
समीपे, समीपम्=निकट
सम्प्रति=इस समय, अभी
सम्यक्=भली प्रकार
सर्वतः=सभी ओर
सर्वत्र=सब कहीं
साम्प्रतम्=अब, उचित
सायम्=शामको
सुष्ठु=अच्छी तरह
स्वस्ति=आशीर्वाद
साक्षात्=सामने
सार्धम्=साथ
हि=निश्चय से
ह्यः=कल (बीता हुआ दिन)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

समुच्चयबोधक

समुच्चयादिबोधक अव्यय के सात भेद हैं—

१—संयोजक=च, अथ, अथो, उत, किंच, तु आदि।

२—वियोजक=वा, किंवा, तु, किन्तु आदि।

३—संकेतार्थ=यदि, चेत्, नोचेत्, यद्यपि, तथापि।

४—कारणवाचक=हि, तत्, तेन इत्यादि।

५—विकल्पवाचक=अहो, आहोस्वित्, उत, किं, किन्तु, किमुत, तनु, नु,

६—कालवाचक=यावत्, तावत्, यदा, तदा, कदा इत्यादि।

७—विधि अथवा निषेधार्थक=अङ्ग, अथ, किम्, आम्, अद्धा।

अथ कार्यारम्भ और इति कार्यान्त का सूचक है। च शब्द और अर्थ का सूचक है। जहाँ हिन्दी में और दो शब्दों के बीच में आता है, वहाँ संस्कृत में च शब्द दोनों के उपरान्त आता है। यथा— रामो लक्ष्मणश्च सीतया सह आगच्छताम्।

मनोबिकार सूचक अव्यय

(१) हन्त—हर्ष और खेदसूचक—हन्त! सविज्ञानमस्य दर्शनम्। हन्त! व्याधिना पीडितोऽस्मि।

(२) आः, हुम्, हम्—क्रोधसूचक; आः कथमिदं सञ्जातम्; हुम् किं विदधाति; हम् ते कविवरा विपरीतबोधाः।

(३) हा, हा हा, हन्त—शोक सूचक—हा! निर्धनते! त्वया जर्ज्जरीकृतोऽस्मि, हहा! रोगेण पीडितोऽस्मि, हन्त! त्वया कृतमिदम्।

(४) बत—दयासूचक, खेदसूचक—बत! शत्रुभिराक्रान्तोऽसि।

(५) अहो, अहह—विस्मयसूचक—अहो बत सिंहस्य; अहह! बुद्धिप्रकर्षः पाश्चात्यानाम्।

(६) किम्, धिक्—धिक्कारसूचक—धिक् त्वामपराधिनम्; किं कृतं त्वया।

(७) अङ्ग, अयि, अये, भोः—आदरसहित बुलाने के काम में आते हैं। यथा—अङ्ग, सुशर्मन्! हे शिष्य! भो गुरो!

(८) अयि, अरे, रे रे—अवज्ञा से बुलाने के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। यथा—अयि दुर्विनीते! भर्तारमुल्लंघयसि, अरे अरे मूढ! गुरुणा नाद्रियसे। रे रे वञ्चक!

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

निपात और अतिरिक्त अव्यय

निपात पाद-पूर्त्यर्थक होते हैं या अर्थ के बल को बढ़ाने वाले होते हैं। इनमें से कुछ ये हैं—

किल, खलु, च, नु, तु, वै, हि इत्यादि।

निम्नलिखित निपात कुछ विशिष्ट शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं—

अद्–अद्भुतम् (आश्चर्य)

का—कापुरुषः (कायर), कोष्णम् (गुनगुना, कम गर्म)

काजलम् (थोड़ा जल)

कु—कुकृत्यम् (कुकर्म)

चन, चित्—किंचित्, किंचन, कश्चित् , कश्चन आदि।

अतिरिक्त अव्यय

तद्धितों और कृत्–प्रत्ययों के संयोग से भी कुछ अव्यय बनते हैं।

तद्धित–प्रत्ययों में—तसिल् प्रत्ययान्त, त्रस् प्रत्ययान्त, दा प्रत्ययान्त, दानीम् प्रत्ययान्त, अधुना, कर्हि, यर्हि, तर्हि, दिक् और कालवाचक—पुरः, पश्चात् , उत्तरेण, धा-प्रत्ययान्त एकधा, भूयप्रत्ययान्त—भस्मीभूय, शुक्लीभूय, सात् प्रत्ययान्त—अग्निसात् , धूलिसात् ; कृत्वसुच् प्रत्ययान्त—द्विकृत्वः, त्रिकृत्वः आदि अव्यय हैं।

कृदन्तों में स्मारं-स्मारं, गन्तुम् , पिबध्यै, कृत्वा आदि अव्यय के समान प्रयुक्त होते हैं।

—:०:—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पञ्चमोऽध्यायः

कारकविचार

"करोति क्रियां जनयतीति कारकम्"—क्रिया के उत्पादक को कारक कहते हैं अथवा "क्रियान्वयि कारकम्"—क्रिया के साथ जिसका साक्षात् सम्बन्ध हो, उसे कारक कहते हैं। संस्कृत में छह कारक हैं—

कर्त्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणं इत्याहुः कारकाणि षट् ॥

अर्थात्—कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण ये छः कारक होते हैं। संस्कृत के वैयाकरणों ने सम्बन्ध को कारक नहीं माना है; यतः सम्बन्ध कारक का क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं हे। यथा—"मोहनः सोहनस्य धनमचोरयत्" इस वाक्य में 'अचोरयत्' क्रिया के साथ न तो 'सोहनस्य' का साक्षात् सम्बन्ध है और न 'सोहनस्य' में 'अचोरयत्' क्रिया का जनकत्व—उत्पादकत्व ही है। अतः सम्बन्ध को कारक नहीं माना जाता।

कर्ता

"स्वतन्त्रः कर्त्ता"

क्रिया के करने में जो स्वतन्त्र हो अर्थात् जो काम करे उसे कर्त्ता कहते हैं। यथा-

'रामः फलं खादति' वाक्य में 'खादति' क्रिया का करनेवाला 'रामः' है अथवा 'खादति' क्रिया का व्यापार 'रामः' पर है, व्यापारवान् होने के कारण उक्त वाक्य में कर्त्ता 'रामः' हुआ।

कर्त्ता के दो भेद हैं—प्रयोजक कर्त्ता और प्रयोज्य कर्त्ता।

"तत्प्रयोजको हेतुश्च"

जो दूसरे को क्रिया करने के लिए प्रेरित करता है, उसे प्रयोजक कर्त्ता और जो काम करता है, उसे प्रयोज्य कर्त्ता कहते हैं।

कर्म

"कर्त्तरीप्सिततमं कर्म"

कर्त्ता के लिए जो अत्यन्त ईप्सित—अभीष्ट हो, उसे कर्म कहते हैं। तात्पर्य यह है कि क्रिया के 'फलाश्रय' को कर्म कहा जाता है। 'क्रिययाक्रान्तं कर्म'—क्रिया द्वारा जो

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

आक्रान्त हो, उसे कर्म कहते हैं। अर्थात्—क्रिया सम्बन्धी फल जिस पर पड़ता है, वह कर्म है, यथा—'रामः, गृहं प्रविशति,' 'सः चन्द्रं पश्यति', 'रामः जलं पिबति' 'सः पुष्पं चिनोति' 'सः वृक्षमारोहति' प्रभृति वाक्यों में क्रियाओं का फल 'गृहं', 'चन्द्रं', 'जलं', 'पुष्पं', और 'वृक्षं' पर पड़ रहा है, अतः ये कर्म हैं।

करण

"साधकतमं करणम्"

अपने कार्य की सिद्धि में कर्त्ता जिसकी सबसे अधिक सहायता लेता है, उसे करण कहते हैं। यथा—'**रजकः लगुडेन गर्दभं** ताडयति' वाक्य में रजक कर्त्ता ताडन रूप क्रिया में लगुड (लाठी) की सबसे अधिक सहायता ग्रहण करता है, अतः 'लगुडेन' करण है। इसी प्रकार 'चक्षुषा पश्यति, कर्णेन शृणोति, हस्तेन गृह्णाति, दात्रेण लुनाति, यष्ट्या प्रहरति, वस्त्रेण आच्छादयति' प्रभृति वाक्यों में चक्षुषा, कर्णेन, हस्तेन, दात्रेण, यष्ट्या और वस्त्रेण करण-कारक के रूप हैं।

सम्प्रदान

"कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्"—

दानकार्य द्वारा कर्त्ता जिसे सन्तुष्ट करता है, उसे सम्प्रदान कहते हैं।

"क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम्"

किसी भी क्रिया के द्वारा जो अभिप्रेत हो, वह सम्प्रदान है।

"यस्मै दानं सम्प्रदानम्"

जिसको कुछ दिया जाय उसे और जिसके लिए कोई क्रिया की जाय, उसे सम्प्रदान कहते हैं। यथा—

'दरिद्राय धनं ददाति'; 'भिक्षवे भिक्षां ददाति'; सर्वस्वं गुरवे ददाति, वाक्यों में दरिद्र के लिए, भिक्षु के लिए और गुरु के लिए दिया जा रहा है, अतः ये सम्प्रदान हैं।

अपादान

"ध्रुवमपायेऽपादानम्"

क्रिया द्वारा किसी वस्तु के अलगाव में जो अचल रहे, उसे अपादान कहते हैं। अथवा "**यतो विश्लेषोऽपादानम्**"—जिससे कोई वस्तु अलग हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। यथा—'वृक्षात्पत्रं पतति' इस वाक्य में पतन क्रिया द्वारा पत्र के पृथक् होने

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पर भी वृक्ष अचल पाया जाता है। अतः 'वृक्षात्' अपादान कारक है। इसी प्रकार 'हस्ताद् भ्रष्टः' 'जलादुत्थितः' वाक्यों में हस्त और जल अपादान हैं।

अधिकरण

"आधारोऽधिकरणम्"

कर्त्ता और कर्म के आधार को अधिकरण कहते हैं। आशय यह है कि जो वस्तु क्रिया होते समय कर्त्ता और कर्म का आधार हो, उसे अधिकरण कहते हैं। आधार के तीन भेद हैं—(१) औपश्लेषिक या ऐक देशिक, वैषयिक और अभिव्यापक।

जिसके साथ आधेय का भौतिक संश्लेष हो, उसे औपश्लेषिक आधार कहते हैं। जैसे—"**कटे आस्ते काकः**" में चटाई और काक का भौतिक संश्लेष प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है। यही उदाहरण ऐकदेशिक का भी है; यतः काक चटाई के किसी एक प्रदेश में स्थित है, समस्त चटाई पर नहीं। इसी प्रकार '**वने वसति**', '**नद्यां स्नाति**', '**गृहे स्वपिति**', '**शय्यायां शिशुः शेते**' प्रभृति उदाहरण भी औपश्लेषिक या ऐकदेशिक आधार के उदाहरण हैं।

जिसके साथ आधेय का बौद्धिक संश्लेष हो, उसे वैषयिक आधार कहते हैं। यथा—'**मोक्षे इच्छा अस्ति**' वाक्य में इच्छा का मोक्ष में अधिष्ठित होना बौद्धिक संश्लेष है। इसी प्रकार '**विद्यायामनुरागः**'वाक्य में विद्या में अनुराग अधिष्ठित है।

जिसके साथ आधेय का व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध हो, उसे अभिव्यापक आधार कहते हैं। यथा—

'**तिलेषु तैलम्**' '**दुग्धे माधुर्यम्**' '**वह्नौ दाहिका शक्तिरस्ति**' वाक्यों में तैल, माधुर्य, दाहिका शक्ति; तिल, दुग्ध और वह्नि के किसी एक भाग में नहीं हैं, बल्कि समस्त तिल, दुग्ध और वह्नि में व्याप्त हैं।

विभक्ति-निर्णय

संख्याकारकबोधयित्री विभक्तिः—जिसके द्वारा संख्या और कारक का बोध हो, उसे विभक्ति कहते हैं। यथा—'घटः, घटौ, घटाः' में प्रथमा विभक्ति के एक घट, दो घट और बहुत घट का बोध होता है। 'चन्द्रं पश्यति' में चन्द्र में द्वितीया विभक्ति रहने से कर्मकारक का बोध होता है। विभक्तियाँ सात होती हैं—प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी।

प्रथमा विभक्ति

१—"प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा"

प्रातिपदिक—संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम का अर्थमात्र कहना हो तो उसमें प्रथमा

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विभक्ति होती है। यथा—वृक्षः, लता, पुष्पम्, गिरिः, नदी, जलम्, रामः, सीता, एकः, द्वौ, त्रयः, द्रोणः।

२—"उक्ते कर्त्तरि प्रथमा"

जिस वाक्य में कर्त्ता उक्त अर्थात् प्रधान हो—अर्थात् कर्तृवाच्य वाक्य में कर्त्ता को प्रथमा विभक्ति होती है। यथा—"शिशुः गृहं गच्छति" वाक्य में शिशु कर्त्ता है, और वही प्रधान है, यतः क्रिया उसके अनुकूल है, अतः 'शिशुः' प्रथमा विभक्ति हुई।

३—"उक्ते कर्मणि प्रथमा"

जिस वाक्य में कर्म उक्त—प्रधान हो, तो कर्म को प्रथमा विभक्ति होती है। अर्थात् कर्मवाच्य वाक्य में 'कर्म' को प्रथमा विभक्ति होती है। यथा—

'मया पुस्तकं पठ्यते' वाक्य में 'पुस्तकं' कर्म है और वही प्रधान है, क्योंकि क्रिया का प्रयोग उसीके अनुकूल हुआ है। अतः 'पुस्तकम्' में प्रथमा विभक्ति हुई है।

४—"सम्बोधने च"

सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति होती है। यथा—

हे राम। आगच्छ, हे देवि! पठ, भो बालकः! पठत—वाक्यों में सम्बोधन अर्थ में प्रथमा विभक्ति हुई है।

५—"अव्ययोगे प्रथमा"

इति, अपि, नाम, आदि कई अव्ययों के योग में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा—

'सरयूतीरे अयोध्येति नाम नगरी'; 'पाटलिपुत्रे चन्द्रगुप्तो नाम राजासीत्'; 'वने भासुरको नाम सिंहोः प्रतिवसति'; 'विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्' प्रभृति वाक्यों में इति, नाम और अपि अव्ययों का प्रयोग होने से प्रथमा विभक्ति हुई है।

द्वितीया विभक्ति

१—"कर्मणि द्वितीया"

कर्तृवाच्य में कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

सः पुस्तकं पठति। बालिका पुष्पाणि चिनोति। रामः जलं पिबति।

उक्त तीनों वाक्यों में 'पुस्तकं', 'पुष्पाणि' और 'जलं', में कर्तृवाच्य प्रयोग होने से कर्म में द्वितीया विभक्ति हुई है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

२—"अनुक्ते कर्मणि द्वितीया"

कर्तृवाच्य प्रयोगों में अनुक्त अर्थात् अप्रधान कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

मोहनः वेदं पठति। **श्यामः चन्द्रं** पश्यति। **दीपकः हरिं** भजति।

उक्त तीनों वाक्यों में 'वेदं', 'चन्द्रं' और 'हरिं' अप्रधान कर्म हैं; यतः क्रियाएँ उक्त प्रयोगों के अनुकूल न होकर कर्त्ताओं के अनुकूल हैं।

३—"क्रियाविशेषणे द्वितीया"

क्रियाविशेषण में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

प्रदीपः शीघ्रं गच्छति। **श्यामः मधुरं** भाषते। **स मन्दं मन्दं** धावति।
सः सत्वरं गच्छति। **मोहनः द्रुतं** पलायते।

उपर्युक्त वाक्यों में शीघ्रं, मधुरं, मन्द, सत्वरं, द्रुतं गच्छति, भाषते, धावति और पलायते क्रियाओं की विशेषता प्रकट करते हैं। अतः क्रियाविशेषणों में द्वितीया विभक्ति हुई है।

४—"कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे"

जब कोई क्रिया लगातार कुछ समय तक होती रहे या कोई वस्तु कुछ दूरी तक लगातार रहे तो समय और मार्गवाचक शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

हरिः **मासं** व्याकरणं पठति—(हरि महीने भर लगातार व्याकरण पढ़ता है।)
क्रोशं कुटिला नदी—(लगातार कोस भर नदी है।)
क्रोशं गिरिः वर्तते—(लगातार कोस भर पहाड़ है।)
चत्वारि **वर्षाणि** संस्कृतमपाठिषम्। (लगातार चार वर्षों तक संस्कृत पढ़ा।)
मासान् भोजनाभावात् देवदत्तः मृतः—(महीने भर तक लगातार भोजन न मिलने से देवदत्त मर गया।)

५—"उपान्वध्याङ्वसः"

उप, अनु, आङ् और अधि उपसर्गयुक्त 'वस्' धातु के आधार में द्वितीया विभक्ति होती है।

(क) योगिनः **वनम्** अधिवसन्ति—योगी वन में निवास करते हैं।
(ख) हरिः **वैकुण्ठम्** उपवसति—हरि वैकुण्ठ में रहते हैं।
(ग) रामचन्द्रः **अयोध्याम्** अनुवसति—रामचन्द्र अयोध्या में रहते हैं।
(घ) सः **देशान्तरम्** आवसति—वह देशान्तर में रहता है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

६—"अधिशीङ्स्थासां कर्म"

अधिपूर्वक 'शी', 'स्था' और 'आस' धातुओं के आधार में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

हरिः **समुद्रम्** अभिशेते—हरि समुद्र में सोते हैं।

सः **विद्यालयम्** अधितिष्ठति—वह विद्यालय में रहता है।

शिवः **कैलासम्** अध्यास्ते—शिव कैलास पर रहते हैं।

७—"अभिनिविशश्च"

अभि और नि उपसर्ग जब एक साथ विश् धातु के पहले आते हैं, तो विश् के आधार को कर्मकारक होता है। यथा—

क—अभिनिविशते **सन्मार्गम्**—(सन्मार्ग में प्रवेश करता है।)

ख—धन्या सा कामिनी **याम्** भवन्मनोऽभिनिविशते—वह स्त्री धन्य है, जिसमें आपका मन लगा है।

८—'अभितः परितः समयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि"

अभितः—दोनों ओर, परितः—चारों ओर, समया—समीप, हा और प्रति—ओर शब्दों की जिनमें सन्निकटता पायी जाय, उनमें द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

नदीमुभयतः वृक्षाः सन्ति—नदी के दोनों ओर वृक्ष हैं।

ग्रामं परितः वाटिकास्ति—गाँव के चारों ओर वाटिका है।

विद्यालयं सर्वतः पुष्पाणि सन्ति—विद्यालय के सभी ओर पुष्प हैं।

अभितो **ग्रामं** नदी वहति—गाँव के दोनों ओर नदी बहती है।

समुद्रं समया निकषा वा लङ्कास्ति—समुद्र के पास लङ्का है।

हा **दुर्जनम्**—दुर्जन के लिए खेद है।

स **वाराणसीं** प्रति गच्छति—वह वाराणसी की ओर जाता है।

९—**प्रति, अनु, उपर्युपरि, अन्तरा, अन्तरेण, अधोऽधः और धिक् के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—**

अनु—रामम् अनु, लक्ष्मणो जातः—राम के पीछे उत्पन्न हुए।

उपर्युपरि—उपर्युपरि **पर्वतम्** पश्यति—पर्वत के ऊपर-ऊपर देखता है।

अन्तरा—गङ्गां यमुनां चान्तरा प्रयागोऽस्ति—गङ्गा-यमुना के बीच प्रयाग है।

अन्तरेण—ज्ञानमन्तरेण न सुखम्—ज्ञान के बिना सुख नहीं है।

अधोऽधः—**वृक्षम**धोऽधः छायास्ति—वृक्ष के नीचे छाया है।

अध्यधि—**लोकम**ध्यधि हरिः—लोक के अन्दर-अन्दर हरि हैं।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

धिक्--धिक् **पापिनम्**—पापी को धिक्कार।

यावत्--**वनं** यावत् गच्छति—वन पर्यन्त जाता है।

अधिकृत्य--**मामधिकृत्य** त्वया किमभिहितम्—मेरे सम्बन्ध में तूने क्या कहा।

१०—"अकथितञ्च"

दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष्, नी, हृ, कृष् और वह्, इन द्विकर्मक धातुओं के अपादान आदि को भी द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

गां दोग्धि पयः—गाय से दूध दुहता है।

व्रजमवरुणद्धि गाम्—गोशाला में गाय को रोकता है।

नृपः **दुर्जनं** शतं दण्डयति—राजा दुर्जन पर सौ रुपये दण्ड लगाता है।

राजा **रामं** क्षमां याचते—राजा राम से क्षमा माँगता है।

गुरुं धर्मं पृच्छति—गुरु से धर्म पूछता है।

लतां पुष्पाणि चिनोति—लता से पुष्प चुनता है।

नलिनं शतं जयते—नलिन से सौ रुपये जीतता है।

सागरं सुधां मथ्नाति--समुद्र से अमृत को मथता है।

रामं शतं मुष्णाति—राम के सौ रुपये चुराता है।

गां ग्रामं नयति हरति कर्षति वहति वा—गाय को गाँव में ले जाता है।

तृतीया विभक्ति

१—"कर्तृकरणयोस्तृतीया"

२—"सहार्थे तृतीया"

अनुक्तकर्त्ता (भाववाच्य तथा कर्मवाच्य में कर्त्ता अनुक्त होता है) तथा करणकारक में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

रामेण रावणोऽहन्यत हतो वा—कर्मवाच्य।

रामेण सुप्यते, **मया** जीव्यते—भाववाच्य।

मोहनः **कुठारेण** काष्ठं छिनत्ति—करणे तृतीया।

सहार्थक—सह, साकम्, सार्द्धम् और समम् के योग में, जिसका साथ बताया जाय, उसमें तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

पुत्रेण सह आगतः पिता—पिता पुत्र के साथ आया।

नलिनः **मात्रा** साकम् गृहं गच्छति—नलिन माता के साथ घर जाता है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

केनापि सार्द्धं कलहं मा कुरु—किसी के साथ झगड़ा मत करो।

धनेन समं सर्वे प्रयान्ति—धन के साथ सब चले जाते हैं।

३—"ऊनवारणप्रयोजनार्थैश्च"

ऊन, वारण और प्रयोजन अर्थवाले शब्दों से तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

ऊनार्थक—

स विद्यया हीनः—वह विद्या से हीन है। त्वं **गर्वेण** शून्यः—तुम गर्व से शून्य हो।

एकेन ऊनः—एक कम। **धनेन** हीनः—धन से हीन।

वारणार्थक—

अलं **विवादेन**—विवाद—झगड़ा करना व्यर्थ है। **कलहेन** किम्—झगड़े से क्या लाभ?

प्रयोजनार्थक—

धनेन किं प्रयोजनम्—धन से क्या प्रयोजन।

कोऽर्थः पुत्रेण जातेन—पुत्र उत्पन्न होने से क्या प्रयोजन।

अनृतेन को गुणः—झूठ से क्या लाभ?

४—"प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्"

प्रकृति (स्वभाव), जाति आकृति, गोत्र तथा नाम आदि शब्दों के अर्थ में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

प्रकृत्या दयालुः—स्वभाव से ही दयालु। **जात्या** ब्राह्मणः—जाति से ब्राह्मण।

आकृत्या मनोहरः—आकृति से सुन्दर। **नाम्ना** नरेशः—रमेश नाम है।

गोत्रेण गर्गः—गोत्र से गर्ग—गर्गगोत्री है। **सुखेन** स्वपिति—सुख से सोता है।

वेगेन गच्छति—जल्दी जाता है।

५—"अपवर्गे तृतीया"

क्रिया समाप्ति के साथ फलप्राप्ति होने में कालवाचक और अध्ववाचक शब्दों के उत्तर अत्यन्त संयोग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

द्वादशभिः वर्षैः व्याकरणं श्रूयते—बारह वर्ष में व्याकरण पढ़ा जाता है।

क्रोशेन संहिताऽधीता—कोस भर जाते-जाते संहिता पढ़ ली।

क्रोशेन गीता पठिता—कोसभर जाते-जाते गीता पढ़ ली।

विशेष

यदि क्रिया समाप्ति और फल प्राप्ति का बोध न हो तो तृतीया विभक्ति न होकर द्वितीया विभक्ति होती है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

६—"येनाङ्गविकारः"

जिस अंग के विकार से प्राणी का विकार लक्षित होता हो, उस अंगवाचक शब्द से तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

नेत्रेण काणः पुरुषः—आँख से काना व्यक्ति। **कर्णेन** बधिरः—कान का बहिरा। **पादेन** खञ्जः—एक पैर का लंगड़ा। **पृष्ठेन** कुब्जः—पीठ का कुबड़ा।

७—"पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्"

पृथक्, विना, नाना शब्दों के साथ तृतीया, द्वितीया और पञ्चमी विभक्तियाँ होती हैं। यथा—

ग्रामं ग्रामेण ग्रामात् वा पृथक् मुनयः वसन्ति—मुनि ग्राम से अलग निवास करते हैं।

जलेन जलाद् जलं वा विना कमलं स्थातुं न शक्नोति—कमल जल के विना नहीं रह सकता है।

८—"हेतौ"

जिस कारण या प्रयोजन से कोई कार्य किया जाता है, या होता है, उसमें तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

दण्डेन घटः—दण्ड के कारण घड़ा।

विद्यया विद्यायाः वा यशः भवति—विद्या से यश होता है।

अध्ययनेन अध्ययनात् वा वसति—अध्ययन के लिए रहता है।

पुण्येन पुण्याद्वा स्वर्गप्राप्तिः—पुण्य से स्वर्ग प्राप्ति होती है।

९—"इत्थंभूतलक्षणे"

जो जिस प्रकार से जाना जाय, उसके लक्षण में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

जटाभिस्तापसः—जटाओं से तपस्वी जान पड़ता है।

स्वरेण रामभद्रमनुहरति—स्वर में राम के सदृश है।

१०—"अशिष्टव्यवहारे दाणः प्रयोगे चतुर्थ्यर्थे तृतीया"

निन्दित व्यवहार हो तो दाण् धातु के प्रयोग में चतुर्थी के अर्थ में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

दास्या संयच्छते कामुकः—कामुक दासी को धन देता है।

चतुर्थी

१—"चतुर्थी सम्प्रदाने"

सम्प्रदान में चतुर्थी होती है। यथा—

विप्राय गां ददाति—ब्राह्मण को गाय देता है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

२—"तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या"

कोई वस्तु या क्रिया जिसके निमित्त समझी जाती है, उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।

अश्वाय घासं छिनत्ति—अश्व के लिए घास काटता है। मुक्तये हरिं भजति—मुक्ति के लिए हरिभजन करता है।

कुण्डलाय हिरण्यम्—कुण्डल के लिए स्वर्ण। रन्धनाय स्थाली—पकाने के लिए थाली।

विद्या विवादाय—विवाद के लिए विद्या। धनं मदाय—अहंकार के लिए धन।

३—"नमः स्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च"

नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं और वषट् शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

गुरवे नमः—गुरु को नमस्कार। प्रजाभ्यः स्वस्ति—प्रजा का कल्याण हो।

अग्नये स्वाहा—अग्नि को यह आहुति है। पितृभ्यः स्वधा—पितरों को यह समर्पित है।

इन्द्राय वषट्—इन्द्र को बलि अर्पित है। अलं मल्लो मल्लाय—मल्ल दूसरे मल्ल के लिए काफी है।

४—"रुच्यर्थानां प्रीयमाणः"

रुच्यर्थक धातुओं के योग में जिसे रुचि, तृप्ति अथवा प्रसन्नता होती है, उसको चतुर्थी विभक्ति में रखा जाता है। यथा—

शिशवे क्रीडा रोचते—बच्चे को खेल अच्छा लगता है।

पुत्राय दुग्धं रोचते—पुत्र को दूध अच्छा लगता है।

इदं मह्यं स्वदते—यह मुझे स्वादिष्ट लगता है।

५—"धारेरुत्तमर्णः"

धृङ्—उधार लेना—कर्ज लेना धातु के योग में महाजन—कर्ज देने वाले की सम्प्रदान संज्ञा होती है और सम्प्रदान को चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः—हरि भक्त के लिए मोक्ष को धारण करते हैं।

श्यामोऽश्वपतये शतं धारयति—श्याम ने अश्वपति से एकसौ कर्ज लिया।

स तुभ्यं शतं धारयति—वह तुम्हारा सौ कर्ज लेता है।

त्वं मह्यं सहस्रं धारयसि—तुम मेरा हजार कर्ज लेते हो।

६—"स्पृहेरीप्सितः"

स्पृह (इच्छा करना) धातु के प्रयोग रहने से जिसकी इच्छा की जाय, उसकी चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

स धनाय स्पृहयति—वह धन चाहता है।

मोहनः पुष्पेभ्यः स्पृहयति—वह पुष्प चाहता है।

७—'क्रुधद्रुहर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः'

क्रुध्, द्रुह, ईर्ष्या और असूयार्थक धातुओं के योग में, तथा इन धातुओं के समान अर्थवाला धातुओं के योग में; जिनके ऊपर क्रोधादि किये जाते हैं, चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

हरये क्रुध्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति वा—हनुमान (हरि-कपि) पर रावण क्रोध करता है, अपकार करता है, ईर्ष्या करता है, दोष निकालता है।

८—'तुमर्थाच्च भाववचनात्'

तुमर्थ—निमित्तार्थ में विहित भाववाचक प्रत्ययान्त शब्दों में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

यागाय याति—यष्टुं याति—यज्ञ के लिए जाता है।

दानाय धनमर्जयति—दातुं धनमर्जयति—दान देने के लिए धनार्जन करता है।

पञ्चमी

१—'अपादाने पञ्चमी'

अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—

सः गृहात् समायाति—वह घर से आता है।

वृक्षात् पत्रं पतति—वृक्ष से पत्ता गिरता है।

आकाशात् पुष्पवृष्टिः बभूव—आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई।

२—'भुवः प्रभवः'

उत्पन्न होनेवाले का जो प्रभव—उत्पत्ति स्थान होता है, उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—

हिमवतो गङ्गा प्रभवति—हिमालय से गङ्गा उत्पन्न होती है।

धर्मात् सुखं प्रभवति—धर्म से सुख होता है।

३—'जनिकर्तुः प्रकृतिः'

जनधातु के कर्त्ता का आदिकारण, पञ्चमी विभक्ति में रखा जाता है। यथा—

ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते—ब्रह्मा से सन्तान उत्पन्न होती है।

कामात्क्रोधोऽभिजायते—काम से क्रोध उत्पन्न होता है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

४—'भीत्रार्थानां भयहेतुः'

भयार्थक और रक्षार्थक धातुओं के योग में भय के हेतु से पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—

मोहनः **सर्पात्** बिभेति—मोहन सर्प से डरता है।

५—'पञ्चमी विभक्तेः'

दो या अधिक वस्तुओं के बीच में किसी एक वस्तु की उत्कृष्टता प्रकट की जाय तो निकृष्टता बोधक शब्द से पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—

धनात् विद्या गरीयसी—धन से विद्या श्रेष्ठः है।

अकरणात् मन्दकरणं श्रेयः—नहीं करने से कुछ करना अच्छा है।

६—'पराजेरसोढः'

परा पूर्वक 'जि' धातु के योग में जो असह्य होता है, उसकी अपादान संज्ञा होती है, और पञ्चमी विभक्ति हो जाती है। यथा—

अध्ययनात् पराजयते—अध्ययन से भागता है (अध्ययन असाध्य या कष्टप्रद है)

७—'दिग्देशकालवाचिभिः'

दिशा, देश और कालवाचक शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—

गृहात् पूर्वः—घर से पूर्व।

भोजनात् प्राक्—भोजन के पहले।

मम **गृहात्** गङ्गानगरं योजन त्रयमस्ति—मेरे घर से गङ्गानगर तीन योजन है।

कार्तिक्या आग्रहायणी मासे—कार्त्तिकी पूर्णिमा से अगहन की पूर्णिमा एक महीने पर होती है।

अस्मात् दिवसात् गुरुपूर्णिमा दशसु दिवसेषु—आज से गुरुपूर्णिमा दस दिनों पर है।

८—'जुगुप्सा विरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानाम्'

जुगुप्सा (घृणा), विराम, प्रमाद (भूल या असावधानी) के समानार्थक शब्दों के साथ पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—

पापाज्जुगुप्सते—पाप से घृणा करता है।

न **निश्चितार्थाद्** विरमन्ति धीराः—धैर्यवान् पुरुष अपने निश्चय से नहीं हटते।

धर्मात्प्रमाद्यति—धर्म से प्रमाद करता है।

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा **स्वाधिकारात्प्रमत्तः**—(मेघ० १)

अतोऽर्थात् न प्रमाद्यन्ति प्रमदासु विपश्चितः (मनु० २।२१३)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

९—'अन्यारादितरर्तेदिक् शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते'

अन्य, आरात्, इतर, ऋते, दिग्वाचक, पूर्व, दक्षिण आदि तथा अञ्चु धातु से युक्त दिग्वाचक, प्रत्यक् उदक् प्रभृति दक्षिणा, उत्तरा प्रभृति एवं दक्षिणाहि, उत्तराहि प्रभृति शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—

अन्यो भिन्न इतरो वा **कृष्णात्**—कृष्ण से भिन्न।
आराद्वनात्—वन से नजदीक या दूर।
ज्ञानात् ऋते मुक्तिर्न भवति—ज्ञान के विना मुक्ति नहीं होती।
शैशवात् प्रभृति—बचपन से लेकर।
दक्षिणा **ग्रामात्**—गाँव से दक्षिण।
ग्रामात् बहिः गच्छ—गाँव से बाहर जाओ।

१०—'हेतौ तृतीया च'

हेतु अर्थ में तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—
हर्षात् नृत्यति बालकः—बालक आनन्द से नाचता है।
दुःखात् रोदिति—दुःख से रोता है। **भयात्** कम्पते—भय से काँपता है।

११—'आख्यातोपयोगे'

नियम पूर्वक विद्याग्रहण करने में आख्याता—वक्ता, शिक्षक, उपाध्याय आदि में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—

उपाध्यायात् छात्रः व्याकरणं पठति—उपाध्याय से छात्र व्याकरण पढ़ता है।
मया **तीर्थाद**भिनयविद्या शिक्षिता—मैंने अध्यापक से अभिनय कला सीखी है।
अध्यापकाद् गणितं पठति—अध्यापक से गणित पढ़ता है।

षष्ठी

१—'सम्बन्धे षष्ठी'

सामान्य सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा—
रामस्य दासः—रामका दास। **नद्याः** जलम्—नदी का जल।
तव पुत्रः—तुम्हारा पुत्र। **वृक्षस्य** शाखा—वृक्ष की शाखा।

२—'षष्ठी हेतुप्रयोगे'

हेतुशब्द के प्रयोग में जो शब्द कारण या प्रयोजन कहता है, वह और हेतु शब्द दोनों ही षष्ठी में रखे जाते हैं। यथा—
अन्नस्य हेतोः वसति—अन्न प्राप्ति के प्रयोजन से रहता है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अध्ययनस्य हेतोः वसति--अध्ययन के लिए रहता है।

अल्पस्य हेतोः—अल्प हेतु के लिए।

३— दिवस्तदर्थस्य'

द्यूत एवं क्रय-विक्रय व्यवहार में दिव् धातु के कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है।

शतस्य दीव्यति—सौ का जुआ खेलता है।

४—'कर्तृकर्मणोः कृति'

कृत्प्रत्ययों के योग में कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा—

शिशोः शयनम्—शिशु का सोना। धर्मस्य गतिः—धर्म की गति।

कृष्णस्य कृतिः—कृष्ण का कार्य। रामस्य गतिः—राम की गति।

तव (त्वया) पुस्तकं पठितव्यम्—तुमको पुस्तक पढ़नी चाहिए।

वेदस्य अध्येता—वेद का, अध्ययन् करने वाला।

आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन। नेता अश्वस्य स्रुघ्नस्य स्रुघ्नं वा।

५—'क्तस्य च वर्तमाने'

वर्तमान अर्थ में विहित क्त प्रत्यय के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा—

राज्ञां मतो बुद्धः पूजितो वा—राजाओं को समत या पूजित।

इदमेषामासितं गतं शयितं भुक्तं वा।

६—'तुल्यार्थैस्तृतीया च'

तुल्याथक—तुल्य, सम, समान, सदृश, आदि, शब्दों के योग में षष्ठी और तृतीया विभक्तियाँ होती हैं। यथा—

तव, त्वया तुल्यो गुणी नास्ति—तुम्हारे समान गुणी नहीं।

मूर्खस्य, मूर्खेण समः, पशुः नास्ति—मूर्ख के समान पशु नहीं।

व्याधेः व्याधिना सदृशः रिपुः नास्ति—रोग के समान शत्रु नहीं है।

७—'दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्'

दूर, अन्तिक तथा इनके समान अर्थ रखनेवाले शब्दों का प्रयोग होने पर षष्ठी तथा पञ्चमी होती है। यथा—

ग्रामस्य, ग्रामात् दूरम्—गाँव के दूर।

नगरस्य नगरात् अन्तिकम्—नगर के पास।

दूरं निकटं ग्रामस्य ग्रामाद्वा—गाँव के दूर या निकट।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

८—'षष्ठी चानादरे'

जिसका अनादर या तिरस्कार कर कोई कार्य किया जाता है, उसमें षष्ठी या सप्तमी होती हैं। यथा—

रुदतः पुत्रस्य रुदति पुत्रे वा वनं प्राव्राजीत्—रोते हुए पुत्र का तिरस्कार करके वह संन्यासी हो गया।

निवारयतोऽपि पितुः निवारयत्यपि पितरि वा अध्ययनं परित्यक्तवान्—

पिता के मना करने पर भी उनका तिरस्कार करके उसने अध्ययन त्याग दिया।

९—'यतश्च निर्द्धारणम्'

यदि किसी वस्तु का अपने समुदाय की अन्य वस्तुओं से किसी विशेषण द्वारा वैशिष्ट्य निर्देश किया जाय, तो समुदायवाचक शब्द षष्ठी अथवा सप्तमी विभक्ति में रखा जाता है। यथा—

कविषु कवीनां वा कालिदासः श्रेष्ठः—कवियों में कालिदास सबसे बड़े कवि हैं।

गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा—गायों में काली गाय बहुत दूध देने वाली है।

गृहे विद्यालये वा मैत्रः पटुः—विद्यार्थियों में मैत्र तेज हैं।

सप्तमी

१—'सप्तम्यधिकरणे'

अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा—

गृहे तिष्ठति—घर में रहता है। रामः **विद्यालये** पठति—राम विद्यालय में पढ़ता है।

स **शय्यायां** शेते—वह बिछावन पर सोता है।

२—'यस्य च भावेन भावलक्षणम्'

जब किसी कार्य के हो जाने पर दूसरे कार्य का होना प्रतीत होता है, तो जो कार्य हो चुकता है, उसे सप्तमी में रखते हैं। यथा—

गोषु दुह्यमानासु गतः—गायों के दुहने पर चला गया।

रामे वनं गते दशरथः प्राणान् तत्याज—राम के वन जाने पर दशरथ ने प्राण त्याग किये।

अवसन्नायां रात्रौ सूर्यः उदेति—रात्रि के बीत जाने पर सूर्य उदित होता है।

दिनेषु गच्छत्सु स पक्षिशावकान् खादति—दिन के अवसान होने पर वह पक्षियों के बच्चों को खाता है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

३—'साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः'

पूजन अर्थ में साधु और निपुण शब्द के योग में सप्तमी विभक्ति होती है, किन्तु प्रति का योग होने पर सप्तमी नहीं होती। यथा—

स व्याकरणे साधुः—वह व्याकरण में अच्छा है।

हरिः शास्त्रेषु निपुणः—हरि शास्त्रों में निपुण है।

स रथसञ्चालने प्रवीणः—वह रथ चलाने में प्रवीण है।

४—'व्यवच्छेदे'

किसी प्राणिवाचक शब्द को 'कर्म' बनाकर क्रिया की जाय और वाक्य में अङ्गवाचक शब्द भी हो तो उस अङ्गवाचक शब्द में सप्तमी विभक्तिहोती है। यथा—

कृष्ण कंसं केशेषु गृह्णाति—कृष्ण कंस के केश पकड़ते हैं।

५—क्षिप् मुच् अस् अद्व धातुओं के योग में तथा विश्वास, श्रद्धा, स्नेह, निष्ठा, आस्था अथ वाली धातुओं और शब्दों के साथ सप्तमी विभक्ति होती है। यथा—

सेनापतिः मृगे शरान् मुञ्चति, क्षिपति वा—सेनापति हिरण पर बाण छोड़ता है।

गुणिनि गुणज्ञो रमते—गुणी गुणज्ञों से प्रेम करता है।

स मयि साधु व्यवहरति—वह मुझसे अच्छा व्यवहार करता है।

अनुशीलनी

१—निम्नलिखित पदों का वाक्यों में व्यवहार कीजिए—

प्रति, अलं, ऋते, पृथक्, विना, नाना, धिक्, निपुणः, समम्, सह, प्रति।

२—निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए—

स मां वस्त्रं ददाति; दरिद्रो राज्ञो धनं याचते; रामः त्वां शतं धारयति; अहं तस्य सह गमिष्यामि; त्वां समः कोऽपि नास्ति; सर्वान् हितमिच्छ; स्वस्ति प्रजानां।

३—विभक्ति निर्देश कीजिए—

अलं विवादेन, शकटाय दारु; पादेन खञ्जः; मात्रा साकं शिशुः भुङ्क्ते; स्वभावेन सरलः; पुण्येन प्राप्तो हरिः; क्रोशेन गदिता गाथा; पापं धिक्, वनं निकषा, क्रोशं गिरिः, अन्तरेण परिश्रमम् विद्या न भवति; श्यामाचरणः पठति; त्वया चन्द्रो दृश्यते; प्रकृत्या सुन्दरः; कस्माद् बिभेषि; रुदति शिशौ जगाम; राज्ञः पुत्रः

४—सोदाहरण व्याख्या कीजिए—

दिवस्तदर्थस्य, इत्थंभूतलक्षणे; अकथितञ्च; कर्मणि द्वितीया; उपान्वध्याङ्वसः।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

समास

एकपदीभावः समासः—दो या दो से अधिक पदों का मिलकर एक हो जाना समास कहलाता है। **"समसनं समासः"**—संक्षेप को समास कहते हैं। अर्थात् जब दो या दो से अधिक पद अपने अर्थ के साथ आपस में मिलते हैं, तो उस मेल को समास कहते हैं। समास हो जाने पर अनेक पदों में एकरूपता आ जाती है और वह एक 'समस्तपद' कहलाता है। समास की स्थिति में पूर्व की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं और आवश्यकतानुसार एक पद के अनुकूल नयी विभक्ति जोड़ी जाती है। यथा—राज्ञः पुरुषः=राजपुरुषः। **विग्रह**—समास करने के पूर्व शब्दों का जो रूप था, उसको दिखलाना ही समास का विग्रह है, इसे **व्यास वाक्य** भी कहते हैं। यथा—राजपुरुषः का विग्रह 'राज्ञः पुरुषः' हुआ; यहाँ 'राज्ञः' राजन् शब्द का षष्ठी का एक वचन और 'पुरुषः' पुरुष शब्द का प्रथमा का एकवचन, पूर्व रूप है; अतः यह विग्रह अथवा व्यास वाक्य है।

समास के भेद

समास के मुखय चार भेद हैं—

१ अव्ययी भाव	२ तत्पुरुष
३ द्वन्द्व	४ बहुव्रीहि

तत्पुरुष समास के कर्मधारय और द्विगु उपभेद हैं, अतः इन उपभेदों के मिला देने पर समास के छः भेद हो जाते हैं।

अव्यीय भाव

'पूवपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः'—जिन पदों में समास किया जाय, उनमें पूर्वपद की प्रधानता हो और वह पद अव्यय हो तो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इस समास मे पूवपद अव्यय और दूसरा संज्ञा होता है, पर दोनों मिलकर अव्यय हो जाते हैं। अव्ययीभाव समास के रूप नहीं चलते, अन्तिम शब्द का नपुंसक लिंग एकवचन में जैसा रूप होता है, वही रूप अकारान्त अव्ययीभाव पदों का हो जाता है।

अव्ययीभाव समास में निम्न लिखित नियमों को अवगत करना आवश्यक है—

(१) अव्ययीभाव समास में समस्तपद नपुंसक लिंग होते हैं और पञ्चमी को छोड़ अकारान्त अव्ययीभाव के आगे आनेवाली विभक्तियों के स्थान में म् होता है। तृतीया और सप्तमी में विकल्प से विभक्तियों के स्थान में 'म्' होता है।

(२) यदि दूसरे पद का अन्तिम वर्ण दीर्घ हो तो उसे ह्रस्व कर देते हैं। यथा—उप+गंगा=उपगंगम्; उप+नदी=उपनदि; उप+वधू=उपवधु।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(३) यदि द्वितीय पद ओकारान्त या औकारान्त हो तो उसे उकारान्त कर दिया जाता है । यथा—उप+गो=उपगु; उप+नौ=उपनु ।

(४) 'अन्' में अन्त होनेवाली संज्ञाओं का 'न्' निकाल दिया जाता है; पर नपुंसक लिंग में वैकल्पिक रूप में 'न्' को हटाते हैं । यथा—

उप+राजन्=उपराजम्
उप+सीमन्=उपसीमम्
उप+चर्मन्=उपचर्मम्, उपचर्म, उपचर्मन् ।

(५) हलन्त शब्दों में 'अ' जोड़कर अकारान्त बना लिया जाता है । यथा—
उप+सरित्=उपसरितम्, उपसरित् ।

समीप, अभाव, अत्यय, असम्प्रति, पश्चात्, योग्यता, वीप्सा, अनतिवृत्ति, आनुपूर्व्य, विभक्ति, सादृश्य, यौगपद्य, समृद्धि, साकल्य और अन्त इत्यादि अर्थों में सुबन्तपद के साथ अव्यय का समास होता है । यथा—

समीप-अर्थ में—

कृष्णस्य समीपम्=उपकृष्णम् । नगरस्य समीपम्=उपनगरम् ।
गृहस्य समीपम्=उपगृहम् । गङ्गायाः समीपम्=उपगङ्गम् ।
कूलस्य समीपम्=उपकूलम् । ग्रामस्य समीपम्=उपग्रामम् ।

समृद्धि-अर्थ में—

भिक्षाणां समृद्धिः=सुभिक्षम् मद्राणां समृद्धिः=सुमद्रम्

अभाव-अर्थ में—

विघ्नानाम् अभावः=निर्विघ्नम् मक्षिकाणाम् अभावः=निर्मक्षिकम्
जनानाम् अभावः=निर्जनम् भिक्षाणाम् अभावः=दुर्भिक्षम्

अत्यय-नाश-अर्थ में—

हिमस्य अत्ययः=अतिहिमम् कष्टस्य अत्ययः=अतिकष्टम्
पीडायाः अत्ययः=अतिपीडम्

असम्प्रति (अनुचित) अर्थ में

निद्रा सम्प्रति न युज्यते=अतिनिद्रम् । हर्षः सम्प्रति न युज्यते=अतिहर्षम्
शोकः सम्प्रति न युज्यते=अतिशोकम्

पश्चात्-अर्थ में—

विष्णोः पश्चात्=अनुविष्णुम् गृहस्य पश्चात्=अनुगृहम्

८

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

शिवस्य पश्चात्=अनुशिवम् रथस्य पश्चात्=अनुरथम्
शकस्य पश्चात्=अनुशकम्

योग्यता अर्थ में—
रूपस्य योग्यम्=अनुरूपम् सुखस्य योग्यम्=अनुसुखम्
मुखस्य योग्यम्=अनुमुखम् कुलस्य योग्यम्=अनुकुलम्
सारस्य योग्यम्=अनुसारम्

वीप्सा अर्थ में—
दिनं दिनं=प्रतिदिनम् गृहं गृहं=प्रतिगृहम्
अर्थम् अर्थम्=प्रत्यर्थम् मुखं मुखं=प्रतिमुखम्
द्वारं द्वारं=प्रतिद्वारम्

अनतिवृत्ति अर्थ में—
शक्तिमनतिक्रम्य=यथाशक्ति काममनतिक्रम्य=यथाकामम्
सुखमनतिक्रम्य=यथासुखम् ज्ञानमनतिक्रम्य=यथाज्ञानम्

आनुपूर्व्य अर्थ में—
ज्येष्ठस्यानुपूर्व्येण=अनुज्येष्ठम् वर्णस्यानुपूर्व्येण=अनुवर्णम्
ब्राह्मणस्यानुपूर्व्येण=अनुब्राह्मणम् क्षत्रियस्यानुपूर्व्येण=अनुक्षत्रियम्

सादृश्य अर्थ में—
हरेः सादृश्यम्=सहरिः

विभक्ति अर्थ में—
हरौ इति=अधिहरि

यौगपद्य अर्थ में—
चक्रेण युगपत्=सचक्रम् शकटेन युगपत्=सशकटम्

सम्पत्ति अर्थ में—
क्षत्रियाणाम् सम्पत्तिः=सक्षत्रियम्

साकल्य अर्थ में—
तृणमपि अपरित्यज्य=सतृणम्

अन्त-पर्यन्त-अर्थ में—
अग्निगुल्मपर्यन्तम्=साग्निः ।

मर्यादा-अभिविधि-अर्थ में—
आमुक्तेः संसारः=आमुक्ति संसारः आबालेभ्यो हरिभक्तिः=आबालं हरिभक्ति ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विशेषपद

गंगायाः पारमिति+पारेगंगम् या गंगापारम् । गोः समीपे=उपगु ।

नावः समीपे=उपनु चर्मणः समीपे=उपचर्मम्, उपचर्म ।

समिधः समीपे=उपसमिधम् । सरितः समीपे=उपसरितम् ।

शरदः समीपे=उपशरदम् मनसः समीपे=अधिमनसम्

नद्याः समीपे=उपनदम्, उपनदी । पौर्णमास्याः समीपे=उपपौर्णमास्यम्, उपपौर्णमासी ।

गिरेः समीपे=उपगिरि ।

तत्पुरुषसमास

"उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः"

जिसमें उत्तरपद की प्रधानता रहती है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा—राज्ञः पुरुषः=राजपुरुषः में उत्तरपद पुरुष की प्रधानता है। तात्पर्य यह है कि तत्पुरुषसमास में प्रथमपद विशेषण और द्वितीय पद विशेष्य रहता है; अतः विशेष्य की प्रधानता रहने के कारण इसमें उत्तरपद की प्रधानता मानी जाती है। तत्पुरुष समास के दो भेद हैं—(१) व्यधिकरण तत्पुरुष (२) समानाधिकरण तत्पुरुष ।

व्यधिकरण तत्पुरुष में पद भिन्न-भिन्न विभक्तियों के होते हैं। और समानाधिकरण तत्पुरुष में पद एक ही विभक्ति के होते हैं। इसी कारण समानाधिकरण को 'कर्मधारय' भी कहा जाता है। व्यधिकरण तत्पुरुष समास के छः भेद हैं—द्वितीयातत्पुरुष, तृतीयातत्पुरुष, चतुर्थीतत्पुरुष, पञ्चमीतत्पुरुष, षष्ठीतत्पुरुष और सप्तमीतत्पुरुष ।

द्वितीयातत्पुरुष

"द्वितीया श्रितातीत-पतित-गतात्यस्त-प्राप्तापन्नैः"

श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त और आपन्न शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति के आने पर द्वितीया-तत्पुरुष समास होता है। यथा—

कृष्णं श्रितः=कृष्णश्रितः दुःखम् अतीतः=दुःखातीतः

कूपं पतितः=कूपपतितः । अग्निं पतितः=अग्निपतितः

प्रलयं गतः=प्रलयगतः । गृहं गतः=गृहगतः ।

मेघम् अत्यस्तः=मेघात्यस्तः । जीवनं प्राप्तः=जीवनप्राप्तः ।

दुःखं प्राप्तः=दुःखप्राप्तः । कष्टम् आपन्नः=कष्टापन्नः ।

धनम् आपन्नः=धनापन्नः । ग्रामं गमी=ग्रामगमी ।

अन्नं बुभुक्षुः=अन्नबुभुक्षुः । मुहूर्त्तं सुखम्=मुहूर्त्तसुखम् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तृतीयातत्पुरुष

१—'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन'

तृतीयान्त पद, तृतीयान्तार्थकृत गुणवचन के साथ और अर्थ शब्द के साथ समास को प्राप्त होता है। यथा—

शंकुलया खण्डः=शंकुलाखण्डः। धान्येनार्थो=धान्यार्थः।

२—'कर्तृकरणे कृता बहुलम्'

कृत् प्रत्यय से बने सुबन्तपद के साथ कर्त्ता और करण में विहित तृतीयान्त पद का समास होता है। यथा—

व्याघ्रेण हतः=व्याघ्रहतः।
नखैर्भिन्नः=नखभिन्नः।
सर्पेण दष्टः=सर्पदष्टः।
व्यासेन रचितम्=व्यासरचितम्।
कालिदासेन कृतम्=कालिदासकृतम्।
पाणिनिना प्रणीतम्=पाणिनिप्रणीतम्।
द्विजेन भक्ष्यं=द्विजभक्ष्यम्।
असिना छिन्नं=असिछिन्नम्।
शिरसा धार्या=शिरोधार्या।
नारदेन प्रोक्तम्=नारदप्रोक्तम्।

३—'पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः'

जब तृतीयान्त शब्दों के साथ पूर्व, सदृश, सम, ऊन, हीनादि में से कोई शब्द आवे अथवा कलह, निपुण, मिश्र, श्लक्ष्ण में से कोई अथवा समानाधिकरण शब्द आए तो तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

मासेन पूर्वः=मासपूर्वः।
मात्रा सदृशः=मातृसदृशः।
धान्येन ऊनम्=धान्योनम्।
धनेन हीनः=धनहीनः।
कर्मणा हीनः=कर्महीनः।
वाचा कलहः=वाक्कलहः।
वाचा+युद्धम्=वाग्युद्धम्।
आचारेण निपुणः=आचारनिपुणः।
गुडेन मिश्रम्=गुडमिश्रम्।
सितया युक्तम्=सितायुक्तम्।
घर्षणेन श्लक्ष्णः=घर्षणश्लक्ष्णः।
पङ्केन लिप्तः=पङ्कलिप्तः।
बाणेन विद्धः=बाणविद्धः।
शोकेन आर्त्तः=शोकार्त्तः।

चतुर्थीतत्पुरुष

"चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः"

बलि, हित, सुख और अर्थ आदि शब्दों के साथ चतुर्थ्यन्त पद का समास होता है। यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

काकाय बलिः=काकबलिः । वायसाय बलिः=वायसबलिः ।
पुत्राय हितम्=पुत्रहितम् । पित्रे सुखम्=पितृसुखम् ।
द्विजाय अर्थः=द्विजार्थः सूपः । यूपाय दारु=यूपदारु ।
कुम्भाय मृत्तिका=कुम्भमृत्तिका । कुण्डलाय स्वर्णम्=कुण्डलस्वर्णम् ।
द्विजाय अर्थम्=द्विजार्थः । ब्राह्मणाय हितम्=ब्राह्मणहितम् ।

पञ्चमीतत्पुरुष

'पञ्चमी भयेन';

पञ्चम्यन्त भय, भीति, भीत और भी के साथ पञ्चमीतत्पुरुष समास होता है । यथा–

वृकात् भयम्=वृकभयम् व्याघ्रात् भयम्=व्याघ्रभयम्
सिंहात् भीतः=सिंहभीतः चोरात् भीतः=चोरभीतः
सर्पाद् भीतिः=सर्पभीतिः वृकाद् भीः=वृकभीः

२—'अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तैरल्पशः'

अपेत, अपोढ, मुक्त, पतित, अपत्रस्त आदि शब्दों के साथ पञ्चम्यन्त पद का समास होता है । यथा—

सुखात् अपेतः=सुखापेतः । कल्पनायाः अपोढः=कल्पनापोढः ।
बन्धनाद् मुक्तः=बन्धनमुक्तः । पापात् मुक्तिः=पापमुक्तिः ।
वृक्षात् पतितः=वृक्षपतितः । तरङ्गात् अपत्रस्तः=तरङ्गापत्रस्तः ।
धर्मात् च्युतः=धर्मच्युतः राज्याद् भ्रष्टः=राज्यभ्रष्टः ।
देशात् निर्वासितः=देशनिर्वासितः । गृहात् निर्गतः=गृहनिर्गतः ।

षष्ठीतत्पुरुष

'षष्ठी'

समर्थ सुबन्त शब्दों के साथ षष्ठ्यन्त पद का समास होता है । यथा—

लक्ष्म्याः पतिः=लक्ष्मीपतिः । पशूनां पतिः=पशुपतिः ।
गजानां राजा=गजराजः । राज्ञः पुत्रः=राजपुत्रः ।
गङ्गायाः तटः=गङ्गातटः । गङ्गायाः उदकम्=गङ्गोदकम् ।
गणानाम् ईशः=गणेशः । गवां शाला=गोशाला ।
सर्वेषां महत्तरः=सर्वमहान् । सर्वेषां श्वेततरः=सर्वश्वेतः ।
भोजनस्य आलयः=भोजनालयः । शयनस्य आगारम्=शयनागारम् ।
देवानां भाषा=देवभाषा । जगतः अम्बा=जगदम्बा ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सप्तमीतत्पुरुष

१—'सप्तमी शौण्डैः'

शौण्ड (चालाक), धूर्त, कितव (कपटी), प्रवीण, पटु, पण्डित, कुशल, निपुण, चपल आदि शब्दों के साथ सप्तम्यन्त पदों का समास होता है। यथा—

अक्षेषु शौण्डः=अक्षशौण्डः।
प्रेम्णि धूर्तः=प्रेमधूर्तः।
द्यूते कितवः=द्यूतकितवः
सभायां पण्डितः=सभापण्डितः
शास्त्रे प्रवीणः=शास्त्रप्रवीणः।
कर्मणि कुशलः=कर्मकुशलः।
दाने वीरः=दानवीरः।
व्याकरणे पटुः=व्याकरणपटुः।
कलायां संवीतः=कलासंवीतः।
क्रीडायां चपलः=क्रीडाचपलः।
साहित्ये निपुणः=साहित्यनिपुणः।

२—'सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च'

सिद्ध, शुष्क, पक्व तथा बन्धन शब्दों के साथ सप्तमी तत्पुरुष समास होता है।

आतपे शुष्कः=आतपशुष्कः (पटः)
सांकाश्ये सिद्धः=सांकाश्यसिद्धः।
स्थाल्यां पक्वः=स्थालीपक्वः।
चक्रे बन्धः=चक्रबन्धः।
कमले बन्धः=कमलबन्धः।
ईश्वरे अधीनः=ईश्वराधीनः

२—'ध्वाङ्क्षेण क्षेपे'

ध्वाङ्क्ष (काक) शब्द अथवा इसके समानार्थक शब्दों के साथ निन्दा (आक्षेप) अर्थ में सप्तमी के आने पर सप्तमी तत्पुरुष समास होता है। यथा—

तीर्थे ध्वाङ्क्षः=तीर्थध्वाङ्क्षः (तीर्थलोलुप, या पण्डा)
तीर्थे काकः=तीर्थकाकः (,, ,,)
श्राद्धे काकः=श्राद्धकाकः (महापात्र ब्राह्मण)

नञ्-तत्पुरुष

'नञ्'

जब तत्पुरुष समास में प्रथम पद न और दूसरा कोई संज्ञा या विशेषण हो तो उसे नञ् तत्पुरुष कहते हैं। व्यञ्जन के पूर्व न 'अ' में और स्वर के पूर्व 'अन्' में बदल जाता है। यथा—

न ब्राह्मणः=अब्राह्मणः
न कृतम्=अकृतम्।
न सत्यम्=असत्यम्
न आगतम्=अनागतम्।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

न ईशः=अनीशः ।
न आहारः=अनाहारः ।
न उक्तम्=अनुक्तम् ।
न भावः=अभावः ।
न आदरः=अनादरः ।

प्रादितत्पुरुष

जब तत्पुरुष समास में प्रथम पद 'प्र' आदि उपसर्गों में से कोई हो तो उसे प्रादि तत्पुरुष कहते हैं । यथा—

प्रगतः आचार्यः=प्राचार्यः ।
प्रगतः पितामहः=प्रपितामहः ।
प्रतिगतोऽक्षः=प्रत्यक्षः ।
उद्गतः वेलाम्=उद्वेलः ।
अतिक्रान्तः मर्यादाम्=अतिमर्यादः ।
अतिक्रान्तः रथम्=अतिरथः ।
अवक्रुष्टः कोकिलया=अवकोकिलः ।
परिग्लानोऽध्ययनाय=पर्यध्ययनः ।
निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः=निष्कौशाम्बिः ।

गतितत्पुरुष

जब कृत् प्रत्ययों में अन्त होनेवाले शब्दों के साथ ऊरी आदि विशेष शब्दों का समास होता है, तो उसे गतितत्पुरुष समास कहते हैं । यथा—

ऊरी कृत्वा=ऊरीकृत्य ।
शुक्लो भूत्वा=शुक्लीभूय ।
नीली कृत्वा=नीलीकृत्य ।
असत्कृत्वा=असत्कृत्य ।
खाडिति कृत्वा=खाट्कृत्य ।

उपपदसमास

'उपपदमतिङ्'

जब तत्पुरुष समास का प्रथम पद ऐसी संज्ञा या अव्यय हो, जिसके न रहने से शब्द का रूप ही न रह सकता हो, तो उसे उपपद तत्पुरुष कहते हैं । यथा—

कुम्भं करोतीति=कुम्भकारः ।
भयं ‹ रोतीति=भयङ्करः ।
दिवा करोतीति=दिवाकरः ।
गिरिं धारयतीति=गिरिधरः ।
विहायसा गच्छतीति=विहगः, विहङ्गः, विहङ्गमः ।
द्रुतं गच्छतीति=द्रुतगामी ।
खे–आकाशे गच्छतीति=खगः ।
सरसि जायते=सरोजम् ।
आत्मनः जायते=आत्मजः ।
आत्मानं हन्ति=आत्मघ्नः ।
सुखं ददातीति=सुखदः ।
गाः ददातीति=गोदः ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अलुक् समास

जिन समासों के प्रथम पद की विभक्ति का लोप नहीं होता, उन्हें अलुक् तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा—

परस्मै पदम्=परस्मैपदम्। आत्मने पदम्=आत्मनेपदम्।
देवानां प्रियः=देवानांप्रियः। मनसा गुप्ता=मनसागुप्ता।
पश्यतो हरः=पश्यतोहरः। अन्ते वासी=अन्तेवासी।

मध्यमपदलोपी

उन तत्पुरुष समासों को मध्यमपद लोपी तत्पुरुष कहते हैं, जिनके मध्यवर्ती किसी ऐसे पद का लोप हो गया हो, जिनका साधारण दशा में रहना आवश्यक है। यथा—

शाकप्रियः पार्थिवः=शाकपार्थिवः। देवपूजकः ब्राह्मणः=देवब्राह्मणः।

मयूरव्यंसकादि

जिन समासों में प्रत्यक्षरूप से नियमों का उल्लङ्घन किया गया हो, उन (शिष्टप्रयोगों) को मयूरव्यंसकादि कहा गया है। यथा—

व्यंसकः मयूरः=मयूरव्यंसकः (चालाक मोर)—यहाँ व्यंसक को पहले होना चाहिए, पर नियम का उल्लङ्घन किया गया है।

अन्यो राजा=राजान्तरम्। अन्यो ग्रामः=ग्रामान्तरम्।
उदक् च अवाक् चेति=उच्चावचम्। निश्चितं च प्रचितं चेति=निश्चप्रचम्।

कर्मधारय

"तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः"

जिस तत्पुरुष समास में समास होनेवाले पद समानाधिकरण अर्थात् विशेष्य-विशेषण भावापन्न हो, उसे कर्मधारय कहते हैं। इस समास के चार भेद हैं—

१—विशेष्य-विशेषण कर्मधारय २—उपमानपूर्वपद कर्मधारय
३—उपमित कर्मधारय ४—रूपक कर्मधारय

१—विशेष्य-विशेषण कर्मधारय

'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'

विशेष्य पद के साथ विशेषण पद का समास कर्मधारय कहलाता है। यथा—

विशालः वृक्षः=विशालवृक्षः। नीलम् उत्पलम्=नीलोत्पलम्।
नवम् अन्नम्=नवान्नम्। पीतम् अम्बरम्=पीताम्बरम्।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

परमो हंसः=परमहंसः । महान् पण्डितः=महापण्डितः ।
महत् काव्यम्=महाकाव्यम् । दुष्टो जनः=दुर्जनः ।
नवा वधूः=नववधूः ।
पाचिका स्त्री=पाचकस्त्री (पुंवद्भाव हुआ)
दत्ता भार्या=दत्तभार्या ,, सुकेशी भार्या=सुकेशभार्या । (पुंवद्भाव)
पञ्चमी भार्या=पञ्चमभार्या ,, शुभा दृष्टिः=शुभदृष्टिः । ,,
लघ्वी वृष्टिः=लघुवृष्टिः । ,,

२—उपमान पूर्वपद कर्मधारय

'उपमानानि सामान्यवचनैः'

जब किसी वस्तु से उपमा दी जाय तो वह वस्तु जिससे उपमा दी जाय और वह गुण जिसकी उपमा हो, मिलकर कर्मधारय समास होता है तथा इस समास का नाम 'उपमान पूर्वपद कर्मधारय' है । यथा—

घन इव श्यामः=घनश्यामः । चन्द्र इव आह्लादकः=चन्द्राह्लादकः ।
समुद्र इव गम्भीरः=समुद्रगम्भीरः । अनल इव उज्ज्वलः=अनलोज्ज्वलः ।
कमलमिव कोमलः=कमलकोमलः । नवनीतमिव कोमलम्=नवनीतकोमलम् ।
मृग इव चपला=मृगचपला बालिका ।

३—उपमित कर्मधारय

'उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे'

व्याघ्र, सिंह, वाराह, कुञ्जर, चन्द्र, पुंगव, कमल, किसलय, पल्लव और शार्दूल प्रभृति उपमान वाचक पदों का उपमेय वाचक पदों के साथ जो समास होता है, वह उपमित कर्मधारय समास है । यथा—

पुरुषो व्याघ्र इव=पुरुषव्याघ्रः । नरः सिंह इव=नरसिंहः ।
राजा चन्द्र इव=राजचन्द्रः । मुखं कमलमिव=मुखकमलम् ।
अधरः पल्लव इव=अधरपल्लवः । मुनिः शार्दूल इव=मुनिशार्दूलः ।

रूपक कर्मधारय

एक पदार्थ को एक-दूसरे पदार्थ से अभिन्न मान कर जो समास होता है, उसे रूपक कर्मधारय समास कहते हैं । यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

शोक एव सागरः=शोकसागरः ।
दुःखमेव समुद्रः=दुःखसमुद्रः ।
विद्या एव धनम्=विद्याधनम् ।
मुखमेव कलम्=मुखकमलम् ।

द्विगु

'संख्यापूर्वो द्विगुः'

जब कर्मधारय समास में प्रथम पद संख्यावाची और दूसरा पद संज्ञा हो तो उसे द्विगु समास कहते हैं ।

'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'

तद्धितार्थ उत्तरपद के परे समाहार अर्थ में द्विगु समास होता है । यथा—

तद्धितार्थ द्विगु

षण्णां मातृणामपत्यं=षाण्मातुरः ।
पञ्चभिः गोभिः क्रीतः=पञ्चगुः ।
शतेन गोभिः क्रीतः=शतगुः ।

उत्तरपद द्विगु

पञ्च गावः धनं यस्य=पञ्चगवधनः ।
पञ्च हस्ताः प्रमाणमस्य=पञ्चहस्तप्रमाणः ।

समाहार द्विगु

त्रयाणां लोकानां समाहारः=त्रिलोकी ।
चतुर्णां पदानां समाहारः=चतुष्पदी ।
त्रयाणां वेदानां समाहारः=त्रिवेदी ।
सप्तानां शतानां समाहारः सप्तशती ।
पञ्चानां पात्राणां समाहारः=पञ्चपात्रम् ।
चतुर्णां युगानां समाहारः=चतुर्युगम् ।
पञ्चानां गवां समाहारः=पञ्चगवम् ।
पञ्चानां ग्रामाणां समाहारः=पञ्चग्रामम् ।

द्वन्द्व

'उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः'

जिस समास में पूर्व और उत्तर दोनों पदों के अर्थों की प्रधानता हो, उसे द्वन्द्व समास कहते हैं । द्वन्द्व समास में समस्त पद का लिङ्ग उत्तरपद के लिङ्गों के अनुसार होता है । इसके तीन भेद हैं—

१—इतरेतर द्वन्द्व । २—समाहार द्वन्द्व । ३—एकशेष द्वन्द्व ।

इतरेतरद्वन्द्व

जिस समास में आई हुई दोनों संज्ञाएँ अपना प्रधान व्यक्तित्व रखती हों उस समास को इतरेतर-द्वन्द्व कहते हैं । यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

रामश्च कृष्णश्च=रामकृष्णौ ।
अश्वश्च वृषश्च महिषी च=अश्ववृषमहिष्यः।
वृद्धाश्च तरुणाश्च=वृद्धतरुणाः ।
कक्कुटश्च मयूरी च=कुक्कुटमयूर्यौ ।
हरश्च हरिश्च=हरहरी ।
माता च पिता च=पितरौ, मातरापितरौ ।
पिता च पुत्रश्च=पितापुत्रौ ।
द्यौश्च भूमिश्च=द्यावाभूमी ।
अग्निश्च सोमश्च=अग्नीसोमौ ।

रामश्च लक्ष्मणश्च भरतश्च=रामलक्ष्मणभरताः ।
धर्मश्च अर्थश्च कामश्च मोक्षश्च=धर्मार्थकाममोक्षाः।
कन्दश्च मूलञ्च फलञ्च= कन्दमूलफलानि ।
हरिश्च हरश्च=हरिहरौ ।
सूर्यश्च चन्द्रमाश्च=सूर्याचन्द्रमसौ ।
होता च पोता च=होतापोतारौ ।
जाया च पतिश्च=जायापती,दम्पती, जम्पती ।
अग्निश्च वरुणश्च=अग्नीवरुणौ ।

समाहारद्वन्द्व

जिस समास में च शब्द से जुड़ी हुई संज्ञाएँ अपना पृथक् अर्थ रखने पर भी समूह अर्थ का बोध कराती हों, उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं । यथा—

आहारश्च निद्रा च भयञ्च=आहारनिद्राभयम् ।
गोधूमश्च चणकश्च=गोधूमचणकम् ।
पाणी च पादौ च=पाणिपादम् ।
गङ्गा च शोणश्च=गङ्गाशोणम् ।

१—"प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्"

प्राणियों के अंग, तूर्य (वाद्य) के अंग और सेना के अङ्गवाची शब्दों का समाहार द्वन्द्व होता है । यथा—

करौ च चरणौ च=करचरणम् ।
नखाश्च दन्ताश्च=नखदन्तम् ।
पृष्ठञ्च उदरञ्च=पृष्ठोदरम् ।
कर्णश्च नासिका च=कणनासिकम् ।
दन्ताश्च ओष्ठौ च=दन्तोष्ठम् ।
} प्राणि-अंग

शङ्खश्च दुन्दुभिश्च=शङ्खदुन्दुभि ।
पणवश्च मृदङ्गश्च=पणवमृदंगम् ।
भेरी च पटहश्च=भेरीपटहम् ।
} तूर्याङ्ग

रथिकाश्च अश्वारोहाश्च=रथिकाश्वारोहम्
शराश्च तूणीराश्च=शरतूणीरम्
धनूंषि च शराश्च=धनुःशरम्
} सेनाङ्ग

२—"विशिष्टलिङ्गो नदीदेशोऽग्रामाः"

भिन्न-भिन्न लिङ्ग वाले नदीवाचक शब्दों का समाहार द्वन्द्व होता है । विभिन्न

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लिङ्ग वाले देश और नगरके नामों का भी समाहार द्वन्द्व होता है । किन्तु ग्रामों का नहीं ।

गङ्गा च शोणश्च=गङ्गाशोणम् । ब्रह्मपुत्रश्च चन्द्रभागा च=ब्रह्मपुत्रचन्द्रभागम् ।
कुरवश्च कुरुक्षेत्रञ्च=कुरुकुरुक्षेत्रम् । मिथिला च मगधश्च=मिथिलामगधम् ।
मथुरा च पाटलिपुत्रश्च=मथुरापाटलिपुत्रम् ।

३—"येषां च विरोधः शाश्वतिकः"

जिन प्राणियों में परस्पर नित्य विरोध हो उनके वाचक बहुवचनान्त पदों का समाहार द्वन्द्व होता है । यथा—

अहयश्च नकुलाश्च=अहिनकुलम् । मार्जाराश्च मूषिकाश्च=मार्जारमूषिकम्
गावश्च महिष्यश्च=गोमहिषम् ।

४—"विभाषावृक्षमृगतृणधान्यव्यञ्जनपशुशकुन्यश्ववडवपूर्वापराधरोत्तराणाम्"

पशुवाचक, शकुनिवाचक, क्षुद्रजन्तुवाचक, फल, तृण और तरुवाची बहुवचनान्त शब्दों का विकल्प से समाहारद्वन्द्व होता है । यथा—

गावश्च महिषाश्च=गोमहिषम्, गोमहिषाः ।
वृकाश्च कुरङ्गाश्च=वृककुरङ्गम्, वृककुरङ्गाः ।
कोकिलाश्च मयूराश्च=कोकिलमयूरम्, कोकिलमयूराः ।
दंशाश्च मशकाश्च=दंशमशकम्, दंशमशकाः ।
मत्कुणाश्च पिपीलिकाश्च=मत्कुणपिपीलिकम्, मत्कुणपिपीलिकाः ।
कुशाश्च काशाश्च=कुशकाशम्, कुशकाशाः ।
अश्वत्थाश्च न्यग्रोधाश्च=अश्वत्थन्यग्रोधम्, अश्वत्थन्यग्रोधाः ।
बदराणि च आमलकानि च=बदरामलकम्, बदरामलकाः ।

५—"विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि"

परस्पर विरुद्ध पदार्थों में विकल्प से समाहार द्वन्द्व होता है । यथा—
शीतञ्च उष्णञ्च=शीतोष्णम्, शीतोष्णे ।
सुखं च दुःखं च=सुखदुःखम्, सुखदुःखे ।
आलोकश्च अन्धकारश्च=आलोकान्धकारम्, आलोकान्धकारौ ।

एकशेष

जिस समास में दो या अधिक शब्दों में से एक ही शेष रहे, उसे एकशेष द्वन्द्व कहते हैं । यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ब्राह्मणी च ब्राह्मणश्च=ब्राह्मणौ । शूद्री च शूद्रश्च=शूद्रौ ।
घटश्च कलशश्च=घटौ, कलशौ वा । कुक्कुटश्च कक्कुटी च=कक्कुटौ ।
भ्राता च स्वसा च=भ्रातरौ । चटकश्च चटका च=चटकौ ।
वृक्षश्च वृक्षश्च वृक्षश्च=वृक्षाः । अहञ्च अहञ्च अहञ्च=वयम्

बहुव्रीहि

"अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः"

जिसमें अन्य पदार्थ की प्रधानता हो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं । अर्थात् जिन पदों में समास हुआ हो, उसमें से किसी पदार्थ की प्रधानता न रहे और तीसरा ही प्रतीयमान अर्थ प्रधान हो तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं ।

बहुव्रीहि समास के चार भेद हैं—

१—समानाधिकरण बहुव्रीहि २—व्यधिकरण बहुव्रीहि
३—सहार्थ बहुव्रीहि अथवा तुल्ययोगे बहुव्रीहि । ४—व्यतिहार बहुव्रीहि ।

समानाधिकरण बहुव्रीहि

समानाधिकरण बहुव्रीहि वह है, जिसके दोनों अथवा सभी पदों का समान अधिकरण हो अर्थात् वे प्रथमान्त हों । यथा—

प्राप्तमुदकं यं सः=प्राप्तोदको—ग्रामः ।
महान् आशयः यस्य सः=महाशयः—जिसका अभिप्राय महान् हो ।
दत्तं चित्तं येन सः=दत्तचित्तः ।
श्वेतं वसनं यस्य सः=श्वेतवसनः—श्वेतवस्त्रधारी ।
दत्तं धनं यस्मै सः=दत्तधनः ।
नीलः कण्ठः यस्य सः=नीलकण्ठः—शिव ।
निर्गतं धनं यस्मात् सः=निर्धनः ।
चक्रम् आयुधं यस्य सः=चक्रायुधः—विष्णु ।
नीलम् अम्बरं यस्य सः=नीलाम्बरः—बलदेव ।
लम्बौ कर्णौ यस्य सः=लम्बकर्णः ।
महत् बलम् यस्य सः=महाबलः—महान् बलवाला ।
लम्बम् उदरं यस्य सः=लम्बोदरः—गणेश ।

व्यधिकरण बहुव्रीहि

व्यधिकरण बहुव्रीहि वह है, जिसके दोनों या सभी पदों का समानाधिकरण न हो अर्थात् वे प्रथमान्त न होकर विभिन्न विभक्तियों में हों । यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

असिः पाणौ यस्य सः=असिपाणिः ।
चक्रं पाणौ यस्य सः=चक्रपाणिः—विष्णु या कृष्ण ।
वज्रं पाणौ यस्य सः=वज्रपाणिः—इन्द्र ।
चन्द्रस्य कान्तिः इव कान्तिः यस्य सः—चन्द्रकान्तिः ।
पुस्तकं हस्ते यस्य सः=पुस्तकहस्तः ।

सहार्थ बहुव्रीहि

इसका दूसरा नाम तुल्ययोग बहुव्रीहि है। इसमें सह शब्द के साथ संज्ञा समास होता है। यथा—

भार्यया सह वर्तमानः=सभार्यः ।
पत्न्या सह वर्तमानः=सपत्नीकः ।
स्त्रिया सह वर्तमानः=सस्त्रीकः ।
सीतया सह वर्तमानः=ससीतः ।

हर्षेण सह वर्तमानं यथा स्यात्तथा=सहर्षम् ।
कुशलेन सह वर्तमानं यथा स्यात्तथा=सकुशलम् ।
आदरेण सह वर्तमानं यथा स्यात्तथा=सादरम् ।
क्रोधेन सह वर्तमानं यथा स्यात्तथा=सक्रोधम् ।

व्यतिहार बहुव्रीहि

युद्ध आदि में परस्पर किया जानेवाला व्यवहार व्यतिहार कहलाता है और ऐसे व्यतिहार में बहुव्रीहि समास होता है। यथा—

केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम्=केशाकेशि ।
दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम्=दण्डादण्डि ।
मुसलैश्च मुसलैश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम्=मुसलामुसलि ।

कतिपय विशेष प्रयोग

रूपवती भार्या यस्य सः=रूपवद्भार्यः ।
वामोरूः भार्या, यस्य सः=वामोरूभार्यः ।
उदात्तं मनो यस्य सः=उदात्तमनस्कः, उदात्तमनाः वा ।
चित्राः गावो यस्य सः=चित्रगुः ।
बहवो दण्डिकाः यस्यां सा=बहुदण्डिका नगरी ।
व्याघ्रस्य पादौ इव पादौ यस्य सः=व्याघ्रपात् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सिन्धूनां राजा=सिन्धुराजः ।

सुन्दरी वधूः यस्य सः=सुन्दरवधूकः पुरुषः ।

दिक् अम्बरं यस्य सः=दिगम्बरः ।

दश ग्रीवाः यस्य सः=दशग्रीवः ।

हिरण्यमिव अक्षि यस्य सः=हिरण्याक्षः ।

न बलं यस्याः सा=अबला ।

विमलाः आपः यस्य तत्=विमलापम् ।

पुत्रेण सह वर्तमानः=सपुत्रः ।

निर्गतः कण्टकं यस्मात् सः=निष्कण्टकः ।

कुसुमम् आयुधं यस्य सः=कुसुमायुधः ।

परिवारेण सह वर्तमानः=सपरिवारः ।

सुशीला माता यस्य सः=सुशीलामातृकः, बालकः ।

कल्याणी प्रिया यस्य सः=कल्याणीप्रियः ।

दश मुखानि यस्य सः=दशमुखः ।

सुष्ठु मनो यस्य सः=सुमनाः ।

समानं गोत्रं यस्य सः=सगोत्रः ।

समानः वर्णः यस्य सः=सवर्णः ।

सुष्ठु गन्धो यस्य सः=सुगन्धिः ।

सिंहो वाहनं यस्याः सा=सिंहवाहिनी ।

निर्गता करुणा यस्मात् सः=निष्करुणः ।

राजीवं नयनं यस्य सः=राजीवनयनः ।

अनुशीलन

समास कीजिए—

आत्मनः जायते यः; विहायसा गच्छतीति; हंसानां राजा; निर्गतं फलं यस्मात्; सष्ठु जलं यस्य; नास्ति किञ्चन यस्य सः; द्वयोरह्नोः भवः, पञ्चानां अह्नां समाहारः; नास्ति कुतोऽपि भयं यस्य सः; कमलमिव कोमलः, पुरुषो व्याघ्र इव, चतुर्णां पदानां समाहारः; शुभा दृष्टिः; गां पाति; न सिद्धः; विदेशात् आगतः; क्रीडायां पटुः; नारदेन प्रोक्तं; अग्निना दग्धः; आचारेण श्लक्ष्णः; शक्तिमनतिक्रम्य; मद्राणां समृद्धिः; कष्टस्य अत्ययः; गङ्गायाः समीपम् ।

२ निम्नलिखित पदों का विग्रह कीजिए और समासों के नाम भी लिखिए ।

महाबलः, सफलः, नीरोगः, दिगम्बरः, पीताम्बरः, मयूरवाहनः; अनन्तरः; सपत्नीकः; निर्लज्जः; पञ्चपात्रम्; सुमनाः; कुपुत्रः; महानदी; चौरभयम्, सुखापेतः; कर्मकुशलः; पितरौ; हरिहरौ; शरतूणीरम्; शूलपाणिः; निर्दयः; काकबलिः; दानवीरः; द्विजराजः; यूपदारुः; अनुरूपम्; सचक्रम्; सहरि; उपकृष्णम्; गृहगतः; अहिदष्टः; गजराजः; दुष्कर्म ।

३ समास की परिभाषा लिखकर उनके भेदों को उदाहरण सहित समझाइये ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

४ द्वन्द्व और बहुव्रीहि समास के भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

५ कर्मधारय की परिभाषा लिखकर उसके प्रत्येक भेद के दो-दो उदाहरण लिखिए।

६ द्विगु समास विधायक सूत्र की व्याख्या कीजिए।

७ विशालवृक्षः; महापुरुषः; नीलोत्पलम्; प्रियसखः, नरसिंहः और सिंहासनम् में विग्रह दिखलाकर समास नाम लिखिए।

८ कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में भेद लिखिए।

९ व्यतिहार बहुव्रीहि को समझाइये।

१० अलुक् समास के पाँच उदाहरण लिखिए।

११ नञ् तत्पुरुष की परिभाषा सोदाहरण समझाइये।

—:०:—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

षष्ठोऽध्यायः

तद्धित प्रत्यय

जिन प्रत्ययों के योग से संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण से अन्य प्रकार की संज्ञाएँ, सार्वनामिक विशेषण अथवा विशेषण बनाये जाते हैं, वे प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। तद्धित प्रत्यय प्रातिपदिकों में ही जोड़े जाते हैं, धातुओं में नहीं। यथा—

दितेः अपत्यं पुमान्=दैत्यः—दिति + ण्य।

अदितेः अपत्यं पुमान्=आदित्यः—अदिति + ण्यण्।

कषायेण रक्तम्=काषायम् वस्त्रम्—कषाय + अण्।

तद्धित प्रत्यय लगाते समय निम्निलिखित नियमों को अवगत कर लेना आवश्यक है—

१–'तद्धितेष्वचामादेः'

जिन तद्धित प्रत्ययों में ञ् और ण् की इत्संज्ञा होती है, उन प्रत्ययों को जोड़ते समय आदि स्वर की वृद्धि हो जाती है। वृद्धि में अ के स्थान पर 'आ'; इ-ई के स्थान पर 'ऐ'; उ-ऊ के स्थान पर 'औ' और ऋ के स्थान पर 'आर्' आदेश होता है। यथा–

दिति+ण्य=दिति+य (ण् की इत्संज्ञा और इत्संज्ञक का लोप)=दिति+य—यहाँ द् में इ स्वर है, इ की वृद्धि करने पर 'ऐ' आदेश किया, अतः दैत्यः रूप बना ('ति' में रहने वाले इकार का लोप हुआ है)।

२—क् के इत् होने पर भी आदि स्वर की वृद्धि होती है। यथा—

वर्षा + ठक्=व् + अ + र्षा + ठक्। (ठक् प्रत्यय के क् का लोप किया और 'ठ' के स्थान पर 'इक' आदेश; अतः वृद्धि होने पर 'वार्षिकः' रूप बनता है।

३—स्वर अथवा य से आरम्भ होने वाले प्रत्ययों के पूर्व शब्दों के अन्तिम स्वर में विकार उत्पन्न होता है अर्थात् अ आ इ ई का तो लोप हो जाता है; उ ऊ के स्थान पर गुण (ओ) हो जाता है और औ के स्थान पर सन्धि हो जाती है।

४—नकारान्त शब्दों के आगे व्यञ्जन से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय जोड़ने पर प्रायः 'अन्' भाग का लोप हो जाता है। यथा—

राजन् + वुञ (अक)=राज् + अक=राजकम्।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

५—'ठस्येकः'

प्रत्यय में आए हुए 'ठ' के स्थान पर 'इक' होता है।

६—'युवोरनाकौ'

प्रत्यय के यु, वु के स्थान पर अन और अक हो जाते हैं। यथा—

ल्युट्=यु (अन्); वुञ्=वु (अक)।

७—'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्'

प्रत्यय के आदि में आये हुए फ, ढ, ख, छ, घ के स्थान पर क्रमशः आयन्, एय, ईन, ईय, इय हो जाते हैं।

फ=आय; ढ=एय; ख=ईन; छ=ईय; घ=इय।

८—प्रत्यय के अन्त में आया हुआ हल् वर्ण इत्संज्ञक होता है और यह केवल वृद्धि या गुण आदि को सूचित करता है।

१ अण्

अपत्य, भाव, देवता, समूह, सम्बन्ध, भव, ईश्वर, रक्त इत्यादि अर्थों में अण् प्रत्यय होता है।

अपत्य-अर्थ

१-'तस्यापत्यम्'

अपत्य अर्थ में अण् होता है। यथा—

वसुदेवस्य अपत्यम्=वासुदेवः, वसुदेव+अण्=वसुदेव+अ=वासुदेवः।
मनोः अपत्यम्=मानवः, मनु+अण्=मनु+अ=मानवः
सुमित्रायाः अपत्यम्=सौमित्रः; सुमित्रा+अण्=सौमित्रः।
दुहितुः अपत्यम्=दौहित्र; दुहितृ+अण्=दौहित्रः।
यदोः अपत्यम्=यादवः; यदु+अण्=यादवः।
बन्धोः अपत्यम्=बान्धवः; बन्धु+अण्=बान्धवः।
कुरोः अपत्यम्=कौरवः; कुरु + अण्=कौरवः।
शिवस्य अपत्यं पुमान्=शैवः; शिव+अण्=शैवः।
पुत्रस्य अपत्यं पुमान्=पौत्रः; पुत्र+अण्=पौत्रः।
वशिष्ठस्य अपत्यं पुमान्=वाशिष्ठः; वशिष्ठ=अण्=वाशिष्ठः।
धृतराष्ट्रस्य अपत्यं पुमान्=धार्तराष्ट्रः; धृतराष्ट्र+अण्=धार्तराष्ट्रः।
भरद्वाजस्य अपत्यं पुमान्=भारद्वाजः; भरद्वाज+अण्=भारद्वाजः।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

कश्यपस्य अपत्यं पुमान्=काश्यपः; कश्यप+अण्=काश्यपः ।
ब्रह्मणः अपत्यं पुमान्=ब्राह्मणः; ब्रह्मन्+अण्=ब्राह्मणः ।
रघोः अपत्यं पुमान्=राघवः; रघु+अण्=राघवः ।
मधोः अपत्य पुमान्+माधवः; मधु+अण्=माधवः ।
पाण्डोः अपत्यं पुमान्=पाण्डवः; पाण्डु+अण्=पाण्डवः ।
मनुष्यस्य अपत्यं पुमान्=मानुषः; मनुष्य+अण्=मानुषः ।
कन्यायाः अपत्यं पुमान्=कानीनः; कन्या+अण् + कानीनः ।
द्वयोः मात्रोः अपत्यं पुमान्=द्वैमातुरः; द्विमातृ+अण्=द्वैमातुरः ।
षण्णां मातॄणामपत्यं पुमान्=षाण्मातुरः; षट्मातृ+अण्=षाण्मातुरः ।

भाव अर्थ

पृथु, मृदु, पटु, तनु, लघु, गुरु, बहु, साधु, आशु, उरु, बहुल, खण्ड, दण्ड, चण्ड, अकिञ्चन, वृष, क्षुद्र, ऋजु आदि शब्दों से भाव अर्थ में—भाव वाचक संज्ञा बनाने के लिए विकल्प से अण् प्रत्यय होता है । यथा—

लघोः भावः=लाघवम् ; लघु+अण्=लाघवम् ।
मृदोः भावः=मार्दवम् ; मृदु+अण्=मार्दवम् ।
गुरोः भावः=गौरवम् ; गुरु+अण्=गौरवम् ।
सुहृदः भावः=सौहृदम्; सुहृद्+अण्=सौहृदम् ।
यूनः भावः=यौवनम् ; युवन्+अण्=यौवनम् ।

देवतार्थ

'सास्य देवता'

यह इसका देवता है, अर्थ में अण् प्रत्यय होता है । यथा—

शिवः देवता अस्य=शैवः: शिव+अण्=शैवः ।
विष्णुः देवता अस्य=वैष्णवः; विष्णु+अण् वैष्णवः ।
शक्तिः देवता अस्य=शाक्तः; शक्ति + अण्=शाक्तः ।
वायुः देवता अस्य=वायव्यः; वायु+अण्=वायव्यः ।
जिनः देवता अस्य=जैनः; जिन+अण्=जैनः
इन्द्रः देवता अस्य=ऐन्द्रः; इन्द्र + अण्=ऐन्द्रः ।
सरस्वती देवता अस्य=सारस्वतः; सरस्वती+अण्=सारस्वतः ।
पशुपतिः देवता अस्य=पाशुपतः; पशुपति+अण्=पाशुपतः ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

समूह अर्थ

'तस्य समूहः'

समूह अर्थ में अण् प्रत्यय होता है। यथा—

भिक्षूणां समूहः=भैक्षम्; भिक्षु + अण्=भैक्षम्।

शुकानां समूहः=शौकम्; शुक + अण्=शौकम्।

मयूराणां समूहः=मायूरम्; मयूर + अण्=मायूरम्।

बकानां समूहः=बाकम्; बक + अण्=बाकम्।

वृकानां समूहः=वार्कम्; वृक + अण्=वार्कम्।

कपोतानां समूहः=कापोतम्; कपोत + अण्=कापोतम्।

सम्बन्ध अर्थ

देवस्य अयम्=दैवः; देव + अण्=दैवः।

ग्रीष्मस्य अयम् इदम् वा=ग्रैष्मः, ग्रैष्मम्; ग्रीष्म+अण्=ग्रैष्मः, ग्रैष्मम्।

निशायाः अयम् इदं वा=नैशः; नैशम्; निशा+अण्=नैशः, नैशम्।

उपगोरिदम्=औपगवम्; उपगु + अण्=औपगवम्।

सूर्यस्य अयम्=सौरः; सूर्य + अण्=सौरः।

चन्द्रस्य अयम्=चान्द्रः; चन्द्र + अण्=चान्द्रः।

शरीरस्य इदम्=शारीरम्; शरीर + अण्=शारीरम्।

मनसः इदम्=मानसम्; मनस् + अण्=मानसम्।

श्रुतेः इदम्=श्रौतम्; श्रुति+अण्=श्रौतम्।

स्मृतेः इदम्=स्मार्तम्; स्मृति+अण्=स्मार्तम्।

भव अर्थ

शरदि भवः=शारदः; शरद् + अण्=शारदः।

मथुरायां भवः=माथुरः; मथुरा+अण्=माथुरः।

मिथिलायां भवः=मैथिलः; मिथिला+अण्=मैथिलः।

समुद्रे भवः=सामुद्रः; समुद्र+अण्=सामुद्रः।

मगधे भवः=मागधः; मगध+अण्=मागधः।

कान्यकुब्जे भवः=कान्यकुब्जः; कान्यकुब्ज+अण्=कान्यकुब्जः।

ईश्वर (स्वामी) अर्थ

सर्वभूमेः ईश्वरः=सार्वभौमः; सर्वभूमि+अण्=सार्वभौमः।

पृथिव्याः ईश्वरः=पार्थिवः; पृथिवी+अण्=पार्थिवः।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विकार अर्थ

सुवर्णस्य विकारः=सौवर्णः; सुवर्ण+अण्=सौवर्णः ।
पयसः विकारः=पायसः; पयस्+अण्=पायसः ।
तिलस्य विकारः=तैलः; तिल+अण्=तैलः ।
रजतस्य विकारः=राजतः; रजत+अण्=राजतः ।
गुडस्य विकारः=गौडः; गुड+अण्=गौडः ।

प्रोक्तम्—अर्थ

ऋषिणा प्रोक्तम्=आर्षम्; ऋषि+अण्=आर्षम् ।
मनुना प्रोक्तम्=मानवम्; मनु+अण्=मानवम् ।
विष्णुना प्रोक्तम्=वैष्णवम्; विष्णु+अण्=वैष्णवम् ।
पतञ्जलिना प्रोक्तम्=पातञ्जलम्; पतञ्जलि+अण्=पातञ्जलम् ।
कणादेन प्रोक्तम्=काणादम्; कणाद+अण्=काणादम् ।

अधीत—वेद अर्थ

व्याकरणम् अधीते वेत्ति वा=वैयाकरणः; व्याकरण+अण्=वैयाकरणः ।

रक्त अर्थ

कषायेण रक्तम्=काषायम्; कषाय+अण्=काषायम् ।
मञ्जिष्ठया रक्तम्=माञ्जिष्ठम्; मञ्जिष्ठा+अण्=माञ्जिष्ठम् ।
कुसुमेन रक्तम्=कौसुमम्; कुसुम+अण्=कौसुमम् ।

२ इञ्

'अत इञ्'

अपत्य अर्थ का बोध कराने के लिए अकारान्त शब्दों में षष्ठयन्त से 'इञ्' प्रत्यय होता है । यथा—

शूरस्य अपत्यम्=शौरिः = शूर + इञ्=शौरिः ।
दत्तस्य अपत्यम्=दात्तिः; दत्त+ इञ्=दात्तिः ।
दशरथस्य अपत्यं=दाशरथिः; दशरथ+इञ्-दाशरथिः ।
द्रोणस्य अपत्यं=द्रौणिः; द्रोण + इञ्=द्रौणिः ।
अर्जुनस्य अपत्यं=आर्जुनिः; अर्जुन+इञ्=आर्जुनिः
सुमित्रायाः अपत्यं=सौमित्रिः; सुमित्रा+इञ्= सौमित्रिः ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विकर्णस्य अपत्यं=वैकर्णिः; विकर्ण+इञ्=वैकर्णिः ।
कृष्णस्य अपत्यं=कार्ष्णिः=कृष्ण+इञ् = कार्ष्णिः ।

३ इयसुन्

'द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ'

दो में से एक की अतिशय व्यवस्था में तरप् और ईयसुन् प्रत्यय होते हैं। अभिप्राय यह है कि गुणवाचक विशेषणों में से एक की अपेक्षा दूसरे का उत्कर्ष या अपकर्ष व्यक्त करने के लिए तरप् और ईयसुन् प्रत्यय होते हैं। 'तरप्' में से प् का लोप होने पर 'तर' अवशेष रहता है और अकारान्त बन जाता है। ईयसुन् में से 'उन्' का लोप होने पर 'ईयस्' प्रत्यय अवशिष्ट रहता है और यह सकारान्त हो जाता है। यथा—

अयमनयोरतिशयेन पटुः=पटुतरः; पटु+तरप्=पटुतरः ।
अयमनयोरतिशयेन पटुः=पटीयान्; पटु + ईयसुन्=पटु + ईयस् पटीयस्-पटीयान् ।
विशेषण होने के कारण उक्त प्रत्ययान्त रूप तीनों लिङ्गों में निम्न प्रकार होंगेः—

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
पटीयान्, पटुतरः	पटीयसी	पटीयः ।
लघीयान्, लघुतरः	लघीयसी	लघीयः ।
प्रियतरः, प्रेयान्	प्रेयसी	प्रेय. ।
दीर्घतरः, द्राघीयान्	द्राघीयसी	द्राघीयः ।
गुरुतरः, गरीयान्	गरीयसी	गरीयः ।

४ इष्ठन्

'अतिशायने तमबिष्ठनौ'

अतिशय—विशिष्ट अर्थ की विवक्षा में तमप् और इष्ठन् प्रत्यय होते हैं। यथा—
अयमेषामतिशयेन पटुः=पटुतमः, पटिष्ठः; पटु + तमप्=पटुतमः; पटु+इष्ठन्=पटिष्ठः ।
अयमेषामतिशयेन लघुः=लघुतमः, लघिष्ठः; लघु+तमप्; लघु+इष्ठन् = लघुतमः; लघिष्ठः ।
अयमेषामतिशयेन गुरुः = गुरुतमः गरिष्ठः, गुरु + तमप्; गुरु + इष्ठन् ।
अयमेषामतिशयेन प्रियः = प्रियतमः; प्रेष्ठः; प्रिय+तमप्; प्रिय+इष्ठन् ।
अयमेषामतिशयेन दीर्घः = दीर्घतमः, द्राघिष्ठः, = दीर्घ+तमप्; दीर्घ+इष्ठन् ।
अयमेषामतिशयेन मृदुः=मृदुतमः, म्रदिष्ठः; मृदु+तमप्; मृदु+इष्ठन् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अयमेषामतिशयेन दृढः = दृढतमः; द्रढिष्ठः; दृढ+तमप्; दृढ+इष्ठन् ।

अयमेषामतिशयेन कृशः = कृशतमः; क्रशिष्ठः; कृश+तमप्; कृश+इष्ठन् ।

उक्त प्रत्ययों से बने शब्द अकारान्त बन जाते हैं और तीनों लिङ्गों में उनके रूप क्रमशः देव, लता और फल के समान होते हैं। यथा—

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
लघुतमः	लघुतमा	लघुतमम्
लघिष्ठः	लघिष्ठा	लघिष्ठम्
पटुतमः	पटुतमा	पटुतमम्
पटिष्ठः	पटिष्ठा	पटिष्ठम्
प्रियतमः	प्रियतमा	प्रियतमम्
प्रेष्ठः	प्रेष्ठा	प्रेष्ठम्
दृढतमः	दृढतमा	दृढतमम्
द्रढिष्ठः	द्रढिष्ठा	द्रढिष्ठम्

विशेषण प्रसंग में ईयसुन् और इष्ठन् प्रत्ययों से निष्पन्न शब्दों को दिया जा चुका है, अतः वहाँ से अवगत कर लेना चाहिए।

५ यत्

अपत्य, विकार, हित, भाव और तदर्हति अर्थ में यत् (य) प्रत्यय होता है।

अपत्यार्थ

राज्ञः अपत्यं पुमान्=राजन्यः; राजन्+यत्=राजन्यः (राजपूत)

मनोरपत्यं पुमान्=मनुष्यः; मनु+यत्=मनुष्यः ।

विकारार्थ

गोः विकारः=गव्यम् ; गो+यत्=गव्यम् (दूध, दही, घृत, गोमूत्र और गोबर)।

नौः विकारः=नाव्यम् ; नौ+यत्=नाव्यम् (नाव खेने लायक समान)।

पयसः विकारः=पयस्यम् ; पयस्+यत्=पयस्यम् (दही, मक्खन, खोवा)।

हितार्थ

स्वर्गाय हितम्=स्वर्ग्यम् ; स्वर्ग+यत्=स्वर्ग्यम् (दानादि)।

आयुषे हितम्=आयुष्यम् ; आयुस्+यत्=आयुष्यम् (पौष्टिक पदार्थ)।

यशसे हितम्=यशस्यम्; यशस्+यत् = यशस्यम् (कीर्त्तिकर कार्य)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भाव-अर्थ

प्राचि भवम् = प्राच्यम्; प्राच्+यत् = प्राच्यम् ।
दिशि भवम् = दिश्यम्; दिश्+यत् = दिश्यम् ।
अन्ते भवम्=अन्त्यम्; अन्त+यत्=अन्त्यम् ।
आदौ भवम् = आद्यम्; आदि+यत् = आद्यम्; आद्यः ।
मूर्ध्नि भवः = मूर्धन्यः; मूर्धन्+यत् + मूर्धन्यः ।
तालुनि भवः = तालव्यः; तालु+यत् = तालव्यः ।
दिवि भवः = दिव्यः; दिव्+यत् = दिव्यः ।

'तदर्हति'

दण्डम् अर्हति = दण्ड्यः; दण्ड+यत् + दण्ड्यः ।
वधम् अर्हति = वध्यः; हन्+यत् = वध्यः ।
पूजाम् अर्हति = पूज्यः; पूज्+यत् = पूज्यः !
मृत्युम् अर्हति = मर्त्यः; मृत्यु+यत् = मर्त्यः ।

अन्य अर्थ

न्यायात् अनपेतम् = न्याय्यम्; न्याय+यत् = न्याय्यम् ।
धर्मात् अनपेतम् = धर्म्यम्; धर्म+यत् = धर्म्यम् ।
नावा तार्यम् = नाव्यम्; नाव+यत् = नाव्यम् (नाव से पार करने लायक पानी) ।

६ यक्

पत्यन्त और पुरोहित आदि शब्दों से भाव और कर्म में यक् प्रत्यय होता है ।

पत्यन्त—

सेनापतेर्भावः कर्म वा = सैनापत्यम्; सेनापति+यक् = सैनापत्यम् ।
गृहपतेर्भावः कर्म वा = गार्हपत्यम्; गृहपति+यक् = गार्हपत्यम् ।
प्रजापतेर्भावः कर्म वा = प्राजापत्यम्; प्रजापति+यक्=प्राजापत्यम् ।

पुरोहितादि—

पुरोहितस्य भावः कर्म वा = पौरोहित्यम्; पुरोहित+यक् = पौरोहित्यम् ।
राज्ञः भावः कर्म वा = राज्यम्; राज+यक् = राज्यम् ।
बालस्य भावः कर्म वा=बाल्यम्; बाल+यक्=बाल्यम् ।
मन्दस्य भावः कर्म वा=मान्द्यम्; मन्द+यक्=मान्द्यम् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

धार्मिकस्य भावः कर्म वा=धार्मिक्यम् ; धार्मिक+यक्=धार्मिक्यम् ।
सारथेः भावः कर्म वा=सारथ्यम् ; सारथि+यक्=सारथ्यम् ।
आस्तिकस्य भावः कर्म वा=आस्तिक्यम् ; आस्तिक+यक्=आस्तिक्यम् ।
नास्तिकस्य भावः कर्म वा=नास्तिक्यम् ; नास्तिक+यक्=नास्तिक्यम् ।

७ च्वि

'कृभ्वस्तियोगेऽभूततद्भावे च्विः'

कृ, भू और अस् धातुओं के योग में अभूततद्भाव—जो वस्तु नहीं है, उसके होने के अर्थ में शब्द के उत्तर 'च्वि' प्रत्यय होता है। इस प्रत्यय का सर्वापहारी लोप हो जाता है। 'च्वि' प्रत्यय होने पर शब्द के अन्तःस्थित ह्रस्व का दीर्घ हो जाता है। यदि शब्द के अन्त में 'अ' रहे तो 'अ' का ई हो जाता है और अन्त में 'ऋ' के रहने पर 'री' हो जाता है। यथा—

अलघुं लघुङ्करोतीति=लघूकरोति ।   अलघुर्लघुर्भवतीति=लघूभवति ।
अशुक्लं शुक्लङ्करोतीति = शुक्लीकरोति । अशुद्धं शुद्धङ्करोतीति = शुद्धीकरोति ।
अपटुं पटुङ्करोतीति = पटूकरोति । अस्पष्टं स्पष्टङ्करोतीति = स्पष्टीकरोति ।
अकेन्द्रं केन्द्रङ्करोतीति = केन्द्रीकरोति । अश्रोतारं श्रोतारङ्करोतीति = श्रोत्रीकरोति ।

८-९ त्व और तल

'तस्य भावस्त्वतलौ'

भाव अर्थ में त्व, तल् (ता) और ष्यञ् (य) प्रत्यय होते हैं। त्व और ष्यञ् प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग और तल् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा—

ईश्वरस्य भावः=ईश्वरत्वम्—ईश्वर+त्व; ईश्वरता—ईश्वर+तल्; ऐश्वर्यम्—ईश्वर+ष्यञ्
चपलस्य भावः=चपलत्वम्—चपल+त्व; चपलता—चपल+तल् ; चापल्यम्—चपल+ष्यञ् ।
दूतस्य भावः= दूतत्वम्-दूत+त्व; दूतता—दूत+तल्; दौत्यम्-दूत+ष्यञ् ।
प्रवीणस्य भावः=प्रवीणत्वम्—प्रवीण+त्व; प्रवीणता—प्रवीण+तल्; प्रावीण्यम्—प्रवीण+ष्यञ् ।
न्यूनस्य भावः = न्यूनत्वम्—न्यून+त्व; न्यूनता—न्यून+तल्; न्यौन्यम्—न्यून+ष्यञ् ।
कुमारस्य भावः=कुमारत्वम्—कुमार+त्व; कुमारता—कुमार+तल्; कौमार्यम्—कुमार+ष्यञ् ।
मूर्खस्य भावः=मूर्खत्वम्+मूर्ख+त्व; मूर्खता—मूर्ख+तल् ; मौर्ख्यम्—मूर्ख+ष्यञ् ।
मित्रस्य भावः=मित्रत्वम्—मित्र+त्व; मित्रता—मित्र+तल्; मैत्र्यम्—मित्र+ष्यञ् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

शूरस्य भावः=शूरत्वम्–शूर+त्व; शूरता–शूर+तल्; शौर्यम्–शूर+ष्यञ्।
वीरस्य भावः=वीरत्वम्–वीर+त्व; वीरता–वीर+तल्; वीर्य्यम्–वीर+ष्यञ्।
पण्डितस्य भावः=पण्डितत्वम्; पण्डितता–पण्डित+तल्; पाण्डित्यम्–पण्डित+ष्यञ्।
गुरोः भावः=गुरुत्वम्–गुरु + त्व; गुरुता–गुरु + तल्।
लघोः भावः=लघुत्वम्–लघु + त्व; लघुता—लघु + तल्।
पटोः भावः=पटुत्वम्–पटु+त्व; पटुता–पटु+तल्।

'ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्'

ग्राम, जन और बन्धु शब्दों से समूह अर्थ में तल् (ता) प्रत्यय होता है। यथा—
ग्रामाणां समूहः=ग्रामता; ग्राम+तल् (ता)=ग्रामता।
जनानां समूहः=जनता; जन+तल् (ता)=जनता।
बन्धूनां समूहः=बन्धुता; बन्धु+तल् (ता)=बन्धुता।
गजानां समूहः=गजता; गज+तल् (ता)=गजता।
सहायानां समूहः=सहायता; सहाय+तल् (ता)=सहायता।
निपुणस्य भावः=निपुणता; निपुण+तल् (ता)=निपुणता।
चतुरस्य भावः=चतुरता; चतुर + तल् (ता)=चतुरता।

१० मतुप्

'तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्'

'वह वस्तु इसकी है' और 'वह वस्तु इसमें है' इन अर्थों में मतुप् (मत) प्रत्यय होता है।

बुद्धिः अस्येति=बुद्धिमान्; बुद्धि+मतुप्=बुद्धिमत्=बुद्धिमान्।
धीः अस्येति=धीमान्; धी+मतुप्=धीमान्।
श्रीः अस्य अस्ति=श्रीमान्; श्री+मतुप्=श्रीमान्।
अंशवः अस्य सन्ति=अंशुमान्—अंशु+मतुप्=अंशुमान्।
गावः अस्य सन्ति=गोमान्; गो+मतुप्=गोमान्।
भानुमान् भानु + मतुप्=भानुमान्।
पितृमान्=पितृ + मतुप्=पितृमान्।
अश्रुमान्=अश्रु + मतुप्=अश्रुमान्।

अपवाद

लक्ष्मी+वतुप्=लक्ष्मीवान्।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विशेष—

इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त तथा ऋकारान्त शब्दों के उत्तर 'मतुप्' (मत्) तथा अकारान्त और आकारान्त शब्दों के उत्तर वतुप् प्रत्यय (वत्—वान्) लगता है।

ज्ञानम् अस्य अस्ति=ज्ञानवान्; ज्ञान + वतुप्=ज्ञानवत्—वान्=ज्ञानवान्।

धनम् अस्य अस्ति=धनवान्; धन + वतुप्=धन + वत्—वान्=धनवान्।

विद्या अस्य अस्ति=विद्यावान्; विद्या + वतुप्=विद्या + वत्—वान्=विद्यावान्।

दया अस्य अस्ति=दयावान्; दया + वतुप्=दयावत्—वान्=दयावान्।

क्षमा अस्य अस्ति=क्षमावान्; क्षमा + वतुप्=क्षमा + वत्—वान्=क्षमावान्।

विद्युत् अस्य अस्ति=विद्युत्वान्; विद्युत् + वतुप्=विद्युत्वान्।

माया अस्य अस्ति=मायावान्; माया + वतुप्=मायावान्।

रूपम् अस्य अस्ति=रूपवान्; रूप + वतुप्=रूपवान्।

करुणा अस्य अस्ति=करुणावान्=करुणा + वतुप्=करुणावान्।

प्रतिभा अस्य अस्ति=प्रतिभावान्—प्रतिभा + वतुप्=प्रतिभावान्।

स्त्रीलिङ्ग में—

करुणा अस्याः अस्ति=करुणावती—करुणा + वतुप्=करुणावत् + ङीप्=करुणावती।

धनवती—धन + वतुप् + ङीप्=धनवती।

बलवती=बल + वतुप् + ङीप्=बलवती।

रूपवती=रूप + वतुप् + ङीप्=रूपवती।

ज्ञानवती=ज्ञान + वतुप् + ङीप्=ज्ञानवती।

दयावती=दया + वतुप् + ङीप्=दयावती।

विद्यावती=विद्या + वतुप् + ङीप्=विद्यावती।

११ छ

अपत्य, सम्बन्ध और प्रोक्त अर्थों में संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के बाद छ प्रत्यय जोड़ा जाता है। 'छ' के स्थान पर 'ईय' आदेश होता है। यथा—

अपत्य अर्थ में

स्वसुः अपत्यं पुमान्=स्वस्रीयः; स्वसृ+छ=स्वसृ+ईय=स्वस्रीयः।

भ्रातुः अपत्यं पुमान्=भ्रात्रीयः; भ्रातृ+छ=भ्रात्रीयः (भतीजा)

सम्बन्ध अर्थ

भवतः अयम्=भवदीयः–भवत्+छ (ईय)=भवदीयः।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अस्माकम् अयम्=अस्मदीयः–अस्मद्+छ (ईय)=अस्मदीयः ।

युष्माकम् अयम्=युष्मदीयः–युष्मद्+छ (ईय)=युष्मदीयः ।

तस्य अयम्=तदीयः–तद्+छ (ईय)=तदीयः ।

तीनों लिङ्गों की रूपावली—

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
अस्मदीयः	अस्मदीया	अस्मदीयम्
मदीयः	मदीया	मदीयम्
त्वदीयः	त्वदीया	त्वदीयम्
यदीयः	यदीया	यदीयम्

भवतः अयम्=भवदीयः–भवत्+छ (ईय)=भवदीयः

भवतः इदम्=भवदीयम्–भवत्+छ (ईय) भवदीयम् ।

भवतः इयम्=भवदीया;–भवत्+छ (ईय्)+टाप=भवदीया । तस्य अयम्=तदीयः तस्य इदम्=तदीयम् ; तस्य इयम्=तदीया–तत्+छ ।

भारतस्य अयम्=भारतीयः, भारतस्य इदम्=भारतीयम् ; भारतस्य इयम्=भारतीया–भारत+छ (ईय) ।

प्रोक्त अर्थ

पाणिनिना प्रोक्तम्=पाणिनीयम्, पाणिनि+छ (ईय)=पाणिनीयम् ।

वाल्मीकिना प्रोक्तम्=वाल्मीकीयम्–वाल्मीकि+छ (ईय)=वाल्मीकीयम् ।

नारदेन प्रोक्तम्=नारदीयम्–नारद + छ (ईय) ।

मनुना प्रोक्तम्=मानवीयम्–मनु+छ (ईय) ।

१२ मयट्

विकार अर्थ में मयट् प्रत्यय जोड़ा जाता है । यथा—

मृदो मृत्तिकायाः वा विकारः=मृण्मयः–मृत्तिका+मयट् ।

अश्मनो विकारः=अश्ममयम्–अश्मन्+मयट् ।

बालुकायाः विकारः=बालुकामयः–बालुका+मयट् ।

स्वर्णस्य विकारोऽवयवो वा=स्वर्णमयः—स्वर्ण+मयट् ।

रौप्यस्य विकारोऽवयवो वा=रौप्यमयः—रूप+मयट् ।

हिरण्यस्य विकारोऽवयवो वा=हिरण्मयः—हिरण्य+मयट् ।

स्त्रीलिङ्ग में—

मृण्मयी, बालुकामयी, रौप्यमयी, हिरण्मयी ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

प्रचुरता अर्थ

मङ्गलस्य प्रचुरता=मङ्गलमयः—मङ्गल=मयट्। मङ्गलमयी, मङ्गलमयम्—विशेष्य के अनुरूप रूप बनेंगे।

धूमस्य प्रचुरता=धूममयः—धूम+मयट्।

जलस्य प्रचुरता=जलमयः—जल+मयट्।

जलमयी, जलमयम्, धूममयी, धूममयम् आदि विशेष्य के अनुरूप होंगे।

अवयव अर्थ में

काष्ठम् अवयवः यस्य=काष्ठमयः; काष्ठम् अवयवः यस्याः=काष्ठमयी—काष्ठ+मयट्।

प्रस्तरम् अवयवः यस्य=प्रस्तरमयः—प्रस्तर+मयट्।

शिला अवयवः यस्य=शिलामयः—शिला+मयट्।

सूत्रमयम्—सूत्र+मयट्।

व्याप्ति अर्थ

ब्रह्मणा व्याप्तम्=ब्रह्ममयम्—ब्रह्म+मयट्।

ईश्वरेण व्याप्तम्=ईश्वरमयम्—ईश्वर+मयट्।

वाचां स्वरूपम्=वाङ्मयम्—वाक्+मयट्।

चित् स्वरूपम् = चिन्मयम्—चित्+मयट्।

आनन्दस्य स्वरूपम्=आनन्दमयम्—आनन्द+मयट्।

१३ वति

'तेन तुल्यं क्रिया चेत् वतिः'

सादृश्य वाचक शब्दों के बाद वति (वत्) प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा—

समुद्र इव=समुद्रवत्—समुद्र+वति (वत्)।

नदी इव=नदीवत्—नदी+वति (वत्)।

पुत्रेण तुल्यम्=पुत्रवत्—पुत्र+वति (वत्)।

मूर्खेण तुल्यम् = मूर्खवत्—मूर्ख+वति (वत्)।

पित्रा तुल्यम् = पितृवत्—पितृ+वति (वत्)।

गुरुणा तुल्यम् = गुरुवत्—गुरु+वति (वत्)।

हिमम् इव शीतलम् = हिमवत्—हिम+वति (वत्)

गृहम् इव=गृहवत्—गृह+वति (वत्)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

१४ इमनिच् (इमन्)

'पृथ्वादिभ्यः इमनिच्'

भाव अर्थ में पृथु आदि शब्दों से त्व, तल (ता) तथा इमनिच् (इमन्) प्रत्यय होते हैं। यथा—

पृथोः भावः=प्रथिमा–पृथु+इमनिच् (इमन्)।
लघोः भावः=लघिमा–लघु+इमनिच् (इमन्)।
पीतस्य भावः = पीतिमा–पीत+इमनिच् (इमन्)।
गुरोः भावः=गरिमा–गुरु+इमनिच् (इमन्)
रक्तस्य भावः=रक्तिमा–रक्त+इमनिच् (इमन्)।
शुक्लस्य भावः=शुक्लिमा–शुक्ल+इमनिच् (इमन्)।
उष्णस्य भावः=उष्णिमा–उष्ण+इमनिच् (इमन्)।
अणोः भावः=अणिमा–अणु+इमनिच् (इमन्)।
दीर्घस्य भावः=द्राघिमा–दीर्घ+इमनिच् (इमन्)।
महतः भावः=महिमा–महत्+इमनिच् (इमन्)।
प्रियस्य भावः=प्रेमा–प्रिय+इमनिच् (इमन्)।
नीलस्य भावः=नीलिमा–नील+इमनिच् (इमन्)।
तनोर्भावः= तनिमा–तनु+इमनिच् (इमन्)।
बहोर्भावः=भूमा–बहु+इमनिच् (इमन्)।
ह्रस्वस्य भावः=ह्रसिमा–ह्रस्व+इमनिच् (इमन्)।

१५ मात्रच्

'प्रमाणपरिमाणाभ्यां संख्यायाश्चापि संशये मात्रज्वक्तव्यः'

कृशस्य भावः=क्रशिमा—कृश+इमनिच् (इमन्)।

मात्रच् प्रत्यय लगाकर प्रमाण, परिमाण और संख्या का संशय हटाकर निश्चय स्थापित किया जाता है। यथा—

शमः प्रमाणम्=शममात्रम्–शम+मात्रच् (मात्र)
सेरः प्रमाणम्=सेरमात्रम्–सेर+मात्रच् (मात्र)
पञ्च प्रमाणम्=पञ्चमात्रम्–पञ्च+मात्रच् (मात्र)
हस्तः प्रमाणमस्य=हस्तमात्रम्–हस्त+मात्रच् (मात्र)
जानु प्रमाणमस्य=जानुमात्रम्–जानु+मात्रच् (मात्र)
उरुः प्रमाणमस्य=उरुमात्रम्–उरु+मात्रच् (मात्र)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

वितस्तिः प्रमाणमस्य=वितस्तिमात्रम्–वितस्ति+मात्रच् (मात्र)
तालः प्रमाणमस्य=तालमात्रम्–ताल+मात्रच् (मात्र)
गजः प्रमाणमस्य–गजमात्रम्–गज+मात्रच् (मात्र)
पुरुषः प्रमाणमस्य=पुरुषमात्रम्–पुरुष+मात्रच् ।

१६ तीय

'द्वेस्तीयः'

'पूरण' अर्थ में द्वि और त्रि शब्द से तीय प्रत्यय होता है । यथा—
द्वयोः पूरणः=द्वितीयः—द्वि+तीय ।
त्रयाणां पूरणः=तृतीयः–त्रि+तीय ।

१७ इनि (इन्)

एकाधिक स्वर विशिष्ट अवर्णान्त शब्दों से परे इन् प्रत्यय होता है । इसके रूप 'गुणिन्' के समान होते हैं । स्त्रीलिङ्ग में 'इ' प्रत्यय जोड़कर गुणिनी रूप बनता है और नदी शब्द के समान रूप चलते हैं ।

धनम् अस्य अस्ति=धनी–धन+इनि (इन्)=धनिन्–धनी ।
बलमस्य अस्ति=बली–बल+इनि (इन्)=बलिन्–बली ।
ज्ञानमस्य अस्ति=ज्ञानी–ज्ञान+इनि (इन्) ज्ञानिन्–ज्ञानी ।
साहसमस्य अस्ति=साहसी—साहस+इनि (इन्) साहसिन्—साहसी ।
माया अस्य अस्ति=मायी—माया+इनि (इन्) मायिन्—मायी ।
विवेकमस्य अस्ति=विवेकी—विवेक+इनि (इन्) विवेकिन्—विवेकी ।
सुखमस्य अस्ति=सुखी—सुख+इनि (इन्) सुखिन्—सुखी ।
दुःखमस्य अस्ति=दुःखी—दुःख+इनि (इन्) दुःखिन्—दुःखी ।
प्रणयमस्य अस्ति=प्रणयी—प्रणय+इनि (इन्) प्रणयिन्—प्रणयी ।
विद्या अर्थमस्य अस्ति=विद्यार्थी—विद्यार्थ+इनि (इन्) विद्यार्थिन्—विद्यार्थी ।
धनम् अर्थमस्य अस्ति=धनार्थी—धनार्थ+इनि (इन्) धनार्थिन—धनार्थी ।

१८ तसिल्

'पञ्चम्यास्तसिल् वा'

पञ्चमी विभक्ति के स्थान में विकल्प से तसिल् (तस्) प्रत्यय होता है । यथा—
कस्मात्=कुतः—किम्+तसिल् (तस्) ।
नगरात्=नगरतः—नगर+तसिल् (तस्)=नगरतस्=नगरतः ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ग्रामात्=ग्रामतः—ग्राम+तसिल् (तस्)=ग्रामतस्=ग्रामतः ।
भवनात्=भवनतः—भवन+तसिल् (तस्) ।
ग्रीष्मात्=ग्रीष्मतः—ग्रीष्म+तसिल् (तस) ।
उभयस्मात्=उभयतः—उभय+तसिल् (तस्) ।
सर्वस्मात्=सर्वतः—सर्व+तसिल् (तस्) ।
एकस्मात्=एकतः—एक+तसिल् (तस्) ।
अन्यस्मात्=अन्यतः—अन्य+तसिल् (तस्) ।
पूर्वस्मात्=पूर्वतः—पूर्व+तसिल् (तस्) ।
परस्मात्=परतः—पर+तसिल् (तस्) ।
उत्तरस्मात्=उत्तरतः—उत्तर+तसिल् (तस्) ।

'सप्तम्यास्तसिल्'

सप्तमी विभक्ति के स्थान में विकल्प से तसिल् (तस्) प्रत्यय होता है । यथा—

पृष्ठे=पृष्ठतः—पृष्ठ+तसिल् (तस्)=पृष्ठतः ।
मध्ये=मध्यतः—मध्य+तसिल् (तस्) ।
पार्श्वयोः=पार्श्वतः—पार्श्व+तसिल् (तस्) ।
सर्वस्मिन्=सर्वतः—सर्व+तसिल् (तस्) ।
उत्तरस्मिन्=उत्तरतः—उत्तर+तसिल् (तस्) ।
पूर्वस्मिन्=पूर्वतः—पूर्व+तसिल् (तस्) ।
अग्रे=अग्रतः—अग्र+तसिल् (तस्) ।
आदौ=आदितः—आदि+तसिल् (तस्) ।

'पर्यभिभ्याञ्च'

परि और अभि उपसर्ग से भी तसिल् (तस्) प्रत्यय होता है । यथा—

परितः—परि+तसिल् (तस्) ।
अभितः—अभि+तसिल् (तस्) ।
यस्मात्=यतः—यद्+तसिल् (तस्) ।
एतस्मात्=अतः—एतद्+तसिल् (तस्) ।
तस्मात्=ततः—तद्+तसिल् (तस्) ।
कस्मात्=कुतः—किम्+तसिल् (तस्) ।
अस्मात्=अतः—इदम् + तसिल् (तस्) ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

१९ त्रल्

सर्व, अन्य, तद्, किम् और बहु आदि शब्दों के उत्तर सप्तमी विभक्ति के अर्थ में 'त्रल्' प्रत्यय होता है। यथा—

सर्वस्मिन् स्थाने=सर्वत्र—सर्व+त्रल् (त्र)।
अन्यस्मिन् स्थाने=अन्यत्र—अन्य+त्रल् (त्र)।
यस्मिन् स्थाने=यत्र—यद्+त्रल् (त्र)।
तस्मिन् स्थाने=तत्र—तद्+त्रल् (त्र)।
कस्मिन् स्थाने=कुत्र—किम्+त्रल् (त्र)।
बहुषु स्थानेषु=बहुत्र—बहु+त्रल् (त्र)।

२० दा

'एकसर्वनाम्नोः काले दा'

कालबोध के लिए सर्व, एक, अन्य, किम्, यद्, तद् आदि सर्वनाम शब्दों से 'दा' प्रत्यय होता है। यथा—

सर्वस्मिन् काले=सर्वदा—सर्व+दा।
एकस्मिन् काले=एकदा—एक+दा।
अन्यस्मिन् काले=अन्यदा- अन्य+दा।
कस्मिन् काले=कदा–किम्+दा।
यस्मिन् काले=यदा–यद्+दा।
तस्मिन् काले=तदा–तद्+दा।

२१ धाच् (धा)

'संख्यायाः विधार्थे धाच्'

प्रकार अर्थ में सख्यावाचक शब्दों से धाच् (धा) प्रत्यय होता है। यथा—

द्वाभ्यां प्रकाराभ्याम्=द्विधा–द्वि+धा (दो तरह से)
त्रिभिः प्रकारैः=त्रिधा–त्रि+धा (तीन तरह से)
चतुर्भिः प्रकारैः=चतुर्धा—चतुर+धा (चार प्रकार से)
पञ्चभिः प्रकारैः=पञ्चधा—पञ्च+धा (पाँच प्रकार से)।

षोढा—षड्धा, सप्तधा, अष्टधा, नवधा, दशधा, एकादशधा इत्यादि रूप इसी प्रकार बनते हैं।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

२२ थाल् (था)

'प्रकारवचने थाल् तृतीयायाः'

प्रकार अर्थ में तृतीया विभक्ति के स्थान में थाल् (प्रत्यय) होता है ।

सर्वैः प्रकारैः=सर्वथा—सर्व+थाल् (था) ।

अन्यैः प्रकारैः=अन्यथा—अन्य+थाल् (था) ।

येन प्रकारेण=यथा—यद्+थाल् (था) ।

तेन प्रकारेण=तथा—तद्+थाल् (था) ।

केन प्रकारेण=कथम्—किम्+थाल् (था) ।

अनेन प्रकारेण=इत्थम् —इदम्+थाल् (था) ।

इतरेण प्रकारेण=इतरथा—इतर+थाल् (था) ।

उभयेन प्रकारेण=उभयथा—उभय+थाल् (था) ।

२३ घ

अपत्य, भव तथा योग्य अर्थ में घ (इय) प्रत्यय होता है । यथा—

अर्हति—

यज्ञम् अर्हति=यज्ञियः—यज्ञ+घ (इय)=यज्ञियः ।

भव—

राष्ट्रे भवः=राष्ट्रियः—राष्ट्र+घ (इय) ।

अग्रे भवः=अग्रिमः—अग्र+घ (इय) ।

अपत्य—

क्षत्रस्य अपत्यम्=क्षत्रियः—क्षत्र+घ (इय) ।

२४ चित्

प्रश्नवाचक सर्वनाम 'किम्' शब्द से अनिश्चय वाचक सर्वनाम बनाने के लिए सभी कारकों, सभी लिङ्गों और सभी वचनों में चित् प्रत्यय जोड़ा जाता है । यथा—

किम्—कः+चित्=कश्चित् ; कौ+चित्=कौचित् ; के+चित्=केचित् ।

कम्+चित्=कञ्चित् ; कान्+चित्=कांश्चित् ; केन+चित्=केनचित् ।

कस्मै+चित् = कस्मैचित् ; कस्मिन्+चित् = कस्मिश्चित् ।

कस्यै+चित् = कस्यैचित् ; कस्याम्+चित् = कस्याञ्चित् ।

२५ चन

अनिश्चय अर्थ में विभक्त्यन्त किम् शब्द से परे चन प्रत्यय भी होता है । यथा—

कः+चन=कश्चन; के+चन=केचन; किम्+चन=किञ्चन ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

कैः+चन=कैश्चन; कुतः+चन=कुतश्चन; क्व+चन=क्वचन ।

कुत्र+चन=कुत्रचन; कस्मिन्+चन=कस्मिंश्चन ।

कस्याम्+चन = कस्याञ्चन ।

२६ ल

'मांसादेर्लो वा'

मतुप् अर्थ में मांस आदि शब्दों से ल, मतुप् और वतुप् प्रत्यय होते हैं । यथा—

मांसम् अस्य अस्ति=मांसलः—मांस+ल । मांस+वतुप्=मांसवान् ।

पक्ष्म+ल=पक्ष्मलः; पक्ष्म+वतुप्=पक्ष्मवान् ।

मृदु+ल=मृदुलः; मृदु+वतुप्=मृदुवान् ।

शीत+ल=शीतलः; शीत+वतुप्=शीतवान् ।

कुश+ल=कुशलः; वत्स+ल=वत्सलः ।

कपि+ल=कपिलः; फेन+ल=फेनिलः ।

२७ शस्

'बहु' और 'अल्प' अर्थवाले शब्दों में कर्म और सम्प्रदान आदि कारकों का अर्थ व्यक्त करने के लिए 'शस्' जोड़ा जाता है ।

यह प्रत्यय संख्यावाचक शब्दों में द्विरुक्ति अर्थात् बार-बार के अर्थ में विकल्प से जोड़ा जाता है । यथा—

बहूनि कृत्वा=बहुशः—बहु+शस् ।

अल्पं कृत्वा=अल्पशः—अल्प+शस ।

खण्डं कृत्वा=खण्डशः—खण्ड+शस् ।

एकं एकं कृत्वा=एकशः, एकैकशः—एक+शस् , एकक+शस् ।

एकस्मै एकस्मै अथवा एकस्यै एकस्यै=एकशः; एकैकशः ।

अनेकशः—अनेक+शस् ।

लोमानि अस्य सन्ति=लोमशः—लोम+शस् ।

रोमाः अस्य सन्ति=रोमशः—रोम+शस् ।

कर्कशः—कर्क+शस् ; गिरिशः—गिरि+शस् ।

२८ कन्

'स्वार्थे कन्'

स्वार्थ समझे जाने पर शब्दों से कन् (क) प्रत्यय होता है । यथा—

बाला एव=बालिका—बाला + कन् ।

कन्या एव=कन्यका—कन्या + कन् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तारा एव=तारका–तारा + कन् ।
लता एव=लतिका–लता + कन् ।
तरला एव=तरलिका–तरला + कन् ।
दूती एव=दूतिका–दूती + कन् ।
लवङ्गी एव=लवङ्गिका–लवङ्गी + कन् ।
निपुणा एव=निपुणिका–निपुणा+कन् ।
गोधा एव=गोधिका–गोधा + कन् ।
शेफाली एव=शेफालिका–शेफाली+कन् ।
काली एव=कालिका–काली + कन् ।

२९ इतच्

'तारकादिभ्य इतच्'

"तत् अस्य सञ्जातम्"—उस वस्तु से युक्त या उत्पन्न अर्थ में तारकादि शब्दों से इतच् (इत्) प्रत्यय होता है यथा—

तारकाः सञ्जाताः अस्य=तारकितं नभः–तारक + इतच् ।
फलानि सञ्जातानि अस्य=फलितो वृक्षः–फल + इतच् ।
व्याधिः सञ्जातः अस्य=व्याधितो मनुष्यः–व्याधि + इतच् ।
उत्कण्ठितः–उत्कण्ठा + इतच्=उत्कण्ठितः ।
तरङ्गितः–तरङ्ग + इतच्=तरङ्गित ।
निद्रितः–निद्रा+इतच्=निद्रितः ।
क्रोधितः–क्रोध+इतच् । ज्वरितः–ज्वर+इतच् ।
पुलकितः–पुलक+इतच् । मञ्जरितः–मञ्जरी+इतच् ।
पीडितः–पीडा+इतच् । मूर्च्छितः–मूर्च्छा + इतच् ।
तृषितः–तृषा+इतच् । क्षुधितः–क्षुधा+इतच् ।
हर्षितः–हर्ष+इतच् । पण्डितः–पण्डा + इतच् ।
दुःखितः–दुःख+इतच् ; कल्लोलितः–कल्लोल+इतच् ।
प्रतिबिम्बितः–प्रतिबिम्ब + इतच् , दीक्षितः–दीक्षा + इतच् ।
रोमाञ्चितः–रोमाञ्च+इतच् ; पल्लवितः–पल्लव + इतच् ।
शापितः–शाप+इतच् ; पुष्पितः–पुष्प + इतच् ।
पिपासितः–पिपासा+इतच् ; जिज्ञासितः–जिज्ञासा+इतच् ।

३० खञ्

हित, सम्बन्ध, उत्पत्ति आदि अर्थों में शब्दों से खञ् प्रत्यय जोड़ा जाता है । यथा—

हित–अर्थ

विश्वजनेभ्यः हितम्=विश्वजनीनम्–विश्वजन+खञ् (ईन) ।
सर्व जनेभ्यः हितम्=सार्वजनीनम्–सर्वजन+खञ् (ईन) ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

आत्मने हितम्=आत्मनीनम्–आत्मन्+खञ् (ईन)।

स्त्रीलिङ्ग में विश्वजनीना, सार्वजनीना और आत्मनीना आदि रूप बनते हैं।

सम्बन्ध अर्थ

तव इदम्=तावकीनम्–युष्मद्–तावक+खञ् (ईन)।

मम इदम्=मामकीनम्–अस्मद्–मामक+खञ् (ईन)।

युष्माकम् इदम्==यौष्माकीणम्–युष्मद् +खञ् (ईन)।

उत्पत्ति-अर्थ

कुले भवः=कुलीनः–कुल + खञ् (ईन)।

धुरि भवः=धुरीणः—धुर+खञ् (ईन)।

ग्रामे भवः=ग्रामीणः–ग्राम+खञ् (ईन)।

तत्काले जातः=तत्कालीनः —तत्काल+खञ् (ईन)।

स्त्रीलिङ्ग में कुलीना, धुरीणा, ग्रामीणा और तत्कालीना रूप बनते हैं।

विशेष—

संयुगे साधुः=सांयुगीनः–संयुग+खञ् (ईन) (लड़ाकू)।

पारं गन्ता=पारीणः—पार+खञ् (ईन)।

सरयूपारङ्गतः=सरयूपारीणः–सरयूपार+खञ् (ईन)।

अध्वनि साधुः=अध्वनीनः—अध्व+खञ् (ईन) (राही)

३१ ष्यण्

गर्गादि शब्दों से अपत्यवाचक 'ष्यण्' प्रत्यय होता है। यथा—

गर्गस्यापत्यं पुमान्=गर्ग+ष्यण्=गार्ग्यः।

चणकस्य अपत्यं पुमान्=चाणक्यः–चणक+ष्यण्।

दितेरपत्यं पुमान्=दैत्यः–दिति+ष्यण्।

प्रजापतेः अपत्यं पुमान्=प्राजापत्यः–प्रजापति+ष्यण्।

जमदग्नेः अपत्यं पुमान्=जामदग्न्यः–जमदग्नि+ष्यण्।

पुलस्त्यस्यापत्यं पुमान्=पौलस्त्यः–पुलस्त्य+ष्यण्।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लावण्यम्–लवण+ष्यण्; शौर्य्यम्–शूर+ष्यण्।

सौन्दर्यम्–सुन्दर+ष्यण्; प्रावीण्यम्–प्रवीण + ष्यण्।

३२ षेयण्

स्त्री प्रत्ययान्त शब्दों से अपत्य अर्थ में षेयण् (एय) प्रत्यय होता है। यथा—

गङ्गायाः अपत्यं=गाङ्गेयः—गङ्गा+षेयण्।

राधायाः अपत्यं=राधेयः—राधा+षेयण्।

विनतायाः अपत्यं=वैनतेयः—विनता+षेयण्।

भगिन्याः अपत्यं=भागिनेयः—भगिनी+षेयण्।

कुन्त्याः अपत्यं=कौन्तेयः—कुन्ती+षेयण्।

विशेष—

विमातुः अपत्यं=वैमात्रेयः; पाण्डोः अपत्यं=पाण्डवेयः।

सुभगायाः अपत्यं=सौभागिनेयः—सुभगा+षेयण् (एय)।

कनिष्ठायाः अपत्यं=कानिष्ठिनेयः–कनिष्ठा+षेयण्।

पितृष्वसुरपत्यं=पैतृष्वसेयः–पितृष्वसृ+षेयण्।

मातृष्वसुरपत्यं=मातृष्वसेयः–मातृष्वसृ+षेयण्।

३३ षायनण्

अपत्य अर्थ में नड् आदि शब्दों से षायनण् आयन) प्रत्यय होता है। यथा—

नडस्य अपत्यं=नाडायनः–नड+षायनण्।

शकटस्य अपत्यं=शाकटायनः–शकट+ षायनण्।

दत्तस्य अपत्यं=दात्तायणः—दत्त+षायनण्।

३४ विनि (विन्)

अस् भागान्त, माया, मेधा और स्रज् शब्दों से विनि (विन्) और मतुप् प्रत्यय होते हैं। यथा—

यशः अस्य अस्ति=यशस्वी, यशस्वान्—यशस्+विनी; यशस्+वतुप्।

तेजः अस्य अस्ति=तेजस्वी, तेजस्वान्–तेजस् + विनि; तेजस् + वतुप्।

पयः अस्याः अस्ति=पयस्विनी; पयस्वती— पयस्+ विनि; पयस्+ वतुप्।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

माया अस्य अस्ति=मायावी; माया+विनि; माया+वतुप् = मायावान् ।

स्रक् अस्य अस्ति=स्रग्वी; स्रग्वान्—स्रक् + विनि; स्रक् + वतुप् ।

३५ सातिच्

देय और परिगणित अर्थ में शब्द के परे सातिच् (सात्) प्रत्यय होता है । यथा—

अग्निसात् भवति–अग्नि+सातिच् = अग्निसात् ।

जलसात् भवति—जल + सातिच् (सात्)=जलसात् ।

भस्मसात् करोति—भस्म + सातिच् (सात्)=भस्मसात् ।

ब्राह्मणसात् करोति—ब्राह्मण+सातिच् (सात्)=ब्राह्मणसात् ।

३६ तनप्

उत्पत्ति अर्थ में कालवाची अव्यय-शब्दों से परे तनप् (तन) प्रत्यय होता है ।

अद्य भवं=अद्यतनम्—अद्य+तनप् ।

सायं भवं=सायन्तनम्—सायं + तनप् = सायन्तनम् ।

दोषा भवं=दोषातनम्—दोषा+तनप् = दोषातनम् ।

प्रातर्भवं=प्रातस्तनम्–प्रातः+तनप् = प्रातस्तनम् ।

दिवाभव=दिवातनम्–दिवा+तनप् ।

पुरा भवं=पुरातनम्–पुरा+तनप् ।

चिरं भवं=चिरन्तनम्–चिरम् + तनप् ।

सदा भवं=सनातनम्, सदातनम्–सदा+तनप् ।

इदानीं भवम्=इदानीन्तनम्–इदानीं+तनप् = इदानीन्तनम् ।

उपरि भवं=उपरितनम्–उपरि+तनप् = उपरितनम् ।

अनुशीलन

१ रूप लिखिये—

लघु + इष्ठन् ; गुरु + ईयसुन् ; ऋषि + अण् ; अरण्य+अण् ; बाल्मीकि+ईय; नड=षायनण् ; पतञ्जलि+अण् ; विष्णु+अण् ; व्याकरण+अण् ; तर्क+ठक् ; वशिष्ठ+अण् ; भिक्षा + अण् । राधा+षेयण् ; पद्म+अण् ; गर्ग + ष्यण् ; द्रोण + इञ् ; दशरथ + इञ् ;

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

२ प्रकृति प्रत्यय का विभाजन कीजिए—

आत्मसात्, चिरन्तनम्, आदित्यः; सर्वत्र; सर्वदा; प्रभुत्वम् ; महिमा, मासिकम् ; द्विधा; चण्डिका, अन्यथा, वैयाकरणः, नैयायिकः; उपरितनम्; अन्तिमः; एकदा; कर्हि; इतः; यत्र; तत्र; पूर्वत्र; चतुर्थः; तृतीयः; अणिमा, कलङ्कितः, पण्डितः; प्रतिबिम्बितः; मूर्च्छितः ।

३ सातिच्, इञ्, ष्यञ् और अण् प्रत्ययों के पाँच-पाँच उदाहरण लिखिए ।

४ एक एक शब्द लिखिए—

कुमारस्य भावः, पल्लवाः सञ्जाताः अस्मिन्; तपः अस्ति अस्य; अयं एषाम् अतिशयेन मृदुः; अयम्अनयोः अतिशयेन प्रियः; हिरण्यस्य विकारः; मनोः अपत्यम् ; सायं भवं; अधः भवं; बहु ददाति; सर्वैः प्रकारैः; इतरेण प्रकारेण; पूर्वस्मिन् ; कन्या एव; तरला एव; धनम् अस्य अस्ति; यशः अस्य अस्ति; रोमाणि अस्य सन्ति ।

—:o:—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सप्तमोऽध्यायः

क्रिया-विचार

संस्कृत में क्रिया शब्दों के मूलरूप को धातु कहते हैं। धातु शब्द का अर्थ है 'शब्दयोनि' अर्थात् जिससे शब्दों की उत्पत्ति हो। तात्पर्य यह है कि क्रियाबोधक भू, स्था, गम्, पठ्, दृश् आदि को धातु कहा जाता है और इन धातुओं में विविध प्रत्यय जोड़ने पर क्रिया रूप बनते हैं। सुविधा की दृष्टि से वैयाकरणों ने धातुओं को दस वर्गों में विभक्त किया है, जिन्हें गण कहते हैं। यथा—

१. भ्वादिगण—भू धातु के समान रूपवाली धातुओं का समूह।
२. अदादिगण—अद् धातु के समान रूपवाली धातुओं का समूह।
३. जुहोत्यादि—हु धातु के समान रूपवाली धातुओं का समूह।
४. दिवादि—दिव धातु के समान रूपवाली धातुओं का समूह।
५. स्वादि—सु धातु के समान रूपवाली धातुओं का समूह।
६. तुदादि—तुद् की तरह चलनेवाली धातुओं का समूह।
७. रुधादि—रुध् की तरह चलनेवाली धातुओं का गण।
८. तनादि—तनु (तन्) धातु के समान रूपवाली धातुओं का गण।
९. क्र्यादि—क्री की तरह चलनेवाली धातुओं का समूह।
१०. चुरादि—चुर् धातु के समान चलनेवाली धातुओं का समूह।

प्रयोगकाल में धातु के उत्तर तिङ् विभक्ति जोड़ी जाती है, अतः क्रिया रूपों को तिङन्त भी कहते हैं। धातुएँ परस्मैपद, आत्मनेपद और और उभयपद इन तीनों पदों में विभक्त हैं।

क्रिया तीन कालों में होती हैं—भूत, वर्तमान और भविष्यत्। जिस समय क्रिया हो रही है; उसे वर्तमानकाल, जो क्रिया हो चुकी है, उसे भूतकाल और आगे होने-वाली क्रिया को भविष्यत्काल कहते हैं।

क्रिया के तीन वचन होते हैं—एकवचन, द्विवचन और बहुवचन। एकवचन से एक की; द्विवचन से दो की और बहुवचन से अनेक की क्रियाएँ अवगत की जाती हैं।

क्रिया के साथ 'अस्मद्' शब्द का प्रयोग रहने पर उत्तम पुरुष; युष्मद् शब्द का

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

प्रयोग रहने से मध्यमपुरुष और इन दोनों से भिन्न शब्दों का प्रयोग रहने से प्रथम पुरुष या अन्यपुरुष समझा जाता है। यथा—

अहं गच्छामि—उत्तम पुरुष।

त्वं गच्छसि—मध्यमपुरुष।

रामः गच्छति या सः गच्छति—प्रथम पुरुष।

क्रिया बनाने के लिए धातुओं के रूप तीन वाच्यों में होते हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य। जिन क्रियाओं में कर्म की आवश्यकता नहीं होती, उन्हें अकर्मक और जिन्हें कर्म की आवश्यकता होती है, उन्हें सकर्मक कहते हैं। सकर्मक धातुओं में कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य सम्भव हैं तथा अकर्मक धातुओं के रूपों में कर्तृवाच्य और भाववाच्य।

रूपावली की सुविधा के लिए धातुओं को निम्नलिखित तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।

(१) सेट् (२) वेट् (३) अनिट्

(१) सेट् का अर्थ है—इट् सहित। जिनके रूपों में धातु और प्रत्यय के बीच 'इ' आ जाती है।

(२) वेट्—विकल्प से 'इट्' का आगम। कतिपय रूपों में विकल्प से 'इ' का आगम होता है।

(३) अनिट्—इडागम का अभाव—वे धातुएँ जिनमें 'इट्' नहीं जोड़ा जाता।

संस्कृत में छः काल (Tenses) और चार विशेष अवस्थाएँ (अर्थ) (Moods) होती हैं। इन दस को लकार कहा जाता है।

(१) लट्—वर्तमान काल के अर्थ में (Present tense)
(२) लोट्—आज्ञा अर्थ में (Imperative mood)
(३) विधि लिङ्—विधि अर्थ में (Potential mood)
(४) लङ्—अनद्यतन भूत (Imperfect tense)
(५) लिट्—परोक्ष भूत (Perfect tense)
(६) लुङ्—सामान्य भूत (Aorist)
(७) लुट्—अनद्यतन भविष्यत् (First future)
(८) लृट्—सामान्य भविष्यत् (Simple future)
(९) आशीर्लिङ्—आशीर्वाद (Benedictive)
(१०) लृङ्—क्रियातिपत्ति (Conditional)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

संस्कृत की क्रियाओं में लिङ्ग व्यवस्था नहीं है, स्त्रीलिङ्ग और पुँल्लिङ्ग में समान रूप से ही क्रिया रूपों का व्यवहार किया जाता है। यथा—

राम जाता है—रामः गच्छति
सीता जाती है—सीता गच्छति

उपर्युक्त वाक्यों में राम और सीता के लिए 'गच्छति' एक ही क्रिया का प्रयोग किया गया है। यहाँ यह स्मरणीय है कि वचन के अनुसार क्रिया रूपों में परिवर्तन होता है। यथा—

बालकः पठति—बालक पढ़ता है।
बालकौ पठतः—दो बालक पढ़ते हैं।
बालकाः पठन्ति—बालक पढ़ते हैं।

परस्मैपदी धातुओं के साथ जोड़ने के लिए प्रत्यय

१ लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ति	तः	न्ति
म० ,,	सि	थः	थ
उ० ,,	मि	वः	मः

२ लोट्—अनुज्ञा

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तु	ताम्	न्तु
म० ,,	०	तम्	त
उ० ,,	आनि	आव	आम

३ लङ्—भूतकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	त्	ताम्	अन्
म० ,,	ः	तम्	त
उ० ,,	अम् (म्)	व (आव)	म (आम)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

४ विधि लिङ्—विधि-चाहिए

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इत्	इताम्	इयुः
म० ,,	इः	इतम्	इत
उ० ,,	इयम्	इव	इम

प्रकारान्तर से—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	यात्	याताम्	युः
म० ,,	याः	यातम्	यात
उ० ,,	याम्	याव	याम

५ लृट्—भविष्यत्काल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्यति	स्यतः	स्यन्ति
म० ,,	स्यसि	स्यथः	स्यथ
उ० ,,	स्यामि	स्यावः	स्यामः

६ लिट्—परोक्षभूत

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अ	अतुः	उः
म० ,,	थ	अथुः	अ
उ० ,,	अ	व	म

७ लुङ—सामान्यभूत

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सीत्	स्ताम्	सुः
म० ,,	सीः	स्तम्	स्त
उ० ,,	सम्	स्व	स्म

८ लुट—अनद्यतन भविष्यत्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ता	तारौ	तारः
म० ,,	तासि	तास्थः	तास्थ
उ० ,,	तास्मि	तास्वः	तास्मः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

९ आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	यात्	यास्ताम्	यासुः
म० ,,	याः	यास्तम्	यास्त
उ० ,,	यासम्	यास्व	यास्म

१० लृङ्—क्रियातिपत्ति

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्यत	स्यताम्	स्यन्
म० ,,	स्यः	स्यतम्	स्यत
उ० ,,	स्यम्	स्याव	स्याम

आत्मनेपदी प्रत्यय

१ लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ते	इते	अन्ते
म० पु०	से	इथे	ध्वे
उ० ,,	इ	वहे	महे

द्वितीय, तृतीय, पञ्चम, सप्तम, अष्टम और नवम गण की धातुओं में निम्नलिखित प्रत्यय जुड़ते हैं।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ते	आते	अते
म० ,,	से	आथे	ध्वे
उ० ,,	ए	वहे	महे

२ लोट्—आज्ञा

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ताम्	इताम्	अन्ताम्
म० ,,	स्व	इताम्	ध्वम्
उ० ,,	ऐ	आवहै	आमहै

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

३ लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	त (अत)	एताम्	अन्त
म० ,,	थाः (अथाः)	इथाम्	ध्वम् (अध्वम्)
उ० ,,	ए	आवहि	आमहि.

४ विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	एत	एयाताम्	एरन्
म० ,,	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
उ० ,,	एय	एवहि	एमहि

५ लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्यते	स्येते	स्यन्ते
म० ,,	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
उ० ,,	स्ये	स्यावहे	स्यामहे

६ लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ए	आते	इरे
म० ,,	से	आथे	ध्वे
उ० ,,	ए	वहे	महे

७ लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्त	साताम्	सत
म० ,,	स्था	साथाम्	ध्वम्
उ० ,,	सि	स्वहि	स्महि

८ आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सीष्ट	सीयास्ताम्	सीरन्

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

म० ,,	सीष्ठाः	सीयास्थाम्	सीध्वम्
उ० ,,	सीय	सीवहि	सीमहि

९ लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ता	तारौ	तारः
म० ,,	तासे	तासाथे	ताध्वे
उ० ,,	ताहे	तास्वहे	तास्महे

१० लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्यत	स्येताम्	स्यन्त
म० ,,	स्यथाः	स्येथाम्	स्यध्वम्
उ० ,,	स्ये	स्यावहि	स्यामहि

भ्वादिगण

भ्वादिगण की प्रथम धातु 'भू' है, अतः इस गण का यह नाम पड़ा है धातुपाठ में इस गण की १०३५ धातुएँ गिनायी गयी हैं। इस गण की धातुओं के अनन्तर प्रत्यय जोड़ने के पूर्व शप् (अ) विकरण जोड़ा जाता है तथा धातु की उपधाका ह्रस्व स्वर अथवा धातु का अन्तिम स्वर गुणरूप में परिवर्तित हो जाता है। यथा—

भू+ति=भू+शप् (अ)+ति=भू+अ+ति=भो+अ+ति=भव् + अ+ति=भवति। इसी प्रकार जि+ति+=जि+अ+ति=जयति।

भ्वादि प्रकरण

भू धातु (होना) लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भवति	भवतः	भवन्ति
म० ,,	भवसि	भवथः	भवथः
उ० ,,	भवामि	भवावः	भवामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० ,,	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ० ,,	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भवतु-भवतात्	भवताम्	भवन्तु
म० ,,	भव-भवतात्	भवतम्	भवत
उ० ,,	भवानि	भवाव	भवाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म० ,,	अभवः	अभवतम्	अभवत
उ० ,,	अभवम्	अभवाव	अभवाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
म० ,,	भवेः	भवेतम्	भवेत
उ० ,,	भवेयम्	भवेव	भवेम

पा (पीने अर्थ में)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
म० ,,	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उ० ,,	पिबामि	पिबावः	पिबामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
म० ,,	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उ० ,,	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पिबतु-पिबतात्	पिबताम्	पिबन्तु
म० ,,	पिब-पिबतात्	पिबतम्	पिबत
उ० ,,	पिबानि	पिबाव	पिबाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
म० ,,	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उ० ,,	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

विधि लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
म० ,,	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उ० ,,	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

घ्रा (सूँघने अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जिघ्रति	जिघ्रतः	जिघ्रन्ति
म० ,,	जिघ्रसि	जिघ्रथः	जिघ्रथ
उ० ,,	जिघ्रामि	जिघ्रावः	जिघ्रामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	घ्रास्यति	घ्रास्यतः	घ्रास्यन्ति

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

म० ,,	घ्रास्यसि	घ्रास्यथः	घ्रास्यथ
उ० ,,	घ्रास्यामि	घ्रास्यावः	घ्रास्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जिघ्रतु	जिघ्रताम्	जिघ्रन्तु
म० ,,	जिघ्र	जिघ्रतम्	जिघ्रत
उ० ,,	जिघ्राणि	जिघ्राव	जिघ्राम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अजिघ्रत्	अजिघ्रताम्	अजिघ्रन्
म० ,,	अजिघ्रः	अजिघ्रतम्	अजिघ्रत
उ० ,,	अजिघ्रम्	अजिघ्राव	अजिघ्राम

विधि लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जिघ्रेत्	जिघ्रेताम्	जिघ्रेयुः
म० ,,	जिघ्रेः	जिघ्रेतम्	जिघ्रेत
उ० ,,	जिघ्रेयम्	जिघ्रेव	जिघ्रेम

स्था (गतिनिवृति अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
म० ,,	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उ० ,,	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
म० ,,	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उ० ,,	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
म० ,,	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उ० ,,	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
म० ,,	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उ० ,,	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

विधि लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
म० ,,	तिष्ठेः	तिष्ठेतम	तिष्ठेत
उ० ,,	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

दृश् (देखने अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
म० ,,	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उ० ,,	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
म० ,,	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उ० ,,	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवनन	द्विवचन	बहुबचन
प्र० पु०	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
म० ,,	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उ० ,,	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
म० ,,	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उ० ,,	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

विधि लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
म० ,,	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उ० ,,	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

गम् (जाने अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
म० ,,	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उ० ,,	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
म० ,,	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उ० ,,	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

म० ,,	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उ० ,,	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
म० ,,	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उ० ,,	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

विधि लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
म० ,,	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उ० ,,	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

पच् (पाक करने अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पचति	पचतः	पचन्ति
म० ,,	पचसि	पचथः	पचथ
उ० ,,	पचामि	पचावः	पचामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
म० ,,	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
उ० ,,	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पचतु	पचताम्	पचन्तु
म० ,,	पच	पचतम्	पचत
उ० ,,	पचानि	पचाव	पचाम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
म० ,,	अपचः	अपचतम्	अपचत
उ० ,,	अपचम्	अपचाव	अपचाम

विधि लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
म० ,,	पचेः	पचेतम्	पचेत
उ० ,,	पचेयम्	पचेव	पचेम

आत्मने पद में

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पचते	पचेते	पचन्ते
म० ,,	पचसे	पचेथे	पचध्वे
उ० ,,	पचे	पचावहे	पचामहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पक्ष्यते	पक्ष्येते	पक्ष्यन्ते
म०	पक्ष्यसे	पक्ष्येथे	पक्ष्यध्वे
उ०	पक्ष्ये	पक्ष्यावहे	पक्ष्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पचताम्	पचेताम्	पचन्ताम्
म० ,,	पचस्व	पचेथाम्	पचध्वम्
उ० ,,	पचै	पचावहै	पचामहै

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपचत	अपचेताम्	अपचन्त
म० ,,	अपचथाः	अपचेथाम्	अपचध्वम्
उ० ,,	अपचे	अपचावहि	अपचामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पचेत	पचेयाताम्	पचेरन्
म० ,,	पचेथाः	पचेयाथाम्	पचेध्वम्
उ० ,,	पचेय	पचेवहिं	पचेमहि

तप् (तपना अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तपति	तपतः	तपन्ति
म० ,,	तपसि	तपथः	तपथ
उ० ,,	तपामि	तपावः	तपामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तप्स्यति	तप्स्यतः	तप्स्यन्ति
म० ,,	तप्स्यसि	तप्स्यथः	तप्स्यथ
उ० ,,	तप्स्यामि	तप्स्यावः	तप्स्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तपतु	तपताम्	तपन्तु
म० ,,	तप	तपतम्	तपत
उ० ,,	तपानि	तपाव	तपाम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अतपत्	अतपताम्	अतपन्
म० ,,	अतपः	अतपतम्	अतपत
उ० ,,	अतपम्	अतपाव	अतपाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तपेत्	तपेताम्	तपेयुः
म० ,,	तपेः	तपेतम्	तपेत
उ० ,,	तपेयम्	तपेव	तपेम

लभ् (लाभ अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लभते	लभेते	लभन्ते
म० ,,	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उ० ,,	लभे	लभावहे	लभामहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
म० ,,	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उ० ,,	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
म० ,,	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उ० ,,	लभै	लभावहै	लभामहै

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
म० ,,	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उ० ,,	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
म० ,,	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उ० ,,	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

लिप (लेप अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिम्पति	लिम्पतः	लिम्पन्ति
म० ,,	लिम्पसि	लिम्पथः	लिम्पथ
उ० ,,	लिम्पानि	लिम्पावः	लिम्पामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लेप्स्यति	लेप्स्यतः	लेप्स्यन्ति
म० ,,	लेप्स्यसि	लेप्स्यथः	लेप्स्यथ
उ० ,,	लेप्स्यामि	लेप्स्यावः	लेप्स्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिम्पतु	लिम्पताम्	लिम्पन्तु
म० ,,	लिम्प	लिम्पतम्	लिम्पत
उ० ,,	लिम्पानि	लिम्पाव	लिम्पाम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अलिम्पत्	अलिम्पताम्	अलिम्पन्
म० ,,	अलिम्पः	अलिम्पतम्	अलिम्पत
उ० ,,	अलिम्पम्	अलिम्पाव	अलिम्पाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिम्पेत्	लिम्पेताम्	लिम्पेयुः
म० ,,	लिम्पेः	लिम्पेतम्	लिम्पेत
उ० ,,	लिम्पेयम्	लिम्पेव	लिम्पेम

आत्मने पद में

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिम्पते	लिम्पेते	लिम्पन्ते
म० ,,	लिम्पसे	लिम्पेथे	लिम्पध्वे
उ० ,,	लिम्पे	लिम्पावहे	लिम्पामहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लेप्स्यते	लेप्स्येते	लेप्स्यन्ते
म० ,,	लेप्स्यसे	लेप्स्येथे	लेप्स्यध्वे
उ० ,,	लेप्स्ये	लेप्स्यावहे	लेप्स्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिम्पताम्	लिम्पेताम्	लिम्पन्ताम्
म० ,,	लिम्पस्व	लिम्पेथाम्	लिम्पध्वम्
उ० ,,	लिम्पै	लिम्पावहै	लिम्पामहै

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अलिम्पत	अलिम्पेताम्	अलिम्पन्त
म० ,,	अलिम्पथाः	अलिम्पेथाम्	अलिम्पध्वम्
उ० ,,	अलिम्पे	अलिम्पावहि	अलिम्पामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिम्पेत	लिम्पेयाताम्	लिम्पेरन्
म० ,,	लिम्पेथाः	लिम्पेयाथाम्	लिम्पेध्वम्
उ० ,,	लिम्पेय	लिम्पेवहि	लिम्पेमहि

पठ् (पढ़ने अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पठति	पठतः	पठन्ति
म० ,,	पठसि	पठथः	पठथ
उ० ,,	पठामि	पठावः	पठामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
म० ,,	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उ० ,,	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुसचन
प्र० पु०	पठतु	पठताम्	पठन्तु
म० ,,	पठ	पठतम्	पठत
उ० ,,	पठानि	पठाव	पठाम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
म० ,,	अपठः	अपठतम्	अपठत
उ० ,,	अपठम्	अपठाव	अपठाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
म० ,,	पठेः	पठेतम्	पठेत
उ० ,,	पठेयम्	पठेव	पठेम

टुनदि (नन्द) (प्रसन्न होना अर्थ)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नन्दति	नन्दतः	नन्दन्ति
म० ,,	नन्दसि	नन्दथः	नन्दथ
उ० ,,	नन्दामि	नन्दावः	नन्दामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नन्दिष्यति	नन्दिष्यतः	नन्दिष्यन्ति
म० ,,	नन्दिष्यसि	नन्दिष्यथः	नन्दिष्यथ
उ० ,,	नन्दिष्यामि	नन्दिष्यावः	नन्दिष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नन्दतु	नन्दताम्	नन्दन्तु
म० ,,	नन्द	नन्दतम्	नन्दत
उ० ,,	नन्दानि	नन्दाव	नन्दाम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अनन्दत्	अनन्दताम्	अनन्दन्
म० ,,	अनन्दः	अनन्दतम्	अनन्दत
उ० ,,	अनन्दम्	अनन्दाव	अनन्दाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नन्देत्	नन्देताम्	नन्देयुः
म० ,,	नन्देः	नन्देतम्	नन्देत
उ० ,,	नन्देयम्	नन्देव	नन्देव

जि (जीतना अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जयति	जयतः	जयन्ति
म० ,,	जयसि	जयथः	जयथ
उ० ,,	जयामि	जयावः	जयामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जेष्यति	जेष्यतः	जेष्यन्ति
म० ,,	जेष्यसि	जेष्यथः	जेष्यथ
उ० ,,	जेष्यामि	जेष्यावः	जेष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जयतु	जयताम्	जयन्तु
म० ,,	जय	जयतम्	जयत
उ० ,,	जयानि	जयाव	जयाम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अजयत्	अजयताम्	अजयन्
म० ,,	अजयः	अजयतम्	अजयत
उ० ,,	अजयम्	अजयाव	अजयाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जयेत्	जयेताम्	जयेयुः
म० ,,	जयेः	जयेतम्	जयेत
उ० ,,	जयेयम्	जयेव	जयेम

वृत् (रहना अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वर्तते	वर्तेते	वर्तन्ते
म० ,,	वर्तसे	वर्तेथे	वर्तध्वे
उ० ,,	वर्ते	वर्तावहे	वर्तामहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वर्त्स्यति	वर्त्स्यतः	वर्त्स्यन्ति
म० ,,	वर्त्स्यसि	वर्त्स्यथः	वर्त्स्यथ
उ० ,,	वर्त्स्यामि	वर्त्स्यावः	वर्त्स्यामः

पक्ष में

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वर्तिष्यते	वर्तिष्येते	वर्तिष्यन्ते
म० ,,	वर्तिष्यसे	वर्तिष्येथे	वर्तिष्यध्वे
उ० ,,	वर्तिष्ये	वर्तिष्यावहे	वर्तिष्यामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वर्तताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्
म० ,,	वर्तस्व	वर्तेथाम्	वर्तध्वम्
उ० ,,	वर्तै	वर्तावहै	वर्तामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अवर्तत	अवर्तेताम्	अवर्तन्त
म० ,,	अवर्तथाः	अवर्तेथाम्	अवर्तध्वम्
उ० ,,	अवर्ते	अवर्तावहि	अवर्तामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वर्तेत	वर्तेयाताम्	वर्तेरन्
म० ,,	वर्तेथाः	वर्तेयाथाम्	वर्तेध्वम्
उ० ,,	वर्तेय	वर्तेवहि	वर्तेमहि

स्मृ (चिन्ता और स्मरण अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति
म० ,,	स्मरसि	स्मरथः	स्मरथ
उ० ,,	स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति
म० ,,	स्मरिष्यसि	स्मरिष्यथः	स्मरिष्यथ
उ० ,,	स्मरिष्यामि	स्मरिष्यावः	स्मरिष्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्मरतु	स्मरताम्	स्मरन्तु
म० ,,	स्मर	स्मरतम्	स्मरत
उ० ,,	स्मराणि	स्मराव	स्मराम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
म० ,,	अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत
उ० ,,	अस्मरम्	अस्मराव	अस्मराम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः
म० ,,	स्मरेः	स्मरेतम्	स्मरेत
उ० ,,	स्मरेयम्	स्मरेव	स्मरेम

रम् (क्रीडा अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रमते	रमेते	रमन्ते
म० ,,	रमसे	रमेथे	रमध्वे
उ० ,,	रमे	रमावहे	रमामहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रंस्यते	रंस्येते	रंस्यन्ते
म० ,,	रंस्यसे	रंस्येथे	रंस्यध्वे
उ० ,,	रंस्ये	रंस्यावहे	रंस्यामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रमताम्	रमेताम्	रमन्ताम्
म० ,,	रमस्व	रमेथाम्	रमध्वम्
उ० ,,	रमै	रमावहै	रमामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अरमत	अरमेताम्	अरमन्त
म० ,,	अरमथाः	अरमेथाम्	अरमध्वम्
उ० ,,	अरमे	अरमावहि	अरमामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रमेत	रमेयाताम्	रमेरन्
म० ,,	रमेथाः	रमेयाथाम्	रमेध्वम्
उ० ,,	रमेय	रमेवहि	रमेमहि

क्षि (क्षय अर्थ में)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्षयति	क्षयतः	क्षयन्ति
म० ,,	क्षयसि	क्षयथः	क्षयथ
उ० ,,	क्षयामि	क्षयावः	क्षयामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्षेष्यति	क्षेष्यतः	क्षेष्यन्ति
म० ,,	क्षेष्यसि	क्षेष्यथः	क्षेष्यथ
उ० ,,	क्षेष्यामि	क्षेष्यावः	क्षेष्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्षयतु	क्षयताम्	क्षयन्तु
म० ,,	क्षयः	क्षयतम्	क्षयत
उ० ,,	क्षयाणि	क्षयाव	क्षयाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अक्षयत्	अक्षयताम्	अक्षयन्
म० ,,	अक्षयः	अक्षयतम्	अक्षयत
उ० ,,	अक्षयम्	अक्षयाव	अक्षयाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्षयेत्	क्षयेताम्	क्षयेयुः
म० ,,	क्षयेः	क्षयेतम्	क्षयेत
उ० ,,	क्षयेयम्	क्षयेव	क्षयेम

हृञ् (हरण अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरति	हरतः	हरन्ति
म० ,,	हरसि	हरथः	हरथ
उ० ,,	हरामि	हरावः	हरामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरिष्यति	हरिष्यतः	हरिष्यन्ति
म० ,,	हरिष्यसि	हरिष्यथः	हरिष्यथ
उ० ,,	हरिष्यामि	हरिष्यावः	हरिष्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरतु	हरताम्	हरन्तु
म० ,,	हर	हरतम्	हरत
उ० ,,	हराणि	हराव	हराम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अहरत्	अहरताम्	अहरन्
म० ,,	अहरः	अहरतम्	अहरत
उ० ,,	अहरम्	अहराव	अहराम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरेत्	हरेताम्	हरेयुः
म० ,,	हरेः	हरेतम्	हरेत
उ० ,,	हरेयम्	हरेव	हरेम

आत्मनेपद में—

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरते	हरेते	हरन्ते
म० ,,	हरसे	हरेथे	हरध्वे
उ० ,,	हरे	हरावहे	हरामहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरिष्यते	हरिष्येते	हरिष्यन्ते
म० ,,	हरिष्यसे	हरिष्येथे	हरिष्यध्वे
उ० ,,	हरिष्ये	हरिष्यावहे	हरिष्यामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरताम्	हरेताम्	हरन्ताम्
म० ,,	हरस्व	हरेथाम्	हरध्वम्
उ० ,,	हरै	हरावहै	हरामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अहरत	अहरेताम्	अहरन्ताम्
म० ,,	अहरथाः	अहरेथाम्	अहरध्वम्
उ० ,,	अहरे	अहरावहि	अहरामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरेत	हरेयाताम्	हरेरन्
म० ,,	हरेथाः	हरेयाथाम्	हरेध्वम्
उ० ,,	हरेय	हरेवहि	हरेमहि

नी (प्राप्ति अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नयति	नयतः	नयन्ति
म० ,,	नयसि	नयथः	नयथ
उ० ,,	नयामि	नयावः	नयामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
म० ,,	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
उ० ,,	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नयतु	नयताम्	नयन्तु
म० ,,	नय	नयतम्	नयत
उ० ,,	नयानि	नयाव	नयाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
म० ,,	अनयः	अनयतम्	अनयत
उ० ,,	अनयम्	अनयाव	अनयाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
म० ,,	नयेः	नयेतम्	नयेत
उ० ,,	नयेयम्	नयेव	नयेम

आत्मनेपद में—

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नयते	नयेते	नयन्ते
म० ,,	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उ० ,,	नये	नयावहे	नयामहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
म० ,,	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
उ० ,,	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
म० ,,	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
उ० ,,	नयै	नयावहै	नयामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
म० ,,	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
उ० ,,	अनये	अनयावहि	अनयामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
म० ,,	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
उ० ,,	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

दा (दान अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ददाति	दत्तः	ददति
म० ,,	ददासि	दत्थः	दत्थ
उ० ,,	ददामि	दद्वः	दद्मः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म० ,,	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उ० ,,	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ददातु	दत्ताम्	ददतु
म० ,,	देहि	दत्तम्	दत्त
उ० ,,	ददानि	ददाव	ददाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
म० ,,	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ० ,,	अददाम्	अदद्व	अदद्म

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
म० ,,	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उ० ,,	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

आत्मनेपद में—

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दत्ते	ददाते	ददते
म० ,,	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उ० ,,	ददे	दद्वहे	दद्महे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
म० ,,	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उ० ,,	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
म० ,,	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उ० ,,	ददै	ददावहै	ददामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अदत्त	अददाताम्	अददत
म० ,,	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उ० ,,	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
म० ,,	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उ० ,,	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

श्रु (सुनने अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
म० ,,	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उ० ,,	शृणोमि	शृणुवः	शृणुमः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
म० ,,	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उ० ,,	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु
म० ,,	शृणु	शृणुतम्	शृणुत
उ० ,,	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
म० ,,	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उ० ,,	अशृणवम्	अशृणुव	अशृणुम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
म० ,,	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
उ० ,,	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

एध् (वृद्धि अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	एधते	एधेते	एधन्ते
म० ,,	एधसे	एधेथे	एधध्वे
उ० ,,	एधे	एधावहे	एधामहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	एधिष्यते	एधिष्येते	एधिष्यन्ते
म० ,,	एधिष्यसे	एधिष्येथे	एधिष्यध्वे
उ० ,,	एधिष्ये	एधिष्यावहे	एधिष्यामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	एधताम्	एधेताम्	एधन्ताम्
म० ,,	एधस्व	एधेथाम्	एधध्वम्
उ० ,,	एधै	एधावहै	एधामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
म० ,,	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
उ० ,,	ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	एधेत	एधेयाताम्	एधेरन्
म० ,,	एधेथाः	एधेयाथाम्	एधेध्वम्
उ० ,,	एधेय	एधेवहि	एधेमहि

वप् (बोने अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वपति	वपतः	वपन्ति
म० ,,	वपसि	वपथः	वपथ
उ० ,,	वपामि	वपावः	वपामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वप्स्यति	वप्स्यतः	वप्स्यन्ति
म० ,,	वप्स्यसि	वप्स्यथः	वप्स्यथ
उ० ,,	वप्स्यामि	वप्स्यावः	वप्स्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वपतु	वपताम्	वपन्तु
म० ,,	वप	वपतम्	वपत
उ० ,,	वपानि	वपाव	वपाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अवपत्	अवपताम्	अवपन्
म० ,,	अवपः	अवपतम्	अवपत
उ० ,,	अवपम्	अवपाव	अवपाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वपेत्	वपेताम्	वपेयुः
म० ,,	वपेः	वपेतम्	वपेत
उ० ,,	वपेयम्	वपेव	वपेम

आत्मनेपद में—

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वपते	वपेते	वपन्ते
म० ,,	वपसे	वपेथे	वपध्वे
उ० ,,	वपे	वपावहे	वपामहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वप्स्यते	वप्स्येते	वप्स्यन्ते
म० ,,	वप्स्यसे	वप्स्येथे	वप्स्यध्वे
उ० ,,	वप्स्ये	वप्स्यावहे	वप्स्यामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वपताम्	वपेताम्	वपन्ताम्
म० ,,	वपस्व	वपेथाम्	वपध्वम्
उ० ,,	वपै	वपावहै	वपामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अवपत	अवपेताम्	अवपन्त
म० ,,	अवपथाः	अवपेथाम्	अवपध्वम्
उ० ,,	अवपे	अवपावहि	अवपामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वपेत	वपेयाताम्	वपेरन्
म० ,,	वपेथाः	वपेयाथाम्	वपेध्वम्
उ० ,,	अपेय	वपेवहि	वपेमहि

वह् (ढोना अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वहति	वहतः	वहन्ति
म० ,,	वहसि	वहथः	वहथ
उ० ,,	वहामि	वहावः	वहामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति
म० ,,	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ
उ० ,,	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वहतु	वहताम्	वहन्तु
म० ,,	वह	वहतम्	वहत
उ० ,,	वहानि	वहाव	वहाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अवहत्	अवहताम्	अवहन्
म० ,,	अवहः	अवहतम्	अवहत
उ० ,,	अवहम्	अवहाव	अवहाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वहेत्	वहेताम्	वहेयुः
म० ,,	वहेः	वहेतम्	वहेत
उ० ,,	वहेयम्	वहेव	वहेम

आत्मनेपद में—

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वहते	वहेते	वहन्ते
म० ,,	वहसे	वहेथे	वहध्वे
उ० ,,	वहे	वहावहे	वहामहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते
म० ,,	वक्ष्यसे	वक्ष्येथे	वक्ष्यध्वे
उ० ,,	वक्ष्ये	वक्ष्यावहे	वक्ष्यामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वहताम्	वहेताम्	वहन्ताम्
म० ,,	वहस्व	वहेताम्	वहध्वम्
उ० ,,	वहै	वहावहै	वहामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अवहत	अवहेताम्	अवहन्त
म० ,,	अवहथाः	अवहेथाम्	अवहध्वम्
उ० ,,	अवहे	अवहावहि	अवहामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वहेत	वहेयाताम्	वहेरन्
म० ,,	वहेथाः	वहेयाथाम्	वहेध्वम्
उ० ,,	वहेय	वहेवहि	वहेमहि

रुच् (चाहना अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रोचते	रोचेते	रोचन्ते
म० ,,	रोचसे	रोचेथे	रोचध्वे
उ० ,,	रोचे	रोचावहे	रोचामहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रोचिष्यते	रोचिष्येते	रोचिष्यन्ते
म० ,,	रोचिष्यसे	रोचिष्येथे	रोचिष्यध्वे
उ० ,,	रोचिष्ये	रोचिष्यावहे	रोचिष्यामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रोचताम्	रोचेताम्	रोचन्ताम्
म० ,,	रोचस्व	रोचेथाम्	रोचध्वम्
उ० ,,	रोचै	रोचावहै	रोचामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अरोचत	अरोचेताम्	अरोचन्त
म० ,,	अरोचथाः	अरोचेथाम्	अरोचध्वम्
उ० ,,	अरोचे	अरोचावहि	अरोचामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रोचेत	रोचेयाताम्	रोचेरन्
म० ,,	रोचेथाः	रोचेयाथाम्	रोचेध्वम्
उ० ,,	रोचेय	रोचेवहि	रोचेमहि

शुभ् (शोभा अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शोभते	शोभते	शोभन्ते
म० ,,	शोभसे	शोभेथे	शोभध्वे
उ० ,,	शोभे	शोभावहे	शोभामहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शोभिष्यते	शोभिष्येते	शोभिष्यन्ते
म० ,,	शोभिष्यसे	शोभिष्येथे	शोभिष्यध्वे
उ० ,,	शोभिष्ये	शोभिष्यावहे	शोभिष्यामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शोभताम्	शोभेताम्	शोभन्ताम्
म० ,,	शोभस्व	शोभेथाम्	शोभध्वम्
उ० ,,	शोभै	शोभावहै	शोभामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अशोभत	अशोभेताम्	अशोभन्त
म० ,,	अशोभथाः	अशोभेथाम्	अशोभध्वम्
उ० ,,	अशोभे	अशोभावहि	अशोभामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शोभेत	शोभेयाताम्	शोभेरन्
म० ,,	शोभेथाः	शोभायाथाम्	शोभेध्वम्
उ० ,,	शोभेय	शोभेवहि	शोभेमहि

यजि (देवपूजा अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	यजति	यजतः	यजन्ति
म० ,,	यजसि	यजथः	यजथ
उ० ,,	यजामि	यजावः	यजामः

लृट

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	यक्ष्यति	यक्ष्यतः	यक्ष्यन्ति
म० ,,	यक्ष्यसि	यक्ष्यथः	यक्ष्यथ
उ० ,,	यक्ष्यामि	यक्ष्यावः	यक्ष्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	यजतु	यजताम्	यजन्तु
म० पु०	यज	यजतम्	यजत
उ० पु०	यजानि	यजाव	यजाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अयजत्	अयजताम्	अयजन्
म० ,,	अयजः	अयजतम्	अयजत
उ० ,,	अयजम्	अयजाव	अयजाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	यजेत्	यजेताम्	यजेयुः
म० ,,	यजेः	यजेतम्	यजेत
उ० ,,	यजेयम्	यजेव	यजेम

आत्मनेपद में

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	यजते	यजेते	यजन्ते
म० ,,	यजसे	यजेथे	यजध्वे
उ० ,,	यजे	यजावहे	यजामहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	यक्ष्यते	यक्ष्येते	यक्ष्यन्ते
म० ,,	यक्ष्यसे	यक्ष्येथे	यक्ष्यध्वे
उ० ,,	यक्ष्ये	यक्ष्यावहे	यक्ष्यामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	यजताम्	यजेताम्	यजन्ताम्
म० ,,	यजस्व	यजेथाम्	यजध्वम्
उ० ,,	यजै	यजावहै	यजामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अयजत	अयजेताम्	अयजन्त
म० ,,	अयजथाः	अयजेथाम्	अयजध्वम्
उ० ,,	अयजे	अयजावहि	अयजामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	यजेत	यजेयाताम्	यजेरन्
म० ,,	यजेथाः	यजेयाथाम्	यजेध्वम्
उ० ,,	यजेय	यजेमवहि	यजेमहि

नश् (नाश अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
म० ,,	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
उ० ,,	नश्यामि	नश्यावः	नश्याम

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति
म० ,,	नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ
उ० ,,	नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ऌट् में

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नंक्ष्यति	नंक्ष्यतः	नंक्ष्यन्ति
म० ,,	नंक्ष्यसि	नंक्ष्यथः	नंक्ष्यथ
उ० ,,	नंक्ष्यामि	नंक्ष्यावः	नंक्ष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
म० ,,	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
उ० ,,	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
म० ,,	अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत
उ० ,,	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
म० ,,	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
उ० ,	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

अदादि प्रकरण

अद् (भक्षण अर्थ में)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अत्ति	अत्तः	अदन्ति
म० ,,	अत्सि	अत्थः	अत्थ
उ० ,,	अद्मि	अद्वः	अद्मः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
म० ,,	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
उ० ,,	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु
म० ,,	अद्धि	अत्तम्	अत्त
उ० ,,	अदानि	अदाव	अदाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	आदत्	आत्ताम्	आदन्
म० ,,	आदः	आत्तम्	आत्त
उ० ,,	आदम्	आद्व	आद्म

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
म० ,,	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
उ० ,,	अद्याम्	अद्याव	अद्याम

हन् (हिंसा और गति अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
म० ,,	हंसि	हथः	हथ
उ० ,,	हन्मि	हन्वः	हन्मः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
म० ,,	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उ० ,,	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
म० ,,	जहि	हतम्	हत
उ० ,,	हनानि	हनाव	हनाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
म० ,,	अहन्	अहतम्	अहत
उ० ,,	अहनम्	अहन्व	अहन्म

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
म० ,,	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उ० ,,	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

शीङ् (सोने अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शेते	शयाते	शेरते
म० ,,	शेषे	शयाथे	शेध्वे
उ० ,,	शये	शेवहे	शेमहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
म० ,,	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
उ० ,,	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
म० ,,	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
उ० ,,	शयै	शयावहै	शयामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
म० ,,	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
उ० ,,	अशयि	अशेवहि	अशेमहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
म० ,,	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
उ० ,,	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

ब्रूञ् (बोलना अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ब्रवीति	ब्रूतः	ब्रुवन्ति
म० ,,	ब्रवीषि	ब्रूथः	ब्रूथ
उ० ,,	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति
म० ,,	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ
उ० ,,	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु
म० ,,	ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत
उ० ,,	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्
म० ,,	अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत
उ० ,,	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
म० ,,	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
उ० ,,	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम

आत्मने पद में—

लट

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते
म० ,,	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे
उ० ,,	ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ऌट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते
म० ,,	वक्ष्यसे	वक्ष्येथे	वक्ष्यध्वे
उ० ,,	वक्ष्ये	वक्ष्यावहे	वक्ष्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्
म० ,,	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्
उ० ,,	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीरन्
म० ,,	ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
उ० ,,	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि

विधि लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत्
म० ,,	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
उ० ,,	अब्रुवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि

इण् (गति अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	एति	इतः	यन्ति
म० ,,	एषि	इथः	इथ
उ० ,,	एमि	इवः	इमः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	एष्यति	एष्यतः	एष्यन्ति
म० ,,	एष्यसि	एष्यथः	एष्यथ
उ० ,,	एष्यामि	एष्यावः	एष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	एतु	इताम्	यन्तु
म० ,,	इहि	इतम्	इत
उ० ,,	अयानि	अयाव	अयाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ऐत्	ऐताम्	आयन्
म० ,,	ऐः	ऐतम्	ऐत
उ० ,,	आयम्	ऐव	ऐम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इयात्	इयाताम्	इयुः
म० ,,	इयाः	इयातम्	इयात
उ० ,,	इयाम्	इयाव	इयाम

इङ् (अध्ययन अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० ,,	अधीते	अधीयाते	अधीयते
म० ,,	अधीषे	अधीयाथे	अधीध्वे
उ० ,,	अधीये	अधीवहे	अधीमहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अध्येष्यते	अध्येष्येते	अध्येष्यन्ते
म० ,,	अध्येष्यसे	अध्येष्येथे	अध्येष्यध्वे
उ० ,,	अध्येष्ये	अध्येष्यावहे	अध्येष्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अधीताम्	अधीयाताम्	अधीयताम्
म० ,,	अधीष्व	अधीयाथाम्	अधीध्वम्
उ० ,,	अध्ययै	अध्ययावहै	अध्ययामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अध्यैत	अध्यैयाताम्	अध्यैयत
म० ,,	अध्यैथाः	अध्यैयाथाम्	अध्यैध्वम्
उ० ,,	अध्यैयि	अध्यैवहि	अध्यैमहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अधीयीत	अधीयीयाताम्	अधीयीरन्
म० ,,	अधीयीथाः	अधीयीयाथाम्	अधीयीध्वम्
उ० ,,	अधीयीय	अधीयीवहि	अधीयीमहि

या (गति अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	याति	यातः	यान्ति
म० ,,	यासि	याथः	याथ
उ० ,,	यामि	यावः	यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	यास्यति	यास्यतः	यास्यन्ति
म० ,,	यास्यसि	यास्यथः	यास्यथ
उ० ,,	यास्यामि	यास्यावः	यास्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	यातु	याताम्	यान्तु
म० ,,	याहि	यातम्	यात
उ० ,,	यानि	याव	याम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अयात्	अयाताम्	अयुः
म० ,,	अयाः	अयातम्	अयात
उ० ,,	अयाम्	अयाव	अयाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	यायात्	यायाताम्	यायुः
म० ,,	यायाः	यायाताम्	यायात
उ० ,,	यायाम्	यायाव	यायाम

अस् (सत्ता अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अस्ति	स्तः	सन्ति
म० ,,	असि	स्थः	स्थ
उ० ,,	अस्मि	स्वः	स्मः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० ,,	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ० ,,	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
म० ,,	एधि	स्तम्	स्त
उ० ,,	असानि	असाव	असाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
म० ,,	आसीः	आस्तम्	आस्त
उ० ,,	आसम्	आस्व	आस्म

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्यात्	स्याताम्	स्युः
म० ,,	स्याः	स्यातम्	स्यात
उ० ,,	स्याम्	स्याव	स्याम

दुह् (दुहने अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति
म० ,,	धोक्षि	दुग्धः	दुग्ध
उ० ,,	दोह्मि	दुह्व	दुह्म

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति
म० ,,	धोक्ष्यसि	धोक्ष्यथः	धोक्ष्यथ
उ० ,,	धोक्ष्यामि	धोक्ष्यावः	धोक्ष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दोग्धु	दुग्धाम्	दुहन्तु
म० ,,	दुग्धि	दुग्धम्	दुग्ध
उ० ,,	दोहानि	दोहाव	दोहाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अधोक्	अदुग्धाम्	अदुहन्
म० ,,	अधोक्	अदुग्धम्	अदुग्ध
उ० ,,	अदोहम्	अदुह्व	अदुह्म

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्युः
म० ,,	दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात
उ० ,,	दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम

आत्मने पद में

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दुग्धे	दुहाते	दुहते
म० ,,	धुक्षे	दुहाथे	धुग्ध्वे
उ० ,,	दुहे	दुह्वहे	दुह्महे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पु० प्र०	घोक्ष्यते	घोक्ष्येते	घोक्ष्यन्ते
म० ,,	घोक्ष्यसे	घोक्ष्येथे	घोक्ष्यध्वे
उ० ,,	घोक्ष्ये	घोक्ष्यावहे	घोक्ष्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दुग्धाम्	दुहाताम्	दुहताम्
म० ,,	धुक्ष्व	दुहाथाम्	दुग्ध्वम्
उ० ,,	दोहै	दोहावहै	दोहामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अदुग्ध	अदुहाताम्	अदुहत
म० ,,	अदुग्धाः	अदुहाथाम्	अधुग्ध्वम्
उ० ,,	अदुहि	अदुहहि	अदुहाहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दुहीत	दुहीयाताम्	दुहीरन्
म० ,,	दुहीथाः	दुहीयाथाम्	दुहीध्वम्
उ० ,,	दुहीय	दुहीवहि	दुहीमहि

विद् (जानने अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वेत्ति	वित्तः	विदन्ति
म० ,,	वेत्सि	वित्थः	वित्थ
उ० ,,	वेद्मि	विद्वः	विद्मः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अथवा

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वेद	विदतुः	विदुः
म० ,,	वेत्थ	विदथुः	विद
उ० ,,	वेद	विद्वः	विद्मः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वेदिष्यति	वेदिष्यतः	वेदिष्यन्ति
म० ,,	वेदिष्यसि	वेदिष्यथः	वेदिष्यथ
उ० ,,	वेदिष्यामि	वेदिष्यावः	वेदिष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वेत्तु	वित्ताम्	विदन्तु
म० ,,	विद्धि	वित्तम्	वित्त
उ० ,,	वेदानि	वेदाव	वेदाम

अथवा

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	विदांकरोतु	विदांकुरुताम्	विदांकुर्वन्तु
म० ,,	विदांकुरु	विदांकुरुतम्	विदांकुरुत
उ० ,,	विदांकरवाणि	विदांकरवाव	विदांकरवाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अवेत्	अवित्ताम्	अविदुः
म० ,,	अवेः	अवित्तम्	अवित्त
उ० ,,	अवेदम्	अविद्व	अविद्म

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	विद्यात्	विद्याताम्	विद्युः
म० ,,	विद्याः	विद्यातम्	विद्यात
उ० ,,	विद्याम्	विद्याव	विद्याम

जुहोत्यादि प्रकरण

हु (हवन अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जुहोति	जुहुतः	जुह्वति
म० ,,	जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ
उ० ,,	जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होष्यति	होष्यतः	होष्यन्ति
म० ,,	होष्यसि	होष्यथः	होष्यथ
उ० ,,	होष्यामि	होष्यावः	होष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जुहोतु	जुहुताम्	जुह्वतु
म० ,,	जुहुधि	जुहुतम्	जुहुत
उ० ,,	जुहवानि	जुहवाम	जुहवाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवु
म० ,,	अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत
उ० ,,	अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः
म० ,,	जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात
उ० ,,	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम

ञिभी (भी) [भय अर्थ में]

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बिभेति	बिभीतः	बिभ्यति
म० ,,	बिभेषि	बिभीथः	बिभीथ
उ० ,,	बिभेमि	बिभीवः	बिभीमः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
म० ,,	भेष्यसि	भेष्यथः	भेष्यथ
उ० ,,	भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बिभेतु	बिभीताम्	बिभ्यतु
म० ,,	बिभीहि	बिभीतम्	बिभीत
उ० ,,	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अबिभेत्	अबिभीताम्	अबिभयुः
म० ,,	अबिभेः	अबिभीतम्	अबिभीत
उ० ,,	अबिभयम्	अबिभीव	अबिभीम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	त्रिभीयात्	त्रिभीयाताम्	त्रिभीयुः
म० ,,	त्रिभीयाः	त्रिभीयातम्	त्रिभीयात
उ० ,,	त्रिभीयाम्	त्रिभीयाव	विभीयाम

अथवा

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	त्रिभियात्	त्रिभियाताम्	त्रिभियुः
म० ,,	त्रिभियाः	त्रिभियातम्	त्रिभियात
उ० ,,	त्रिभियाम्	त्रिभियाव	त्रिभियाम

दा (दान अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ददाति	दत्तः	ददति
म० ,,	ददासि	दत्थः	दत्थ
उ० ,,	ददामि	दद्वः	दद्मः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म० ,,	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उ० ,,	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ददातु	दत्ताम्	ददतु
म० ,,	देहि	दत्तम्	दत्त
उ० ,,	ददानि	ददाव	ददाम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
म० ,,	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ० ,,	अददाम्	अदद्व	अदद्म

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
म० ,,	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उ० ,,	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

आत्मने पद में

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दत्ते	ददाते	ददते
म० ,,	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उ० ,,	ददे	दद्वहे	दद्महे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
म० ,,	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उ० ,,	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
म० ,,	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उ० ,,	ददै	ददावहै	ददामहै

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अदत्त	अददाताम्	अददत
म० ,,	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उ० ,,	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
म० ,,	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उ० ,,	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

धा (धारण-पोषण अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दधाति	धत्तः	दधति
म० ,,	दधासि	धत्थः	धत्थ
उ० ,,	दधामि	दध्वः	दध्मः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	धास्यति	धास्यतः	धास्यन्ति
म० ,,	धास्यसि	धास्यथः	धास्यथ
उ० ,,	धास्यामि	धास्यावः	धास्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दधातु	धत्ताम्	दधतु
म० ,,	धेहि	धत्तम्	धत्त
उ० ,,	दधानि	दधाव	दधाम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अदधात्	अधत्ताम्	अदधुः
म० ,,	अदधाः	अधत्तम्	अधत्त
उ० ,,	अदधाम्	अदध्व	अदध्म

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दध्यात्	दध्याताम्	दध्युः
म० ,,	दध्याः	दध्यातम्	दध्यात
उ० ,,	दध्याम्	दध्याव	दध्याम

आत्मने पद में

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	धत्ते	दधाते	दधते
म० ,,	धत्से	दधाथे	दद्ध्वे
उ० ,,	दधे	दध्वहे	दध्महे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुसचन
प्र० पु०	धास्यते	धास्येते	धास्यन्ते
म० ,,	धास्यसे	धास्येथे	धास्यध्वे
उ० ,,	धास्ये	धास्यावहे	धास्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	धत्ताम्	दधाताम्	दधताम्
म० ,,	धत्स्व	दधाथाम्	धद्ध्वम्
उ० ,,	दधै	दधावहै	दधामहै

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अधत्त	अदधाताम्	अदधत
म० ,,	अधत्थाः	अदधाथाम्	अधद्ध्वम्
उ० ,,	अदधि	अदध्वहि	अदध्महि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दधीत	दधीयाताम्	दधीरन्
म० ,,	दधीथाः	दधीयाथाम्	दधीध्वम्
उ० ,,	दधीय	दधीवहि	दधीमहि

दिवादिप्रकरण

दिव् (खेल आदि अर्थ में)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
म० ,,	दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
उ० ,,	दीव्यानि	दीव्यावः	दीव्यामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति
म० ,,	देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ
उ० ,,	देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
म० ,,	दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत
उ० ,,	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
म० ,,	अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उ० ,,	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

विधि लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः
म० ,,	दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत
उ० ,,	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

नृत् (नाचने अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
म० ,,	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उ० ,,	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
म० ,,	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ
उ० ,,	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः

पक्ष में

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नर्त्स्यति	नर्त्स्यतः	नर्त्स्यन्ति
म० ,,	नर्त्स्यसि	नर्त्स्यथः	नर्त्स्यथ
उ० ,,	नर्त्स्यामि	नर्त्स्यावः	नर्त्स्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
म० ,,	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उ० ,,	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
म० ,,	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उ० ,,	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
म० ,,	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
उ० ,,	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

जन् (उत्पन्न होना अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जायते	जायेते	जायन्ते
म० ,,	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उ० ,,	जाये	जायावहे	जायामहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
म० ,,	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उ० ,,	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
म० ,,	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उ० ,,	जायै	जायावहै	जायामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
म० ,,	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उ० ,,	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

विधि लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
म० ,,	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उ० ,,	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

बुध् (जानने अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बुध्यते	बुध्येते	बुध्यन्ते
म० ,,	बुध्यसे	बुध्येथे	बुध्यध्वे
उ० ,,	बुध्ये	बुध्यावहे	बुध्यामहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भोत्स्यते	भोत्स्येते	भोत्स्यन्ते
म० ,,	भोत्स्यसे	भोत्स्येथे	भोत्स्यध्वे
उ० ,,	भोत्स्ये	भोत्स्यावहे	भोत्स्यामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बुध्यताम्	बुध्येताम्	बुध्यन्ताम्
म० ,,	बुध्यस्व	बुध्येथाम्	बुध्यध्वम्
उ० ,,	बुध्यै	बुध्यावहै	बुध्यामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अबुध्यत	अबुध्येताम्	अबुध्यन्त
म० ,,	अबुध्यथाः	अबुध्येथाम्	अबुध्यध्वम्
उ० ,,	अबुध्ये	अबुध्यावहि	अबुध्यामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० ,,	बुध्येत	बुध्येयाताम्	बुध्येरन्
म० ,,	बुध्येथाः	बुध्येयाथाम्	बुध्येध्वम्
उ० ,,	बुध्येय	बुध्येवहि	बुध्येमहिं

युध् (प्रहार करने या लड़ने अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	युध्यते	युध्येते	युध्यन्ते
म० ,,	युध्यसे	युध्येथे	युध्यध्वे
उ० ,,	युध्ये	युध्यावहे	युध्यामहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु	योत्स्यते	योत्स्येते	योत्स्यन्ते
म० ,,	योत्स्यसे	योत्स्येथे	योत्स्यध्वे
उ० ,,	योत्स्ये	योत्स्यावहे	योत्स्यामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० ,,	युध्यताम्	युध्येताम्	युध्यन्ताम्
म० ,,	युध्यस्व	युध्येथाम्	युध्यध्वम्
उ० ,,	युध्यै	युध्यावहै	युध्यामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अयुध्यत	अयुध्येताम्	अयुध्यन्त
म० ,,	अयुध्यथाः	अयुध्येथाम्	अयुध्यध्वम्
उ० ,,	अयुध्ये	अयुध्यावहि	अयुध्यामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	युध्येत	युध्येयाताम्	युध्येरन्
म० ,,	युध्येथाः	युध्येयाथाम्	युध्येध्वम्
उ० ,,	युध्येय	युध्येवहि	युध्येमहि

स्वादि प्रकरण

सु (स्नपन करना, मधु चुआना, स्नान करना अर्थ में)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति
म० ,,	सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ
उ० ,,	सुनोमि	सुनुवः सुन्वः	सुनुमः सुन्मः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति
म० ,,	सोष्यसि	सोष्यथः	सोष्यथ
उ० ,,	सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सुनोतु सुनुतात्	सुनुताम्	सुन्वन्तु
म० ,,	सुनु ,,	सुनुतम्	सुनुत
उ० ,,	सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्
म० ,,	असुनोः	असुनुतम्	असुनुत
उ० ,,	असुनवम्	असुन्व असुनुव	असुन्म असुनुम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः
म० ,,	सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात
उ० ,,	सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम

आत्मने पद में

लट्

	एकवचन	द्विचचन	बहुवचन
प्र० पु०	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
म० ,,	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे
उ० ,,	सुन्वे	सुन्वहे, सुनुवहे	सुन्महे, सुनुमहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
म० ,,	सोष्यसे	सोष्येथे	सोष्यध्वे
उ० ,,	सोष्ये	सोष्यावहे	सोष्यामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सुनुताम्	सुन्वाताम्	सुन्वताम्
म० ,,	सुनुष्व	सुन्वाथाम्	सुनुध्वम्
उ० ,,	सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	असुनुत	असुन्वाताम्	असुन्वत
म० ,,	असुनुथाः	असुन्वाथाम्	असुनुध्वम्
उ० ,,	असुन्वि	असुन्वहि	असुन्महि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सुन्वीत	सुन्वीयाताम्	सुन्वीरन्
म० ,,	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीध्वम्
उ० ,,	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि

चिञ् (चुनना अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिनोति	चिनुतः	चिन्वन्ति
म० ,,	चिनोषि	चिनुथः	चिनुथ
उ० ,,	चिनोमि	चिन्वः, चिनुवः	चिन्मः, चिनुमः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चेष्यति	चेष्यतः	चेष्यन्ति
म० ,,	चेष्यसि	चेष्यथः	चेष्यथ
उ० ,,	चेष्यामि	चेष्यावः	चेष्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिनोतु, चिनुतात्	चिनुताम्	चिन्वन्तु
म० ,,	चिनु, चिनुतात्	चिनुतम्	चिनुत
उ० ,,	चिनवानि	चिनवाव	चिनवाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अचिनोत्	अचिनुताम्	अचिन्वन्
म० ,,	अचिनोः	अचिनुतम्	अचिनुत
उ० ,,	अचिनवम्	अचिनुव, अचिन्व	अचिनुम, अचिन्म

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिनुयात्	चिनुयाताम्	चिनुयुः
म० ,,	चिनुयाः	चिनुयातम्	चिनुयात
उ० ,,	चिनुयाम्	चिनुयाव	चिनुवाम

आत्मने पद में—

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिनुते	चिन्वाते	चिन्वते
म० ,,	चिनुषे	चिन्वाथे	चिनुध्वे
उ० ,,	चिन्वे	चिन्वहे, चिनुवहे	चिन्महे, चिनुमहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चेष्यते	चेष्येते	चेष्यन्ते
म० ,,	चेष्यसे	चेष्येथे	चेष्यध्वे
उ० ,,	चेष्ये	चेष्यावहे	चेष्यामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिनुताम्	चिन्वाताम्	चिन्वताम्
म० ,,	चिनुष्व	चिन्वाथाम्	चिनुध्वम्
उ० ,,	चिनवै	चिनवावहै	चिनवामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अचिनुत	अचिन्वाताम्	अचिन्वत
म० ,,	अचिनुथाः	अचिन्वाथाम्	अचिनुध्वम्
उ० ,,	अचिन्वि	अचिन्वहि, अचिनुवहि	अचिन्महि, अचिनुमहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिन्वीत	चिन्वीयाताम्	चिन्वीरन्
म० ,,	चिन्वीथाः	चिन्वीयाथाम्	चिन्वीध्वम्
उ० ,,	चिन्वीय	चिन्वीवहि	चिन्वीमहि

शक् (शक्ति अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
म० ,,	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
उ० ,,	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
म० ,,	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ
उ० ,,	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
म० ,,	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उ० ,,	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
म० ,,	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उ० ,,	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
म० ,,	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उ० ,,	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

तुदादि प्रकरण

तुद् (पीड़ा अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
म० ,,	तुदसि	तुदथः	तुदथ
उ० ,,	तुदामि	तुदावः	तुदामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
म० ,,	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
उ० ,,	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तुदतु, तुददात्	तुदताम्	तुदन्तु
म० ,,	तुद ,,	तुदतम्	तुदत
उ० ,,	तुदानि	तुदाव	तुदाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
म० ,,	अतुदः	अतुदम्	अतुदत
उ० ,,	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
म० ,,	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
उ० ,,	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम

आत्मने पद में—

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तुदते	तुदेते	तुदन्ते
म० ,,	तुदसे	तुदेथे	तुदध्वे
उ० ,,	तुदे-	तुदावहे	तुदामहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तोत्स्यते	तोत्स्येते	तोत्स्यन्ते
म० ,,	तोत्स्यसे	तोत्स्येथे	तोत्स्यध्वे
उ० ,,	तोत्स्ये	तोत्स्यावहे	तोत्स्यामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तुदताम्	तुदेताम्	तुदन्ताम्
म० ,,	तुदस्व	तुदेथाम्	तुदध्वम्
उ० ,,	तुदै	तुदावहै	तुदामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अतुदत	अतुदेताम्	अतुदन्त
म० ,,	अतुदथाः	अतुदेथाम्	अतुदध्वम्
उ० ,,	अतुदे	अतुदावहि	अतुदामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तुदेत	तुदेयाताम्	तुदेरन्
म० ,,	तुदेथाः	तुदेयाथाम्	तुदेध्वम्
उ० ,,	तुदेय	तुदेवहि	तुदेमहि

भ्रज् (पाक करना अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भृज्जति	भृज्जतः	भृज्जन्ति
म० ,,	भृज्जसि	भृज्जथः	भृज्जथः
उ० ,,	भृज्जामि	भृज्जावः	भृज्जामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भर्क्ष्यति	भर्क्ष्यतः	भर्क्ष्यन्ति
म० ,,	भर्क्ष्यसि	भर्क्ष्यथः	भर्क्ष्यथ
उ० ,,	भर्क्ष्यामि	भर्क्ष्यावः	भर्क्ष्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पक्षे

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भ्रक्ष्यति	भ्रक्ष्यतः	भ्रक्ष्यन्ति
म० ,,	भ्रक्ष्यसि	भ्रक्ष्यथः	भ्रक्ष्यथ
उ० ,,	भ्रक्ष्यामि	भ्रक्ष्यावः	भ्रक्ष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भृज्जतु	भृज्जताम्	भृज्जन्तु
म० ,,	भृज्ज	भृज्जतम्	भृज्जत
उ० ,,	भृज्जानि	भृज्जाव	भृज्जाव

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अभृज्जत्	अभृज्जताम्	अभृज्जन्
म० ,,	अभृज्जः	अभृज्जतम्	अभृज्जत
उ० ,,	अभृज्जम्	अभृज्जाव	अभृज्जाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भृज्जेत्	भृज्जेताम्	भृज्जेयुः
म० ,,	भृज्जेः	भृज्जेतम्	भृज्जेत
उ० ,,	भृज्जेयम्	भृज्जेव	भृज्जेम

आत्मनेपद में—

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भृज्जते	भृज्जेते	भृज्जन्ते
म० ,,	भृज्जसे	भृज्जेथे	भृज्जध्वे
उ० ,,	भृज्जे	भृज्जावहे	भृज्जामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भर्क्ष्यते	भर्क्ष्येते	भर्क्ष्यन्ते
म० ,,	भर्क्ष्यसे	भर्क्ष्येथे	भर्क्ष्यध्वे
उ० ,,	भर्क्ष्ये	भर्क्ष्यावहे	भर्क्ष्यामहे

पक्षे

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भ्रक्ष्यते	भ्रक्ष्येते	भ्रक्ष्यन्ते
म० ,,	भ्रक्ष्यसे	भ्रक्ष्येथे	भ्रक्ष्यध्वे
उ० ,,	भ्रक्ष्ये	भ्रक्ष्यावहे	भ्रक्ष्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भृज्जताम्	भृज्जेताम्	भृज्जन्ताम्
म० ,,	भृज्जस्व	भृज्जेथाम्	भृज्जध्वम्
उ० ,,	भृज्जै	भृज्जावहै	भृज्जामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अभृज्जत	अभृज्जेताम्	अभृज्जन्त
म० ,,	अभृज्जथाः	अभृज्जेथाम्	अभृज्जध्वम्
उ० ,,	अभृज्जे	अभृजावहि	अभृज्जामहि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भृज्जेत	भृज्जेयाताम्	भृज्जेरन्
म० ,,	भृज्जेथाः	भृज्जेयाथाम्	भृज्जेध्वम्
उ० ,,	भृज्जेय	भृज्जेवहि	भृज्जेमहि

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

कृष् (विलेखन अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कृषति	कृषतः	कृषन्ति
म० ,,	कृषसि	कृषथः	कृषथ
उ० ,,	कृषामि	कृषावः	कृषामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रक्ष्यति	क्रक्ष्यतः	क्रक्ष्यन्ति
म० ,,	क्रक्ष्यसि	क्रक्ष्यथः	क्रक्ष्यथ
उ० ,,	क्रक्ष्यामि	क्रक्ष्यावः	क्रक्ष्यामः

पक्ष में

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कर्क्ष्यति	कर्क्ष्यतः	कर्क्ष्यन्ति
म० ,,	कर्क्ष्यसि	कर्क्ष्यथः	कर्क्ष्यथ
उ० ,,	कर्क्ष्यामि	कर्क्ष्यावः	कर्क्ष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कृषतु	कृषताम्	कृषन्तु
म० ,,	कृष	कृषतम्	कृषत
उ० ,,	कृषाणि	कृषाव	कृषाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु	अकृषत्	अकृषताम्	अकृषन्
म० ,,	अकृषः	अकृषतम्	अकृषत
उ० ,,	अकृषम्	अकृषाव	अकृषाम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कृषेत्	कृषेताम्	कृषेयुः
म० ,,	कृषेः	कृषेतम्	कृषेत
उ० ,,	कृषेयम्	कृषेव	कृषेम

सिच् (सींचना अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सिञ्चति	सिञ्चतः	सिञ्चन्ति
म० ,,	सिञ्चसि	सिञ्चथः	सिञ्चथ
उ० ,,	सिञ्चामि	सिञ्चावः	सिञ्चामः

लृट

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सेक्ष्यति	सेक्ष्यतः	सेक्ष्यन्ति
म० ,,	सेक्ष्यसि	सेक्ष्यथः	सेक्ष्यथ
उ० ,,	सेक्ष्यामि	सेक्ष्यावः	सेक्ष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सिञ्चतु	सिञ्चताम्	सिञ्चन्तु
म० ,,	सिञ्च	सिञ्चतम्	सिञ्चत
उ० ,,	सिञ्चानि	सिञ्चाव	सिञ्चाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	असिञ्चत्	असिञ्चताम्	असिञ्चन्
म० ,,	असिञ्चः	असिञ्चतम्	असिञ्चत
उ० ,,	असिञ्चम्	असिञ्चाव	असिञ्चाम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सिञ्चेत्	सिञ्चेताम्	सिञ्चेयुः
म० ,,	सिञ्चेः	सिञ्चेतम्	सिञ्चेत
उ० ,,	सिञ्चेयम्	सिञ्चेव	सिञ्चेम

लिम्प् (लिपना अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिम्पति	लिम्पतः	लिम्पन्ति
म० ,,	लिम्पसि	लिम्पथः	लिम्पथ
उ० ,,	लिम्पामि	लिम्पावः	लिम्पाम,

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लेप्स्यति	लेप्स्यतः	लेप्स्यन्ति
म० ,,	लेप्स्यसि	लेप्स्यथः	लेप्स्यथ
उ० ,,	लेप्स्यामि	लेप्स्यावः	लेप्स्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिम्पतु	लिम्पताम्	लिम्पन्तु
म० ,,	लिम्प	लिम्पतम्	लिम्पत
उ० ,,	लिम्पानि	लिम्पाव	लिम्पाव

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अलिम्पत्	अलिम्पताम्	अलिम्पन्
म० ,,	अलिम्पः	अलिम्पतम्	अलिम्पत
उ० ,,	अलिम्पम्	अलिम्पाव	अलिम्पाम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिम्पेत्	लिम्पेताम्	लिम्पेयुः
म० ,,	लिम्पेः	लिम्पेतम्	लिम्पेत
उ० ,,	लिम्पेयम्	लिम्पेव	लिम्पेम

पृच्छ् (पूछने अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पृच्छति	पृच्छतः	पृछन्ति
म० ,,	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छन्थि
उ० ,,	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

ऌट्

	एकवचन	द्विवचन	बसुवचन
प्र० पु०	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
म० ,,	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
उ० ,,	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
म० ,,	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उ० ,,	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
म० ,,	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उ० ,,	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
म० ,,	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उ० ,,	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

इष् (इच्छा अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
म० ,,	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उ० ,,	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
म० ,,	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उ० ,,	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
म० ,,	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उ० ,,	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छद्
म० ,,	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छन्
उ० ,,	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
म० ,,	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उ० ,,	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

रुधादि प्रकरण

रुध् (रोकना या झाँपना अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रुणद्धि	रुन्धः	रुन्धन्ति
म० ,,	रुणत्सि	रुन्धः	रुन्ध
उ० ,,	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति
म० ,,	रोत्स्यसि	रोत्स्यथः	रोत्स्यथ
उ० ,,	रोत्स्यामि	रोत्स्यावः	रोत्स्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रुणद्धु	रुन्धाम्	रुन्धन्तु
म० ,,	रुन्द्धि	रुन्धम्	रुन्ध
उ० ,,	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अरुणत्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्
म० ,,	अरुणः	अरुन्धम्	अरुन्ध
उ० ,,	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवनन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः
म० ,,	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात
उ० ,,	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम

भिन् (विदारण अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भिनत्ति	भिन्त्तः	भिन्दन्ति
म० ,,	भिनत्सि	भिन्त्थः	भिन्त्थ
उ० ,,	भिनद्मि	भिन्द्वः	भिन्द्मः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भेत्स्यति	भेत्स्यतः	भेत्स्यन्ति
म० ,,	भेत्स्यसि	भेत्स्यथः	भेत्स्यथ
उ० ,,	भेत्स्यामि	भेत्स्यावः	भेत्स्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भिनत्तु	भिन्त्ताम्	भिन्दन्तु
म० ,,	भिनद्धि	भिन्त्तम्	भिन्त्त
उ० ,,	भिनदानि	भिनदाव	भिनदाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अभिनत्	अभिन्त्ताम्	अभिन्दन्
म० ,,	अभिनः	अभिन्त्तम्	अभिन्त्त
उ० ,,	अभिनदम्	अभिन्द्वः	अभिन्द्मः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भिन्द्यात्	भिन्द्याताम्	भिन्द्युः
म० ,,	भिन्द्याः	भिन्द्यातम्	भिन्द्यात
उ० ,,	भिद्याम्	भिन्द्याव	भिन्द्याम

भञ्ज् (मर्दन करने अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भनक्ति	भङ्क्तः	भञ्जन्ति
म० ,,	भनक्षि	भङ्क्थः	भङ्क्थ
उ० ,,	भनज्मि	भञ्ज्वः	भञ्ज्मः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भङ्क्ष्यति	भङ्क्ष्यतः	भङ्क्ष्यन्ति
म० ,,	भङ्क्ष्यसि	भङ्क्ष्यथः	भङ्क्ष्यथ
उ० ,,	भङ्क्ष्यामि	भङ्क्ष्यावः	भङ्क्ष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भनक्तु	भङ्क्ताम्	भञ्जन्तु
म० ,,	भङ्ग्धि	भङ्क्तम्	भङ्क्त
उ० ,,	भनजानि	भनजाव	भनजाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अभनक्	अभङ्क्ताम्	अभञ्जन्
म० ,,	अभनक्	अभङ्क्तम्	अभङ्क्त
उ० ,,	अभनजम्	अभञ्ज्व	अभञ्ज्म

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भञ्ज्यात्	भञ्ज्याताम्	भञ्ज्युः
म० ,,	भञ्ज्याः	भञ्ज्यातम्	भञ्ज्यात
उ० ,,	भञ्ज्याम्	भञ्ज्याव	भञ्ज्याम

तनादि प्रकरण

तन् (विस्तार अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति
म० ,,	तनोषि	तनुथः	तनुथ
उ० ,,	तनोमि	तनुवः तन्वः	तनुमः तन्मः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति
म० ,,	तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ
उ० ,,	तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्याम

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु
म० ,,	तनु	तनुतम्	तनुत
उ० ,,	तनवानि	तनवाव	तनवाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्
म० ,,	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत
उ० ,,	अतनवम्	अतन्व	अतन्म

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः
म० ,,	तनुयाः	अनुयातम्	तनुयात
उ० ,,	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम

आत्मनेपद में—

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तनुते	तन्वाते	तन्वते
म० ,,	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
उ० ,,	तन्वे,	तन्वहे, तनुवहे	तन्महे, तनुमहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते
म० ,,	तनिष्यसे	तनिष्येथे	तनिष्यध्वे
उ० ,,	तनिष्ये	तनिष्यावहे	तनिष्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
म० ,,	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
उ० ,,	तनवै	तनवावहै	तनवामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
म० ,,	अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
उ० ,,	अतन्वि	अतन्वहि, अतनुवहि	अतन्महि, अतनुमहि

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
म० ,,	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
उ० ,,	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि

कृञ् (करने अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म० ,,	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उ० ,,	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
म० ,,	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उ० ,,	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
म० ,,	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उ० ,,	करवाणि	करवाव	करवाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
म० ,,	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उ० ,,	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
म० ,,	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उ० ,,	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

आत्मनेपद में—

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
म० ,,	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उ० ,,	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
म० ,,	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उ० ,,	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
म० ,,	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उ० ,,	करवै	करवावहै	करवामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
म० ,,	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उ० ,,	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
म० ,,	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उ० ,,	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

क्र्यादि प्रकरण

क्रीञ् (खरीदना अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
म० ,,	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उ० ,,	क्रीणामि	क्रीणीव	क्रीणीमः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
म० ,,	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
उ० ,,	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
म० ,,	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उ० ,,	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
म० ,,	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उ० ,,	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधि लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
म० ,,	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
उ० ,,	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

आत्मनेपद में—

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
म० ,,	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणाध्वे
उ० ,,	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
म० ,,	क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे
उ० ,,	क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
म० ,,	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ० ,,	क्रीणै	क्रीणावहै	कीणामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
म० ,,	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
उ० ,,	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
म० ,,	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ० ,,	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

ग्रह् (ग्रहण करना अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
म० ,,	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
उ० ,,	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
म० ,,	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
उ० ,,	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्याम

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
म० ,,	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
उ० ,,	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
म० ,,	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उ० ,,	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
म० ,,	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
उ० ,,	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

ज्ञा (जानने के अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विचचन	बहुवचन
प्र० पु०	जानाति	जानीतः	जानन्ति
म० ,,	जानासि	जानीथः	जानीथ
उ० ,,	जानामि	जानीवः	जानीमः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
म० ,,	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
उ० ,,	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्याम

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जानातु	जानीताम्	जानन्तु
म० ,,	जानीहि	जानीतम्	जानीत
उ० ,,	जानानि	जानाव	जानाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
म० ,,	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
उ० ,,	अजानाम्	अजानीव	अजानीव

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः
म० ,,	जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात
उ० ,,	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम

बन्ध् (बाँधना अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बध्नाति	बध्नीतः	बध्नन्ति
म० ,,	बध्नासि	बध्नीथः	बध्नीथ
उ० ,,	बध्नामि	बध्नीवः	बध्नीमः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भन्त्स्यति	भन्त्स्यतः	भन्त्स्यन्ति
म० ,,	भन्त्स्यसि	भन्त्स्यथ	भन्त्स्यथ
उ० ,,	भन्त्स्यामि	भन्त्स्यावः	भन्त्स्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बध्नातु	बध्नीताम्	बध्नन्तु
म० ,,	बधान	बध्नीतम्	बध्नीत
उ० ,,	बध्नानि	बध्नाव	बध्नाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अबध्नात्	अबध्नीताम्	अबध्नन्
म० ,,	अबध्नाः	अबध्नीतम्	अबध्नीत
उ० ,,	अबध्नाम्	अबध्नीव	अबध्नीम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बध्नीयात्	बध्नीयाताम्	बध्नीयुः
म० ,,	बध्नीयाः	बध्नीयातम्	बध्नीयात
उ० ,,	बध्नीयाम्	बध्नीयाव	बध्नीयाम

चुरादि प्रकरण

चुर (चुराना अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
म० ,,	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उ० ,,	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
म० ,,	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उ० ,,	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
म० ,,	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उ० ,,	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
म० ,,	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उ० ,,	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
म० ,,	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उ० ,,	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

पूज (पूजा करने के अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पूजयति	पूजयतः	पूजयन्ति
म० ,,	पूजयसि	पूजयथः	पूजयथ
उ० ,,	पूजयामि	पूजयावः	पूजयामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पूजयिष्यति	पूजयिष्यतः	पूजयिष्यन्ति
म० ,,	पूजयिष्यसि	पूजयिष्यथः	पूजयिष्यथ
उ० ,,	पूजयिष्यामि	पूजयिष्यावः	पूजयिष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पूजयतु	पूजयताम्	पूजयन्तु
म० ,,	पूजय	पूजयतम्	पूजयत
उ० ,,	पूजयानि	पूजयाव	पूजयाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपूजयत्	अपूजयताम्	अपूजयन्
म० ,,	अपूजयः	अपूजयतम्	अपूजयत
उ० ,,	अपूजयम्	अपूजयाव	अपूजयाम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पूजयेत्	पूजयेताम्	पूजयेयुः
म० ,,	पूजयेः	पूजयेतम्	पूजयेत
उ० ,,	पूजयेयम्	पूजयेव	पूजयेम

कथ् (कहने अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
म० ,,	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उ० ,,	कथयामि	कथयावः	कथयामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति
म० ,,	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ
उ० ,,	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
म० ,,	कथय	कथयतम्	कथयत
उ० ,,	कथयानि	कथयाव	कथयाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
म० ,,	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत
उ० ,,	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः
म० ,,	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत
उ० ,,	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

गण् (गिनने के अर्थ में)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गणयति	गणयतः	गणयन्ति
म० ,,	गणयसि	गणयथः	गणयथ
उ० ,,	गणयामि	गणयावः	गणयामः

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गणयिष्यति	गणयिष्यतः	गणयिष्यन्ति
म० ,,	गणयिष्यसि	गणयिष्यथः	गणयिष्यथ
उ० ,,	गणयिष्यामि	गणयिष्यावः	गणयिष्यामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गणयतु	गणयताम्	गणयन्तु
म० ,,	गणय	गणयतम्	गणयत
उ० ,,	गणयानि	गणयाव	गणयाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अगणयत्	अगणयताम्	अगणयन्
म० ,,	अगणयः	अगणयतम्	अगणयत
उ० ,,	अगणयम्	अगणयाव	अगणयाम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधि लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गणयेत्	गणयेताम्	गणयेत
म० ,,	गणयेः	गणयेतम्	गणयेयुः
उ० ,,	गणयेयम्	गणयेव	गणयेम

कतिपय धातुओं के अवशिष्ट पाँच लकारों में रूप

भू

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
म० ,,	अभूः	अभूतम्	अभूत
उ० ,,	अभूवम्	अभूव	अभूम

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
म० ,,	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
उ० ,,	बभूव	बभूविव	बभूविम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भविता	भवितारौ	भवितारः
म० ,,	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
उ० ,,	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
म० ,,	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
उ० ,,	भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
म० ,,	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
उ० ,,	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

एध—बढ़ना

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	एधते	एधेते	एधन्ते
म० ,,	एधसे	एधेथे	एधध्वे
उ० ,,	एधे	एधावहे	एधामहे

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	एधाञ्चक्रे	एधाञ्चक्राते	एधाञ्चक्रिरे
म० ,,	एधाञ्चकृषे	एधाञ्चक्राथे	एधाञ्चकृढ्वे
उ० ,,	एधाञ्चक्रे	एधाञ्चकृवहे	एधाञ्चकृमहे

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	एधिता	एधितारौ	एधितारः
म० ,,	एधितासे	एधितासाथे	एधिताध्वे
उ० ,,	एधिताहे	एधितास्वहे	एधितास्महे

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	एधिष्यते	एधिष्येते	एधिष्यन्ते
म० ,,	एधिष्यसे	एधिष्येथे	एधिष्यध्वे
उ० ,,	एधिष्ये	एधिष्यावहे	एधिष्यामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	एधताम्	एधेताम्	एधन्ताम्
म० ,,	एधस्व	एधेथाम्	एधध्वम्
उ० ,,	एधै	एधावहै	एधामहै

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	एधेत	एधेयाताम्	एधेरन्
म० ,,	एधेथाः	एधेयाथाम्	एधेध्वम्
उ० ,,	एधेय	एधेवहि	एधेमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	एधिषीष्ट	एधिषीयास्ताम्	एधिषीरन्
म० ,,	एधिषीष्ठाः	एधिषीयास्थाम्	एधिषीध्वम्
उ० ,,	एधिषीय	एधिषीवहि	एधिषीमहि

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
म० ,,	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
उ० ,,	ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ऐधिष्ट	ऐधिषाताम्	ऐधिषत
म० ,,	ऐधिष्ठाः	ऐधिषाथाम्	ऐधिढ्वम्
उ० ,,	ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ऐधिष्यत	ऐधिष्येताम्	ऐधिष्यन्त
म० ,,	ऐधिष्यथाः	ऐधिष्येथाम्	ऐधिष्यध्वम्
उ० ,,	ऐधिष्ये	ऐधिष्यावहि	ऐधिष्यामहि

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पठ् पढ़ना

लिट

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पपाठ	पेठतुः	पेठुः
म० ,,	पेठिथ	पेठथुः	पेठ
उ० ,,	पपाठ-पपठ	पेठिव	पेठिम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पठिता	पठितारौ	पठितारः
म० ,,	पठितासि	पठितास्थः	पठितास्थ
उ० ,,	पठितास्मि	पठितास्वः	पठितास्मः

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पठ्यात्	पठ्यास्ताम्	पठ्यासुः
म० ,,	पठ्याः	पठ्यास्तम्	पठ्यास्त
उ० ,,	पठ्यासम्	पठ्यास्व	पठ्यास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपाठीत्	अपाठिष्टाम्	अपाठिषुः
म० ,,	अपाठीः	अपाठिष्टम्	अपाठिष्ट
उ० ,,	अपाठिषम्	अपाठिष्व	अपाठिष्म

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपठिष्यत्	अपठिष्यताम्	अपठिष्यन्
म० ,,	अपठिष्यः	अपठिष्यतम्	अपठिष्यत
उ० ,,	अपठिष्यम्	अपठिष्याव	अपठिष्याम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

श्रु श्रवण

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शुश्राव	शुश्रुवतुः	शुश्रुवुः
म० ,,	शुश्रोथ	शुश्रुवथुः	शुश्रुव
उ० ,,	शुश्राव-शुश्रव	शुश्रुव	शुश्रुम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	श्रोता	श्रोतारौ	श्रोतारः
म० ,,	श्रोतासि	श्रोतास्थः	श्रोतास्थ
उ० ,,	श्रोतास्मि	श्रोतास्वः	श्रोतास्मः

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	श्रूयात्	श्रूयास्ताम्	श्रूयासुः
म० ,,	श्रूयाः	श्रूयास्तम्	श्रूयास्त
उ० ,,	श्रूयासम्	श्रूयास्व	श्रूयास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अश्रौषीत्	अश्रौष्टाम्	अश्रौषुः
म० ,,	अश्रौषीः	अश्रौष्टम्	अश्रौष्ट
उ० ,,	अश्रौषम्	अश्रौष्व	अश्रौष्म

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अश्रोष्यत्	अश्रोष्यताम्	अश्रोष्यन्
म० ,,	अश्रोष्यः	अश्रोष्यतम्	अश्रोष्यत
उ० ,,	अश्रोष्यम्	अश्रोष्याव	अश्रोष्याम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

गम्—जाना

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जगाम	जग्मतुः	जग्मुः
म० ,,	जगमिथ, जगन्थ	जग्मथुः	जग्म
उ० ,,	जगाम, जगम	जग्मिव	जग्मिम

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अगमत्	अगमताम्	अगमन्
म० ,,	अगमः	अगमतम्	अगमत
उ० ,,	अगमम्	अगमाव	अगमाम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गन्ता	गन्तारौ	गन्तारः
म० ,,	गन्तासि	गन्तास्थः	गन्तास्थ
उ० ,,	गन्तास्मि	गन्तास्वः	गन्तास्मः

आसीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गम्यात्	गम्यास्ताम्	गम्यासुः
म० ,,	गम्याः	गम्यास्तम्	गम्यास्त
उ० ,,	गम्यासम्	गम्यास्व	गम्यास्म

लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अगमिष्यत्	अगमिष्यताम्	अगमिष्यन्
म० ,,	अगमिष्यः	अगमिष्यतम्	अगमिष्यत
उ० ,,	अगमिष्यम्	अगमिष्याव	अगमिष्याम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पा—पाने

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पपौ	पपतुः	पपुः
म० ,,	पपिथ-पपाथ	पपथुः	पप
उ० ,,	पपौ	पपिव	पपिम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाता	पातारौ	पातारः
म० ,,	पातासि	पातास्थः	पातास्थ
उ० ,,	पातास्मि	पातास्वः	पातास्म

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पेयात्	पेयास्ताम्	पेयासुः
म० ,,	पेयाः	पेयास्तम्	पेयास्त
उ० ,,	पेयासम्	पेयास्व	पेयास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपात्	अपाताम्	अपुः
म० ,,	अपाः	अपातम्	अपात
उ० ,,	अपाम्	अपाव	अपाम

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपास्यत्	अपास्यताम्	अपास्यन्
म० ,,	अपास्यः	अपास्यतम्	अपास्यत
उ० ,,	अपास्यम्	अपास्याव	अपास्याम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

स्था—बैठना

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तस्थौ	तस्थतुः	तस्थुः
म० ,,	तस्थिथ, तस्थाथ	तस्थथुः	तस्थ
उ० ,,	तस्थौ	तस्थिव	तस्थिम

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्थेयात्	स्थेयास्ताम्	स्थेयासुः
म० ,,	स्थेयाः	स्थेयास्तम्	स्थेयास्त
उ० ,,	स्थेयासम्	स्थेयास्व	स्थेयास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अस्थात्	अस्थाताम्	अस्थुः
म० ,,	अस्थाः	अस्थातम्	अस्थात
उ० ,,	अस्थाम्	अस्थाव	अस्थाम

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अस्थास्यत्	अस्थास्यताम्	अस्थास्यन्
म० ,,	अस्थास्यः	अस्थास्यतम्	अस्थास्यत
उ० ,,	अस्थास्यम्	अस्थास्याव	अस्थास्याम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्थाता	स्थातारौ	स्थातारः
म० ,,	स्थातासि	स्थातास्थः	स्थातास्थ
उ० ,,	स्थातास्मि	स्थातास्वः	स्थातास्मः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

दृश्—देखना

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ददर्श	ददृशतुः	ददृशुः
म० ,,	ददर्शिथ, दद्रष्ठ	ददृशथुः	ददृश
उ० ,,	ददर्श	ददृशिव	ददृशिम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	द्रष्टा	द्रष्टारौ	द्रष्टारः
म० ,,	द्रष्टासि	द्रष्टास्थः	द्रष्टास्थ
उ० ,,	द्रष्टास्मि	द्रष्टास्वः	द्रष्टास्मः

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दृश्यात्	दृश्यास्ताम्	दृश्यासुः
म० ,,	दृश्याः	दृश्यास्तम्	दृश्यास्त
उ० ,,	दृश्यासम्	दृश्यास्व	दृश्यास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अदर्शत्	अदर्शताम्	अदर्शन्
म० ,,	अदर्शः	अदर्शतम्	अदर्शत
उ० ,,	अदर्शम्	अदर्शाव	अदर्शाम

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अद्रक्ष्यत्	अद्रक्ष्यताम्	अद्रक्ष्यन्
म० ,,	अद्रक्ष्यः	अद्रक्ष्यतम्	अद्रक्ष्यत
उ० ,,	अद्रक्ष्य	अद्रक्ष्याव	अद्रक्ष्याम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अद्—भक्षणे

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जघास	जक्षतुः	जक्षुः
म० ,,	जघसिथ	जक्षथुः	जक्ष
उ० ,,	जघास, जघस	जक्षिव	जक्षिम

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अत्ता	अत्तारौ	अत्तारः
म० ,,	अत्तासि	अत्तास्थः	अत्तास्थ
उ० ,,	अत्तास्मि	अत्तास्वः	अत्तास्मः

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अघसत्	अघसताम्	अघसन्
म० ,,	अघसः	अघसतम्	अघसत
उ० ,,	अघसम्	अघसाव	अघसाम

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	आत्स्यत्	आत्स्यताम्	आत्स्यन्
म० ,,	आत्स्यः	आत्स्यतम्	आत्स्यत
उ० ,,	आत्स्यम्	आत्स्याव	आत्स्याम

हन—हिंसा करना

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जघान	जघ्नतुः	जघ्नुः
म० ,,	जघनिथ, जघन्थ	जघ्नथुः	जघ्न
उ० ,,	जघान, जघन	जघ्निव	जघ्निम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हन्ता	हन्तारौ	हन्तारः
म० ,,	हन्तासि	हन्तास्थः	हन्तास्थ
उ० ,,	हन्तास्मि	हन्तास्वः	हन्तास्मः

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वध्यात्	वध्यास्ताम्	वध्यासुः
म० ,,	वध्याः	वध्यास्तम्	वध्यास्त
उ० ,,	वध्यासम्	वध्यास्व	वध्यास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अवधीत्	अवधिष्टाम्	अवधिषुः
म० ,,	अवधीः	अवधिष्टम्	अवधिष्टः
उ० ,,	अवधिषम्	अवधिष्व	अवधिष्म

ऌङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अहनिष्यत्	अहनिष्यताम्	अहनिष्यन्
म० ,,	अहनिष्यः	अहनिष्यतम्	अहनिष्यत
उ० ,,	अहनिष्यम्	अहनिष्याव	अहनिष्याम

ब्रू—बोलना

लिट्—परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उवाच	ऊचतुः	ऊचुः
म० ,,	उवचिथ-उवक्थ	ऊचथुः	ऊच
उ० ,,	उवाच, उवच	ऊचिव	ऊचिम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लुट् परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	वक्ता	वक्तारौ	वक्तारः
म० ,,	वक्तासि	वक्तास्थः	वक्तास्थ
उ० ,,	वक्तास्मि	वक्तास्वः	वक्तास्मः

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उच्यात्	उच्यास्ताम्	उच्यासुः
म० ,,	उच्याः	उच्यास्तम्	उच्यास्त
उ० ,,	उच्यासम्	उच्यास्व	उच्यास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अवोचत्	अवोचताम्	अवोचन्
म० ,,	अवोचः	अवोचतम्	अवोचत
उ० ,,	अवोचम्	अवोचाव	अवोचाम

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अवक्ष्यत्	अवक्ष्यताम्	अवक्ष्यन्
म० ,,	अवक्ष्यः	अवक्ष्यतम्	अवक्ष्यत
उ० ,,	अवक्ष्यम्	अवक्ष्याव	अवक्ष्याम

शीङ्—शयने

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शिश्ये	शिश्याते	शिश्यिरे
म० ,,	शिश्यिषे	शिश्याथे	शिश्यिध्वे
उ० ,,	शिश्ये	शिश्यिवहे	शिश्यिमहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शयिता	शयितारौ	शयितारः
म० „	शयितासे	शयितासाथे	शयिताध्वे
उ० „	शयिताहे	शयितास्वहे	शयितास्महे

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शयिषीष्ठ	शयिषीयास्ताम्	शयिषीरन्
म० „	शयिसीष्ठाः	शयिषीयास्थाम्	शयिषीढ्वम्
उ० „	शयिषीय	शयिषीवहि	शयिषीमहि

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अशयिष्ट	अशयिषाताम्	अशयिषत
म० „	अशयिष्ठाः	अशयिषाथाम्	अशयिढ्वम्
उ० „	अशयिषि	अशियिषीवहि	शयिषीमहि

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अशयिष्यत	अशयिष्येताम्	अशयिष्यन्त
म० „	अशयिष्यथाः	अशयिष्येथाम्	अशयिष्यध्वम्
उ० „	अशयिष्ये	अशयिष्यावहि	अशयिष्यामहि

दा दाने

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ददौ	ददतुः	ददुः
म० „	ददिथ, ददाथ	ददथुः	दद
उ० „	ददौ	ददिव	ददिम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दाता	दातारौ	दातारः
म० ,,	दातासि	दातास्थः	दातास्थ
उ० ,,	दातास्मि	दातास्वः	दातास्मः

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	देयात्	देयास्ताम्	देयासुः
म० ,,	देयाः	देयास्तम्	देयास्त
उ० ,,	देयासम्	देयास्व	देयास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अदात्	अदाताम्	अदुः
म० ,,	अदाः	अदातम्	अदात
उ० ,,	अदाम्	अदाव	अदाम

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अदास्यत्	अदास्यताम्	अदास्यन्
म० ,,	अदास्यः	अदास्यतम्	अदास्यत
उ० ,,	अदास्यम्	अदास्याव	अदास्याम

हु—हवन करना

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जुहवाञ्चकार	जुहवाञ्चक्रतुः	जुहवाञ्चक्रुः
म० ,,	जुहवाञ्चकर्थ	जुहवाञ्चक्रथुः	जुहवाञ्चक्र
उ० ,,	जुहवाञ्चकार	जुहवाञ्चकृव	जुहवाञ्चकृम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होता	होतारौ	होतारः
म० ,,	होतासि	होतास्थः	होतास्थ
उ० ,,	होतास्मि	होतास्व	होतास्मः

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हूयात्	हूयास्ताम्	हूयासुः
म० ,,	हूयाः	हूयास्तम्	हूयास्त
उ० ,,	हूयासम्	हूयास्व	हूयास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अहौषीत्	अहौष्टाम्	अहौषुः
म० ,,	अहौषीः	अहौष्टम्	अहौष्ट
उ० ,,	अहौषम्	अहौष्व	अहौष्म

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अहोष्यत्	अहोष्यताम्	अहोष्यन्
म० ,,	अहोष्यः	अहोष्यतम्	अहोष्यत
उ० ,,	अहोष्यम्	अहोष्यावः	अहोष्याम

दिव—क्रीड़ा करना

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दिदेव	दिदिवतुः	दिदिवुः
म० ,,	दिदेविथ	दिदिवथुः	दिदिव
उ० ,,	दिदेव	दिदिविव	दिदिविम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	देविता	देवितारौ	देवितारः
म० ,,	देवितादि	देवितास्थः	देवितास्थ
उ० ,,	देवितास्मि	देवितास्वः	देवितास्म

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दीव्यात्	दीव्यास्ताम्	दीव्यासुः
म० ,,	दीव्याः	दीव्यास्तम्	दीव्यास्त
उ० ,,	दीव्यासम्	दीव्यास्व	दीव्यास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अदेवीत्	अदेविष्टाम्	अदेविषुः
म० ,,	अदेवीः	अदेविष्टम्	अदेविष्ट
उ० ,,	अदेविषम्	अदेविष्व	अदेविष्म

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अदेविष्यत्	अदेविष्यताम्	अदेविष्यन्
म० ,,	अदेविष्यः	अदेविष्यतम्	अदेविष्यत
उ० ,,	अदेविष्यम्	अदेविष्याव	अदेविष्याम

बुध—जानना (अत्मनेपदी)

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बुबुधे	बुबुधाते	बुबुधिरे
म० ,,	बुबुधिषे	बुबुधाथे	बुबुधिध्वे
उ० ,,	बुबुधे	बुबुधिवहे	बुबुधिमहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बोद्धा	बोद्धारौ	बोद्धारः
म० ,,	बोद्धासे	बोद्धासाथे	बोद्धाध्वे
उ० ,,	बोद्धाहे	बोद्धास्वहे	बोद्धास्महे

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भुत्सीष्ट	भुत्सीयास्ताम्	भुत्सीरन्
म० ,,	भुत्सीष्ठाः	भुत्सीयास्थाम्	भुत्सीध्वम्
उ० ,,	भुत्सीय	भुत्सीवहि	भुत्सीमहि

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अबोधि	अभुत्साताम्	अभुत्सीरन्
म० ,,	अबुद्धाः	अभुत्साथाम्	अभुद्ध्वम्
उ० ,,	अभुत्सि	अभुत्स्वहि	अभुत्स्महि

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अभोत्स्यत	अभोत्स्येताम्	अभुत्स्यन्त
म० ,,	अभोत्स्यथाः	अभोत्स्येथाम्	अभोत्स्यध्वम्
उ० ,,	अभोत्स्ये	अभोत्स्यावहि	अभोत्स्यामहि

तुद्—कष्ट देना

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तुतोद	तुतुदतुः	तुतुदुः
म० ,,	तुतोदिथ	तुतुदथुः	तुतुद
उ० ,,	तुतोद	तुतुदिव	तुतुदिम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तोत्ता	तोत्तारौ	तोत्तारः
म० ,,	तोत्तासि	तोत्तास्थः	तोत्तास्थ
उ० ,,	तोत्तास्मि	तोत्तास्वः	तोत्तास्म

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तुद्यात्	तुद्यास्ताम्	तुद्यासुः
म० ,,	तुद्याः	तुद्यास्तम्	तुद्यास्त
उ० ,,	तुद्यासम्	तुद्यास्व	तुद्यास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अतौत्सीत्	अतौत्ताम्	अतौत्सुः
म० ,,	अतौत्सीः	अतौत्तम्	अतौत्त
उ० ,,	अतौत्सम्	अतौत्स्व	अतौत्स्म

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अतोत्स्यत्	अतोत्स्यताम्	अतोत्स्यन्
म० ,,	अतोत्स्यः	अतोत्स्यतम्	अतोत्स्यत
उ० ,,	अतोत्स्यम्	अतोत्स्याव	अतोत्स्याम

षुञ्—नहलाना, रसनिकालना

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सुषाव	सुषुवतुः	सुषुवुः
म० ,,	सुषविथ	सुषुवथुः	सुषुव
उ० ,,	सुषाव, सुषव	सुषुविव	सुषुविम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सोता	सोतारौ	सोतारः
म० ,,	सोतासि	सोतास्थः	सोतास्थ
उ० ,,	सोतास्मि	सोतास्वः	सोतास्मः

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सूयात्	सूयास्ताम्	सूयासुः
म० ,,	सूयाः	सूयास्तम्	सूयास्त
उ० ,,	सूयासम्	सूयास्व	सूयास्म

लुङ्

	एकवर्चन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	असावीत्	असाविष्टाम्	असाविषुः
म० ,,	असावीः	असाविष्टम्	असाविष्ट
उ० ,,	असाविषम्	असाविष्व	असाविष्म

लृङ्

	एकवचन	द्वित्रचन	बहुवचन
प्र० पु०	असोष्यत	असोष्येताम्	असोष्यन्त
म० ,,	असोष्यथाः	असोष्येथाम्	असोष्यध्वम्
उ० ,,	असोष्ये	असोष्यावहि	असोष्यामहि

ज्ञा—अवबोध अर्थ में

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जज्ञौ	जज्ञतुः	जज्ञुः
म० ,,	जज्ञिथ, जज्ञाथ	जज्ञथुः	जज्ञ
उ० ,,	जज्ञौ	जज्ञिव	जज्ञिम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ज्ञाता	ज्ञातारौ	ज्ञातारः
म० ,,	ज्ञातासि	ज्ञातास्थः	ज्ञातास्थ
उ० ,,	ज्ञातास्मि	ज्ञातास्वः	ज्ञातास्मः

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ज्ञायात्	ज्ञायास्ताम्	ज्ञायासुः
म० ,,	ज्ञायाः	ज्ञायास्तम्	ज्ञायास्त
उ० ,,	ज्ञायासम्	ज्ञायास्व	ज्ञायास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अज्ञासीत्	अज्ञासिष्टाम्	अज्ञासिषुः
म० ,,	अज्ञासीः	अज्ञासिष्टम्	अज्ञासिष्ट
उ० ,,	अज्ञासिषम्	अज्ञासिष्व	अज्ञासिष्म

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अज्ञास्यत्	अज्ञास्यताम्	अज्ञास्यन्
म० ,,	अज्ञास्यः	अज्ञास्यतम्	अज्ञास्यत
उ० ,,	अज्ञास्यम्	अज्ञास्याव	अज्ञास्याम

ग्रह—उपादान—ग्रहण करना

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जग्राह	जगृहतुः	जगृहुः
म० ,,	जग्रहिथ	जगृहथुः	जगृह
उ० ,,	जग्राह, जग्रह	जगृहिव	जगृहिम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ग्रहीता	ग्रहीतारौ	ग्रहीतारः
म० ,,	ग्रहीतासि	ग्रहीतास्थः	ग्रहीतास्थ
उ० ,,	ग्रहीतास्मि	ग्रहीतास्वः	ग्रहीतास्मः

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गृह्यात्	गृह्यास्ताम्	गृह्यासुः
म० ,,	गृह्याः	गृह्यास्तम्	गृह्यास्त
उ० ,,	गृह्यासम्	गृह्यास्व	गृह्यास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अग्रहीत्	अग्रहीष्टाम्	अग्रहीषुः
म० ,,	अग्रहीः	अग्रहीष्टम्	अग्रहीष्ट
उ० ,,	अग्रहीषम्	अग्रहीष्व	अग्रहीष्म

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अग्रहीष्यत्	अग्रहीष्यताम्	अग्रहीष्यन्
म० ,,	अग्रहीष्यः	अग्रहीष्यतम्	अग्रहीष्यत
उ० ,,	अग्रहीष्यम्	अग्रहीष्याव	अग्रहीष्याम

कृञ्—करना

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चकार	चक्रतुः	चक्रुः
म० ,,	चकर्थ	चक्रथुः	चक्र
उ० ,,	चकार, चकर	चकृव	चकृम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कर्त्ता	कर्त्तारौ	कर्त्तारः
म० ,,	कर्त्तासि	कर्त्तास्थः	कर्त्तास्थ
उ० ,,	कर्त्तास्मि	कर्त्तास्वः	कर्त्तास्मः

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रियात्	क्रियास्ताम्	क्रियासुः
म० ,,	क्रियाः	क्रियास्तम्	क्रियास्त
उ० ,,	क्रियासम्	क्रियास्व	क्रियास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः
म० ,,	अकार्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट
उ० ,,	अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अकरिष्यत्	अकरिष्यताम्	अकरिष्यन्
म० ,,	अकरिष्यः	अकरिष्यतम्	अकरिष्यत
उ० ,,	अकरिष्यम्	अकरिष्याव	अकरिष्याम

कथ—कहना

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कथयामास	कथयामासतुः	कथयामासुः
म० ,,	कथयामासिथ	कथमासथुः	कथमामास
उ० ,,	कथयामास	कथयामासिव	कथयामासिम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कथयिता	कथयितारौ	कथयितारः
म० ,,	कथयितासि	कथयितास्थः	कथयितास्थ
उ० ,,	कथयितास्मि	कथयितास्वः	कथयितास्मः

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कथ्यात्	कथ्यास्ताम्	कथ्यासुः
म० ,,	कथ्याः	कथ्यास्तम्	कथ्यास्त
उ० ,,	कथ्यासम्	कथ्यास्व	कथ्यास्म

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अचकथत्	अचकथताम्	अचकथन्
म० ,,	अचकथः	अचकथतम्	अचकथत
उ० ,,	अचकथम्	अचकथाव	अचकथाम

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अकथयिष्यत्	अकथयिष्यताम्	अकथयिष्यन्
म० ,,	अकथयिष्यः	अकथयिष्यतम्	अकथयिष्यत
उ० ,,	अकथयिष्यम्	अकथयिष्याव	अकथयिष्याम

क्री—खरीदना

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिक्राय	चिक्रियतुः	चिक्रियुः
म० ,,	चिक्रयिथ	चिक्रियथुः	चिक्रिय
उ० ,,	चिक्राय, चिक्रय	चिक्रियिव	चिक्रियिम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लुट

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतारः
म० ,,	क्रेतासि	क्रेतास्थः	क्रेतास्थ
उ० ,,	क्रेतास्मि	क्रेतास्वः	क्रेतास्मः

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रीयात्	क्रीयास्ताम्	क्रीयासुः
म० ,,	क्रीयाः	क्रीयास्तम्	क्रीयास्त
उ० ,,	क्रीयासम्	क्रीयास्व	क्रीयास्म

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अक्रैषीत्	अक्रैष्टाम्	अक्रैषुः
म० ,,	अक्रैषीः	अक्रैष्टम्	अक्रैष्ट
उ० ,,	अक्रैषम्	अक्रैष्व	अक्रैष्म

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अक्रेष्यत्	अक्रेष्यताम्	अक्रेष्यन्
म० ,,	अक्रेष्यः	अक्रेष्यतम्	अक्रेष्यत
उ० ,,	अक्रेष्यम्	अक्रेष्याव	अक्रेष्याम

अस्—होना

अस् धातु के रूप लिट्, लुट्, आशीर्लिङ्, लुङ् और लृङ् लकार में भू धातु के समान होते हैं; क्योंकि अस् धातु के स्थान पर भू आदेश हो जाता है।

—:o:—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अष्टमोऽध्यायः

प्रत्ययान्त-धातु-प्रकरण

णिजन्त—प्रेरणार्थक क्रिया

धातु से जब प्रेरणा का अर्थ प्रकट करना होता है, तो णिच् प्रत्यय लगाया जाता है। सादी धातु में जो कर्त्ता रहता है, वह प्रेरणार्थक में स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे से कार्य कराता है। जैसे पढ़ता से पढवाना, बनाना से बनवाना आदि णिजन्त क्रियाओं के रूप चुरादिगण की धातुओं के समान होते हैं।

णिच् में 'इ' का अय् के रूप में परिवर्तन हो जाता है। अजन्त धातु से णिच् होने पर अन्त्यस्थ इ, उ, ऋ इत्यादि वर्णों के स्थान पर आय्, आव्, आर् आदि का आदेश होता है। धातु की उपधा में अकार अथवा ह्रस्व इ, उ, ऋ वर्ण रहें तो उनके स्थान पर क्रमशः ए, ओ और अर् का श्रवण होता है। यथा—

धातु	सादा रूप	प्रेरणार्थक रूप
भू	भवति	भावयति
पा	पिबति	पाययति
गम्	गच्छति	गमयति
श्रू	श्रृणोति	श्रावयति
पच्	पचति	पाचयति
कृ	करोति	कारयति
क्री	क्रीणाति	क्रापयति
बुध्	बोधति	बोधयति
अद्	अत्ति	आदयति
हन्	हन्ति	हातयति
दिव्	दीव्यति	देवयति
स्था	तिष्ठति	स्थापयति

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भूधातु के णिजन्त रूप

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पुं०	भावयति	भावयतः	भावयन्ति
म० ,,	भावयसि	भावयथः	भावयथ
उ० ,,	भावयामि	भावयावः	भावयामः

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भावयतु	भावयताम्	भावयन्तु
म० ,,	भावय	भावयतम्	भावयत
उ० ,,	भावयानि	भावयाव	भावयाम

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अभावयत्	अभावयताम्	अभावयन्
म० ,,	अभावयः	अभावयतम्	अभावयत
उ० ,,	अभावयम्	अभावयाव	अभावयाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भावयेत्	भावयेताम्	भावयेयुः
म० ,,	भावयेः	भावयेतम्	भावयेत
उ० ,,	भावयेयम्	भावयेव	भावयेम

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भावयिष्यति	भावयिष्यतः	भावयिष्यन्ति
म० ,,	भावयिष्यसि	भावयिष्यथः	भावयिष्यथ
उ० ,,	भावयिष्यामि	भावयिष्यावः	भावयिष्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अकारयत्	अकारयताम्	अकारयन्
म० ,,	अकारयः	अकारयतम्	अकारयत
उ० ,,	अकारयम्	अकारयाव	अकारयाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कारयेत्	कारयेताम्	कारयेयुः
म० ,,	कारयेः	कारयेतम्	कारयेत
उ० ,,	कारयेयम्	कारयेव	कारयेम

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कारयिष्यति	कारयिष्यतः	कारयिष्यन्ति
म० ,,	कारयिष्यसि	कारयिष्यथः	कारयिष्यथ
उ० ,,	कारयिष्यामि	कारयिष्यावः	कारयिष्यामः

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कारयामास	कारयामासतुः	कारयामासुः
म० ,,	कारयामासिथ	कारयामासथुः	कारयामास
उ० ,,	कारयामास	कारयामासिव	कारयामासिम

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अचाकरत्	अचाकरताम्	अचाकरन्
म० ,,	अचाकरः	अचाकरतम्	अचाकरत
उ० ,,	अचाकरम्	अचाकराव	अचाकराम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अकारयिष्यत्	अकारयिष्यताम्	अकारयिष्यन्
म० ,,	अकारयिष्यः	अकारयिष्यतम्	अकारयिष्यत
उ० ,,	अकारयिष्यम्	अकारयिष्याव	अकारयिष्याम

स्था—स्थापय

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्थापयति	स्थापयतः	स्थापयन्ति
म० ,,	स्थापयसि	स्थापयथः	स्थापयथ
उ० ,,	स्थापयामि	स्थापयावः	स्थापयामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्थापयतु	स्थापयताम्	स्थापयन्तु
म० ,,	स्थापय	स्थापयतम्	स्थापयत
उ० ,,	स्थापयानि	स्थापयाव	स्थापयाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अस्थापयत्	अस्थापयताम्	अस्थापयन्
म० ,,	अस्थापयः	अस्थापयतम्	अस्थापयत
उ० ,,	अस्थापयम्	अस्थापयाव	अस्थापयाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्थापयेत्	स्थापयेताम्	स्थापयेयुः
म० ,,	स्थापयेः	स्थापयेतम्	स्थापयेत
उ० ,,	स्थापयेयम्	स्थापयेव	स्थापयेम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्थापयिष्यति	स्थापयिष्यतः	स्थापयिष्यन्ति
म० ,,	स्थापयिष्यसि	स्थापयिष्यथः	स्थापयिष्यथ
उ० ,,	स्थापयिष्यामि	स्थापयिष्यावः	स्थापयिष्यामः

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्थाप्यात्	स्थाप्यास्ताम्	स्थाप्यासुः
म० ,,	स्थाप्याः	स्थाप्यास्तम्	स्थाप्यास्त
उ० ,,	स्थाप्यासम्	स्थाप्यास्व	स्थाप्यास्म

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्थापयामास	स्थापयामासतुः	स्थापयामासुः
म० ,,	स्थापयामासिथ	स्थापयामासथुः	स्थापयामास
उ० ,,	स्थापयामास	स्थापयामासिव	स्थापयामासिम

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अतास्थपत्	अतास्थपताम्	अतास्थपन्
म० ,,	अतास्थपः	अतास्थपतम्	अतास्थपत
उ० ,,	अतास्थपम्	अतास्थपाव	अतास्थपाम

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अस्थापयिष्यत्	अस्थापयिष्यताम्	अस्थापयिष्यन्
म० ,,	अस्थापयिष्यः	अस्थापयिष्यतम्	अस्थापयिष्यत
उ० ,,	अस्थापयिष्यम्	अस्थापयिष्याव	अस्थापयिष्याम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

हन्—घातय

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	घातयति	घातयतः	घातयन्ति
म० ,,	घातयसि	घातयथः	घातयथ
उ० ,,	घातयामि	घातयावः	घातयामः

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भाव्यात्	भाव्यास्ताम्	भाव्यासुः
म० ,,	भाव्याः	भाव्यास्तम्	भाव्यास्त
उ० ,,	भाव्यासम्	भाव्यास्व	भाव्यास्म

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भावयामास	भावयामासतुः	भावयामासुः
म० ,,	भावयामासिथ	भावयामासथुः	भावयामास
उ० ,,	भावयामास	भावयामासिव	भावयामासिम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अबाभवत्	अबाभवताम्	अबाभवन्
म० ,,	अबाभवः	अबाभवतम्	अबाभवत
उ० ,,	अबाभवम्	अबाभवाव	अबाभवाम

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बसुवचन
प्र० पु०	अभावयिष्यत्	अभावयिष्यताम्	अभावयिष्यन्
म० ,,	अभावयिष्यः	अभावयिष्यतम्	अभावयिष्यत
उ० ,,	अभावयिष्यम्	अभायिष्याव	अभावयिष्याम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पा—पायय

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाययति	पाययतः	पाययन्ति
म० ,,	पाययसि	पाययथः	पाययथ
उ० ,,	पाययामि	पाययावः	पाययामः

लोट लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाययतु	पाययताम्	पाययन्तु
म० ,,	पायय	पाययतम्	पाययत
उ० ,,	पाययानि	पाययाव	पाययाम

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रं० पु०	अपाययत्	अपाययताम्	अपाययन्
म० ,,	अपाययः	अपाययतम्	अपाययत
उ० ,,	अपाययम्	अपाययाव	अपाययाम

बिधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाययेत्	पाययेताम्	पाययेयुः
म० ,,	पाययेः	पाययेतम्	पाययेत
उ० ,,	पाययेयम्	पाययेव	पांययेम

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाययिष्यति	पाययिष्यतः	पाययिष्यन्ति
म० ,,	पाययिष्यसि	पाययिष्यथः	पाययिष्यथ
उ० ,,	पाययिष्यामि	पाययिष्यावः	पाययिष्यामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाय्यात्	पाय्यास्ताम्	पाय्यासुः
म० ,,	पाय्याः	पाय्यास्तम्	पाय्यास्तं
उ० ,,	पाय्यासम्	पाय्यास्व	पाय्यास्म

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाययामास	पाययामासतुः	पाययामासुः
म० ,,	पाययामासिथ	पायमामासथुः	पाययामास
उ० ,,	पाययामास	पाययामासिव	पाययामासिम

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपापयत्	अपापयताम्	अपापयन्
म० ,,	अपापयः	अपापयतम्	अपापयत
उ० ,,	अपापयम्	अपापयाव	अपापयाम

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपाययिष्यत्	अपाययिष्यताम्	अपाययिष्यन्
म० ,,	अपाययिष्यः	अपाययिष्यतम्	अपाययिष्यत
उ० ,,	अपाययिष्यम्	अपाययिष्याव	अपाययिष्याम

कृ—कारय

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कारयति	कारयतः	कारयन्ति
म० ,,	कारयसि	कारयथः	कारयथ
उ० ,,	कारयामि	कारयावः	कारयामः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कारयतु	कारयताम्	कारयन्तु
म० ,,	कारय	कारयतम्	कारयत
उ० ,,	कारयानि	कारयाव	कारयाम

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	घातयतु	घातयताम्	घातयन्तु
म० ,,	घातय	घातयतम्	घातयत
उ० ,,	घातयानि	घातयाव	घातयाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अघातयत्	अघातयताम्	अघातयन्
म० ,,	अघातयः	अघातयतम्	अघातयत
उ० ,,	अघातयम्	अघातयाव	अघातयाम

विधिलिङ्

	एकवनन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	घातयेत्	घातयेताम्	घातयेयुः
म० ,,	घातयेः	घातयेतम्	घातयेत
उ० ,,	घातयेयम्	घातयेव	घातयेम

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	घात्यात्	घात्यास्ताम्	घात्यासुः
म० ,,	घात्याः	घात्यास्तम्	घात्यास्त
उ० ,,	घात्यासम्	घात्यास्व	घात्यास्म

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	घातयामास	घातयामासतुः	घातयामासुः
म० ,,	घातयामासिथ	घातयामासथुः	घातयामास
उ० ,,	घातयामास	घातयामासिव	घातयासिम

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अजाघतत्	अजाघतताम्	अजाघतन्
म० ,,	अजाघतः	अजाघततम्	अजाघतत
उ० ,,	अजाघतम्	अजाघताव	अजाघताम

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अघातयिष्यत्	अघातयिष्यताम्	अघातयिष्यन्
म० ,,	अघातयिष्यः	अघातयिष्यतम्	अघातयिष्यत
उ० ,,	अघातयिष्यम्	अघातययिष्याव	अघातयिष्याम

सन्नन्त क्रियाएँ

किसी कार्य के करने की इच्छा का अर्थ बतलाने के लिए धातु से सन् प्रत्यय जोड़ा जाता है । यथा—कर्त्तुमिच्छति चिकीर्षति । आवश्यक सन्नन्त रूप नीचे दिये जाते हैं:—

धातु	वर्तमान	भूत	भविष्य
भू	बुभूषति	अबुभूषत्	बुभूविष्यति
पठ्	पिपठिषति	अपिपठिषत्	पिपठिषिष्यति
पा	पिपासति	अपिपासत्	पिपासिष्यति
गम्	जिगमिषति	अजिगमिषत्	जिगमिषिष्यति
जि	जिगीषति	अजिगीषत्	जिगीषिष्यति
चि	चिचीषति	अचिचीषत्	चिचीषिष्यति
हृ	जिहीर्षति	अजिहीर्षत्	जिहीर्षिष्यति
लभ्	लिप्सते	अलिप्सत्	लिप्सिष्यते

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अद्	जिघत्सति	अजिघत्सीत्	जिघत्सिष्यति
शी	शिशयिषते	अशिशयिषत्	शिशयिष्यति
विद्	विविदिषति	अविविदिषत्	विविदिषिष्यति
हन्	जिघांसति	अजिघांसीत्	जिघांसिष्यति
या	दित्सति	अदित्सत्	दित्सिष्यति
भुज्	बुभुक्षति	अबुभुक्षत्	बुभुक्षिष्यति
ग्रह्	जिघृक्षति	अजिघृक्षत्	जिघृक्षिष्यति
ज्ञप्	ज्ञीप्सति	अज्ञीप्सत्	ज्ञीप्सिष्यति

यङन्त क्रियाएँ

व्यञ्जन से आरम्भ होने वाली किसी भी एकाच् धातु के अनन्तर क्रिया को बार-बार करने अथवा क्रिया को खूब करने का बोध कराने के लिए यङ् प्रत्यय जोड़ा जाता है। यङन्त क्रियाएँ संस्कृत में आत्मनेपदी होती हैं।

धातु	वर्तमान	भूत	भविष्यत्
भू	बोभूयते	अबोभूयिष्ट	बोभूयिष्यते
पा	पेपीयते	अपेपीयिष्ट	पेपीयिष्यते
स्म	सास्मर्यते	असास्मर्यिष्ट	सास्मर्यिष्यते
व्रज	वाव्रज्यते	अवाव्रजिष्ट	वाव्रजिष्यते
वृत्	वरीवृत्यते	अवरीवृतिष्ट	वरीवृतिष्यते
यज्	यायज्यते	अयायजिष्ट	यायजिष्यते
हन्	जेघ्नीयते	अजेघ्नीयिष्ट	जेघ्नीयिष्यते
शी	शाशय्यते	अशाशयिष्ट	शाशयिष्यते
प्रच्छ्	पाप्रच्छ्यते	अपाप्रच्छिष्ट	पाप्रच्छिष्यते
भुज्	बोभुज्यते	अबोभुजिष्ट	बोभुजिष्यते
क्री	चेक्रीयते	अचेक्रीयिष्ट	चेक्रीयिष्यते

नामधातु क्रियाएँ

जब किसी सुबन्त–संज्ञा के अनन्तर प्रत्यय जोड़कर धातु बना लेते हैं, तो उसे नामधातु कहते हैं। यथा—पुत्रीयति—पुत्र की इच्छा करता है, लोहितायते—लाल हो जाता है।

जिस वस्तु की इच्छा की जाय, उस वस्तु के सूचक शब्द से क्यच् और काम्यच् प्रत्यय होते हैं। यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

	वर्तमान	भूत	भविष्यत्
पुत्र+क्यच्	पुत्रीयति	अपुत्रीयीत्	पुत्रीयिष्यति
राजन्+क्यच्+ति	राजीयति	अराजीयीत्	राजीयिष्यति
वाच्+क्यच्+ति--	वाच्यति	अवाच्यीत्	वाच्यिष्यति
गो+क्यच्+ति	गव्यति	अगव्यीत्	गव्यिष्यति
अश्व+क्यच्+ति	अश्वस्यति	अश्वस्यीत्	अश्वस्यिष्यति
क्षीर+क्यच्+ति	क्षीरस्यति	अक्षीरस्यीत्	क्षीरस्यिष्यति
अशन+क्यच्+ति	अशनायति	आशनायीत्	अशनायिष्यति
धन+क्यच्+ति	धनायति	अधनायीत्	धनायिष्यति
यशस्+काम्यच्+ति	यशस्काम्यति	अयशस्कामयीत्	यशस्काम्यिष्यति
पुत्र+काम्यच्+ति	पुत्रकाम्यति	अपुत्रकाम्यीत्	पुत्रकाम्यिष्यति
हंस+क्यङ्+ते	हंसायते	अहंसायिष्ट	हंसायिष्यते
अप्सरस्+क्यङ्+ते	अप्सरायते	अप्सरायिष्ट	अप्सरायिष्यते
कष्ट+क्यङ्+ते	कष्टायते	अकष्टायिष्ट	कष्टायिष्यते
वाष्प+क्यङ्+ते	वाष्पायते	अवाष्पायिष्ट	वाष्पायिष्यते
शब्द+क्यङ्+ते	शब्दायते	अशब्दायिष्ट	शब्दायिष्यते
सुख+क्यङ्+ते	सुखायते	असुखायिष्ट	सुखायिष्यते

वाच्य-परिवर्तन

संस्कृत में वाच्य तीन प्रकार के होते हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।

कर्तृवाच्य में कर्त्ता में प्रथमा, कर्म में द्वितीया विभक्ति एवं क्रिया के लिङ्ग, वचन तथा पुरुष कर्त्ता के अनुसार होते हैं।

कर्मवाच्य—कर्त्ता में तृतीया विभक्ति, कर्म में प्रथमा विभक्ति एवं क्रिया के लिङ्ग, वचन तथा पुरुष कर्मानुसार होते हैं।

भाववाच्य—कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है और क्रिया का रूप कर्मवाच्य के समान होता है और क्रिया सर्वदा नपुंसकलिङ्ग, प्रथम पुरुष और एक वचन होती है।

वाच्य परिवर्तन के नियम

(क) सकर्मक धातुओं से कर्मवाच्य और अकर्मक धातुओं से भाववाच्य बनता है।

(ख) धातु और प्रत्यय के बीच सभी धातुओं के सभी लकारों में यक् (य) जोड़ा जाता है। यथा—

पठ्+यक्+ते=पठ्यते; गम्+यक्+ते=गम्यते; भू+यक्+ते=भूयते।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(ग) धातुओं में यक् के पूर्व किसी प्रकार का विकार नहीं होता। यथा—हस+य+ते=हस्यते, चल्+य+ते=चल्यते।

(ख) दा, धा, स्था, घ्रा, पा, मा, गै, हा प्रभृति धातुओं का अन्तिम स्वर 'ई' में बदल जाता है। यथा—

दा—दीयते; मा—मीयते; धा—धीयते; गै;—गीयते; स्था—स्थीयते; घ्रा—घ्रीयते; हा—हीयते; पा—पीयते; स्ना—स्नायते; ज्ञा—ज्ञायते।

(ङ) कुछ धातुओं के बीच का अनुस्वार कर्मवाचक के रूपों से हटा दिया जाता है। बन्ध्—बध्यते; शंस्—शस्यते; इन्ध्—इध्यते।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
रामः चन्द्रं पश्यति	रामेण चन्द्रः दृश्यते
अहं पाटलिपुत्रं गच्छामि	मया पाटलिपुत्रः गम्यते
तौ पुस्तकं पठतः	ताभ्यां पुस्तकं पठ्यते

कर्तृवाच्य से भाववाच्य

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
रामो गच्छतु	रामेण गम्यताम्
अहं हसामि	मया हस्यते
तौ तिष्ठतः	ताभ्यां स्थीयते
ते हसन्ति	तैः हस्यते
बालकः रोदिति	बालकेन रुद्यते
युवाम् हसथः	युवाभ्याम् हस्यते

कृ—कर्मवाच्य के रूप

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रियते	क्रियेते	क्रियन्ते
म० ,,	क्रियसे	क्रियेथे	क्रियध्वे
उ० ,,	क्रिये	क्रियावहे	क्रियामहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अक्रियत	अक्रियेताम्	अक्रियन्त
म० ,,	अक्रियेथाः	अक्रियेथाम्	अक्रियध्वम्
उ० ,,	अक्रिये	अक्रियावहि	अक्रियामहि

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रियताम्	क्रियेताम्	क्रियन्ताम्
उ० ,,	क्रियस्व	क्रियेयाथाम्	क्रियध्वम्
म० ,,	क्रियै	क्रियावहै	क्रियामहै

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रियेत	क्रियेयाताम्	क्रियेरन्
म० ,,	क्रियेथाः	क्रियेयाथाम्	क्रियेध्वम्
उ० ,,	क्रियेय	क्रियेवहि	क्रियेमहि

दा—दान कर्मवाच्य

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दीयते	दीयेते	दीयन्ते
म० ,,	दीयसे	दीयेथे	दीयध्वे
उ० ,,	दीये	दीयावहे	दीयामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दीयताम्	दीयेताम्	दीयन्ताम्
म० ,,	दीयस्व	दीयेथाम्	दीयध्वम्
उ० ,,	दीयै	दीयावहै	दीयामहै

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दीयेत	दीयेयाताम्	दीयेरन्
म० ,,	दीयेथाः	दीयेयाथाम्	दीयेध्वम्
उ० ,,	दीयेय	दीयेवहि	दीयेवहि

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अदीयत	अदीयेताम्	अदीयन्त
म० ,,	अदीयथाः	अदीयेथाम्	अदीयध्वम्
उ० ,,	अदीये	अदीयावहि	अदीयामहि

लिट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ददे	ददाते	ददिरे
म० ,,	ददिषे	ददाथे	ददिध्वे
उ० ,,	ददे	ददिवहे	ददिमहे

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अदायि	अदायिषाताम्	अदायिषत
म० ,,	अदायिष्ठाः	अदायिषाथाम्	अदायिध्वम्
उ० ,,	अदायिषि	अदायिष्वहि	अदायिष्महि

लुट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दायिता	दायितारौ	दायितारः
म० ,,	दायितासे	दायितासाथे	दायिताध्वे
उ० ,,	दायिताहे	दायितास्वहे	दायितास्महे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
म० ,,	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उ० ,,	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दासीष्ट	दासीयास्ताम्	दासीरन्
म० ०	दासीष्ठाः	दासीयास्थाम्	दासीध्वम्
उ० ,,	दासीय	दासीवहि	दासीमहि

लृङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अदास्यत	अदास्येताम्	अदास्यन्त
म० ,,	अदास्यथाः	अदास्येथाम्	अदास्यध्वम्
उ० ,,	अदास्ये	अदास्यावहि	अदास्यामहि

पा—पीने अर्थ में (कर्मवाच्य

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पीयते	पीयेते	पीयन्ते
म० ,,	पीयसे	पीयेथे	पीयध्वे
उ० ,,	पीये	पीयावहे	पीयामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पीयताम्	पीयेताम्	पीयन्ताम्
म० ,,	पीयस्व	पीयेथाम्	पीयध्वम्
उ० ,,	पीयै	पीयावहै	पीयामहै

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पीयेत	पीयेयाताम्	पीयेरन्
म० ,,	पीयेथाः	पीयेयाथाम्	पीयेध्वम्
उ० ,,	पीयेय	पीयेवहि	पीयेमहि

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपीयत	अपीयेताम्	अपीयन्त
म० ,,	अपीयथाः	अपीयेथाम्	अपीयध्वम्
उ० ,,	अपीये	अपीयावहि	अपीयामहि

लृट

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पास्यते	पास्येते	पास्यन्ते
म० ,,	पास्यसे	पास्येथे	पास्यध्वे
उ० ,,	पास्ये	पास्यावहे	पास्यामहे

ज्ञा–जानना (कर्मवाच्य)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ज्ञायते	ज्ञायेते	ज्ञायन्ते
म० ,,	ज्ञायसे	ज्ञायेथे	ज्ञायध्वे
उ० ,,	ज्ञाये	ज्ञायावहे	ज्ञायामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ज्ञायताम्	ज्ञायेताम्	ज्ञायन्ताम्
म० ,,	ज्ञायस्व	ज्ञायेथाम्	ज्ञायध्वम्
उ० ,,	ज्ञायै	ज्ञायावहै	ज्ञायामहै

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ज्ञायेत	ज्ञायेयाताम्	ज्ञायेरन्
म० ,,	ज्ञायेथाः	ज्ञायेयाथाम्	ज्ञायेध्वम्
उ० ,,	ज्ञायेय	ज्ञायेवहि	ज्ञायेमहि

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अज्ञायत	अज्ञायेताम्	अज्ञायन्त
म० ,,	अज्ञायथाः	अज्ञायेथाम्	अज्ञायध्वम्
उ० ,,	अज्ञाये	अज्ञायावहिं	अज्ञायामहि

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

नवमोऽध्यायः

कृदन्त प्रकरण

धातुओं में जिन प्रत्ययों को जोड़कर संज्ञा, विशेषण और अव्यय शब्द बनते हैं, उनको कृत् प्रत्यय कहते हैं और इनके द्वारा जो शब्द सिद्ध होते हैं, उन्हें कृदन्त कहते हैं। ये कृदन्त शब्द क्रिया के समान भी अर्थ प्रकट करते हैं।

कृत् प्रत्यय जोड़ने के नियम—

(क) कृत् प्रत्यय परे होने पर धातु के अन्त्यस्वर तथा उपधा के ह्रस्व स्वर का गुण होता है।

(ख) कृत् प्रत्यय के ण् या ञ् का लोप होने पर अन्त्यस्वर तथा उपधा के अकार की वृद्धि होती है और आकारान्त धातु के आगे य् होता है।

(ग) कृत् प्रत्यय के परे रहने से विच् का लोप होता है।

(घ) कृत् प्रत्यय का घ् इत् होने से धातु के अन्तःस्थित च् के स्थान पर क् तथा ज् के स्थान पर ग् होता है।

(ङ) कृत प्रत्यय में क् ग् ङ् का लोप होने पर धातु में गुण वृद्धि नहीं होती।

(च) यदि कृत्प्रत्यय के प् का लोप हो तो ह्रस्व-स्वरान्त-धातु के आगे 'त्' होता है।

(छ) कृत्प्रत्यय के य के परे रहने से धातु के अन्तःस्थित 'ओ' के स्थान पर 'अव्' और 'औ' के स्थान पर 'आव्' होता है।

कृत्प्रत्ययों के मुखय तीन भेद हैं—कृत्य, कृत् और उणादि।

कृत्यप्रत्यय—तव्यत्, तव्य, अनीयर्, केलिमर्, यत्, क्यप् और ण्यत् ये सात कृत्यप्रत्यय कहलाते हैं।

तव्य और अनीयर्

१—कर्मवाच्य और भाववाच्य में धातु के तव्यत्, तव्य और अनीयर् प्रत्यय होते हैं। 'तव्यत्' के त् का और 'अनीयर्' के र् का लोप हो जाता है। यथा—

भू+तव्य=भवितव्यः; भू+अनीयर्=भवनीयः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

दा+तव्य=दातव्यः; दा+अनीयर्=दानीयः

पूज्+तव्य=पूजितव्यः; पूज्+अनीयर्=पूजनीयः
गम् +तव्य=गन्तव्यः; गम्+अनीयर्=गमनीयः
पठ् +तव्य=पठितव्यः; पठ+अनीयर्=पठनीयः
चि+तव्य=चेतव्यः; चे+अनीयर्=चयनीयः
हस्+तव्य=हसितव्यः; हस्+अनीयर्=हसनीयः
श्रु+तव्य=श्रोतव्यः; श्रु+अनीयर्=श्रवणीयः
लिख+तव्य=लेखितव्यः; लिख्+अनीयर्=लेखनीयः
पत्+तव्य=पतितव्यः; पत्+अनीयर्=पतनीयः
शुच्+तव्य=शोचितव्यः; शुच्=अनीयर्=शोचनीयः
हृ+तव्य=हर्त्तव्यः; हृ+अनीयर्=हरणीयः
कृ+तव्य=कर्त्तव्यः; कृ+अनीयर्=करणीयः
भुज्+तव्य=भोक्तव्यः; भुज्+अनीयर्=भोजनीयः
जि+तव्य=जेतव्यः; जि+अनीयर्=जयनीयः
चर्+तव्य=चरितव्यः; चर्+अनीयर्=चरणीयः
स्था+तव्य=स्थातव्यः; स्था+अनीयर्=स्थानीयः
अद्+तव्य=अत्तव्यः; अद+अनीयर्=अदनीयः
छिद्+तव्य=छेत्तव्यः; छिद्+अनीयर=छेदनीयः
भिद्+तव्य=भेत्तव्यः; भिद्+अनीयर्=भेदनीयः
पच् +तव्य=पक्तव्यः; पच्+अनीयर्=पचनीयः
जप्+तव्य=जपितव्यः; जप्+अनीयर्=जपनीयः
रम् +तव्य=रन्तव्यः; रम्+अनीयर्=रमणीयः
गै+तव्य=गातव्यः; गै+अनीयर्=गानीयः
ध्या+तव्य=ध्यातव्यः; ध्या+अनीयर्=ध्यानीयः
दृश्+तव्य=द्रष्टव्यः; दृश्+अनीयर्=दर्शनीयः
ज्ञा+=तव्य=ज्ञातव्यः; ज्ञा+अनीयर्=ज्ञानीयः
सृज्+तव्य=स्रष्टव्यः; सृज्+अनीयर=सर्जनीयः
भक्ष्+तव्य=भक्षितव्यः; भक्ष्+अनीयर्=भक्षणीयः
शंस्+तव्य=शंसितव्यः; शंस्+अनीयर्=शंसनीयः
कथ+तव्य=कथितव्यः; कथ+अनीयर्=कथनीयः
चुर् + तव्य=चोरितव्यः; चुर्+अनीयर्=चोरणीयः
नी+तव्य=नेतव्यः; नी+अनीयर्=नयनीयः
चि+तव्य=चेतव्यः; चि+अनीयर्=चयनीयः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ग्रह्+तव्य=ग्रहीतव्यः; ग्रह्+अनीयर्=ग्रहणीयः
सेव्+तव्य=सेवितव्यः; सेव्+अनीयर्=सेवनीयः
स्मृ+तव्य=स्मर्तव्यः; स्मृ+अनीयर्=स्मरणीयः
विद+तव्य=वेदितव्यः, विद+अनीयर्=वेदनीयः
मन्+तव्य=मन्तव्यः; मन्+अनीयर्=मननीयः
शी+तव्य=शयितव्यः; शी+अनीयर्=शयनीयः

ण्यत् (य)

२—कर्मवाच्य और भाववाच्य में ऋकारान्त और व्यञ्जनान्त धातुओं से ण्यत् (य) प्रत्यय होता है। ण्यत् प्रत्यय के होने पर ऋकारान्त धातुओं के ऋ के स्थान में अर् होता है और ण्यत् प्रत्यय में से ण् और त् की इत्संज्ञा होने से केवल 'य' शेष रह जाता है। यथा—

कृ+ण्यत्=कार्यः; धृ+ण्यत्=धार्य्यः
सृ+ण्यत्=सार्य्यः; हृ+ण्यत्=हार्य्यः
सेव्+ण्यत्=सेव्यः; पठ+ण्यत्=पाठ्यः
पच्+ण्यत्=पाच्यः; मृज्+ण्यत्=मार्ग्यः
यज्+ण्यत्=याज्यः; याच्+ण्यत्=याच्यः
रुच्+ण्यत्=रोच्यः; वच्+ण्यत्=वाच्यः, वाक्यः
श्रु+ण्यत्=श्राव्यः; पू+ण्यत्=पाव्यः
यू+ण्यत्=याव्यः; लू+ण्यत्=लाव्यः
भुज्+ण्यत्=भोज्यः; त्यज्+ण्यत्=त्याज्यः
बुध्+ण्यत्=बोध्यः; छिद्+ण्यत्=छेद्यः
हस्+ण्यत्=हास्यः; वह्+ण्यत्=वाह्यः
रुज्+ण्यत्=रोग्यः; भुज्+ण्यत्=भोग्यः
युज्+ण्यत्=योग्यः; मन्+ण्यत्=मान्यः

यत्

३—स्वरान्त धातुओं और पवर्गान्त धातुओं से यत् (य) प्रत्यय होता है; किन्तु इन धातुओं की उपधा में आकार होना चाहिए। यथा—

पा+यत्=पेयम् ; धा+यत्=धेयम्
दा+यत्=देयम् ; ध्या+यत्=ध्येयम्
गै+यत्=गेयम् ; चि+यत्=चेयम्

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

जि+यत्=जेयम् ; नी+यत्=नेयम्
शप् +यत्=शप्यम् ; लप् +यत्=लप्यम्
गम् +यत्=गम्यम् ; नम् +यत्=नम्यम्
पठ+यत्=पठ्यम ; दृश् +यत्=दृश्यम्
श्रु+यत्=श्रव्यम् ; स्था+यत्=स्थेयम्
क्षम्+यत्=क्षम्यम् ; लभ् +यत्=लभ्यम्
वध्+यत्=वध्यम् ; शस् +यत्=शस्यम्
सह् +यत्=सह्यः; चर् +यत्=चर्यः
छिद्+यत्=छेद्यः; भिद्+यत्=भेद्यः

क्यप्

४—कर्तृवाच्य और भाववाच्य में इ, दृ, वृ, कृ, जुष्, शास् और स्तु धातुओं के आगे क्यप् प्रत्यय होता है। यदि धातु का अन्तिम स्वर लघु हो तो धातु और प्रत्यय के बीच 'त्' आ जाता है। यथा—

स्तु+क्यप् =स्तुत्यः; इ+क्यप् =इत्यः
शास् +क्यप् =शिष्यः; वृ+क्यप् =वृत्यः
कृ+क्यप् =कृत्यः; वृष् +क्यप् =वृष्यः
भृ+क्यप् =भृत्यः; दृ+क्यप् =दृत्यः
भृज् +क्यप् =भृज्यः; हन्+क्यप् =हत्या

केलिम

५—कर्म और कर्तृवाच्य में धातु के आगे केलिम प्रत्यय होता है। यथा—
भिद्+केलिम (एलिम)=भिदेलिम; पच् +केलिम=पचेलिम; छिद्+केलिम=छिदेलिम

क्त (त)

६—भूतकाल में धातु से परे कर्मवाच्य और भाववाक्य में धातु से 'क्त' प्रत्यय होता है।

	पुं०	नपु०	स्त्री०
कृ+क्त=	कृतः	कृतम्	कृता
पठ+क्त=	पठितः	पठितम्	पठिता
भू+क्त=	भूतः	भूतम्	भूता
गम्+क्त=	गतः	गतम्	गता
क्रम् +क्त=	क्रान्तः	क्रान्तम्	क्रान्ता

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

रम्+क्त=	रतः, रमितः	रतम्, रमितम्	रता, रमिता
स्ना+क्त=	स्नातः	स्नातम्	स्नाता
यज्+क्त=	इष्टः	इष्टम्	इष्टा
दह्+क्त=	दग्धः	दग्धम्	दग्धा
मृ+क्त=	मृतः	मृतम्	मृता
पा–रक्षणे+क्त=	पातः	पातम्	पाता
पा–पीने+क्त=	पीतः	पीतम्	पीता
सिच्+क्त=	सिक्तः	सिक्तम्	सिक्ता
त्यज्+क्त=	त्यक्तः	त्यक्तम्	त्यक्ता
मन्+क्त=	मतः	मतम्	मता
तुष्+क्त=	तुष्टः	तुष्टम्	तुष्टा
भज्+क्त=	भक्तः	भक्तम्	भक्ता
युज्+क्त=	युक्तः	युक्तम्	युक्ता
मुच्+क्त=	मुक्तः	मुक्तम्	मुक्ता
दा+क्त=	दत्तः	दत्तम्	दत्ता
स्था+क्त=	स्थितः	स्थितम्	स्थिता
शम्+क्त=	शान्तः, शामितः	शान्तम्, शामितम्	शान्ता, शामिता
लभ्+क्त=	लब्धः	लब्धम्	लब्धा
रुह्+क्त=	रूढः	रूढम्	रूढा
जि+क्त=	जितः	जितम्	जिता
कृ+णिच्+क्त=	कारितः	कारितम्	कारिता
पठ्+णिच्+क्त=	पाठितः	पाठितम्	पाठिता
दृश्+णिच्+क्त=	दर्शितः	दर्शितम्	दर्शिता
ज्ञा+णिच्+क्त=	ज्ञापितः	ज्ञापितम्	ज्ञापिता
मुच्+णिच्+क्त=	मोचितः	मोचितम्	मोचिता
बुध्+णिच्+क्त=	बोधितः	बोधितम्	बोधिता
स्ना+णिच्+क्त=	स्नापितः	स्नापितम्	स्नापिता

क्तवतु (तवत्)

७—भूतकाल में कर्तृवाच्य में क्तवतु (तवत्) प्रत्यय होता है। यथा—

	पु०	नपुं०	स्त्री०
भू+क्तवतु=	भूतवान्	भूतवत्	भूतवती
गम्+क्तवतु=	गतवान्	गतवत्	गतवती

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पठ+क्तवतु =	पठितवान्	पठितवत्	पठितवती
सिच् + क्तवतु=	सिक्तवान्	सिक्तवत्	सिक्तवती
शक् + क्तवतु=	शक्तवान्	शक्तवत्	शक्तवती
तप् + क्तवतु=	तृप्तवान्	तृप्तवत्	तृप्तवती
त्यज् + क्तवतु=	त्यक्तवान्	त्यक्तवत्	त्यक्तवती
कृ+क्तवतु=	कृतवान्	कृतवत्	कृतवती
मृ+क्तवतु=	मृतवान्	मृतवत्	मृतवती
स्मृ+क्तवतु =	स्मृतवान्	स्मृतवत्	स्मृतवती
पा-रक्षणे+क्तवतु=	पातवान्	पातवत्	पातवती
पा-पाने+क्तवतु=	पीतवान्	पीतवत्	पीतवती
स्था+क्तवतु=	स्थितवान्	स्थितवत्	स्थितवती
स्ना+क्तवतु=	स्नातवान्	स्नातवत्	स्नातवती
दा+क्तवतु=	दत्तवान्	दत्तवत्	दत्तवती
धा+क्तवतु=	धत्तवान्	धत्तवत्	धत्तवती
हन्+क्तवतु =	हतवान्	हतवत्	हतवती
यज्+क्तवतु =	इष्टवान्	इष्टवत्	इष्टवती
दृश्+क्तवतु =	दृष्टवान्	दृष्टवत्	दृष्टवती
चि+क्तवतु=	चितवान्	चितवत्	चितवती
भी+क्तवतु	भीतवान्	भीतवत्	भीतवती
जी+क्तवतु=	जितवान्	जितवत्	जितवती
नी+क्तवतु=	नीतवान्	नीतवत्	नीतवती
भ्रम् + क्तवतु=	भ्रान्तवान्	भ्रान्तवत्	भ्रान्तवती
	भ्रमितवान्	भ्रमितवत्	भ्रमितवती
चर् + क्तवतु=	चरितवान्	चरितवत्	चरितवती
वस् + क्तवतु=	उषितवान्	उषितवत्	उषितवती
शृ+क्तवतु=	शीर्णवान्	शीर्णवत्	शीर्णवती
मुच् + क्तवतु=	मुक्तवान्	मुक्तवत्	मुक्तवती
भज् + क्तवतु=	भक्तवान्	भक्तवत्	भक्तवती
गै+क्तवतु=	गीतवान्	गीतवत्	गीतवती
वच् + क्तवतु=	उक्तवान्	उक्तवत्	उक्तवती
भुज् + क्तवतु=	भुक्तवान्	भुक्तवत्	भुक्तवती

©2080. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

क्तिन् (ति)

८—भाव अर्थ में धातुओं के उत्तर में क्तिन् (ति) प्रत्यय होता है । यथा—
भू+क्तिन=भूतिः; मन्+क्तिन्=मतिः; कृ+क्तिन्=कृतिः श्रु+क्तिन्=श्रुतिः
स्मृ+क्तिन्=स्मृतिः; चि+क्तिन्=चितिः, भी+क्तिन=भीतिः; वृष्+क्तिन्=वृष्टिः
रम् + क्तिन्=रतिः; वि+रम्+क्तिन्=विरतिः; तन्+क्तिन्=ततिः; क्लम्+क्तिन्=क्लान्तिः
म्लै+क्तिन्=म्लानिः; ख्यै+क्तिन्=ख्यातिः; द्युत्+क्तिन्=द्युतिः; मुच्+क्तिन=मुक्तिः
गम्+क्तिन्=गतिः; बुध् + क्तिन्=बुद्धिः; दृश् + क्तिन्=दृष्टिः; नी+क्तिन्=नीतिः
धृ+क्तिन्=धृतिः; शक् + क्तिन् = शक्तिः; मा+क्तिन्=मितिः; नम्+क्तिन्=नतिः
प्र+नम्+क्तिन्=प्रणमतिः; क्षम् + क्तिन्=क्षान्तिः; शम्+क्तिन्=शान्तिः; ग्लै+क्तिन्=ग्लानिः
स्था+क्तिन्=स्थितिः; क्षि+क्तिन्=क्षितिः, हा+क्तिन्=हानिः; वच् + क्तिन् = उक्तिः
गै+क्तिन्=गीतिः; ऋध् + क्तिन्=ऋद्धिः; तुष् + क्तिन्=तुष्टिः; मृ+क्तिन्=मृतिः
श्रु+क्तिन्=श्रुतिः; हृ+क्तिन्=हृतिः; पुष् + क्तिन्=पुष्टिः; सृज् + क्तिन्=सृष्टिः
यज् + क्तिन्=इष्टिः; तृप् + क्तिन्=तृप्तिः; पू+क्तिन्=पूतिः; वृध् + क्तिन्=वृद्धिः

घञ्

९—भाववाच्य में धातुओं के उत्तर घञ् (अ) प्रत्यय होता है। घञ् प्रत्यय से बने शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं। यथा—

पठ् + घञ्=पाठः; शुच् + घञ्=शोकः; क्रुध् + घञ्=क्रोधः
लिख् + घञ्=लेखः; रञ्ज् + घञ्=रागः; भुज् + घञ्=भोगः
युज् + घञ्=योगः; रुज् + घञ्=रोगः; वस् + घञ्=वासः
त्यज् + घञ्=त्यागः; हृ+घञ्=हारः; रम्+घञ्=रामः
पत्+घञ्=पातः; रुध् + घञ्=रोधः; सञ्ज् + घञ्=सङ्गः

अ

१०—भाव अर्थ में 'अ' प्रत्यय होता है। इस प्रत्यय से बने शब्द भी पुंल्लिङ्ग होते हैं। घञ् प्रत्यय की अपेक्षा इसमें यही विशेषता है कि इसमें धातु के अन्तिम स्वर में वृद्धि के स्थान पर गुण होता है। यथा—

जि+अ=जयः; क्षि+अ=क्षयः; चि+अ=चयः; ग्रह् + अ=ग्रहः
ली+अ=लयः; स्तु+अ=स्तवः; भू+अ=भवः; जप् + अ=जपः

ल्युट् (अन)

११—भाव अर्थ में धातुओं से 'ल्युट्' प्रत्यय होता है। इस प्रत्यय से बने शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

गम् + ल्युट्=गमनम् ; स्मृ+ल्युट् = स्मरणम् ; पठ् + ल्युट् = पठनम् ; मृ+ल्युट्=मरणम् नी+ल्युट् =नयनम्; छिद् + ल्युट् = छेदनम्; शी+ल्युट् = शयनम् ; नृत्+ल्युट्=नर्तनम् चि+ल्युट्=चयनम् ; कथ् + ल्युट् = कथनम् ; श्रु+ल्युट् = श्रवणम् ; रुद्+ल्युट्=रोदनम् कृ+ल्युट्=करणम् ; पा+ल्युट=पानम् ; हृ+ल्युट् = हरणम् ; दा+ल्युट्=दानम् ध्यै+ल्युट्=ध्यानम् ; गै+ल्युट्=गानम् ; ज्ञा+ल्युट् ज्ञानम् ; भुज्+ल्युट्=भोजनम् दृश्+ल्युट् =दर्शनम् ; स्पृश् + ल्युट्=स्पर्शनम् ; अधि+इ+ल्युट् = अध्ययनन् ; परि + अट् + ल्युट् = पर्यटनम्

अण्

१२—कर्मवाचक पद के परवर्ती धातु के उत्तर कर्तृवाचक में 'अण्' प्रत्यय होता है। यथा—

कुम्भं करोति=कुम्भ+कृ+अण् (अ)=कुम्भकारः; मालां करोति=माला+कृ+अण्=मालाकारः तन्तून् वयति=तन्तु+वे+अण्=तन्तुवायः; शास्त्राणि करोति=शास्त्र+कृ+अण् = शास्त्रकारः सूत्रं धरति=सूत्र+धृ+अण्=सूत्रधारः; भारं हरति=भार+हृ + अण्=भारहारः

क (अ)

१३—आकारान्त धातुओं से कर्तृवाचक में 'क' (अ) प्रत्यय होता है। यथा—

धनं ददाति=धन+दा+क=धनदः; भूमिं पाति=भूमि+पा+क=भूमिपः
धर्मं जानाति=धर्म+ज्ञा+क=धर्मज्ञः;गृहे तिष्ठति=गृह+स्था+क=गृहस्थः
जलं ददाति=जल+दा+क=जलदः; सर्वं जानाति=सर्व+ज्ञा+क=सर्वज्ञः

णिनि (इन्)

१४—उपसग तथा सुबन्त पद के परवर्ती धातुओं के उत्तर व्रत, शील और पौनः पुन्य (बार-बार) अर्थ में णिनि (इन्) प्रत्यय होता है।

नित्यं स्नातुं शीलमस्य—नित्य+स्ना+णिनि=नित्यस्नायी
निरामिषम् अश्नाति इति—निरामिष् + अश् + णिनि=निरामिषाशी
मित्रम् हन्ति इति—मित्र+हन्+णिनि==मित्रघाती
पितरम् हन्ति इति— पितृ+हन् + णिनि=पितृघाती
उष्णं भुङ्क्ते इति—उष्ण+भुज् + णिनि = उष्णभोजी
सत्यं वदति इति—सत्यं+वद्+णिनि=सत्यवादी
सह गच्छति इति—सह+गम्+णिनि=सहगामी
अनुयाति इति—अनु+या+णिनि=अनुयायी
अनुवदति इति—अनु+वद्+णिनि=अनुवादी

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

प्रियं वदति इति—प्रिय+वद्+णिनि=प्रियवादी

परोपकारं करोति इति—परोप+कृ+णिनि=परोपकारी

शाकं आहरति इति—शाक+आ+हृ+णिनि=शाकाहारी

क्विप्

१४—सुबन्त के परवर्ती धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में 'क्विप्' प्रत्यय होता है और क्विप् का सर्वापहारी लोप होता है। यथा—

धर्मं वेत्ति—धर्म+विद्+क्विप् =धर्मवित्; शास्त्रं वेत्ति—शास्त्र+विद्+क्विप् =शास्त्रवित्

शत्रुं जयति—शत्रु+जि+क्विप् =शत्रुजित्; भ्रूणं हन्ति—भ्रूण+हन्+क्विप् =भ्रूणहा

शतृ और शानच्

१५—वर्तमान काल का बोध कराने के लिए शतृ और शानच् दो प्रत्यय होते हैं। परस्मपदी धातुओं के उत्तर शतृ और आत्मनेपदी धातुओं के उत्तर शानच् प्रत्यय होता है। अकारान्त धातु होने पर शानच् (आन) के स्थान में मान हो जाता है। यथा—

पठ् +शतृ=पठत्-पठन्; भू+शतृ=भवत्-भवन्; गम्+शतृ=गच्छत्

वस् +शतृ=वसत्; पत्+शतृ=पतन्; गै+शतृ=गायत्; स्था+शतृ=तिष्ठत्

घ्रा+शतृ=जिघ्रत्; ज्ञा+शतृ=जानत्; पा+शतृ=पिबत्; दृश् +शतृ=पश्यत्

नश् +शतृ=नश्यत्; इष् +शतृ=इच्छत्; दा+शतृ=ददत्; धा+शतृ=दधत्

प्रच्छ् +शतृ=पृच्छत्; मस्ज् +शतृ=मज्जत्; ज्ञा+शतृ=जानत्

कृ+णिच् +शतृ=कारयत्; हन्+णिच् +शतृ=घातयत्; पत्+णिच् +शतृ=पातयत्

ज्ञा+णिच् +शतृ=ज्ञापयत्; दृश् +णिच् +शतृ=दर्शयत्; स्था+णिच् +शतृ=स्थापयत्

शानच् (आन)

पठ् +शानच् =पठ्यमानः; नी+शानच् =नयमानः; सेव् +शानच् =सेवमानः

वृत्+शानच् वर्तमानः; वध् +शानच्=वर्द्धमानः; सह् +शानच् =सहमानः

विद्+शानच् =विदमानः; मृ+शानच् =म्रियमाणः; शी+शानच् =शयानः

बुध् +शानच् =बुद्ध्यमानः; मनु+शानच् =मन्यमानः; भज् +शानच् =भजमानः

यज् +शानच्=यजमानः; दा+शानच् =ददानः; ब्रू+शानच् =ब्रुवाणः

कृ+शानच् =कुर्वाणः; ग्रह+शानच् गृह्णानः; दा+शानच् =दीयमानः

दृश् +शानच् =दृश्यमाणः; वृष् +शानच् =वृष्यमाणः; स्था+शानच् =स्थीयमानः

वद्+शानच् =उद्यमानः; नश् +शानच् =नश्यमानः; दीप +शानच् =दीप्यमानः

आस् +शानच् =आसीनः; ग्रह् +शानच् =गृह्यमाणः; कम्प् +शानच् =कम्प्यमानः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

क्त्वा (त्वा)

१६—यदि दो क्रियाओं का एक ही कर्त्ता हो तो पूर्वकालीन क्रिया के अर्थ में धातुओं से क्त्वा प्रत्यय होता है। यथा—

दा+क्त्वा=दत्वा; भू+क्त्वा=भूत्वा; गम्+क्त्वा=गत्वा; स्था+क्त्वा=स्थित्वा
मृ+क्त्वा=मृत्वा; हन्+क्त्वा=हत्वा; चल्+क्त्वा=चलित्वा; हस्+क्त्वा=हसित्वा
घ्रा+क्त्वा=घ्रात्वा; पा+क्त्वा=पीत्वा; स्मृ+क्त्वा=स्मृत्वा; भुज्+क्त्वा=भुक्त्वा
सृज्+क्त्वा=सृष्ट्वा; दृश्+क्त्वा दृष्ट्वा; लभ्+क्त्वा=लब्ध्वा; बुध्+क्त्वा=बुद्ध्वा
दह्+क्त्वा=दग्ध्वा; यज्+क्त्वा=इष्ट्वा; ग्रह्+क्त्वा=गृहीत्वा; वस्+क्त्वा=उषित्वा
पृच्छ्+क्त्वा=पृष्ट्वा; हृ+क्त्वा=हृत्वा; शास्+क्त्वा=शिष्ट्वा; शी+क्त्वा=शयित्वा
ची+क्त्वा=चित्वा; ब्रू या वच्+क्त्वा=उक्त्वा; हा+क्त्वा=हित्वा; मुह्+क्त्वा=मुग्ध्वा
श्रु+णिच्+क्त्वा=श्रावयित्वा; भू+णिच्+क्त्वा=भावयित्वा; मुच्+णिच्+क्त्वा =मोचयित्वा।

ल्यप् (य)

१७—उपसर्ग से युक्त धातुओं के उत्तर ल्यप् (य) प्रत्यय होता है। यथा—

प्र+पठ्+ल्यप्=प्रपठ्य; आ+गम्+ल्यप्=आगम्य या आगत्य
अनु+भू+ल्यप्=अनुभूय; आ+दा+ल्यप्=आदाय; सम्+त्यज्+ल्यप्=सन्त्यज्य
प्र+आप्+ल्यप्=प्राप्य; वि+हस्+ल्यप्=विहस्य; सम्+क्षिप्+ल्यप्=संक्षिप्य
प्रति+श्रु+ल्यप्=प्रतिश्रुत्य; अधि+इ+ल्यप्+अधीत्य; आ+हन्+ल्यप्=आहत्य
वि+ग्रह+ल्यप्=विगृह्य; अनु+वद्+ल्यप्=अनूद्य; प्र+वच्+ल्यप् = प्रोच्य
वि+हृ+ल्यप्=विहृत्य; उप+हृ+ल्यप्=उपहृत्य; परि+हृ+ल्यप् = परिहृत्य
नि+पत्+ल्यप् = निपत्य; वि+ज्ञा+ल्यप् = विज्ञाय; आ+दृ+ल्यप् = आदृत्य
वि+लोकि+ल्यप् = विलोक्य; सम्+शुध्+ल्यप् = संशोध्य; वि+कृ+ल्यप् =विकृत्य

ण्वुल् और तृच्

१८—क्रिया से विशेषण बनाने के हेतु धातुओं के उत्तर ण्वुल् तथा तृच् प्रत्यय होते हैं। ण्वुल् का अक् और तृच् का तृ शेष रह जाता है। यथा—

भू+ण्वुल्=भावुकः; कृ+ण्वुल्=कारकः; हृ+ण्वुल्=हारकः; पठ्+ण्वुल् = पाठकः पच्+ण्वुल् = पाचकः; दा+ण्वुल् = दायकः; नी+ण्वुल्=नायकः; लिख्+ण्वुल्=लेखकः मृ+ण्वुल् = मारकः; पुष्+ण्वुल् = पोषकः, दुष्+ण्वुल् = दूषकः; दृश्+ण्वुल् = दर्शकः ; ग्रह्+ण्वुल् = ग्राहकः; वह्+ण्वुल्=वाहकः; सेव्+ण्वुल् = सेवकः; बुध्+ण्वुल् = बोधकः; रुष+ण्वुल् रोषकः; वद्+ण्वुल् = वादकः; शुच्+ण्वुल् = शोचकः;

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

जन्+ण्वुल् = जनकः; गण् + ण्वुल् = गणकः; स्मृ+ण्वुल् = स्मारकः; तृ+ण्वुल् = तारकः; हन्+ण्वुल् = घातकः; रक्ष् +ण्वुल् = रक्षकः; याच् + ण्वुल् = याचकः; गै+ण्वुल् = गायकः; निन्द्+ण्वुल् = निन्दकः; शुष् + ण्वुल् = शोषकः; बुध् + ण्वुल् = बोधकः; नश् +ण्वुल् =नाशकः; छिद्+ण्वुल् = छेदकः; धा+ण्वुल् = धायकः; ज्ञा+ण्वुल् = ज्ञायकः; सृज् + ण्वुल् = सर्जकः; पा+ण्वुल् = पालकः ।

तृच्

गम्+तृच् = गन्ता; स्त्रीलिङ्ग में गन्त्री; वच् + तृच् = वक्ता, वक्त्री; भुज् + तृच् = भोक्ता–भोक्त्री; पा + तृच् = पाता–पात्री; दा+तृच् = दाता–दात्री; कृ+ तृच् = कर्त्ता–कर्त्री; भू+तृच् = भविता–भवित्री; भृ+तृच् = भर्ता–भर्त्री; दृश् + तृच् = द्रष्टा–द्रष्ट्री; हन् + तृच् = हन्त्रा–हन्त्री; श्रु + तृच् = श्रोत्रा–श्रोत्री; सृज् + तृच् = स्रष्टा–स्रष्ट्री; जि+तृच् = जेता–जेत्री; स्था+तृच् = स्थाता–स्थात्री; हृ+तृच् = हर्ता–हर्त्री; पच् + तृच् =पक्ता–पक्त्री; क्री + तृच् = क्रेता–क्रेत्री; भिद्+तृच् =भेत्ता–भेत्री; स्तु+तृच् =स्तोता–स्तोत्री; मन्+तृच् = मन्ता–मन्त्री; हु+तृच् = होता–होत्री; पू+तृच् = पोता–पोत्री ।

तुमुन् (तुम्)

१६—यदि दो क्रियाओं का एक ही कर्त्ता हो तो उनमें से निमित्तार्थबोधक धातु से परे तुमुन् (तुम्) प्रत्यय होते हैं । यथा—

भू + तुमुन् = भवितुम् ; दृश् + तुमुन्=द्रष्टुम् ; भुज् + तुमुन्=भोक्तुम्
बुध् + तुमुन्=बोद्धुम् ; कृ+तुमुन्=कर्त्तुम् ; दा+तुमुन्=दातुम् ; ज्ञा+तुमुन्=ज्ञातुम्
स्था+तुमुन्=स्थातुम् ; यज् + तुमुन्=यष्टुम् ; जि+तुमुन्=जेतुम् ; सृज् + तुमुन्=स्रष्टुम्
श्रु+तुमुन्=श्रोतुम् ; वह+तुमुन्=वोढुम् ; सह् + तुमुन्=सोढुम्-सोहितुम्
गम्+तुमुन्=गन्तुम्; हन् + तुमुन्=हन्तुम् ; नी+तुमुन्=नेतुम् ; चि+तुमुन्=चेतुम्
शी+तुमुन्=शेतुम् ; हृ+तुमुन्=कर्तुम् ; सेव् + तुमुन्=सेवितुम् ; वच् + तुमुन्=वक्तुम्
मृ+तुमुन्=मरितुम् ; स्मृ+तुमुन्=स्मरितुम् ; स्मर्तुम् ; उप+विश् + तुमुन्=उपवेष्टुम्

अनुशीलनी

१—कृत्य प्रत्यय कितने होते हैं, प्रत्येक के चार-चार उदाहरण लिखिए ।

२—निम्नलिखित धातुओं में तव्य, अनीयर् एवं क्यप् प्रत्यय जोड़कर निष्पन्न रूप लिखिये—

हन् , भू , पच् , श्रु, रुज् , गम् , भुज् , मन् , पच् , ज्ञा और पा-पाने ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

३—निम्नलिखित शब्दों में प्रकृति-प्रत्यय का विभाग कीजिए—

भावः, दर्शनीयः, गेयः, पाठ्यः, स्थितः, वाच्यम् , दर्शकः, सहमानः, भिन्नः, त्यागः, विहाय, पठितवान् , पक्वः, दाता, वेत्ता, युक्तम्, स्रष्टुम् , नेता, वेत्ता, गायकः, स्मारकः, मिथ्यावादी, प्रियंवदः, वियोगः, अभिलाषः आश्रित्य, छेदकः, सिद्धः, नयनम् , रूढ़िः, उष्णभोजी, युक्तम् , सन्दर्श्य, भवितुम् , दातुम् , जायमानः, पीयमानः आसीनः, कर्तव्यः, करणीयः, सेव्यः, व्यक्तव्यः, श्रवणीयः, लब्धवान्, पाकः, शोकः, लेखः, रामः, भोगः, त्ययः, लयः, नीतिः भीतिः, शान्तिः रतिः गतिः, इष्टिः, सिद्धिः गीतिः, ग्लानिः म्लानिः, हानिः, युक्तिः, क्लान्तिः, कथनम् एवं गानम् ।

४—क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय को सोदाहरण समझाइये ।

रूप लिखिए—

वह् + तुमुन् , दा+क्त्वा, ग्रह+क्त्वा, कृ+क्त, वच् + अनीयर, गम् + ल्युट , शी+ल्युट्, पा+ल्युट्, क्रम्+क्तिन् , रुष्+क्तिन् , भज् + क्तिन्, मुच् + क्तिन् , द्वि+अ, पठ् + घञ् , रञ्ज् +घञ् , मनस् + जन्+अ, रात्रि+चर् + अ, विश्व+भृ+खड् (अ), अनु+या+णिनि, सह+गम् + णिनि, धन+दा+क, धर्म+ज्ञा+क, सर्व+ज्ञा+क, भुज् + तृच् , भिद्+तृच् , सृज् + तृच् , भू+तृच् , पुष् + ण्वुल् , तृ+ण्वुल् , नश् + ण्वुल् , पा+ण्वुल् , सम्+त्यज् + ल्यप् , परि+हृ+ल्यप् , हन्+क्त्वा, शी+क्त्वा, विद्+शानच् , कृ+शानच् , यज् + शानच् , ज्ञा+शतृ, भू+शतृ, घा+शतृ , चल् +क्त्वा, वस् + क्त्वा एवं नी+शानच् ।

६—शतृ; शानच् और ण्वुल् प्रत्यय को सोदाहरण समझाइये ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लघुसिद्धान्तकौमुदी

पं० श्रीधरानन्द शास्त्री

हिन्दी में लघुसिद्धान्तकौमुदी पर यह एक सुन्दर, सरल, प्रामाणिक, और सुबोध व्याख्या है। इसकी भाषा आधुनिक है और सम्पूर्ण प्रयोगों की साधन प्रक्रिया, शब्दों और धातुओं के आकांक्षित रूप सुव्यस्थित ढंग से टीका में प्रदर्शित किये गए हैं। सूत्रों का शब्दार्थ पृथक् देकर विवरण स्पष्ट किया गया है। प्रत्येक सिद्धि को पूर्ण प्रकार दिखाया गया है। षड्लिंग में प्रत्येक शब्द और तिङन्त में प्रत्येक धातु के पूर्ण रूप दिये गये हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में ऐसी अनेक विशेषताएँ हैं जिससे यह छात्रों के लिए एक निधि बन गई है।

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी

[लक्ष्मी व्याख्या]

सभापति शर्मा उपाध्याय

लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक में शब्दों की व्युत्पत्ति, सिद्धिप्रकार, ग्रंथ-ग्रंथिविभेदन एवं संस्कृत के समस्त कोशों के आधार पर उन शब्दों के प्रयोग को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत सम्पूर्ण शब्दों का योगज अर्थ इसमें किया गया है।

इस टीका का वैशिष्ट्य भाग-दो के 'आमुख' में संक्षेपतः संग्रहीत है। संस्कृत भाषा में वर्ण-विचार के समस्त दार्शनिक नियम दिये गए हैं।

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी

[कारक प्रकरण]

पं० श्रीधरानन्द शास्त्री

इस प्रकरण में उपपद और कारक-विभक्तियों के अर्थों का विस्तृत विवेचन किया गया है इसलिए इस प्रकरण का नाम सार्थक है। विभक्तियाँ जिन अर्थों को प्रकट करती हैं, उन्हें कारक कहते हैं। कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, आदि कारक-विभक्तियाँ हैं। कारक-विभक्तियों के अतिरिक्त उन विभक्तियों का भी वहाँ निरूपण किया गया है, जो पदों के योग में आती हैं और जिन्हें उपपद कहते हैं। तृतीय कोटि में काल, अध्वन्, आदि अर्थवाचक शब्दों के साथ आने वाली विभक्तियों का भी वर्णन है जो न कारक हैं, न उपपद। इस प्रकरण की हिन्दी व्याख्या में मनीषी व्याख्याकार ने इन तीनों का सोदाहरण विवेचन किया है, जो कि व्याकरणशास्त्र के छात्रों के लिए परमोपयोगी सिद्ध होगा।

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता, बंगलौर,
वाराणसी, पुणे, पटना

मूल्य : रू० ९५

ISBN 81-208-2494-6

9 788120 824942

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection